# THE CRAPLER

The Central Reserve Police News Letter & Magazine

1980

# THE CRAPLER




The Central Reserve Police News Letter & Magazine

1980

## Contents

31 January 1980 Vol. 8: No. 6
31 March 1980 Vol. 9: No. 1
31 May 1980 Vol. 9: No. 2
31 July 1980 Vol. 9: No. 3
30 September 1980 Vol. 9: No. 4
30 November 1980 Vol. 9: No. 5

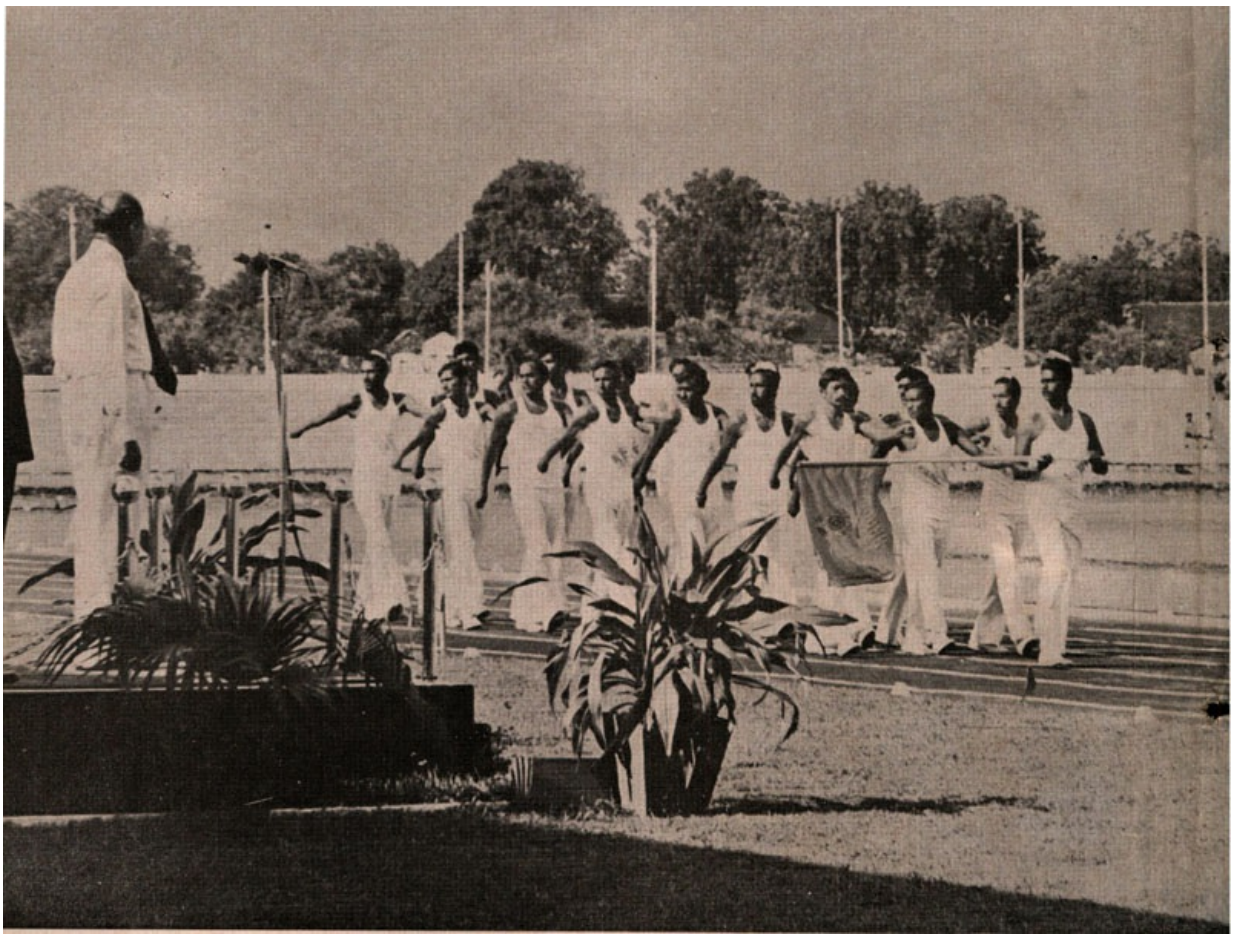
# ★ क्रैपलर ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

31 जनवरी, 1980] खण्ड VIII अंक 6 [11 माघ, 19

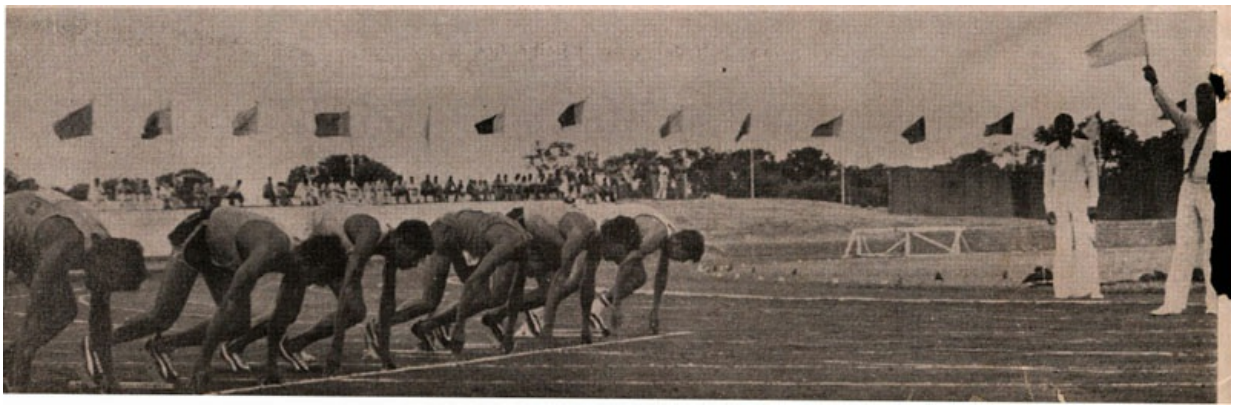




नीमच में पिछले अक्टूबर में आयोजित, के०रि०पु० बल की 13 वीं० अन्तरेंज दौडकूद प्रतियोगिता में:—

ऊपरः—प्रथम दिन, मार्च पास्ट की सलामी लेते हुये श्री पी. आर. राजगोपाल, महानिदेशक के० रि० पु० बल।

नीचे:—दौड को तैयार एथ्लीटगरण।



# क्रै प ल र

# केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
# की
# सचित्र पत्रिका

**(हिन्दी संस्करण-द्वैमासिक)**

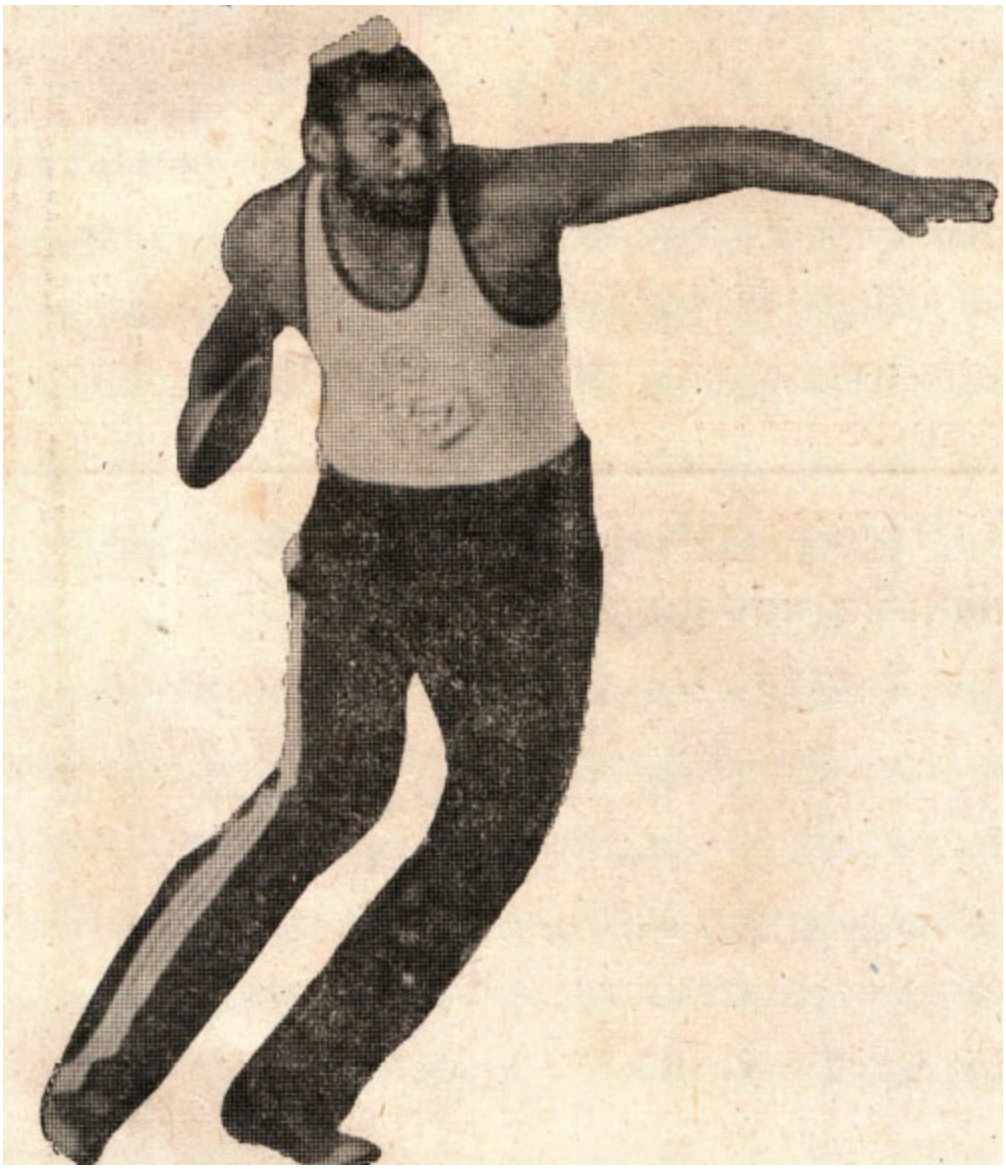
**खण्ड VIII**
**अंक 6**

**31 जनवरी, 1980**
**4 माघ, 1901**

मुख्य सम्पादक :
**एच० एस० सेठी**

**छाया चित्रकार** : शिवकुमार

हिन्दी सम्पादक :
**जे० एस० शर्म्मा**



# आर० एस० बल

**मुख्य पृष्ठ :** के० रि० पु० बल के 46वें वार्षिकोत्सव की परेड का नेतृत्व करने वाले अधिकारियों को बधाई देते हुये प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी।

**मुद्रक**—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072
**प्रकाशक**—महानिदेशक के० रि० पु० बल की ओर से **एच० एस० सेठी**।
**सम्पादकीय कार्यालय :**
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लाक 1, सी. जी. ओ. कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, 110003.

**मुद्रक**—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072

**I.** महानिदेशक द्वारा नव वर्ष की बधाई

**II. गौरवगाथा :**

**III. रिपोर्ताज :**

(i) नीमच रेंज में महानिदेशक का दौरा

(ii) पुलिस महानिरीक्षक (के० रि० पु० बल) सेक्टर I

**IV. लेख :**

(क) नेहरू हॉकी टूर्नामेंट में के० रि० पु० बल चेम्पियन,
ले०---श्री एच० एस० सेठी, जन सम्पर्क अधिकारी

(ख) पुलिस जनों के आन्दोलन से शिक्षायें,
ले०--श्री बी० बी० मिश्र

(ग) गोला बारूद और संरक्षक फ़रिश्ते,
ले०-लफ्टीनेंट कर्नल वाई० जी० माथुर

**V. कहानी :** भैंस की कीमत, ले०-- श्री जे० एस० शर्म्मा,
हिन्दी सम्पादक

**VI. क्रीड़ा-क्षेत्रे :** 13वीं अ्न्तरेंज एथ्लीट प्रतियोगिता तथा
अन्य टूर्नामेंट

**VII. स्वास्थ्य-सन्देश :** नशा बन्दी, ले०--का० भरतसिह,
50 बटा०

**VIII. कविता :**

(क) नव वर्ष मुबारक हो तुमको, र०–का०
गिरीशचन्द्र उपाध्याय, महानिदेशालय

(ख) शुभ अभिनन्दन, र०–श्री जे० एस० शर्म्मा,
हिन्दी सम्पादक

(ग) कितना कठिन विषम है जीवन, र०--मेल नर्स
कृष्ण कुमार हर्मा, बेस अस्पताल, भड़ौदाकलां
नई दिल्ली

**IX. विज्ञान के चढ़ते चरण :**

**X. विविध :**

(i) सूक्ति सुधा (#) पहेलियाँ
(ii) यह भी खूब रही

# नव-वर्ष तुम्हे शत अभिनन्दन

**दिनांक** 1 जनवरी 1980 के सुप्रभात में, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली में स्थित महानिदेशालय के० रि० पु० बले के आवास-शिविर (लाइन्स) में, महानिदेशालय, महानिरीक्षक से० III तथा उपमहानिरीक्षक, दिल्ली , के० रि० पु० बल के सभी उपस्थित आधिकारियों और कमंचारियों से श्री पी० आर० राजगोपाल, महानिदेशक ने हाथ मिलाया और के० रि० पु० बल के सभी सदस्य और उनके परिवारों के लिए इस नव वर्ष में सुख, शान्ति तथा समृद्धि की हादिक कामना की।

तदुपरान्त, आज की तेज मंहगायी में इस बल के लाभ के लिए, उन्होंने उसी स्थल पर 'सहकारी दुकान' का उद्घाटन किया, जहाँ पर आवश्यक वस्तुओं को उचित दर पर बेचने की व्यवस्था होगी। वहाँ विविध ग्रुप केन्द्रों के परिवार कल्याण केन्द्रों के उत्पादन भी बेचे जायेंगे।

इस नव्य वर्ष के अवसर पर,
जब महानिदेशक जी आये।
"नव वर्ष मुबारक हो तुमको'—
संदेश सभी को यह लाये|
यह प्रथम दिवस का सुप्रभात,
लाया आशा की ज्योति नई।
'यह वर्ष मुबारक हो तुमको'—
संदेश सभी को वह लाये॥

**—कां० गिरीश चन्द्र उपाध्याय**

# शुभ अभिनन्दन

## हिन्दी सम्पादक की ओर से—

सन्देश शान्ति-सुख-श्रियता का, ला रहा वर्ष सबको नूतन।
अगजग मग जोह रहा तुव पग, करने को शत शुभ अभिनन्दन॥
गत वर्ष रही कितनी भीषण, तस्कर-व्यापारी अरु चोरी,
भयभीत रही करती सबको, छीना-झपटी सीना-जोरी !
अत्याचारों-भ्रष्टाचारों, के आरे चले सकल जन पर,
'करनी' ने जग कुख्यात किया, 'कथनी' निकली केवल कोरी।
धिक्, बाल वर्ष में बूढ़ों ने, लड़-झगड़ दिखाया बालकपन।

अगजग मग जोह रहा तुव पग, करने को शत शुभ आंभेनन्दन ॥
दी तोड़ कमर सब जनता की, निर्मम नभ छूते भावों ने।
मारा तिसपर चीनी, बिजली, डीजल के घोर अभावों ने ।
अस्थिरता और अनिश्चय से, अतिशय है वातावरण विकल,
है किया राष्ट्र-तनु उत्पीड़ित, 'मत' 'वर्ग' 'जाति' के घावों ने ।
तालाबन्दी-हड़तालों से, सब ओ र गिरा है उत्पादन
अगजग मग जोह रहा तुव पग, करने को शत शुभ अभिनन्दन ॥
मुख फाड़े खड़ी अरक्षा अब, लुटती, मारी जाती नारी, ।
है विषम असम; सिर उठा रहे, द्रोही बर्बर विघटनकारी ।
सीमा पर संकट उमड़ रहे, नापाक पाक आयुध-सज्जित ।
प्राची में 'बंगला देश' करे, नित धुआँधार गोलाबारी।
आ आज दिला नव वर्ष, हमें, सुख शान्ति, सुरक्षा-अनुशासन ।
अगजग मग जोह रहा तुव पग, करने को शत शुभ अभिनन्दन ॥
सब स्वार्थ -परायण लगा रहे, नेता "कुर्सी! की चकफेरी, ।
जनता की उनको चिन्ता क्या घेरे जिनको 'मेरा-मेरी'
नव वर्ष सुमति दे, दिखलाकर, निज देशभक्ति-सेवा का पथ,
हित निहित पराजित कर सत्वर, तू बजा त्याग-तप की भेरी ।
दे राम-राज्य सी सुख-सुविधा, नव वर्ष आज तू "नव युग" बन ।
अगजग मग जोह रहा तुव पग, करने को शत शुभ अभिनन्दन ॥

## 1979 के अक्टूबर मास में उपलब्धियाँ |

**अ**क्टूबर 1979 में, मिज़ोरम में निरत बटालियनों ने अपनी विभिन्न कार्यवाहियों में 33 उपद्रवियों को बन्दी बनाया. जब कि मणिपुर में निरत बटालियनों ने इसी मास में 32 पकड़े । मिज़ोरमवाली बटालियनों ने । रायफल मार्क I, 2 एस. बी बी.एल. गनें, एक पिस्तोल, 2 हथगोले, 11 भरे कारतूस और 1 मैगज़ीन पायी; इधर मणिपुर वाली बटालियनों ने एक 9 मि.मी. स्टेनगन, एक एस. बीं. बी. एल. गन, एक पिस्तौल, आठ कारतूस, एक मैगज़ीन और दो संगीने बरामद कीं ।

## निरस्त्र युद्ध के प्रशिक्षण पर बल

महानिदेशक ने सभी कमांडटों से यह इच्छा प्रकट की हैं कि इस बल के अधिक से अधिक जवानों को निरस्त्र युद्ध सिखाना चाहिए। इसीलिए, केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज नीमच I से प्रशिक्षक पूर्वीय क्षेत्र की अनेक यूनिटों को भेजे गये हैं। ये प्रशिक्षक इन यूनिटों में एक-दो मास रह कर जवानों को प्रशिक्षित करेंगे ।

**कविता—**

# कितना कठिन विषम है जीवन ?

## (रचायेता-मेल नर्स कृष्ण कुमार शर्मा)

कितना कठिन विषम है जीवन, मेंरे पुलिस जवानों का "नित /
गर्मी - सर्दी -आंधी वर्षा , कर पाती है उन्हें न विचलित //
पता नहीं कब किस आज्ञा से, सहसा उन्हें कहाँ हो जाना ?
दिवस, मास अथवा वर्षो के, बाद लौट कर कब हो आना ?
नई नवेली दुल्हन लेकर, कल ही घर से बुद्धू, आया /
पर अन्यत्र कही जाने का, अब आदेश विकट है पाया /
कुल के जन हैं सुख में --दुख में; जिये-मरे;-- हमको क्या लेना ?
सभी त्यागकर, हमें राष्ट्र को, शांति-सुरक्षा है बस देना /
हिम आच्छादित, शैल-शिखर हो, डगर कंटकित हो , बीहड़- वन /
बढ़ते जायेंगे निशिदिन, रुकना हमें नहीं, किस ही छूरा //
नित्य -कर्म तक की नहिं छकविधा, जल तक कहीं कहीं नहिं मिलता /
कुछ भी खान - पान हो ; पर हम, सदा सुमन- मन रखते खिलता //
जंगल में मंगल कर देते, हटा झाड़, निर्मित कर, हम घर /
बरसातों अरु हिमपतो का , खाता हमें नहीं किंचित् छए //
शंकाकुल अथवा चिंतातुर , होना हमने कभी न जाना /
विषम परिस्थिति में लोहे के, हमने सीखा चने चबाना //

**<u>गौरव गाथा :</u>**

## जम्म् में अग्निशमन

गाँधी नगर जम्मू के गोल मार्केट क्षेत्र में ।3 नवम्बर 79 की रात्रि को भयंकर आग लग गई। गांधीनगर के थाने में स्थित के० रि० पु० बल के शिविर के संत्री ने 400 गज की दूरी वाले घटना स्थल पर यह देखकर, पुलिस उपाधीक्षक आई० एस० डागर को सूचित किया। श्री डागर तुरन्त के० रि० पु० बल तथा स्थानीय पुलिस के जवानों को लेकर वहाँ दौड़ गए । लकड़ी के 'खोखों' से सामान निकाल कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया और के० रि० पु० बल की वहाँ गारद लगा दी ।

इधर आग, उत्तम बनी दुकानों की ओर चल पड़ी । कई टुकड़ियाँ बना, श्री डागर ने हे० का० शहजाद सिंह के साथ, एक अग्निग्रस्त दुकान की छत पर चढ़कर बिजली के तार काट दिये और आग को बढ़ने से रोक दिया। उसी समय, एक जलती दुकान के अन्दर से चीखें सुनाई दीं; श्री डागर अपने प्राणों की चिन्ता नहीं कर उसकी छत पर जा पहुंचे; उसके तख्ते तोड़ कर अन्दर जा घुसे। लपटों में फंसे 4 मनुष्यों को निकाल कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया ।

थोड़ी देर में, दमकलें भी आ पहुंचीं और दो घंटे के बाद आग काबू में आई । श्री डागर और उनके जवानों के इस जन-सेवाकार्य की बड़ी सराहना स्थानीय समाचारपत्रों तथा आकाशवाणी जम्मू में हुई ।

## के० रि० पु० बल को स्मारक

श्री ई० एल० स्ट्रेंसे, महानिदेशक, तमिलनाडु पुलिस ने तमिलनाडु में इन्हीं दिनों हुयी गड़बड़ी में के० रि० पु० बल द्वारा सेवा की प्रशंसा करते हुये, यह लिखा है —"जिस भ्रद्धधुत प्रकार से आपके दल ने हमारी सहायता की है और स्थिति को सामान्य लाने के लिये कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ा है, उसके लिये मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।"

5,10,51 बटालियनें तथा ग्रुप केन्द्र आवडी के जवानों द्वारा उत्तम सेवाओं के उपलक्ष्य में, के० रि० पु० बल को श्री स्ट्रेसे ने एक स्मारक भी भेंट किया।

## हमारे जवानों द्वारा एक बालक को प्राणदान

दिनाक 20 नंवम्बर 1979 को, मदुरई ज़िले के कथू र गाँव में 5 बटालियन के० रि० पु० बल के जवानों ने एक बारह वर्षीय. बालक सेल्वाराज को, विद्युयन्मारण और फिर डूब मरने से बचा लिया । ये जवान बाढ़ के कारण असहाय ग्रामीणों को बचा-निकालने के लिये, स्थानीय पुलिस की सहायता हेतु वहाँ गये हुये थे । वह बालक जीवित बिजली के तारों से चिपक गया; इन जवानों ने होशियारी से लाठियों की सहायता से उसको बचा लिया। घबड़ाया तथा भयभीत हुआ वह बालक अर्द्ध -चेतना-वस्था बाढ़ भरी वैगी नदी में कूद पड़ा। ला० ना० रामराज और का० राजमल गोते मार कर, उस बालक को किनारे पर ले आये। बाद को, एक अस्पताल में चिकित्सा के लिये उसे दाखिल किया गया ।

## आंध्र सरकार द्वारा प्रशंसा

हैदराबाद तथा सिकन्दराबाद के युगल नगरों में इन्हीं दिनों में हुये साम्प्र-दायिक दंगों के समय आंध्रप्रदेश के मुख्य मंत्री द्वारा की गई के० रि० पु० बल की उत्तम सेवाओं की सराहना, उनके सचिव श्री एस० सन्थानम के पत्र से प्राप्त हुई है।

## 12 बटालियन को पुरस्कांर

पिछले सिक्क्रम विधान सभा चुनाव में ।2 बटालियन के० रि० पु० बल द्वारा किये गये उत्तम काम के उपलक्ष्य में, सिक्किम के पुलिस महानिरीक्षक ने उसके जवानों को 3,000 रु० का नक़द पुरस्कार दिया है ।

## 4 बटालियन के जवान पुरस्कृत

केन्द्रीय श्रौद्योगिक सुरक्षा दल के आन्दोलन के समय, उपमहानिरीक्षक, के० औ० सु० दल, बोकारो इस्पात प्लांट के आवास पर 4 बटालियन के० रि० बल के 22 जवान

सुरक्षा हेतु निरत किये गये। उनके उत्तम काम के लिये, उपमहानिरीक्षक ने उन सब जवानों को दस-दस रुपये प्रदान किये।

## धुलाई भत्ता

के० रि० पु० बल के सभी वर्दीधारी अराजपत्रित कर्मचारियों को अब 5 रू० प्रतिमांस का धुलाई भत्ता मिला करेगा।



**कां० हरवंश लाल**

## सिपाही द्वारा डाकू बन्दी

कांस्टेबल हरवंशलाल 55 बटालियन, 15 अक्टूबर 1979 को अलीगढ़ में आवास विकास पर सेवारत था। उसने सहसा 'पकड़ो-पकड़ो' का शोर करते हुए लोगों को सुना। जैसे ही वह उस ओर दोड़ा, तब एक मनुष्य को भागते हुए उसने देखा। तुरन्त उस भागते हुए मनुष्य को दौड़कर का० हरवंश लाल ने पकड़ लिया।

कुछ समय के उपरान्त, जब एक स्थानीय पुलिसकर्मी और कुछ नागरिक वहाँ आये, तब उन्होंने पहचाना कि वह पकड़ा हुआ मनुष्य तो कुख्यात डाकू 'हफ़ीजा' है, जिसकी ज़रूरत पुलिस को कितने ही डकतियों तथा हत्याओ के मुकदमों में है।

स्थानीय पुलिस ने कां० हरवंश लाल के निर्भीक साहस की बड़ी प्रशंसा की और उपमहानिरीक्षक, के० रि० पु० बल, दिल्ली ने उसे 250 रु० से पुरस्कृत किया।

## रेल डिब्बा आरक्षित

गौहाटी —लखनऊ एक्सप्रेस द्वारा लखनऊ से गौहाटी आने-जाने की यात्रा के लिए, के० रि० पु० बल के कर्मीयों के वास्ते एक द्वितीय श्रेणी की शयन बोगी (डिब्बा) आवंटित की गई है।

आरक्षण-सुविधा के लिये, लखनऊ में एक आर० टी० ओ० का दफ्तर खोला जा रहा है। इसमें एक सब-इंस्पेक्टर और एक नायक होंगे, जो इस बल के उन सदस्यों की सहायता करेंगे, जो उन गाड़ियों पर यात्रा कर रहे होंगे, जिनमें उनको कोई स्थान आरक्षित नहीं किया गया होगा। ऐसे स्थानों को आवंटित करने के लिए, वे कमंचारी रेलवे बोर्ड से मामला उठाने के वास्ते' महानिदेशालय को सभी सूचता भी भेजा करेंगे।



हमारी विजेता टीम के साथ राष्ट्रपति

# नेहरू हॉकी टूर्नामेंट में के० रि० पु० बल चैम्पियन

शिवाजी स्टेडियम , दिल्ली में 8 दिसम्बर, 1979 को समाप्त हुये 16वें नेहरू हॉकी टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल ने सीमा सुरक्षा दल से निश्चयात्मक रूप से चैम्पियन-ट्राफी छीन ली। जो के० रि० पु० बल अर्द्धफाइनल के समय सचमुच टूर्नामेंट से बाहर हो गया था, उसकी वापसी चिरस्मणीय रही।

27 नवम्बर 79 को, के० रि० पु० बल की सी०सु० दल से क्वार्टर फाइनल मैच अनिर्णीत रही। रेजीमेंट ऑफ आर्टीलरी नासिक के विरुद्ध दूसरी मैच में, के०रि०पु० बल 1-2 से हार गया और अर्द्ध फाइनल में आने की आशा ही छोड़ बैठा; किन्तु तीसरी मैच में, इसने ई०एम०ई० जलन्धर को 3-1 से हराया और अपना सही रूप दिखाया—अंकों के आधार पर, यह अर्द्ध फाइनल में पहुँच गया।

30 नवम्बर 79 को, सी० सु० दल तथा रेजीमेंट ऑफ आर्टीलरी, नासिक की

विवादग्रस्त मैच रहा। अतः दुबारा मैच खेला गई; उसमें अवरोध-भंजक में सी सु० दल 3-2 से विजयी रहा। इधर के० रि० पु० बल ने भी रेजीमेंट ऑफ आर्टीलरी को 5-3 से अवरोध-भंजक में जीत कर, अर्द्ध-फाइनल में स्थान पाया।

इसके बाद, के० रि० पु० बल को कभी पीछे नहीं देखना पड़ा। बिना थकावट के चिह्न दिखाये, यह बल निरन्तर पाँच दिन खेल की धूम मचाता रहा। सिगनलकोर से एक अनिर्णीत मैच के पश्चात् , इसने कोर को 6 दिसम्बर 79 को 2-0 से हराया और फाइनल में पहुच गया।

7 दिसम्बर 79 को, सी० सु० दल के साथ के० रि० पु० बल की मंच अनिर्णीत रही। 8 दिसम्बर 79, को फिर मैच खेली गई, जिसमें के० रि० पु० बल ने एक गोल के द्वारा निश्चयात्मक रूप से अपनी विजय-पताका फहरायी।

**—श्री एच० एस० सेठी**

**"अरर्र। यह तो मेरी धर्मपत्नी जी जलूस का नेतृत्व कर रही हैं सर !"**



**ऐतिहासिक कहानी**

# भैंस की कीमत

## लेखक—श्री जे० एस० शर्मा

आज से लगभग ढाई सौ वर्ष पूर्व, 8 अक्टूबर 1720 का सुहावना दिन अचानक प्रलयंकर त्रासदी बन गया था। आगरे के दक्षिण-पश्चिम में, कोई 75 कोस की दूरी पर बूंद ग्राम, बूंद नहीं होकर, रक्त का सागर बना हुआ था। सर्वत्र त्राहि त्राहि मची हुई थी । जिन दो सैयद बन्धुओ को सल्तनत-ए-मुग़लिया के तख्त-ए-ताऊस पर हर किसी को बिठा देना बायें हाथ का खेल था, आज उन्हीं में से एक सैयद मीर बख्शी हुसैन अलीखां की दिन दहाड़े नृशंस हत्या कर दी गयी थी। उसके जिस किसी अनुचर और नातेदार ने सहायता और समर्थन के लिये सिर उठाया था, उसका शिर छेदन कर दिया गया था। उसका भतीजा गैरत खां गोली से भून दिया गया था; उसके स्वामी भक्त बिहिश्तियों और मेहतरों की शोरिणतसरिता ठहाका मार रही थी और उधर मार रहा था ठहाका मीर मुहम्मद अमीन, जो हर्षोन्मत्ता में चिल्लाये जा रहा था हा-हा-हा। और ले मुझ से भैंस की कीमत । अरे, खड़े खड़े मेरा मुंह क्या ताक रहे हो ? लूट लो मूजी मीर बख्शी का खेमा। मिटा दो उस शैतान सैयद का नामोनिशां-' .

फिर क्या था? बेचारी बेगमें मारी मारी सिर धुन रही थीं; उनके नेत्रों के सम्मुख, उनका विशाल शिविर लुट रहा था; आकिंचन धनाढ्य हो रहे थे और धनाढ्य हो रहे थे निस्व, निरीह तथा निस्सहाय !

बात बहुत छोटी सी थी; किन्तु उस छोटी चिङ्गारी ने सैयद हुसैन अली खां के स्वर्णिम साम्राज्य को स्वाहः कर दिया था। उसका अपराध केवल यह था कि उसने वृद्ध कृषक को, सहानुभूति दर्शायी थी; न्याय का पक्ष लिया था । वृद्ध कृषक बद्धाञ्जलि रो रो कर कहे जा रहा था “सरकार, माई बाप हैं; गरीब परवर हैं । मैं लुट गया हूँ; मेरी भैंस जबरदस्ती छीन ली गयी है।"

सुनते ही सैयद मीर बख्शी के नेत्रपिण्ड ज्वाला बरसाने लगे

“ऐसा क्यों कर ?”

“हुजूर, बहुत डर लगता है।” .

“क्यों? क्या तुम मीर बख्शी की आदत से वाकिफ़ नहीं हो। वह किसी गरीब पर जुल्म नहीं बर्दाश्त कर सकता। हमें लाल किले पर बनी उस तराजू की कसम है, जो हमें हमेशा इन्साफ़ की याद दिलाती रहती है। हम सच कहते हैं कि इन्साफ़ की नज़रों में हमारे लिये सब बराबर हैं'।

“लेकिन बड़े आदमी —”कहते हुये कृषक ठिठकाः परन्तु मीर बख्शी ने उसे झकझोरा “छि; तुम गँवार ही रहे। भला कोई सल्तनत-ए-मुगलिया के मीर बख्शी से

भी बड़ा है।" फिर वृद्ध को थपथपाते हुये, सैयद ने कहा "बेधड़क होकर मुजारेम का नाम बता ओ -फिर तुम देखना हमारा इन्साफ़-हमारा अदल--मुहम्मदशाह आदिल को भूल जाओगे।" - "प्रभु आपको चिरायु करे; दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति दे, जो हिन्दू ....." बात काटते हुये, मीर बख्शी ने कहा "इन्साफ़ हिन्दू-मुस्लिम नहीं जानता। उसको सब प्रजा बराबर है। वह कभी जुल्मोंसितम को बर्दाश्त नहीं कर सकता। वर्ना जंगली कानून से फर्क ही क्या हुआ ?"

वृद्ध कृषक सुन कर गद्गद् हो गया; उसने बारम्बार झुक झुक कर जुहारें की। "इन कोर्निसों से कोई. मक़सद हल नहीं होता। तुम बिना खौफ़ के साफ़ साफ़ मुजरिम का नाम बताओ। हम अभी उसको सख्त सज़ा देंगे।" एक बार फिर मीरबख्शी ने झकझोरा। वृद्ध कृषक ने आकाश की ओर निहारा और निश्वास ली "अन्नदाता, एक क्षीर-नीर विवेकी पाप हैं और एक वह मीर-"

"कहो, कहो, कौन मीर कमरुद्दीन खाँ"

"नहीं, ग़रीबपरवर, मीर मुहम्मद अमीन खाँ"

सुनते ही हुसैन अली खाँ द्विविधा में पड़ गया। मीर मुहम्मद अमीन उसका अत्यन्त विश्वास-पात्र था। जब शाही सवारी उसके जिले हिण्डवान और बयाना से गुजरी थी, तब मीर अमीन ने शहंशाह मुहम्मद शाह और सैयद मीर बख्शी का बड़ा आदर-सत्कार किया था; वह अपनी सुव्यवस्थित सेना से उनका ध्यान आकृष्ट करता रहा था। इसी कारण, निज़ामुल्मुल्क के विरुद्ध दक्षिण अभियान में, सैयदमीर बख्शी ने उसे अपने साथ ले लिया था; किन्तु वृद्ध कृषक के प्रतिवेदन ने उसका विश्वास हिला दिया- भला जो शख्स गरीब रियाया के साथ इन्साफ़ नहीं कर सकता, वह दीग़र लोगों के साथ क्या जुल्म नहीं ढाह सकता" बुदबुदाते हुये, मीर बख्शी क्रोधावेश में आ गया। उसने मीर अमीन को बुलाया। वह तो, मिला नहीं; परन्तु उसका नायब नीलकंठ नागर तुरन्त पा उपस्थित हुआ।

"नायब, यह क्या तूफाने-बदतमीज़ी? यह क्या बेहूदा हरकत ? तुम्हें गरीबों की मदद करनी चाहिये, ना कि उसकी गाय भैंसों को छीन लिया जाये।"

"हुजूरे अकदस, ये लोग निहायत बदतमीज़ व बदमाश हैं। जब इस बुड्ढे खुर्राट से थोड़ा सा दूध मांगा, तब इसने साफ़ मनाह कर दिया।" बेचारा कृषक गिडगिड़ाया —"सरकार, मैं अत्यन्त निर्धन किसान हूँ। दो जून का खाना —"

नागर ने डाटा "तू तो ऐसा कह रहा है, मानो हम पैसे नहीं देते"। सैयद मीर बख्शी के भ्रूव चाप चढ़ गये "नागर, अगर कोई दूध देना नहीं चाहता, तब इसके मायने ये तो नहीं हैं कि तुम उसकी भैंस छीन लो"।

"फैजेगंजूर जरा सुनि—"।

"हम कुछ नहीं सुनना चाहते। जामो इसको अपने मालिक के पास ले जाओ और इसे खुश करो"

"जो हुकम" नायब मन ही मन अतीव प्रसन्न हुआ "चलिये सरकार, आपको खुश

करें। तुम हमसे कहते, इतनी छोटी-छोटी सी बात को मीर बख्शी साहब को तकलीफ़ देते शर्म नहीं आती।"

सैयद मीर बख्शी को इन शब्दों में व्यंग की गन्ध आई। आखिर उसने दिल्ली के सिंहासन पर कितने बादशाह बिठाये और उतारे थे। वह उड़ती चिड़िया भांपता था। उसने तुरन्त नायब को रोकते हुये कहा "तुम तो अभी से इसे धौंस दिखाने लगे। खबरदार, जो इस मुफ़लिस को परेशान किया। अब हमें तभी इत्मीनान होगा, जब तुम इसका तहरीरी समझौता दिखाओगे।"

"जैसा हुक्म-ए-आला" कह कर कोर्निस करता हुआ नायब नागर गुम सुम चला गया।

"अब आप ही देख लीजिये एतिमादुद्दौला साहब"

"नही नहीं यह तो पैर की खाक को सिर पर चढ़ाना है; यह सरासर, जुल्म है।" एतिमादुद्दौला ने अपना हुक्का गुड़गुड़ाते हुये अपने पुत्र, कमरुद्दीन खाँ, शमसुद्दौला, हैदर बेग दौग़लत आदि सभी सहयोगियों पर सार्थक दृष्टि दौड़ाई । सब ने स्वीकारात्मक मुद्रा में ग्रीवायें हिलायीं; किन्तु इससे मीर मुहम्मद अमीन को सन्तोष नहीं हुआ।

"जुल्म नहीं, जुल्म-ए-तुग़यान है । भला यह कोई निजाम हुआ, जिसमें सरदारों की नाक रियाया से कटायी जाये।"

"ऐसा हम कभी नहीं होने देंगे"

"होने क्या देंगे; हुआ है । वह बूढ़ा बदमाश एक अपनी भैंस की जगह पचास भैंस लेकर माना है।"

"ऐं ऐं ?" सब हक्के बक्के रह गये।

"महज 'ऐं' कहने से काम नहीं चलेगा; अब तो सब्र का प्याला लव रेज़ हो चुका है। इन सैयद भाइयों ने सल्तनत-एमुग़लिया को अपनी जागीर समझ रखा है। अपनी धींगा मुश्ती मचा रखी है। भला, शहंशाह फर्रुख सियर बेचारों ने क्या क़सूर किया था, जिसके खून का नाहक़ दरिया बहाया और इस तिफ़्ल मुहम्मद को गद्दीनशीन किया —"

"हम सब जानते हैं; मगर बोलिये मीर साहब क्या किया जाये" एतिमादुद्दौला ने फिर हुक्के की नली मुंह में दी।

"सब कुछ किया जा सकता है। अगर हम लोग इन दोनों सैयदों का साथ नहीं दें; तब क्या इनकी इतनी मज़ाल हो सकती है?" मीर मुहम्मद अमीन ने निश्वास ली "मैंने तो यह तहे दिल से तहय्या कर लिया है कि जब तक उन भैसों की कीमत मैं मीर बख्शी के खून से नहीं चुका लूंगा, तब तक चैन से नहीं बैलूंगा"

शमसुद्दौला ने मीर अमीन के पृष्ठ पर बरदहस्त रखते हुये कहा—"तब आप क्या यह समझते हैं कि हम चैन की बंशी बजा रहे हैं। बोलिये, इनसे आजिज़ कौन नहीं पा

गया है ? निजामुल्मुल्क इनकी बेहूदा हरकतों से ही तंग आकर, अपनी रियासत दखन लौट गये और बग़ावत का झंडा अब उन्होंने खड़ा किया है ।"

"और ऐसे आड़े वक्त में, सरदारों को नाराज़ कर मीर बक्शी निज़ामुल्मुल्क पर फ़तह के ख्वाब देख रहे हैं।" कनखियाँ मारते हुये कमरूद्दीन ने कहा। इस पर अमीन ने विभीषक अट्टहास किया "अब तो दोज़ख में ही निजाम को शिकस्त करने का वह मूजी ख्वाबी पुलाव पका सकेगा"

तभी हैदर वेग ने चुटकी ली "आप क्यों ऐसी उखड़ी उखड़ी बातें करते हैं । आप के ही सिर पर तो दखन की फ़तह का सेहरा रख कर मीर बख्शी का बड़ा भाई अब्दुल्ला लौट गया है"

मीर मुहम्मद अमीन का रक्त बोखला गया-अब तो मीर के सिर पर इस मूजी का खून सवार है; और वह जल्द-अज़-जल्द अपना हिसाब चुकता करेगा।' मीर ने वक्षस्थल को फुलाया। सभी सहयोगियों ने गम्भीरतापूर्वक विचार विमर्श किया। अन्त में, हैदर बेग दौग़लत ने बीड़ा उठाया"घबड़ाओ मत अमीन, जब तक यह दौग़लत तुम्हारे साथ है । मैं आप सब के सामने यह ऐलान करता हूँ कि जब तक यह मेरा खंज़र मीर बख्शी का सर नहीं काट लेता, यह अब म्यान में नहीं जा सकता" कहते हुये दौग़लत ने ग्वंग को कोष से निकाल लिया।

सब में हर्षोत्फुल्लता छा गई। यह दुरभिसन्धि हुई कि कल जब शाही फौजें कूच करें, तब वे सब षड्यंत्रकारी गड़बड़ी फैला देंगे और दौग़लत अपने जवानों के साथ मीर बख्शी पर आक्रमण करके शिरच्छेदन कर देगा।

दूसरा प्रातः काल। तिरोहित होते हुये तारकगणों की छटपटाहट; तभी पूर्व दिशा में रक्तिम रश्मिधाराओं की बाढ़-इधर दोग़लत अपनी कृपारण उन्हीं रक्तिम धाराओं से नहलाने लगा और किसी के शोणित से उसकी पिपासा शान्त करने की बाट जोहने लगा।

परन्तु विधाता के यहाँ अभी मीर बख्शी की ज़रूरत नहीं थी; जीवन-रज्जु में कुछ और गाँठें खुलनी शेष रह गयी थीं। जीवन के कुछ क्षण अब भी अवशेष थे। तभी तो सैयद मीर बख्शी ने आज घोड़े के स्थान पर हाथी पर सवारी शुरू की थी। हा हन्त, षड्यंत्रकारियों का सारा अभिसंधान धरा रह गया।

मीर मुहम्मद अमीन ने दीर्घश्वास ली; किन्तु एतिमादुद्दौला ने हिम्मत बंधायी "अरे बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी ? अगर यह पड़ाव नहीं, तो दूसरा कहां गया है?"

"कौन जीता है तेरी उम्र के सर होने तक" अमीन ने पुनः निश्वास छोड़ा। तभी दौग़लत ने उसे झकझोरा "अरे नाउम्मेद तो हमें होना ही नहीं चाहिये। किसी ने कहा है-हिम्मते मर्दा-मददे खुदा।"

"ठीक ! नाउम्मेद तो किसी को होना ही नहीं चाहिये । हमने एक नयी तरकीब सोची है" एतिमादुद्दौला ने नेत्रों से ही मुस्का कर उत्तर दिया। फिर क्या था ? सब सहयोगी उससे लिपट पड़े। पर एतिमा दुद्दौला ने धीमे स्वर में "यहाँ दीवारों के भी

कान हैं। कौन जाने घोड़े से हाथी पर सवारी किसी की साजिश हो”

सब ने ‘हाँ’ में ‘हो’ मिलाई और घनी देर तक कानाफँसी चलती रही।

शाही सेना ने दूसरा पड़ाव मध्याह्न के समय बूंद ग्राम के निकट किया। शाही शिविर पहले ही से लगे हुये थे। सर्वप्रथम शहंशाह मुहम्मद शाह की सवारी ने अपने पटनिकेत में प्रवेश किया; अल्लवयस्क होने के कारण, उसकी माता तथा अन्य शाही परिचारिकाओं ने सहगमन किया। पीछे-पीछे, मीर बख्शी तथा अन्य सामन्तों ने 'हिन्दुस्तान के सम्राट' को शाही शिविर तक सुरक्षित पहुंचा दिया और झुक-झुक कर कोर्निस करते हुये विदा ली। मीर बख्शी ने भी सभी सरदारों को अपने अपने शिविरों में जाने की प्राज्ञा दी और स्वयं पालकी में बैठने लगा।

ठीक उसी समय किसी के वमन करने की ध्वनि श्रुतिगत हुयी । मीर मुहम्मद अमीन और उसके सभी सहयोगी चिन्ताकुल दृग्गत हुये और सामने कमरुद्दीन खाँ को अपने पिता एतिमादुद्दौला को सहारा देते हुये देखा, जो रक्त के वमन पर वमन किये जा रहा था; सैयद मीर बख्शी उल्टे पाँव एतिमादुद्दौला के पास दौड़ा और अनुचिन्तित होकर उसने पूर्ण विश्राम की मंत्रणा दी “कोई बात नहीं। घबड़ामो मत कमरुहीन । इनके जईफ़ी का आलम है। ज़्यादा देर घोड़े पर सवार रहने से इनकी तबियत ख़राब हो गई है। अर्कगुलाब पिलाओ, वेद मुश्क दो और सब से बढ़कर दो पूरा आराम ।’

“मीर बख्शी साहब बजा फर्माते हैं । इन्हें पूरे आराम की ज़रूरत है। मगर अपने खेमें कितनी दूर हैं” पाणि मलते हुये मीर मुहम्मद अमीन ने कहा।

“कोई बात नहीं ! आखिर हमारा खेमा किस दिन काम आयेगा। अरे, खड़े-खड़े हमारा मुँह क्या देख रहे हो ? एतिमा दुद्दौला साहब को वहाँ क्यों नहीं ले जाते ?” आरक्त नेत्रों से मीर बख्शी ने अपने अनुचरों की ओर विलोका । वे सब पालकी छोड़ कर एतिमादुद्दौला को ले जाने लगे। इस प्रकार मीर बख्शी बिल्कुल एकाकी सा रह गया। उसी समय, हैदरबेग दौग़लत आगे बढ़ता दिखायी दिया। वह चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा था ‘हुजूर-ए-पाला, एतिमादुद्दौला मक्कार है; उसने पहले से खून मुंह में भर रखा है । वह स्वांग भर रहा है। अगर शक है, तब आप इसके इस कच्चे चिट्ठे को पढ़ कर देखिये ।”

उसने शीघ्र ही एक प्रार्थना-पत्र मीर बख्शी के हाथ में पकड़ा दिया। मीर बख्शी जैसे ही ध्यानपूर्वक उसे पढ़ने लगा, तभी दौग़लत ने दोगलापन किया। विद्युतगति से उसके वक्ष स्थल से छिपी कृपाण निकली जो पलक मारते मीर बख्शी के पेट में आर पार हो गई। तिस पर भी मीर बख्शी ने साहस नहीं छोड़ा। हत्यारे को उसने लात मारी; लात को दोग़लत ने पकड़ कर मीर बख्शी को भूमि पर गिरा दिया और विभीषक अट्टहास करते हुये उसका सिर काट लिया। सर्वत्र हाहाकार मच गया। मीर बख्शी के विश्वस्त अनुचर सैयद नूरुल्ला खाँ ने दौग़लत पर तुरन्त सम्प्रहार किया- दोनों में घमासान द्वन्द्व युद्ध हुआ, जिसमें दोनों वीरगति को प्राप्त हुये।

मारधाड़ के हाहाकार से, मीर बख्शी के शिविर में कृत्रिम रोगी एतिमादुद्दौला

घबड़ा रहा था; उसका घबड़ाना स्वाभाविक हो था। पिछले पड़ाव पर भाग्य धोखा दे गया था। चिन्ताकुल मुद्रा में बोला “कमरुद्दीन, मालूम तो कर.....” वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि मीर मुहम्मद अमीन ने दौड़ते हुये प्रवेश किया। एतिमादुद्दौला खुशी से नाच उठा “अहा-तुम अमीन" .....”

‘अमीन ही नहीं, साथ में यह भी कमीन” कहते ही मीर मुहम्मद अमीन ने एतिमादुद्दौला के चरणों पर सैयद हुसैन अलीखाँ का सिर जा पटका और शनिश्चरी अट्टहास किया “और ले यह नालायक भैस की कीमत”

एतिमादुद्दौला ने मीर मुहम्मद अमीन को हर्षोत्फुल्लता से बारम्बार अंक बारा “अल्लाह ताला को लाख बार शुक्र है। आज मुग़लों को, शैतानी सैयदी पंजों से निजात मिली । ज़ालिम वज़ीर जहन्नुम रसीद हुआ। आज तवारीख का खूनी बाब खत्म हुआ।

“कहाँ जनाब-ए-आली? हनूज़ दिल्ली दूर अस्त ! आप तो शतरंज के माहिर खिलाड़ी हैं । जब तक बादशाह आज़ाद है, वह अदने से अदने प्यादे को फर्जी बना सकता है।”

“यह तो तुम ठीक कहते हो। जो भी बादशाह को अपनी तरफ़दारी का सबूत दे सकेगा, फ़तह उसी की क़दमपोशी करेगी”

“फिर जल्दी कीजिये । मीर बख्शी मरहूम का वह चचाजात भाई गुलाम खाँ अपने दस्ते को लेकर शाही खेमे की तरफ़ जाता दिखाई दिया है।”

“औफ़ । कहीं किस्मत जीती बाजी फिर नहीं हरा दे !-चलो-चलो” एतिमादुद्दौला, अमीन तथा अपने सैनिकों को साथ लेकर तुरन्त शाही शिविर पहुंचा । उसका सन्देह ठीक निकला। सैयद गुलाम खां शाही शिविर के भीतर पहुँच चुका था।

राजमाता को जैसे ही मीर बख्शी की हत्या की सूचना मिली, उसने अपने शिविर के सभी रास्ते बन्द कर दिये । परन्तु गुलाम खाँ एक चतुर रणनीतिज्ञ था। उसने शिविर की किरमिच वाली दीवारों को काट कर अपना मार्ग बना लिया। तभी मीर मुहम्मद अमीन ने एतिमाद्दौला और अन्य षड़यंत्रकारियों के साथ, उसे जा घेरा और सैयदी टुकड़ी को हरा कर, ग़लाम खाँ को बन्दी बना लिया।

षड़यंत्रकारी मुग़लों में हर्ष का पारा वार लहरा गया; परन्तु अन्तःपुर से बादशाह को निकाल लाना बड़ी टेढी खीर थी । शाही सैनिक किसी को अन्दर प्रवेश नहीं होने देते थे। कुछ क्षण को, एतिमाहौला हतबुद्धि रह गया "अब क्या होगा ?”

“वही जो मंजूरे-खुदा होगा” मीर मुहम्मद अमीन विहस दिया। तभी सब ने देखा कि उसने मीर बख्शी हुसैन अली खाँ के कटे सिर को अपने हाथ में लिया और अपने सिर को एक शाल से ढककर स्त्रिया गार में वह बलपूर्वक प्रवेश कर गया और तत्क्षण राजमाता के सम्मुख जा खड़ा हुआ—“गुस्ताखी माफ़! मंलिका-ए- आलिया। मगर वक्त की पुकार है कि बदअमनी रोकी जाये; और यह बादशाह सलामत के बाहर रौनक-अफ़रोज़ होने पर ही मुमकिन है" कहते हुये मीर बख्शी का सिर सामने फेंक दिया। राजमाता विलख पड़ी।

"खबरदार, यह वही शातिर है, जिसने . सल्तनत-ए-मुग़लिया को बदनाम किया है। मुतवातिर बादशाहों को बिठाते मारते इसने तख्त-ए-ताउस को नापाक किया है।"

मीर मुहम्मद अमीन की इस सिंह गर्जना से सारी महिलायें थर्रा गयीं, तब तक अमीन ने राजमाता की गोद से मुहम्मद शाह खींच लिया और यह कहता हुआ उसे शिविर द्वार पर ले आया "आप मुतलक फिक्र न करें। यह आपकी अमानत अमीन के हाथों सब तरह महफूज रहेगी । निहायत खैरो खैराफियत के संग, खुशो खुर्रमी के साथ लौटा दी जायगी। आप इस नाक़िस की बात पर यक़ीन कीजिये।"

बाहर लाते ही, एतिमादुद्दौला ने एक दिग्गज से ऊँचे हाथी पर मुहम्मद शाह को बिठाया और स्वयं पीछे बैठ कर शाही सवारी बड़ी शानोशौक़त से निकाली । सैयदों से यह सहन कैसे हो सकता था ? . मीर बख्शी के भतीजे गैरत खाँ की गैरत यह बेगैरती कभी कबूल नहीं कर सकी। उसने तुरन्त युद्ध छेड़ा; उसके स्वामिभक्त विहिश्तियों और मेहतरों ने भी सामना किया । किन्तु सब मृत्यु के घाट उतार दिये गये। बादशाह ने चिढ़ कर मीर बख्शी के शिविर को लूटने की आज्ञा दे दी, जिसने सैयदों पर तबाही मचा दी।

वैसे तो मीर मुहम्मद अमीन को विश्वविख्यात सआदत खां बहादुर की उपाधि और पांच हज़ार जात और तीन हजार सवार का उच्च पद मिला, किन्तु उसे सर्वाधिक सन्तोष इस बात का था कि सैयदों के डेरे ही नहीं; किन्तु उनके नामोनिशां तक मिटा कर, उसने एक भैंस की दी हुयी कीतम पूरी चुका ली थी।

## अजित अवकाश में राशन भत्ता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जो कर्मी ड्यूटी या स्थिर नियुक्तियों के समय विभिन्न दरों पर राशन भत्ते के हकदार हैं, उन्हें अर्जित अवकाश के समय 50 रु० प्रतिमास की दर से राशन भत्ता मिला करेगा।

# पुलिस जनों के आंदोलन से शिक्षायें

---

## लेखक—श्री बी० बी० मिश्र

---

"समय पर लगा एक टांका नौ को बचाता है"—एक पुरानी कहावत है; किन्तु हानि उठाने पर भी, मानव कार्यों में और उससे भी अधिक सरकारी दफ्तरों में, इस पर कोई ध्यान नहीं देता है।

इसका ज्वलन्त उदाहरण है पुलिस समस्याओ, और पुलिसजनों की शिकायतों के प्रति सरकार का व्यवहार । एक लेखक ने प्रशासन के इस पहलू को इतिहास का "अँधा कोना" बताया है। हाल के देश व्यापी पुलिस आन्दोलन तथा तदुपरान्त विभिन्न

राज्य सरकारों द्वारा दी गई रियायतों की बौछारों ने इस कहावत के महत्व को और भी उजागर कर दिया है।

इसको समझने के लिए सिंहावलोकन में भारतीय पुलिस के इतिहास का विश्लेषण तथा अध्ययन करना होगा। यह सुविदित तथ्य है कि भारत में सभी राज्यों में, पुलिस संगठन, 1861 वाले पुलिस अधिनियम से नियंत्रित होते हैं और आधुनिक पुलिस व्यवस्था का ढांचा, 1902 वाले पुलिस आयोग द्वारा निर्धारित प्रतिरूप के अनुरूप है। देश में पिछली तीन दशाब्दियों में हुए सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों ने क्या अधिनियम, क्या संगठन और क्या सेवाशतों में कोई तदनुसार सुधार या स्थितिज्ञान नहीं किया है। दूसरी ओर, इस विकासशील जन कल्याणकारी राष्ट्र में, पुलिस के कर्तव्य कई गुणा बढ़ गए हैं।

क्योंकि 'पुलिस' संविधान के अनुसार राज्यों का विषय है, इसलिए अनेक बड़े राज्यों में पुलिस के कल्याण समेत, उसकी विविध समस्याओ से सुलझने के लिए पुलिस पुनर्गठन आयोग अवश्य गठित किये गये; किन्तु प्रार्थिक संकट या अन्य बहाने के सरल आधार पर, राज्य सरकारों ने उनकी सिफारिशों को लागू सही ढंग से नहीं किया। उदाहरणार्थ, थाने, क्षेत्र या जिले के क्षेत्राधिकार या कर्मचारीवृन्द से, कार्यभार की मात्रा या समय के मापदण्ड निर्धारण से, या उपकरण, परिवहन, अथवा बेतार से (जिनसे पुलिस की कार्यकुशलता सुधर सकती है) सम्बन्ध रखने बाले महत्वपूर्ण सुझावों को लागू करने में या तो देरी की गई या तोड़ मरोड़ दिया गया। इसी प्रकार, वेतनमान, आवासनिर्माण, सेवा के घंटे, साप्ताहिक छुट्टी या छुट्टी के दिनों में काम करने के एवज में अवकाश जैसे योगक्षेमों और सेवाशर्तों से सम्बद्ध प्रस्तावों में अनेकों राज्यों में कोई प्रगति नहीं हो सकी।

जबकि सरकारी या निजी क्षेत्रों या व्यावसायिक उद्यमों में निरत कर्मचारियों को उज्ज्वल भविष्य प्रदान किया जाता है, पुलिस सेवा अलाभकारी, अपेक्षाकृत कठोर और जटिल मानी जाती है। इससे कुदरतन, वांछित शारीरिक, मानसिक तथा मनोबैज्ञानिक स्वस्थता पर या सही तकनीक वाले ठीक भांति के शिक्षित लोगों की भर्ती पर, बुरा प्रभाव पड़ता है।

पुलिस को पिछला स्थान—साथ ही, पुलिस का अधिकांश व्यय सभी राज्यों में सशस्त्र पुलिस बटालियनों को गठित करने में लगाया गया और केन्द्र में, राजद्रोह तथा सुरक्षा की मांगों पर और न्यायव्यवस्था की भारी समस्याओं पर नियोजित किया गया। फलस्वरूप, अपराध, तथा अपराधिकता से निपटने वाली सच्ची नागरिक पुलिस, धन की कमी के कारण निराश होती रही। संक्षेप में, जबकि देश में सुनियोजित प्रगति फूली-फली, पूलिस योजना को पंचवर्षीय योजना में कोई स्थान नहीं होने के कारण, पुलिस के निवेश ने कोई प्रगति नहीं की।

समुचित और अच्छे वेतन पाने वाली पुलिस के रूप में जो टांके लगाने चाहिए थे, वे इस प्रकार नहीं लगे और ब्रिटिश लोगों द्वारा छोड़ी गई 'न्याय-व्यवस्था' वाली पुलिस की पुरानी कार्यकुशलता नष्ट हो गई। साथ में, जैसा पहले कभी नहीं हुआ था, राज्यों

में एक के बाद एक आने वाली सरकारों द्वारा पुलिस के राजनीतिकरण ने तथा नेताओं द्वारा हस्तक्षेप ने, पुलिस की दक्षता और अनुशासन की जड़ें काट दी। इस प्रकार, कुछ तो भविष्य की निराशा और कुछ कार्य-कुशलता में क्षति के कारण, पिछली तीस सालों में पुलिस में व्यापक असन्तोष फैला हुमा था। राजनीतिज्ञों में अवसरवादी, ऐसी उपजाऊ भूमि में समय-समय पर क्रांति के बीज बोने में कभी पीछे। नहीं रहे । सत्तारूढ़ सरकार को दिक़ करना तथा राजनीतिक क्षेत्र में अपने नेतृत्व को निखारना, ये दो मनोरथ उन्हें सिद्ध करने थे।

साथ ही साथ, राज्य सरकारें ऐसे राजद्रोहियों से निपटने में सदा तेज नहीं रहीं। पुलिस में असन्तोष फैलाने के लिए विनियम बुरी तरह अप्रभावी रहे । इस भांति, पुलिस में उत्तेजित असंतोष से बचने वाले उपरोष धीरे-धीरे नष्ट हो गए।

इतिहास का साक्ष्य-पिछला इतिहास बताता है कि पुलिस में अन्सतोष, 1942 में एक बार जमशेदपुर में और 1950 में एक बार हावड़ा में, कुछ पुलिस कर्मियों द्वारा सेवा नहीं करने की इच्छा के रूप में छुटपुट घटनाओं से प्रकट हुआ । सेवा की कुछ कठोर शर्तों पर उनकी समस्यायें स्थानीय थीं और कठोर उपायों द्वारा स्थानीय रूप से ही उनसे निपटा गया। फिर उनकी शिकायतों पर समुचित ध्यान भी दिया गया। तदुपरान्त, कुछ राज्यों में अपेक्षाकृत अधिक पुलिसजनों ने कुछ बड़े उपद्रव मचाये, जैसे बिहार में 1947 में, दिल्ली में 1967 में और उत्तर प्रदेश की सशस्त्र पुलिस द्वारा 1973 में विद्रोह हुए। __ ये आन्दोलन हेड कांस्टेबल तक के पद के निम्नश्रेणियों तक ही सीमित थे और खास अस्वस्थ कार्यस्थितियां, आवाससुविधाओं की कमी, सेवा की कठोरता तथा अत्यधिक दीर्घसेवा को ध्यान में रखते हुए कुछ हद तक कम वेतन, ऐसे विषयों से वे सम्बद्ध थे। केवल उत्तर प्रदेश को छोड़ कर, जहां सेना को शीघ्र बुलाना पड़ा था, (जिससे खूनखच्चरी हुयी, और फलस्वरूप बहुत समय तक अधीनस्थों और वरिष्ठ अधिकारियों में मनोमालिन्य रहा), अन्यत्र इन उत्पातों को स्थानीय नेतृत्व ने निबट लिया।

"अशर्फी लुटे और कोयले पर मुहर" ।' वाले ढंग से कुछ सम्बद्ध राज्यों ने इनके हर अवसर पर केवल कुछ सुधार कर दिए। समस्या को सदैव को हल करवाने वाली सरकारी इच्छा और बाद को उनके सच्चे अनुपालन में शिथिलिता का ज्वलन्त उदा हरण दिल्ली का है, जहाँ 1968 में पुलिस (जांच) आयोग द्वारा प्रस्तुत व्यापक सिफारिशों को अंश-अंश करके स्वीकृत करने में वर्षों लग गए।

**सुधारों का स्थगन**—तब भी, अनेकों सुधार वाले उपाय अभी तक पूरे नहीं हुए हैं । दिल्ली में पुलिस कमीश्नर (आयुक्त) के पद को बनाने वाली सिफारिश को नौ वर्ष स्वीकृति तथा क्रियान्वित करने में लगे । इसी प्रकार, यद्यपि पुलिस आयोग ने सामान्य सुधारों पर बड़ी व्यापक सिफारिशें की थी, तद्यपि उस आयोग की रिपोर्ट की प्रतिलिपियाँ राज्यों को केवल सूचना तथा मार्गदर्शन के लिए ही भेज दी गई।

सभी राज्यों में सुधार के विस्तार को फैलाने या सुधारों की प्रगति को समन्वयन करने के लिए, कोई केन्द्रीय प्राधिकार काम में नहीं लाया गया। आवास सुविधामों में

सुधार लाने के लिए या परिवहन आदि को आधुनिक बनाने के लिए कुछ सहायता या ऋण देने के अतिरिक्त, केन्द्र ने कोई भी खर्चीले उपाय नहीं किए। शाह प्रायोग ने जो नौकरशाही देरियों तथा राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण मुख्य बाधायें पायी हैं, वे राज्यों द्वारा अपने ही ढंग से निपटने के लिए छोड़ दी गई। इस सिद्धान्त पर कि पुलिस एक स्थान्तरित राज्य विषय है, केन्द्र की हस्तक्षेप नहीं करने के रवैये से एक जबरदस्त प्रति ध्वनि सुनाई पड़ती है।

**राष्ट्रीय पुलिस कमीशन**—पिछले आयोग से 75 वर्षों के बाद, केन्द्र में जनता पार्टी के सत्तारूढ़ होने पर, आखिरकार एक राष्ट्रीय पुलिस प्रायोग का गठन 1977 में हुमा । उसकी अन्तिम सिफारिशें दो वर्ष के अन्दर प्रस्तुत होनी हैं।

फरवरी 1979 में, आयोग ने मुख्यकर निम्नश्रेणियों की सेवाशर्तों, उनकी पदोन्नतियों के भविष्य पर तथा लोकदृष्टि में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने पर अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। तद्यपि उनके सुझावं केन्द्रीय सरकार के विचाराधीन हैं, उनके कुछ विवरण बाहर निकल आये और जनता को प्रकट हो गये हैं। शीघ्र कार्यवाही नहीं करने में देरी के कारण, शायद निष्क्रियता की शंका फैल गयी और हाल के देश व्यापी आन्दोलन का रूप धारण किया।

यह सर्व प्रथम पंजाब में शुरू हुआ और फिर तो भारत के सभी राज्यों में लगभग फैल गया। केन्द्रीय पुलिस दलों तथा रेल सुरक्षा बल तक ने इस बहती गंगा में हाथ पखारे । यह सही-सही बताना कठिन है कि भारतीय लोकदल तथा जनता पार्टी की फूट किस हद तक इस आन्दोलन को भड़काने में ज़िम्मेदार रही है, किन्तु यह तथ्य कि सर्व प्रथम पंजाब में यह विद्रोह उठा और फिर तमिलनाडु, केरल, जम्मूकश्मीर तक, इस अखिल भारतीय लहर में बह गये, यह सिद्ध करता है कि पुलिस में असन्तोष राजनीतिक कलह की सीमाओं को लांघ गया था। ___इस आन्दोलन से एक सबक साफ़ साफ़ उभर कर यह आया है कि पुलिस जैसा अनुशासित संगठन, अन्तिम प्रयत्न के रूप में, सामूहिक विद्रोह का पथ ग्रहण कर सकता है, क्योंकि पिछले दिनों इस उपाय ने अपने स्वामियों को घुटने टिकाने में सफलता पाई है। यह एक वह विभीषिका है, जिसकी कोई भी सरकार अनदेखी नहीं कर सकती है।

समाचार पत्र के स्तंभ में टिप्पणी करते हुए, एक लेखक ने कहा है—"शिकायतों को दूर करने के वैध साधन तो कई वर्षों पहले नष्ट हो गये थे, जब पुलिस महानिरीक्षक तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की स्थिति की बाकायदा जड़ें काट दी गई थीं और फलस्वरूप, नेतत्व और अधीनस्थों में विश्वास तथा श्रद्धा उठ गई थी। अपनी शिकायतों का सड़कों में ढिंढोरा पीटना किसी भी पुलिस जन को उचित नहीं है। किन्तु वैध, लोकतांत्रिक तथा शीघ्र कारगर प्रणाली के अभाव में, वह कर भी क्या सकता है ?"

वही लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है—'ऐसी स्थितियां पैदा करनी होंगी, जिनमें हर नागरिक स्वयं को निश्चित तथा सुरक्षित अनुभव करे। राष्ट्र के शारीरिक स्वास्थ्य के लिये, पुलिस परमावश्यक है। हरेक पुलिसजन में यह भावना जागृत होनी चाहिए कि

वह प्रशासन का, ठोकरें खाने वाली एक अनाथ या सौतेली सन्तान नहीं होकर, एक अत्यावश्यक, चहेता तथा अत्यधिक वांछित अंग है। सैनिक जवानों की भाँति, राष्ट्रीय स्नेह तथा चिन्ता की वह भी चाहना करता है और शीघ्र प्रवृत्त होता है; किन्तु 'सैनिकों' से भिन्न, सभी समय और अधिक पूर्ण रूप से, वह शान्ति काल में भी अपनी सेवा में व्यस्त रहता है। उसकी न्यायोचित मांगें ठीक ठीक पूरी होनी चाहिये।"

आज देश इतिहास के संकट की घड़ी से गुजर रहा है। मैटरनिच के शब्दों में, लोकतंत्र के नाम पर सर्वत्र अराजकता का बोलबाला है। यदि इस संकट बेला में, दुर्व्यवस्था के विरुद्ध, प्रबुद्ध लोकमत से समुचित ढंग से समर्थित, एक सन्तुष्ट और सुगठित पुलिस देश के पास अड़वाल के रूप में नहीं होगी, तब न्याय-व्यवस्था के तंत्र के नष्ट-भ्रष्ट होने से, घोर विपत्ति टूट पड़ेगी। मुग़ल या ब्रिटिश शासन के अन्तिम दिनों वाला शिक्षायें (जो इतिहास से सीखी हैं) व्यर्थ नहीं जानी चाहिये। समय पंख लगा कर उड़ रहा है।

---

## सूक्ति सुधा

कटु वचन से किया हुआ भयानक घाव नहीं भरता।

**—विदुर।**

दु:खी व्यक्ति भी सज्जन से मिलते ही प्रसन्न हो जाता है।

**—वारणभट्ट।**

क्षमा के समान हितकारी और सम्पन्न वनाने वाला कोई दूसरा उपाय नहीं है।

**—वेद व्यास।**

बादलों के समान, सज्जन भी हर वस्तु को दान देने के लिए ही ग्रहण करते

**—कालिदास।**

जो मनुष्य श्रान्त हो कर भी अपने कार्यों में दृढ़ता से प्रवृत्त रहता है, उसी को लक्ष्मी मिलती है।

**—मनुस्मृति।**

## * पहेलियाँ *

दो अक्षर की वह छोटी सी,
फिर भी बड़ी कहाती है।
चाट चाट कर खा जाते सब,
ऐसी मन को भाती है ॥1॥

उत्तम जन्मो वंश में,
जग छेदे बहु बार।
फूंक पाय मैं कूकती,
मोह सब संसार ॥2॥
दो अक्षर का मेरा नाम,
रख लो उल्टा तुम परिणाम ।
भार सदा मैं ढोता रहता,
तब भी डंडे गाली सहता ॥ 3 ॥

उत्तर :—1. बड़ी , 2. बासुरी, 3. खर

# 13वौं अन्तरेंज एथलीट प्रतियोगिता में, अजमरी को हराकर श्रीनगर सिरमौर

दिनांक 25 से 28 अक्टूबर 79 तक नीमच में खेली गई 13वीं अन्तरेंज दौड कद प्रतियोगिता में चार बार के चैम्पियन, अजमेर रेंज से श्रीनगर ने विजय-ध्वज छीन ली, किन्तु इसके लिए उसे हर स्पर्धा में एड़ी से चोटी तक का पसीना एक करना पड़ा; फिर भी वह रेंज केवल अजमेर से 4 ही अंक से | आगे (154 अंक) पा सकी। 129 अंक पा कर हैदराबाद रेंज तृतीय रही। .

आठ पिछले रिकार्ड टूटे और एक बराबर रहा । चक्के को 48.34 मी० और घन को 61.02 मी० फेंक कर प्रार० एस० बल ने 1975 वाले रिकार्ड भंग किये और 'सर्वोत्तम एथ्लीट' का नाम पाया, जब कि पी० कंजम्बू 100 मी० और 200 मी० दौड़े

जीत कर सब से तेज धावक माना गया।

इस प्रतियोगिता का संक्षिप्त विवरण पिछले संस्करण में दिया गया था। सारे अन्तिम परिणाम इस प्रकार रहे :—

**100 मीटर दौड़**—पी० कंजम्बू (अजमेर) I; के० जी० जोजेफ (मद्रास) II व मिठाई लाल (दिल्ली) III.

**200 मीटर दोड़**—पी० कंजम्बू (अजमेर) I; दया सिंह (श्रीनगर) II व नियामुद्दीन (अजमेर) III.

**400 मीटर दौड़**—दया सिंह (श्रीनगर) I; बधु सिंह II व पीटर इंड III

**800 मीटर दौड़**—टी० के० कंजूमन (है०) I; एम० एम० पाटिल (श्रीनगर) व एम० वी० वर्गीज (दिल्ली) III.

**1,500 मीटर दौड़**—टी० के० कंजूमन (है) I; एम० एम० पाटिल (श्रीनगर) व चन्दर प्रकाश (है०) III.

**5,000 मी० दौड़**—प्रदीप कुमार (श्रीनगर) I; प्रेम चन्द (नी०) II व हरी सिंह (नी०) III.

**10,000 मी० दौड़**—रसदेव सिंह (है०) I; ए०एस० योनम (श्रीनगर) II व प्रेम चन्द (नी) III.

**3,000 मी० (स्टीपल चेज)**—प्रदीप कुमार (श्रीनगर) I; चन्द्र भान (है०) II व डी० मुजावर मज०) III.

**मेरार्थन दौड़**—रसदेव सिंह (है०) I; ए०एस० योनम (श्रीनगर) II व रामभगत (गौ०) III.

**110 मी० बाधा**—दीदार सिंह (पटना) I; गुरदयाल सिंह (अज०) II व तरणजीत सिंह (श्रीनगर) III.

**डिकथलन**—प्रभात सिंह (श्रीनगर) I;

जनक चन्द (है०) II व प्रार० के० बुधानिया (प्रज०) II.

**ऊँची कूद**—सत्यवीर सिंह (अज०) I; प्रभाती लाल (श्रीनगर) II व सत्यदेव सिंह (गौ०) III;

**चौड़ीकूद**—सुधाकरन (दि०)I; प्रभाती लाल (श्रीनगर) II व प्रभाती सिंह (श्रीनगर) III.

**पोलवॉल्ट**—प्रेमचन्द्रन (मद्रास) I; पी० गोपालन (मद्रास) II व रामगोपाल (हे.) III.

**त्रिकूद**—सुधाकरन (दि०) I; उन्नीकृष्णन (मद्रास) II व बी दत्ता (पटना) III.

**घनफेंक**—पार०एस० बल. (नी०) I; जे० एस० भुल्लर । (दि०) II व पार० एस० राई (अज०) III.

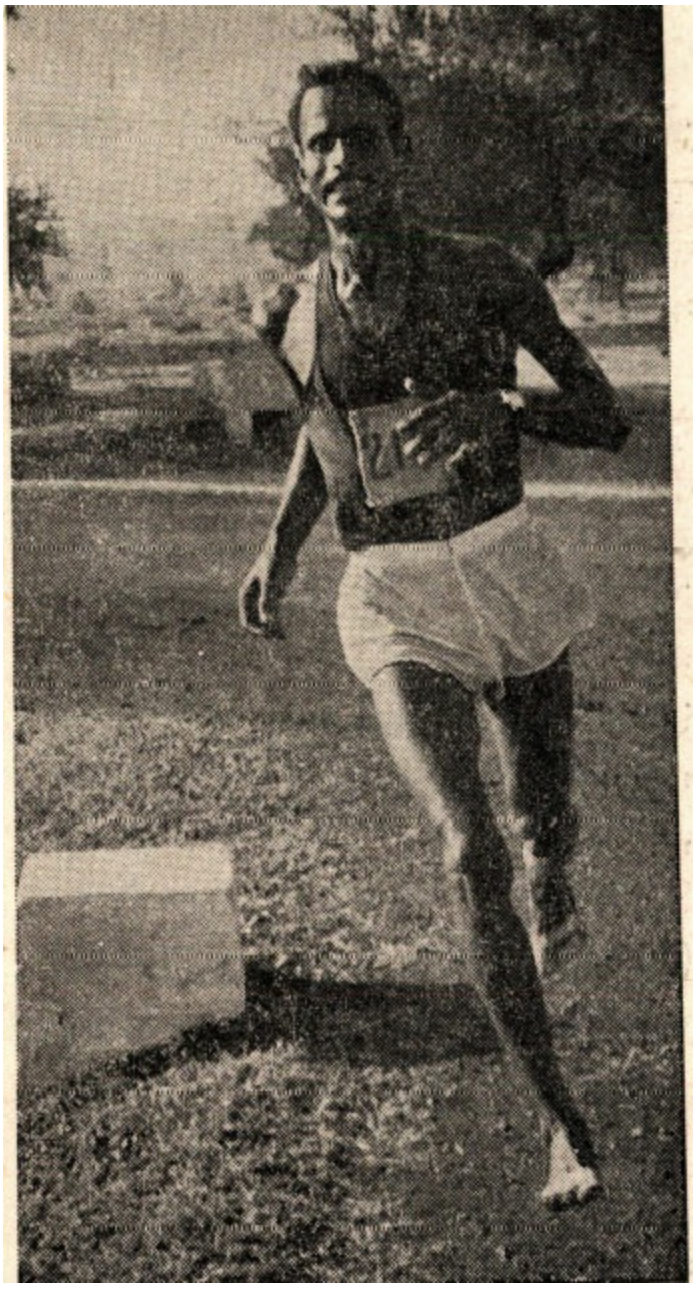
**शॉट पुट**—एस० एस० बल (मद्रास) I; एच० पी० एस० भुल्लर (दि०) II व ए० पी० एस० मान (है०) III.

**नेजा फेंक**—रमाशंकर (अज०) I; बी० सुशीलम (कलकत्ता) II व बैजनाथ (कलकत्ता) III.

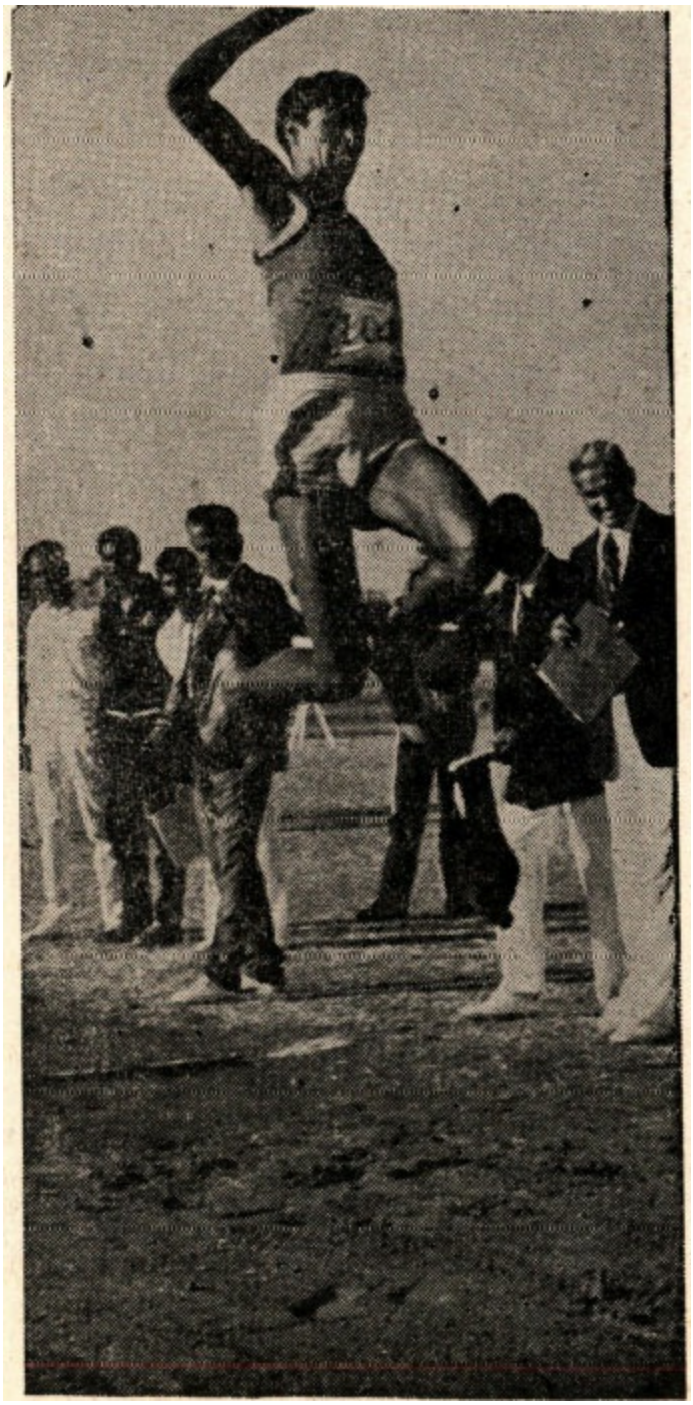
**चक्का फेंक**—प्रार० एस० बल (नी०) I; एस०एस० बल (मद्रास) II व एच० पी० एस०, भुल्लर । (दि०)

**4X100 मी० रिले दौड़**—अजमेर रेंज I; गौहाटी रेंज II व दिल्ली रेंज III.

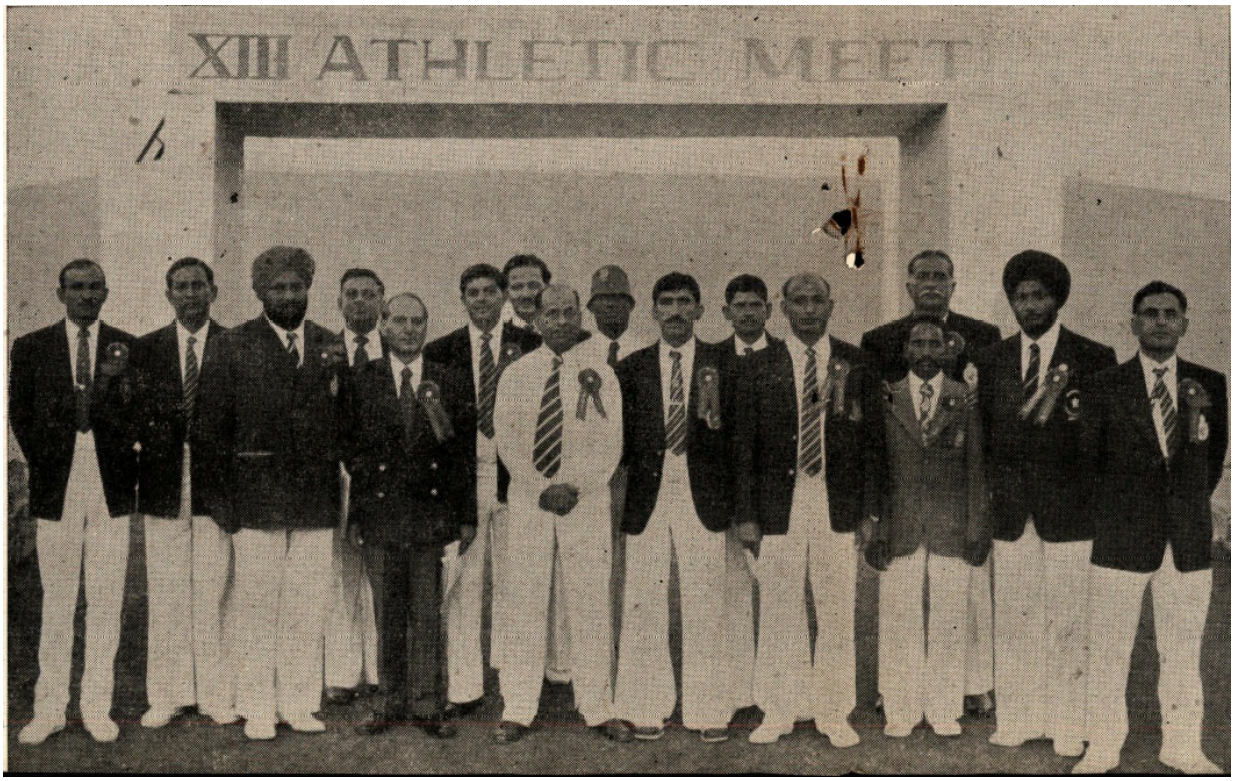
**4x400 मी० (रिले) दौड़**—श्री नगर I; अजमेर II व हैदराबाद III.



रस देव सिंह



सुधाकरन



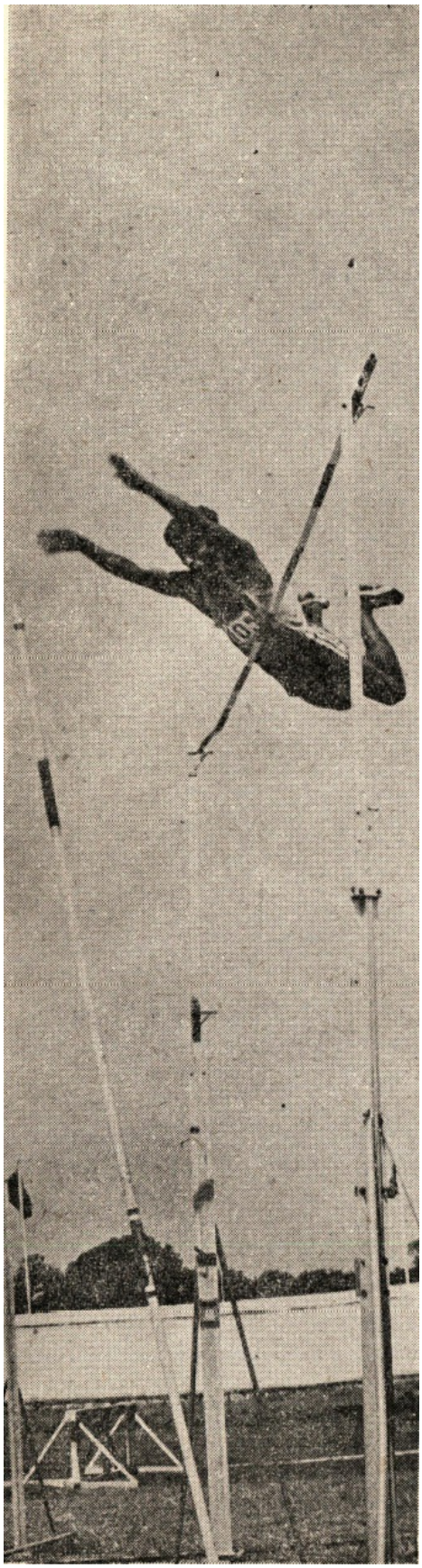

टीम प्रबन्धकों तथा शिक्षकों के साथ ब्रिगेडियर खंदूरी उपनिदेशक प्रशिक्षण तथा श्री पी०. आर० राजगोपाल महानिदेशक .



महानिरीक्षक श्री दत्ता चौधरी के कर-कमलों से ट्राफी पाते हुये श्री टी.एस. गहा खेल शिक्षक



अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी प्रदीप कुमार



प्रेम चंद्रन



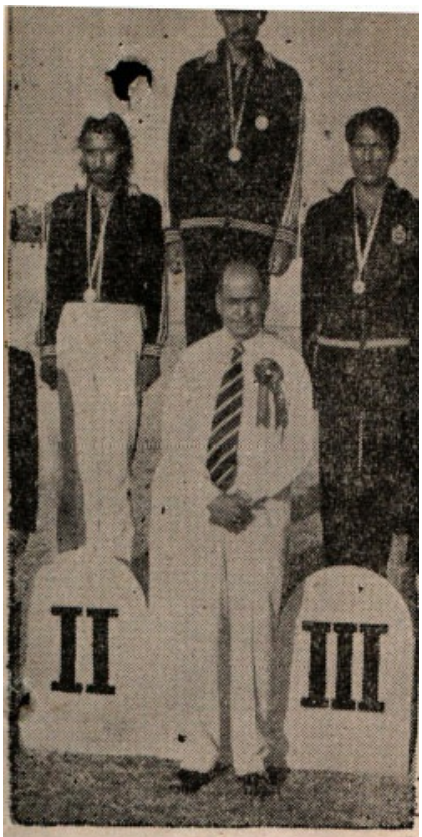
एस० एस० बल



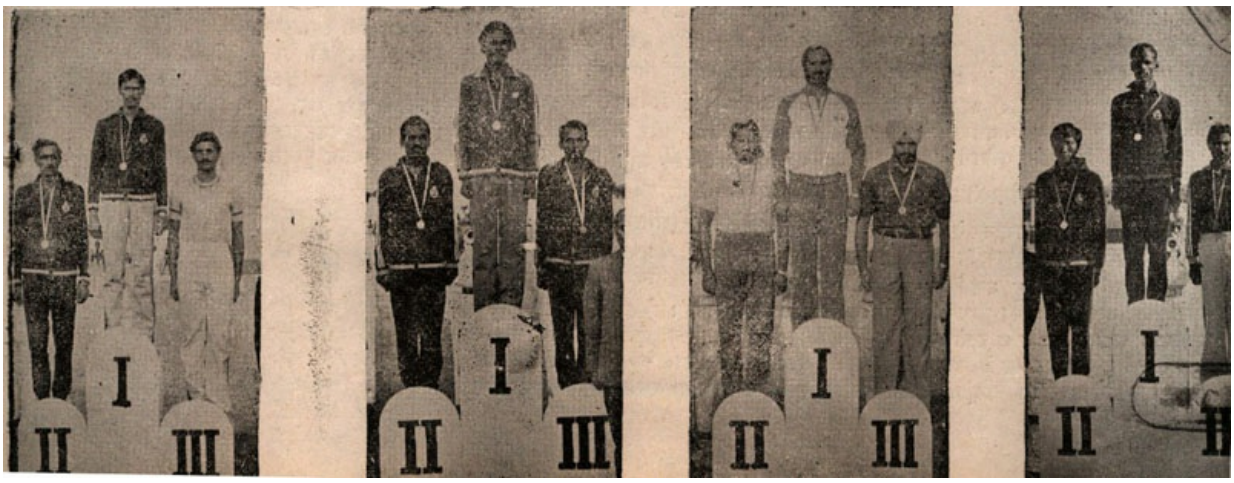
## पिछलं अक्टूबर में
## 13वीं अन्तरेंज एथ्लीट प्रतियोगिता
## के
# विजय सोपान

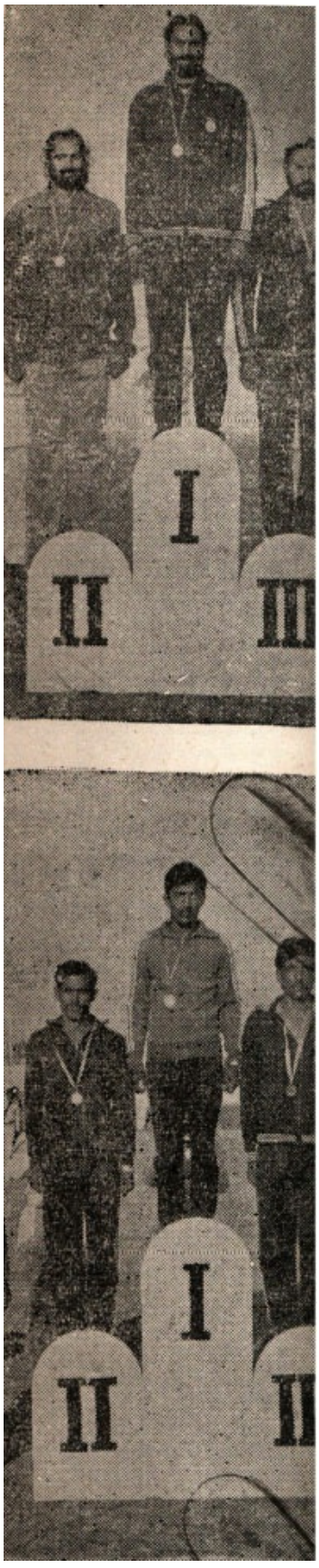
बायों से दायीं ओर :

1. चक्का फेंक : आर. एस. बल I; एस. एस. बल II व एच. पी. एस. भुल्लर III.
2. पोलबोल्ट : प्रेमचन्द्रन I; पी. गोपालन II व रामगोपाल III.
3. 10,000 मी० दौड़ : रसदेव सिंह I; ए. एस. योहनान II व प्रेम चन्द III.
4. शॉटपुट : एस. एस. बल I; एच. पी. एस. भुल्लर II व ए. पी. एस. मान III.
5. 800 मी० दौड़ : टी. कंजूमन I; एम. एम. पाटिल II व वी. एम. वर्गीज III.
6. चौड़ी कूद : के. सुधाकरन I; प्रभाती लाल II व प्रभात सिंह III.
7. 400 मी० दौड़ : दयासिंह I; बचूसिंह II व पीटर इंड III.
8. 500 मी० दौड़ : प्रदीप कुमार I; प्रेम चन्द II व हरीसिंह III.


II
III


I
II
III


I
II
III
I
II
III
I
II
III
I
II


I
II
III
I
II
II

**क्रीडाक्षेत्र**

## तमिलनाडु तैराकी में के०रि० पु० बल द्वारा तीन राष्ट्रीय रिकार्ड भंग

दिनांक 1-2 अक्टूबर 79 को अन्ना तरणताल, मद्रास में सम्पन्न हुई, 12वीं तमिलनाडु तैराकी प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल ने तीन राष्ट्रीय रिकार्ड भंग किये।

स० इ० टी० थोबा सिंह ने उनमें से दो को सुधारा। 100 मी० बेस्ट स्ट्रोक में, ए. एस. बरार द्वारा 1976 में स्थापित 1 मि० 15.4 सें० वाले रिकार्ड को उसने 1 मि० 14.4 से० से सुधारा। 200 मी० बेस्ट स्ट्रोक में, उसने 18 वर्षों से चला प्राता कीर्तिमान अपने 2 मि० 43.1 से० द्वारा भंग किया। स० इ० टी. जे. जैकब ने 200 मी० बटरफ्लाई में 2 मि० 25.5 से० में पूरा किया तथा 1977 में वाई. सी. शिन द्वारा स्थापित 2 मि० 28 सें. वाला रिकार्ड तोड़ा। तमिलनाडु को 17-7 से हरोकर, के० रि० पु० बल ने जलपोलो जीती।

कुल मिलाकर, जलपोलो के 11 पदक समेत, 29 स्वर्ण पदक तथा 11 रजत पदक, के० रि० पु० बल ने इस प्रतियोगिता में प्राप्त किये । राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता के लिए, तमिलनाडु ने इस प्रतियोगिता में लेने वाले हमारे पाठ तैराक अपने प्रतिनिधि बनाने के हेतु मनोनीत किये हैं। .*

## अन्तर्राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता

श्रीलंका, बंगलादेश तथा भारत के त्रिकोणीय तैराकी प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल के ये पांच तैराक चुने गये हैं; 1. स० इ० थौबासिंह 2. स० इ० टी. जे. जैकब 3. हे० का० के सोमशेखरन 4. डी० क्लीमेंट और 5. हे० का० के० ऐलोसियस । यह प्रतियोगिता 9-11 नवम्बर 79 को हुई, जिसमें हे० का० के० सोमशेखरन 100 मी० फ्रीस्टाइल में प्रथम तथा स० इ० टी० थोबासिंह 100 मी० ब्रेस्टस्ट्रोक में द्वितीय आया। x

## 36वीं राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता

बेंगलूर में 30 अक्टूबर से 4 नवम्बर 79 तक आयोजित 36वीं राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में के. रि. पु. बल के दस जवानों ने तमिल नाडु राज्य की ओर से भाग लिया। उनमें पाठ तैराक थे प्रोर दो गोतेखोर थे। रक्षा सेवामों और रेल के उपरान्त, उनका स्थान तीसरा रहा। उन्होंने तमिलनाडु राज्य के लिये 6 स्वर्ण, 1 रजत और 5 कांस्य पदक जीते।

टी० थोबासिंह ने 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में प्रथम स्थान ही केवल नहीं पाया, साथ में 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में एक नया राष्ट्रीय रिकार्ड स्थापित किया। x

## के. रि० पु० बल के जिम्नास्टों को सफलतायें

बम्बइ में 24 अक्टूबर से 4 नवम्बर 79 तक खेली गइ 22वीं राष्ट्रीय जिम्नास्टिक प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल के जिम्नास्टों ने त्रिपुरा राज्य की ओर से भाग लिया और 7 स्वर्ण, 2 रजत भोर 2 कांस्य पदक जीते।

पुरुष वर्ग में, इ. एन. बी. भोंसले होरॉइज़ेन्टल (क्षतिज) तथा पैरेलल (समान्तर) बारों में प्रथम रहा और प्रतियोगिता का द्वितीय सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट वह घोषित हुआ। स० इ० भट्टाचार्य ने रोमन रिंग तथा वॉल्टिग हार्स में प्रथम स्थान पाया। ला. ना. के. राजेन्द्रन वॉल्टिग हार्स में द्वितीय स्थान पर रहा। ना० चरणजीत सिंह बीस वर्ष से कम आयु वाले युवकों वाले वर्ग में, सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट माना गया। उसने होरॉइज़ेन्टल (क्षतिज) तथा समान्तर (परेलल) बारों में प्रथम स्थान पाये और रोमनरिंग तथा पोमेल हार्स में तृतीय स्थान पर रहा। *

## द्वितीय गांधी स्मारक वाली बाल टूर्नामेंट में हमारी विजय .

भोपाल में, खेले गये अखिल भारतीय महात्मा गांधी स्मारक वालीबाल टूर्नामेंट में, 25 दिसम्बर को के. रि. पु. बल दिल्ली ने सी. सु. बल को 15-13, 15-1 और 15-8 से हरा कर, चैम्पियनशिप जीती। इससे पूर्व, अर्द्ध-फाइनल में, इसने भारत-तिब्बत सीमान्त पुलिस को परास्त किया था।





# नीमच रेंज में महानिदेशक का दौरा

### लेखक—कां० भरत सिंह 50 बटा०

श्री आर.पी. राजगोपाल, महानिदेशक, के. रि. पु. बल 25 अक्टूबर 79 को नीमच गये और चांदमारी टीम के लोगों से मिले।

यह टीम अखिल-भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता के लिये, नीमच में जुलाई 79 से कालबाह्य अभ्यास कर रही है। मैनेजर (प्रबन्धक)-सह-शिक्षक के रूप में, श्री तेजिन्दर सिंह उप पुलिसाधीक्षक (के.प्र. कॉलेज II) इस टीम की देखरेख कर रहे हैं पिस्तौल तथा रायफल के अभ्यास में तो वह भाग भी ले रहे हैं।

महानिदेशक ने श्री एच. कामथ (उपपुलिसाधीक्षक) तथा प्रशिक्षकों द्वारा प्रायोजित निरस्त्र संघर्ष का प्रदर्शन भी देखा और बहुत प्रभावित हुये।

मोटर-परिवहन-प्रशिक्षण केन्द्र का भी उन्होंने निरीक्षण किया और वहां किये जाते हुये उत्तम काम की प्रशंसा की।

**स्वास्थ्य संदेश :**

# नशा बन्दी

# लेखक का० भरत सिंह 50 बटा0

नशाबन्दी एक ऐसा सामाजिक, और कानूनी नियंत्रण है, जिससे नशीली वस्तुओं के व्यसन का अन्त हो। नशे के अन्तर्गत वे समस्त पदार्थ आते हैं, जो शारीरिक और मानसिक चेतना को अवचेतन कर देते हैं। हुक्का, बीड़ी, सिगरेट, अफ़ीम, गाँजा, भांग, चरस, शराब और एल० सी० एम० जैसी नशैले पदार्थों की असंख्य संख्या है।

**अभिप्राय**—नशाबन्दी का अभिप्राय उन सभी नशीली वस्तुओं के परित्याग से है, जिनके सेवन से मनुष्य अपनी सुधबुध तथा मनुष्यता खो बैठता है। यह एक ऐसी अमली बुराई है, जिसे मनुष्य जान बूझ कर अपने गले मढ़ लेता है । इसके खाने पीने या टीके लगाने से उसे क्षणिक आनन्द तो मिलता है, परन्तु इसके दुष्प्रभाव अतीव दीर्घकालिक ही नहीं, कभी-कभी बड़े संघातक होते हैं। दुख-दर्द तथा दरिद्रता का यह वह रास्ता है, जिससे मनुष्य अपना सर्वस्व स्वाहः कर देता है। यह अमानुषिक भावना पैदा करने वाला वह रोग है, जो माँ-बहिनों के पवित्र अंचल तक को गन्दा कर देता है। इस गन्दगी से बचने के समस्त उपाय नशाबन्दी में आते हैं।

**इतिहास**—इतिहास साक्षी है कि आर्य लोग शुरू से पणे या शादी-व्याह के उत्सवों पर सोम रस का पान करते आये हैं। कुछ विद्वान सोमरस को नशीली वस्तु का पर्याय मानते हैं। आयुर्वेदिक "धन्वन्तरि" जैसे ग्रन्थ में, सोमरस का औषध के रूप में उल्लेख हुआ है। अंग्रेजी में, [RUM] को (Regular Use of Medicine) 'नियमित रूप से प्रौषध-सेवन' का संक्षिप्त रूप बताते हैं। हर बड़े डॉक्टर या हकीम ने इसकी प्रशंसा की है। परन्तु सीमित रूप में ही, इसका सेवन हितकर बताया गया है।

मुग़ल बादशाह जहाँगीर शराब का बड़ा शौक़ीन था। वह अपनी बेगम नूरजहाँ से मस्ती में आकर कहा करता था—

आधा सेर शराब हो । सेर भर कबाब हो। सारी सल्तनत तेरी, खूब हो या खराब हो ।

हमारा देश ही नहीं, संसार का कोई देश भी ऐसा नहीं है, जो नशे का शिकार नहीं हो । हाँ, इतना जरूर है कि हर सेवन करने वाला व्यक्ति दूसरों को इसका सेवन नहीं करने की सलाह देता है । अन्ततः उसे ही नशे के सब अवगुणों का सच्चा ज्ञान होता है।

**मद्यपान के कारण**—पहले तो मनुष्य शौक़ में नशा करता है। फिर वह आदत अमल का रूप धारण कर लेती है। कुछ लोग शराब इस उद्देश्य से पीते हैं कि 'ग़म' मिट जायेगा; लेकिन किसी शायर ने सही लिखा है—'ग़म का सदमा मिट नहीं सकता।"

कुछ उदंड लोग अपनी धाक जमाने के लिए पीते और पिलाते हैं तथा बलात्कार तक कर बैठते हैं। कुछ नासमझ लोग बीमारी का बहाना लेकर शराब की शरण लेते हैं तथा कुई सर्दी भगाने का फार्मूला मान बैठते है, यद्यपि डॉक्टरी राय इसके सर्वथा

विपरीत हैं।

**दुष्प्रभाव**—डॉक्टरों का मत है कि नशीली वस्तुओं के सेवन से, अनेक घातक रोग उत्पन्न होते हैं और दवाइयों का प्रभाव कम होता है। अधिक शराब पीने वाले पर माफिया तक के इन्जेक्शन का प्रभाव शीघ्र नहीं होता। होमियोपैथी में इन चीजों के सेवनकर्ता को उन दवाइयों से बहुत ही कम लाभ होता है।

भारत जैसे गरीब देश में, सस्ती होने के कारण कच्ची शराब का चलन ज्यादा है। इस शराब में बबूल के छिलके, नौसादर, टार्च के बैटरी-सेल कूट कर तथा मरे हुये मनुष्य की पीस कर हड्डी आदि गन्दी गलीज़ वस्तुयें डाली जाती हैं। ऐसी दूषित शराब पीने के भीषण परिणाम नित्य प्रति अखबारों में मौतों के रूप में छपते रहते हैं; जो कोई कभी बच भी जाता है, तो अन्धा या पक्षाघात जैसे नारकीय बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है।

इसका आर्थिक पहलू और भी दर्दनाक है। 'बाप शराब-पियेंगे-तब बच्चे भूखे मरेंगे-ऐसे पोस्टर सरकार ने जगह-जगह पर अकारण नहीं लगा रखे हैं। शराबी अपना पैसा बर्बाद करता है; अपना घर बर्बाद करता है। दिनों-दिन वह दरिद्रता तथा भुखमरी का शिकार रहता है। बेचारे बच्चे दो दो दाने को मोहताज होते हैं। मुन्शी प्रेमचन्द जी ने दो कहानियाँ-'पूस की रात' और 'क़फ़न' में बड़े मार्मिक ढंग से इसका भयानक रूप चित्रित किया है। गाँव वाले चन्दा इकट्रा करके कफन को पैसे देते हैं। परन्तु बाप-बेटे मयखाने में जाकर जश्न मनाते हैं !

आगा हस्र कश्मीरी ने इस पर यों तीखा प्रहार किया है—

यह सुख नहीं आंख का नशा है, पिया जो यह विष, बुरा करोगे । तुम अपने हाथों से अपनी नैया, नहीं डुबोप्रोगे तो क्या करोगे ॥

आजकल नशे की गोलियां का, जिनमें एल० सी० एम० की मात्रा होती है, बहुत इस्तेमाल शुरू हो गया है । भारत में इसका उत्पादन नहीं होने से, बाहर से मंगाना पड़ता है, जो बहुत मँहगा पड़ता है । एक किलोग्राम एल० सी० एम० की कीमत लगभग एक लाख सत्तर हजार रुपये होती है। तिस पर, इसके सेवन से रक्तसंचार तेज और विषला हो जाता है। अमरीकी और भारतीय चिकित्सकों ने कैंसर रोगियों की 75% संख्या धूम्रपान, नशीली वस्तुओं के सेवन से बतायी है।

सामाजिक पतन की तो ये नशीली वस्तुयें, जड़ हैं। 'सुरा-सुन्दरी और श्री'—आदमी की तीन सबसे बड़ी कमजोरियां हैं। इनमें से एक के चक्कर में भी फंस कर प्रादमी गुप्त से गुप्त भेद उगल देता है। पुलिस हत्या प्रादि गंभीर अपराधों के जानने के लिए इसका प्रायः प्रयोग करती है। भ्रष्टाचार के लिए यह मार्ग प्रशस्त करती है। जो काम बड़ी-बड़ी रक़मों से नहीं होता, वह एक बोतल तथा तोले भर अफ़ीम से हो जाता है। यह भी एक प्रकार की घूस नहीं, तो और क्या है ?

गुंडे खुद पी कर और धोखाधड़ी से . . बड़े लोगों को पिला कर उनकी प्रतिष्ठा पर हाथ डालते हैं; बलात्कार करते हैं। इनकी उइंडता का नग्न नत्य सिनेमा में आसानी से

देखा जा सकता है। इन बुराइयों का प्रभुत्व किशोर-किशोरियों पर बहुत पड़ता है; वे सर्वनाश के रास्ते पर आ खड़े होते हैं।

**फोर्स में सांकेतिक नाम**—कोई भी जवान शराब का सीधा नाम बिरला ही लेता है। बाज़ार जाने वालों से, गुर्दे की बीमारी, लालपरी, कालापानी, कड़वा पानी आदि भांति भाँति के छद्मनामों से शराब को मँगाया जाता है या केवल अंगूठे को मुंह की तरफ पीने का इशारा कर भाव व्यक्त किये जाते हैं।

**निवारण**—समाज का हर जिम्मेदार सदस्य यही चाहता है कि नशे से बचा जाए। नशाबन्दी के लिये, बड़े-बड़े सम्मेलन तथा समितियां बनती हैं। सामाजिक और संवैधानिक कानून बनाये जाते हैं। सिगरेट पर वैधानिक चेतावनी छपी होती हैं कि उसका पीना हानिकारक है; किन्तु कौन उस पर ध्यान देता और दिलाता है। महज लफ्फाज़बाजी से काम नहीं चलता। यही कारण है कि नशेबाजों की संख्या घटने के स्थान पर, बढ़ रही है।

केन्द्र सरकार ने राज्य सरकारों को नशाबन्दी की सलाह दी है और उसके फलस्वरूप कमी को, आधी अपने आप ओढ़ना स्वीकार किया है। किन्तु राज्य सरकारें इतने भारी घाटे को नैतिकता के लिये ओढ़ने को तैयार नहीं हैं, यद्यपि इस घाटे को वे अन्य करों द्वारा पूरा कर सकती हैं। अभी अप्रेल 79 को, बिहार में पूर्ण नशाबन्दी कर दी गई, किन्तु एक मास बाद ही, 18 मई 79 को न्यायालय ने कानून रद्द कर दिया। उत्तर प्रदेश में तो कोई कानून बन ही नहीं सका। फिर भी वहाँ के राज्य परिवहन बसों पर ड्राइवर की सीट के सामने लिखा रहता है-शराब पीना विष से भयंकर है। साफ़ जाहिर है कि शराब पीकर व्यक्ति सारी गाड़ी के यात्रियों को दुर्घटनाग्रस्त कर सकता है, जब कि ज़हर खाकर कोई अकेला ही मरेगा। इसी प्रकार की चेतावनी हरियाणा में बसों के मार्गों पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखी मिलेगी। 1969 में उत्तराखंड के जिलों में महिलाओं ने पुरुषों के नशे से तंग आ कर, नशाबन्दी का पान्दोलन चलाया था कि शीघ्र ही कानून बनाया जाये; नही तो, वे खाना नहीं बनायेंगी और भूख हड़ताल करेंगी। तब कहीं जा कर, वहाँ नशाबन्दी कायम हुई। 1974 में तमिलनाडु को ड्राई एरिया (शुष्क क्षेत्र) घोषित किया गया।

**उपसंहार**—नशा करना सामाजिक बुराई है। कलह, हरामखोरी और व्यय बढ़ता है। परिवार के लोगों को परेशानी भोगनी पड़ती है। नशे में धुत मनुष्य बीवी के प्यार और बच्चों की ममता की अवहेलना करता है। कभी-कभी तो वह बहन और पत्नी में फ़र्क नहीं समझ पाता। अश्लील गालियों से पड़ोसियों की नींद हराम करता है।

पर मजे की बात यह है कि पुरुष ही नहीं अब स्त्रियां भी शराब का भोग करने लगी हैं। बराबरी का ज़माना जो हुआ। आज तक जो गृहरिणयाँ कुल की मर्यादा थामे थीं, वे ही अब लज्जाहीन बन रही हैं। छोटे-छोटे बच्चे नशे के शिकार हो रहे हैं। स्कूल व कॉलेजों में नशेबाज़ी का बोलबाला है। इसमें पाश्चात्य सभ्यता का बहुत हाथ है। हिप्पियों ने पाकर यहाँ का वातावरण दूषित किया है। इधर सिनेमा ने रही-सही कमी पूरी कर दी है। जरा से ग़म में, हीरो जाम पर जाम चढ़ाता दीखता है। सस्ते मनोविनोद

होने के कारण, सिनेमा सब कोइ देखता है और इन जैसे दृश्यों से दुष्प्रभावित हुये नहीं बच पाता।

जिन नेतागणों को आदर्श उपस्थित करना चाहिये, वे स्वयं इस व्यसन में फंसे हये हैं। सरकारी राजभोजों में खुलकर शराब पिलाई जाती है। इससे सामान्य जन पर बुरा प्रभाव पड़ता ही है।

इसको दूर करने के लिये, सब को एक जुट होना चाहिये; नहीं यों भारत की सारी संस्कृति यह शराब ले डूबेगी। मंत्रियों से लेकर जनता तक पर सरकार को नशाबन्दी के प्रति कठोर कार्रवाई करनी चाहिये । हिप्पियों के प्रवेश पर रोक लगानी चाहिये। सिनेमा में भौंड़े और शराबी दृश्य नहीं दिखाने चाहिये । अभी कुछ दिन पहले, दिल्ली दूरदर्शन ने "उस बस्ती में" नामक नाटक दिखाया था, जिसमें थानेदार की लापरवाही से उसका पुत्र जहरीली शराब पीकर मरता है और थानेदार प्रात्महत्या करता है। ऐसे नाटकों का सब जगह प्रसार होना चाहिये । समाज सुधारकों तथा संगठनों को इसको दूर करने का बीड़ा उठाना चाहिये। पिछले वर्ष आर्य समाजियों ने अर्द्धशताब्दि के अवसर पर नशाबन्दी का खूब प्रचार किया, फिर वह ठंडा पड़ गया। हमें घर-घर जाकर लोगों को नशे की बुराइयाँ समझानी होंगी, तब कहीं कुछ ठोस परिणाम निकलने की आशा की जा सकती है । अन्यथा, पंडित बेताब की चेतावनी 'गिलासों में डूबे हुये को, कभी नहीं उभार सकेगी—




गिलासों में डूबे, फिर न उभरे जिन्दगानी में । हजारों बह गए, बोतलों के बन्द पानी में।

# * देवली में बाल मान्देर *

दिनांक 14 नवम्बर 79 को, केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज II देवली में बाल दिवस धूमधाम से मनाया गया। ब्रिगेडियर पी० एन० खंदूरी उपनिदेशक (प्रशिक्षण) ने वहाँ 'बाल 'मंदिर" का उद्घाटन किया।

देवली के परिसर में 150 से अधिक परिवार रह रहे हैं; अतः एक मान्टेसरी स्कूल की आवश्यकता बहुत दिनों से महसूस की जा रही थी। पहले भी जब यहां ग्रुप केन्द्र स्थापित था, तब भी स्कूल भवन का शिलान्यास तत्कालीन महानिदेशक श्री इमदाद अली ने किया था। रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र III के बन्द होने पर तथा यहां से गाँधी नगर को ग्रुप केन्द्र चले जाने पर, स्कल बन्द हो गया था। जब 1978 में केन्द्रीय प्रशिक्षरण कॉलेज II नीमच से यहां प्राया, तब के० रि० पू० बल के सेवीवर्ग के बच्चों के लिए यहाँ कोई स्कूल नहीं था।

ब्रिगेडियर पी० एन० खंदूरी ने बाल मन्दिर का उद्घाटन किया और बच्चे हर्ष ध्वनि करते अपनी-अपनी कक्षा में गये । मिठाइयां वितरित की गई और अधिकारियों तथा जवानों के परिवारों के लिये चाय पान हुआ।



**पुलिस महानिरीक्षक से०-I**

श्री टी० जी० एल० पायर, पुलिस महानिरीक्षक, सेक्टर I (के० रि० पु० बल) 13 अक्तूबर 1927 को उत्पन्न हुये थे । माप केरलवासी हैं और आपने बनारस

विश्वविद्यालय से एम० एस० सी० की डिग्री प्राप्त की।

1952 में भारतीय पुलिस सेवा में भर्ती होकर तथा केन्द्रीय पुलिस प्रशिक्षण कॉलेज, माउन्ट आबू में संस्थानात्मक प्रशिक्षण पाकर, आप पुरातन बम्बई राज्य के बेलगांव जिले में सहायक पुलिस सुपरिटेंडेंट नियुक्त हुये। उस समय, भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन के कारण, आपको घोर विप्लवों तथा हिंसात्मक न्याय व्यवस्था की समस्याओं से जूझना पड़ा।

1957 में, आप पुलिस सुपरिटेंडेंट (अधीक्षक) के पद पर उन्नति पा गये और इस पद पर आपने बम्बई के कई जिलों में तथा तदनन्तर महाराष्ट्र में 1972 तक सेवा की। इस अवधि में, आपने अनेकों शान्तिव्यवस्था, यातायात और अन्य समस्याओं से . सुलझा । इससे आपको जन-प्रबन्ध तथा जन और सामग्री के साधनों से सर्वाधिक प्रयोग करने का ज्ञान मिला। न्याय-व्यवस्था की तनावपूर्ण स्थितियों को सामान्य करने, बल प्रयोग से हिंसा पर उतारू भीड़ों को नियंत्रित करने तथा छानबीन से जटिल अपराधों का पता लगाने के अवसर भी, आपको मिले।

जुलाई 1972 में, आपकी डी० पाई० जी०(उप महानिरीक्षक) के पद पर पदोन्नति हो गई और जून 1979 तक आप उपनिदेशक, पुलिस अनुसंधान तथा विकास ब्यूरो के पद पर सुशोभित रहे। भारत की पुलिस को आधुनिक बनाने के लिए, आपने विज्ञान तथा तकनीक का प्रयोग किया। आपराधिक जुर्मों की छानबीन में, आपने नए ढंग निकाले तथा हिंसात्मक भीड़ से सुलझने के लिए कम संघातक हथियारों तथा तकनीक वाली अवधारणा को जन्म दिया।

आपने कई अनुसंधान किए हैं तथा भारतीय पुलिस की दक्षता में सुधार लाने के लिए नये विचार तथा अवधारणायें प्रसारित करने के हेतु अनेकों लेख व ग्रंथ रचे हैं । '**पुलिस का परिवहन-प्रबन्ध**' में इस विषय पर आपने अच्छा प्रकाश डाला है और **"औटो मोबाइल (स्वाचालित वाहनों) की चोरी"** में कानन तथा प्रक्रिया में सुधार बताये हैं।

आप उत्तम वक्ता, लेखक तथा बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। पुलिसजनों में आपने शारीरिक स्वास्थ्य के हेतु खेलों को बढ़ावा दिया है।

26 जनवरी 1970 को, पापको सराहनीय सेवा का पदक मिला था और 26 जनवरी 1979 को, राष्ट्रपति की पुलिस विशिष्ट सेवा का पदक भी आपने प्राप्त किया है।

## के० रि० पु० बल के परिसर में भारतीय स्टेट बैंक

नागपुर ग्रुप केन्द्र में, 3 नवम्बर 79 को भारतीय स्टेट बैंक ने अपनी शाखा खोली है। श्री वाई० एन० सक्सेना, उपमहानिरीक्षक, के. रि० पु० बल हैदराबाद ने इसका उद्घाटन करते हुए बचत करने की आदत पर बल दिया। उन्होंने परिसर के सभी लोगों को इस शाखा में अपने खाते खोलने की मंत्रणा दी, जिससे वे इस सुविधा का पूरा-पूरा लाभ उठा सके। श्री वाई० एस०. औरंगाबादकर, क्षेत्रीय मैनेजर, भारतीय

स्टेट बैंक ने इस समारोह की अध्यक्षता की।

## पी० के० जार्ज

मिज़ोरम सरकार ने स्वर्गीय ना० रेडियो आपरेटर पी० के० जार्ज (2 सिग० बटा०) के निकटतम सम्बन्धी को रु० 10,000 की अनुग्रह पूर्वक अदायगी की है। जैसा नवम्बर के संस्करण में सूचित किया था, जार्ज 20 अगस्त 79 को मिज़ोरम में चम्पई के स्थान पर गोली से मार दिया गया था।

## खेल अधिकारी सम्मेलन

नीमच में 26 अक्टूबर 79 को हुये रेंज खेल अधिकारियों के सम्मेलन में, उन्हें यह सूचना मिली कि खेल कोष के लिये 2 लाख रु० अलग रखे गये हैं। इस सम्मलेन में यह तय हुआ कि अन्तरज टूर्नामेंट के स्थान पर अन्त: सेक्टर टूर्नामेंट खेलने में कोई विशेष लाभ नहीं होगा। ब्रिगेडियर पी. एन. खंदूरी, उपनिदेशक (प्रशिक्षण) ने रेन्ज-खेल अधिकारियों से अच्छे से अच्छे खिलाड़ियों को बल में भर्ती करने का अनुरोध किया, जिससे खेलों में नये जवान पायें। उनका यह मत था कि के० रि० पु० बल के अनेक खिलाड़ी अपने सर्वोत्तम खेल दिखा, कर खेल से संन्यास लेने के योग्य हैं।

## नसिंग प्राडरली (प्रादेशवाहक) का नया नाम पद

भविष्य में सभी संसूचनाओं में नसिंग ऑर्डरली (उपचारण आदेशवाहक) अब नसिंग असिस्टैंट (सहायक) पुकारे जाया करेंगे : किन्तु इस के फलस्वरूप, उनके सेवाभार में, वेतनमान में या सेवा शों में कोई अन्तर नहीं होगा।

## वीरतापदक प्राप्तकर्ताओं की पदोन्नति

महानिदेशक के० रि० पु० बल ने वह निर्णय किया है कि सब-इंस्पेक्टर तक के वे सभी जवान, जिन्हें वीरता पदक मिलेगा, अपने ठीक दूसरे ऊँचे पद की उन्नति पायेंगे।

## (ई० आई० सी०) अतिरिक्त परिधान

जो कोई भी ई० आई० सी० (अति रिक्त निर्गम परिधान) वस्तु किसी जवान को एक शीत ऋतु को दी गई है। उसे अब दूसरी ऋतु में भी इस्तेमाल किया जायेगा। जवान अमिट रोशनाई से अपना नाम तथा पद एक कपड़े के टुकड़े पर लिख कर इस वस्तु के साथ रख सकता है; किन्तु रख-रखाव की आवश्यक्ता को देखते हुए, कोई भी जवान ई० आई० सी० (अतिरिक्त परिधान) को अपने पास नहीं रख सकता।

## राज पत्रित अधिकारी को छुट्टी

भारत सरकार ने महानिदेशालय का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है कि उपमहानिरीक्षक तथा कमांडेंट, राजपत्रित अधिकारियों की छुट्टियाँ स्वीकृत कर सकते हैं।

# गोला बारूद और संरक्षक फरिश्ते

## ले०-ले० कर्नल वाई० जी० माथुर

बंगला देश में, युद्ध 16 दिसम्बर 1971 को समाप्त हो गया; किन्तु गोला बारूद की मरम्मत वाले अनुभाग (मार्स) के लिये, जिसकी मैं अध्यक्षता कर रहा था, बंगला देश का युद्ध 23 दिसम्बर 1971 को प्रारम्भ हुआ। ऊँची पर्वतमालाओं में गश्त लगाती हमारी यूनिट को बंगला देश को 24 घंटों में जाने के लिये चुना गया । हमारा काम पाकिस्तानी सेना से छीने हुए सभी गोले-बारूद को भारतीय आयुध डिपो में पीछे भेजना था।

मुझे यह काम मनोरंजक तथा सुखप्रद प्रतीत हुना। मैंने यह सोचा कि मैं नये-नये ढंग के गोला-बारूद देखूगा । वहाँ पर निरत कुछ पुराने मित्रों से मैं मिलूगा और उनके कारनामों की कहानियाँ उनके मुख से सुनूंगा । पाकिस्तानी सेना द्वारा की गई कुछ विनाश लीलाओ के दर्शन करूगा और कुछ युद्ध-बन्दियों से वार्तालाप करूंगा। और सब से बढ़करू, नवनिर्मित बंगला देश के दर्शन करूगा। . .: . :

**कल्पना और यथार्थ :** 'पीछे भेजना' एक काफी सरल काम प्रतीत हप्रा । गोलेबारूद के निरीक्षण, मरम्मत और निपटान के. अनुभव के बाद, मुझे ऐसी कल्पना थी कि मेरी यूनिट, मंडलीय आयुध अनुरक्षण कम्पनी के निकट स्थापित होगी; जहाँ यूनिट में लाये गये अपहृत गोले बारूद के निरीक्षण की मैं अध्यक्षता करूंगा और उनकी छानबीन, बाँधना तथा प्रेषण देखूगा ।

किन्तु यह कहाँ होना था ? मंडलीय कर्मचारी वृन्द ने आदेश दिया कि मेरी टीम को उन स्थानों पर जाना होगा, जहाँ छीने हुए गोलेबारूद निरीक्षण को पड़े हुए थे और वहाँ पर निरीक्षण, बांधना तथा प्रेषण करना होगा। इसके अर्थ हए कि मेरी टीम को गोला-बारूद स्थलों, ढेरों, तोपस्थलों, खाइयों, बंकरों, नालों, कुत्रों दूरदराज़ के मार्गों और खेतों पर जाना होगा, जहाँ कहीं भी पाकिस्तानी सेना द्वारा छोड़े गए अपने गोला-बारूद की खबर मिली थी। यह कार्य पद्धति थी तो न्याय-संगत । बाद को मैंने यह देखा कि जब तक कि पहले सुरक्षित करने का ढंग नहीं अपनाया गया, तब तक उस गोले बारूदं को छूना या संचलन करना निश्चय ही खतरे से खाली नहीं था। इस प्रणाली से मार्ग में भी दुर्घटनायें होने से अवश्य बचीं; किन्तु इसको सचमुच अनुपालन करने में, मुझे कितनी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। देश के उस दूरवर्तीकोने में कौन काम करने वालों को दिलायेगा? जब मैं डिवीज़न (मंडल) के

मुख्यालय को सवारी से गया, तब मैंने ठीक किनारे-किनारे प्राणनाशक तथा टैंकरोधी सैंकड़ों सुरंगें पड़ी पायीं। उनको बांधने के लिए कहाँ से पर्याप्त पैकिंग सामान मिलेगा? कोर तथा मंडल मुख्यालय, "मुझ से दैनिक तथा साप्ताहिक प्रगति रिपोर्ट" अवश्यमेव चाहते थे। सारी टूटीफूटी तार व्यवस्था और पास में कोई सिगनल यूनिट नहीं होने के कारण, मैं कैसे रिपोर्ट भेज सकता था। मुख्यालय केवल एक तीन टन वाला वाहन नित्य प्रति अवश्य भेजा करता था। अन्य जरूरतों के लिए, मुझ से "स्थानीय कमांडर" से मदद लेने को कहा गया। यह स्थानीय कमांडर ब्रिगेडियर कमांडर से लेकर गांव मुखिया, पुलिसकर्मी या मुक्ति वाहिनी का कोई सदस्य तक हो सकता था। मुझे यह बताने में प्रसन्नता अलवतः होती है कि वे सब बड़े सहायक सिद्ध हुए।

**सुख-दुःख :** दिसम्बर 71 के पिछले दिनों से लेकर फरवरी 72 के अन्त तक, सारा काम तीन चरणों में किया गया । पहले चरण में, केवल छीने हुए हथियार लाद कर भेजे गये। दूसरे चरण में, उस सभी गोला-बारूद को, जो लाने लेजाने के के लायक' (एफ एफ टी) था या बनाया जा सकता था, पीछे भेजा गया। अन्तिम चरण में, हम सभी स्थानों पर फिर इसलिए गए कि जो गोला-बारूद लाने-लेजाने के लायक नहीं था, यानी उसके आवाजाही में विस्फोट का खतरा था, उसे नष्ट करना था। इस अन्तिम चरण में, दो और टीमें मेरे अधीन लगाई गईं, क्यों कि देर हो रही थी। तबतक प्रधानमन्त्री ने यह घोषणा कर दी कि मार्च 72 के अन्त तक, भारतीय सेना बंगला देश छोड़ देगी।

यह हमारे काम के दैनिक कष्टों की कोई कथा नहीं है और ना ही इस हमारे असाधारण कार्य के सख-दुःख का इतिहास है। उदाहरण के लिए, खाली वाहनों के सही समय पर, सही स्थल पर आने की असाधारण क्रिया को देखकर हर्ष होता था। बंगला देश की छोटी-छोटी सड़कों पर धूल बड़ी दिक़ करती है । दिनभर कच्ची सड़कों पर दौड़ धूप के उपरान्त, मूसलाधार वर्षा में नहाने से हमें बड़ा प्रानन्द मिलता था। बैलगाड़ी वाले रास्तों में चलने के अपमान से झुकने के स्थान पर मेरे 'जोंगे' (वाहन) की टूटी हुई कमानी के लिए एक वर्कशाप का मिलना कितने अत्यन्त सुख की बात थी, जिसमें सही कमानी मिल गयी थी। और यह दुःख की बात भी हुई, जब छीनी हुयी रायफलों को (जो अधिकांश भरी थीं) उतारते समय असावधानी के कारण एक यूनिट के एक जवान के प्राण चले गये । ये सुख-दुःख के अफसाने तो शायद कभी फिर लिखे जायेंगे । ।

**संरक्षक फरिश्ता-श्रद्धा :** यह वर्णन तो प्रमाण देकर कुछ सिद्ध करने का है । गोले-बारूद के सभी कार्य में खतरा रहता है। इस कार्य में, किसी भी गोले-बारूद के तकनीकी अफसर को दो बड़े साधनों पर सामान्यतः निर्भर रहना पड़ता है-अपने तकनीकी ज्ञान और अपने पिछले अनुभव । यहाँ मैं यह सिद्ध करना चाहता हूँ कि उस अफसर को एक तीसरे सहारे का मुह भी ताकना पड़ता है, जिसको किसी उत्तम शब्द के अभाव में, मैं आस्था का संरक्षक फारिश्ता पुकारता हूँ। हिन्दी में श्रद्धा कहना

उत्तम रहेगा। इस तीसरे तत्व से जो विश्वास मिलता है, वह उसको बड़ी सहायता करता है, और संकट में उसको निदेश देता है । सिद्ध करने के लिए, हमें बंगला देश में सभी भांति की स्थितियों में शत्रु के गोला-बारूद से (जिसकी रचना भी कभी कभार मालूम नहीं होती थी) काम पड़ता था। वहां ऐसे जखीरे थे, जिनमें छिपे बम रखे थे। वहाँ ऐसे खत्ते थे, जहाँ सुंरगें बिछी थीं। वहाँ सुरक्षापिन निकली हुयी सुरंगें थीं, बारूदभरे हथगोले थे; भरी रायफलें थीं; घास में डिटोनेटर (दगाऊ) थे तथा अंगीठियों पर कॉर्डाइट (बिना धुंये के बारूदगोले) रखे थे। रंगपुर के खत्ते में, ढीले नोदक की बड़ी मात्रा के ऊपर सफेद फासफोरस से भरे हथगोलों से फर्श भरा पाया गया। घास पर चलना खतरनाक़ था, ढेर से वाहनों को अलग रखना था, प्रायः हम मानव अंग-बिखरे पाते थे, जो स्पष्ट रूप से प्राणनाशक सुरंगों से उड़ा दिये गये थे। प्राणनाशक सुरंग पर कहीं पैर न पड़ जाये-यह भय हमें सदा सताता रहा। सबसे खराब जखीरा था बोगरा का, जिसको कुछ विस्तार से मैं बताता हूँ।

**खतरा**—बोगरा के ज़िले कमीश्नर मुझे मालतीपुर नामक स्थान पर ले गये और वहाँ उन्होंने एक पूर्ण भस्मीभूत तथा नष्ट-भ्रष्ट दो मंजली इमारत दिखायी, जिसमें पाकिस्तान की एक तोपखाने वाली यूनिट का गोला-बारूद था। जिस दिन पाकिस्तानी बोगरा से भागे थे, वे इस इमारत में आग लगा गये थे। अन्दर 105 मि०मि० प्रोजेक्टाइलें (प्रक्षेपास्त्र) के ढेर के झुलसे हुए अवशेष पड़े थे, जिनकी चारों ओर खारिज़ हुए, बिना खारिज़ हुए या आधे खारिज़ हुए गोले पड़े थे।

एक गोला तो इस्पात के गर्डर में से झाँक रहा था; उसके फ्यूज़ का पीतल पिघल गया था और गर्डर से उसका खोल जुड़ गया था। वह खोल क्यों नहीं फटा था, जब कि इतनी गर्मी से पीतल तक पिघल गया था ? उसे कैसे अलग करू ? और यह एक ही केवल कमरा था। जब मैं पैरों की अंगुलियों पर सारी इमारत में चल रहा था और मुझे उसे मृत प्रोजेक्टाइल के फट पड़ने का भय खाये जा रहा था, तब उस जखीरे को साफ़ करने के खतरे के परिणाम से मेरा दिल दहल जाता था। गोले बारूद की कितनी ही किस्में, कितनी ही स्थतियों में देखी गयीं। मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा था कि 'पीछे भेजने के कार्य में, इतनी सफ़ाई के काम की जरूरत होगी। क्योंकि इसे किसी कनिष्ठ अधिकारी को नहीं सौंपा जा सकता था, इसलिए यह सब कुछ मुझे ही करना पड़ता था। मेरे साथ गए एक डॉक्टर ने मुझे यह मंत्रणा दी कि क्यों इस खतरे को मोल मैं ले रहा हूँ ? कोई पदक तो इसके लिए देने जा नहीं रहा है। यह हमारा देश भी नहीं है। हमें इसे कुछ ही दिनों में छोड़ना है । मुक्ति फौज़ पर इस गन्दे काम .. करने को क्यों नहीं छोड़ते ?

**पर्वत से राई :** इसका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं हुआ । वह काम करना तो था ही और हमारे अद्भुत साहसी कर्मचारियों वाले 'बारूद मरम्मत अनुभाग' के अतिरिक्त, अन्य कोई भी इसके लायक नहीं था; किन्तु साथ में श्रद्धा की प्रधान देवी थी, जिसने अन्य खतरनाक ज़खीरों में सफलता दिलाने में कृपा की थी। इसी श्रद्धा के साथ, हमने काम प्रारम्भ किया और पग-पग, गोले-गोले कमरे-कमरे में काम करते रहे। हर छल-

बम गोले की शंकानों पर ध्यान दिया, चची की और कारेवाइ की। रस्सी में बँधे हुक से कुछ हटाये; डंडे से कुछ हिलाये-डुलाये; पर अधिकांश श्रद्धा के सहारे खाली हाथों से छल-वस्तुओं से निपटा गया। पहले भी, मुख्य कर दूसरे विश्व युद्ध में, अंशतः प्रस्फोटन के मामलों को मैंने ही सुलझाया था; किन्तु उस समय मैं वीर अविवाहित विस्फोट-तकनीकीअफसर था। और आज मेरे परिवार है। तब संसार के बीच मेरे सिवाय कोई और नहीं है और अब मैं अपेक्षाकृत अधिक सोचने समझने वाला, दूरदर्शी प्रौढ़ावस्था प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी हैं।

एक बार श्रीगणेश करते ही, तीव्र प्रगति हई। मैंने देखा कि प्रोपेलेंट (नोदक) पहले ही जल चुका है। जो गोले बहुत ही नष्ट हो गये थे, और जो बहत रिस रहे थे, वे अपेक्षाकृत सुरक्षित थे । पीछे के कमरों में (जहाँ साफ़ करना था) छोटे गोलेवारूद भरे थे और जिनसे निपटना सबसे सुरक्षित था। अगले दिन की शाम तक मैंने शेष काम को जवानों पर छोड़ दिया, जबकि कुर्सी पर बैठा मैं अपने संरक्षक देवात्मा का ध्यान कर रहा था, जिसने सारे पर्वत को राई बना दिया था।

**धमाके :** अब एक अन्य दिन, निश्चय रूप से 11 फरवरी 72, की कहानी सुनाता हूँ, जब हमें भाग्य से एक बार फिर संघर्ष करना पड़ा। हिल्ली के पास एक जगह हम टुचपुच चीजें 'विध्वंस स्थल' को ले जाने के लिये इकट्ठी कर रहे थे। चीजों में थे-3.5 इन्च एच. ई. रॉकेट के भयानक स्थिति में पड़े कुछ गोले (क्योंकि उनकी सुरक्षापिनें निकली हई थीं) तथा सुरंगों के बुरी भाँति जंगलगे फ्यूज़ जिनमें मुझे कापर आक्साइड की आशंका थी (जो हिलाने डुलाने में खौफ़नाक रसायन है); कुछ पाकस्तानी प्राणनाशक सुरंगों से सुरक्षा-टिकलियाँ खो गयी थीं, नाइट्रोग्लेसरीन (एक बंड़ा ही संवेदनशील उच्च स्फोटक द्रव्य) के साथ, एक विस्फोटक डाइनेमॉइट चू रहा. था और अन्त में, लगभग 200 ढीले डिटोनेटर (दगाऊ) थे, जिनमें कुछ जंग खाये तथा दबे-नुचे थे। कोई दो किलो मीटर की ऊबड़खाबड़ दूरी पर एक कामचलाऊ विध्वंस स्थल पर अन्तिम दो वस्तुओं को छोड़ कर, सबको अत्यन्त समादर तथा सावधानी के साथ लेजाया गया। डाइनमाइट और डिटोनेटरों को, अन्तिम यात्रा के लिये मैंने छोड़ दिया था।

डिटोनेटरों को जोंगा में ले जाया गया; डाइनैमाइट को हाथोंहाथ विध्वंस स्थल तक पहुंचाया गया, क्योंकि ऊबड़खाबड़ मार्ग में वाहन को वह नहीं सौंपा जा सकता था। डिटोनेटरों को अन्दर टीन की सतह लगी लकड़ी के बक्से में अलग अलग रखा गया। मेरे बरिष्ठ जे. सी. प्रो. (कनिष्ठ आयुक्त अधिकारी) ने काम करते हुये दल के एक कुली से वक्से में तोड़ मरोड़ कर काग़ज़ को रखने को कहा, जिससे डिटोनेटर मार्ग में टकरा न जायें। जभी कुली ने उन पर तोड़ा मरोड़ा काग़ज़ मढ़ना शुरू किया; तभी सहसा एक डिटोनेटर, सिर्फ एक ही, धमाके के साथ फटा। फटने की ध्वनि सुनते ही, कुली ने अपना जख्मी हाथ बक्से से निकाला और इस प्रक्रिया में सारे बक्से को पास में रखे डायनमॉइट से दूर हटा दिया। वह बंकर में जा कदा, जहां से उसने सारा विस्फोटक निकाला था । जे. सी. मो. एक भिन्न दिशा को भागा । मैं और एक दूसरा

कप्तान(बाद को उसने बताया कि वह 11 फरवरी उसकी वर्षगांठ थी) एक निम्न तल पर थे और सिर झुकाये खड़े थे । दो या तीन सेकण्ड के बाद, जब मैं यह सोच रहा था कि बला अब टल गयी, तभी बड़े ज़ोर का विस्फोट हुआ तथा लकड़ी के बक्से और टीन की सतह के टुकड़े सब ओर उड़े। जे. सी. ओ. भागते हुये धमाके से गिर पड़ा; तुरन्त उठा और फिर भागने लगा। बारूद मेरे और कप्तान के सिर के ऊपर से निकल गया। कुली बंकर में पहले ही सुरक्षित था। केवल 3 मीटर की दूरी पर रखा डाइनेमॉइट के बक्से पर कुछ असर नहीं हुआ था। जिन डिटोनेटरों ने मिल कर विस्फोट किया था, उनके प्रभाव-क्षेत्र की संकट रेखा से डाइनमॉइट का बक्सा कुली के धक्के से दूर हो गया था।

यह प्रश्न मुझे हैरान करता रहा; बक्से में 200 डिटोनेटरों में से एक ही क्यों पहले फटा और शेष क्यों दो-तीन सेंकड के पश्चात् । प्रशिक्षण के सभी सिद्धान्तों के अनुसार और आयुध स्कूल में मैंने पढ़ाया है कि एक डिटोनेटेर के फटते ही सारे बक्से के डिटोनेटरों का प्रस्फोटन एकदम होना चाहिये, क्योंकि एक दूसरे से सटे रखे थे। क्या दूसरा विस्फोट कुली द्वारा अनिच्छापूर्वक बक्से को हटाने से हुआ ? मुझे नहीं विदित। इस विलम्बित प्रस्फोटन का स्पष्टीकरण मैं सरलतापूर्वक नहीं दे सकता; सिवाय इसके कि अकेले एक डिटेनोटर ने फट कर (1) हमें बड़े विस्फोट की चेतावनी दे दी और भाग जाने में हमें सफल किया; तथा (ii) डाईनेमॉइट के बक्से से डेटोनेटर का बक्सा दूर हटा दिया गया, जो यदि निकट होता और फट गया होता, तब हम सब के लिये वह विनाशकारी होता। साथ ही, स्पष्टतया पहला डिटोनेटर ऐसी नाजुक स्थिति में था कि वह तनिक सा भी दबाव नहीं सह सका। यदि क्षेत्र पार करते समय वह जोंगे में फटा होता ? सचमुच में, इस यात्रा में उसे अपनी गोद में रखने की मेरी इच्छा थी या वह घातक डिटोनेटर उसे समय फटता, जब मैं विध्वंस-गड्ढे को जमा रहा होता; इस कार्यवाही को मैं स्वयं करता हूँ, जिसमें मैं प्लास्टिक विस्फोट की व्यवस्था करने में और गड्ढे को नरम मिट्टी से भरते समय कुछ दबाव डालता हूँ। उस समय यदि विस्फोट होता, तब दुष्परिणाम कल्पनातीत होते।

क्या मैं उसे घातक डिटोनेटर पुकारू? किन्तु सही बात यह है कि वह तो सबसे अधिक हितकारी था, जिसने अकेले फट कर हम सब के प्राण बचा लिये। कुली की अंगुली में मामूली चोट पायी थी, जिसका तुरन्त उपचार हुआ । बिस्फोट के सबसे निकट होने के कारण, जे. सी.ओ. को कुछ समय तक बहरेपन की शिकायत रही; परन्तु वह भी शीघ्र ठीक हो गया । डेटोनेटर के अल्यूमीनियम या लकड़ी के बक्से के नन्हे-नन्हे टुकड़े दूर तो लेजाये नहीं जा सकते थे और वहाँ घूमने वाले किसी को भी घायल कर सकते थे।

गोला-बारूद वाली अफसरी के मेरे दीर्घ सेवाकाल में इन तथा ऐसी दुर्घटनाओं ने मुझे यह विश्वास दिला दिया है कि हम गोलाबारूद अफसरों पर (जिन्हें नित्य तुनुक मिज़ाज गोलाबारूद उठाते-धरते समय, स्वयं को उड़कर टुकड़े टुकड़े होने का व्यावसायिक खतरा उठाना पड़ता है) किसी कृपालु देवात्मा की छत्रछाया रहती है।

पाकेस्तानी सेना द्वारा छोड़े गये ज़खीरों से गोलाबारूद की चोरी करते समय, मुक्तवाहिनी के सैकड़ों जवान प्राण गँवा बैठे। एक स्थान पर तो (जिसको मुझे बाद में साफ़ करना पड़ा था) उनके 356 जवान मारे गये थे। कैसा बिकरालं दश्य था वह !

नाविक महासागरों में संरक्षक फरिश्तों में विश्वास करते हैं। इसी प्रकार गोलाबारूद के तकनीकी अफसर भी। इसी विश्वास की भीनी भीनी गन्ध में, मैं निर्भीकतापूर्वक अपना काम करने में सक्षम रहा हूँ। उसे भाग्य, विधाता भगवान या जो मन में आवे, आप पुकारें। जब मैं दो मास काम करने के बाद बंगला देश से अपनी टीम के साथ बिना चोट खरोंच के लौट आया, तब मेरी आस्था और भी दढ़ हो गयी। गोला बारूद के तकनीकी अफसरों के इस संरक्षक फरिश्ते की पूजा-प्रार्थना किये बिना, मैं नहीं रह सकता।

## बिना किराये के आवास

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जो गैर-राजपत्रित कार्यकारी जवान अपने मुख्यालय (हेडक्वार्टर) पर बिना किराये के आवास के हक़दार हैं, अपने घोषित मुख्यालय के बावजूद, वे किसी भी अन्य ग्रप केन्द्र पर अपने अधिकृत वर्ग के आवास को बिना किराया दिये पाने के योग्य होंगे; किन्तु यह तभी होगा जब स्थानीय यूनिटों की आवश्यकता से आवास फालतू होंगे और जवान को अपने घोषित मुख्यालय पर या अन्यत्र, कोई सरकारी आवास नहीं मिला होगा और उसे किराया-भत्ता भी नहीं मिलता होगा।

## * यह भी खूब रही *

**वृद्ध अध्यापक**—मैं जवान हूँ; यह कौन सा काल है ?

**छात्र**—सर, आपकी अवस्था देखकर तो यह भूत काल है। X

**हकीम**—आप ठीक कहते हैं कि यह गाँव ग़रीब है, मगर मैं भी तो हकीम हूँ, खूब हिकमत जानता हूँ; फिर मिलावट करने वाले पंसारियों व परचूनियों से दोस्ती करने की हिकमत, और भी ज़ोरदार मेरी हिकमत चला रही है। + X

**राम**—श्याम देख, कपिल ने छक्का लगाया।

**श्याम**—छक्का ही नहीं लगाया; बल्कि कपिल ने पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिये । . xx

**श्रोता**—आप तो यहां का नेता स्वयं को बताते थे, पर ये लोग तो पथराव करते हुए आपके पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं।

**नेता**—ठीक है । अब भी तो हम नेतृत्व ही कर रहे हैं और ये लोग पीछेपीछे हमारा अनुगमन मात्र कर रहे हैं ।X

**मास्टर**—रिंकू, तुझे क्रिकेट खेलने से कब फुरसत, जो यह बता सके कि बाल वर्ष

में क्या महत्वपूर्ण बात रही ?

**रिंकू**—ऐसी बात नहीं, है, सर । मुझ से पूछे तो बालवर्ष में बाल की ही सबसे महत्वपूर्ण बात रही। कपिल की बाल ने पुराने सब कीर्तिमान तोड़ दिए, जब उसने अपनी बाल से 74 खिलाड़ी एक वर्ष में आउट किये और 75 वें हज़रत बाल-बाल आउट होने से बचे। x x

**नेता**—जीवन में जल का बहुत महत्व है। राजनारायण ने गंगा जल की पवित्रता का महत्व देकर राजघाट धोना चाहा; मुरार जी ने जीवन जल मूत्र को स्वास्थ्य की कुंजी बताया और अब चरण सिंह ने डीजल को किसान की समृद्धि का मूलमन्त्र बताया है। इन सब बातों से ही इन्दिरा जी जल गई हैं। + x

---

**सम्मुख पृष्ठ पर :**

13वीं अन्तरेंज एथ्लीटिक्स के समय । खिलाड़ियों को उपदेश देते हुए श्री पी०आर० राज गोपाल महानिदेशक । .

# विज्ञान के चढते चरण

अमेरिका के वैज्ञानिकों ने ऐसा वायुयान तैयार किया है, जिसमें किसी भी प्रकार के ईंधन की भी आवश्यकता नहीं होती। साइकिल की तरह, इसमें पैडल और चेन लगी होती है । पैडल मारते ही, इसमें हल्कापन आने लगता है और धीरे धीरे यह ऊपर उठने लगता है । इसमें एक मनुष्य बैठ सकता है और एक घन्टे में 20 कि० मी० की गति से इसे चला सकता है। इसका कुल मूल्य सात सौ रुपये है। हाल में, इंगलिश चैनल की 35 कि० मी० की दूरी इसके द्वारा 2 घण्टों में पूरी की गयी है।

एक ऐसे कंप्यूटर का निर्माण हो रहा है, जो अपने अन्दर सादे काग़ज़ पर लिखे प्रश्न चलते ही, क्षण भर में उसका उत्तर बोल कर देगा।

अमेरिका की 'ए० इ० जी० टेलिफंकन' कम्पनी एक ऐसे टेलिविज़न का निर्माण कर रही है, जो केवल 5 से० मी० चौड़ा और 5 से० मी०ही लम्बा है। इसको जेबी ट्रांजिस्टर की तरह, हाथ में लेकर मनुष्य चल सकते हैं और कहीं भी स्विच प्रान कर मन बहला सकते हैं ।

कर्नाटक के रसायन लघु-उद्योगों के तकनीकी निदेशक के अनुसार, समुद्री पौधे से बनाये गये एलगिनेट रसायन को दीवार पर प्लास्टर करने के लिए सीमेंट व कंक्रीट के मिश्रण में मिलाया जाए, तब कमरा गर्मी से ठंडा और सर्दी में गर्म रहता है। साथ में, वह बिना वातानुकूल संयंत्र के वातानुकूल का आनन्द देता है। वह साउंड प्रूफ भी रहता है, क्योंकि उसमें आवाज़ नहीं गूंजती।

एक ऐसी कृत्रिम जीन (ऐसा तत्व जो सभी जीवों में आनुवंशिकता का समावेश करता है) का विकास करने में सफलता मिली है, जो मानव इन्सुलीन (मधुमेहनाशक

तत्व) का उत्पादन बड़ो मात्रा में करने में सक्षम है। मधुरोग को रोकथाम के लिये, यह एक नितान्त नवीन उपाय है।



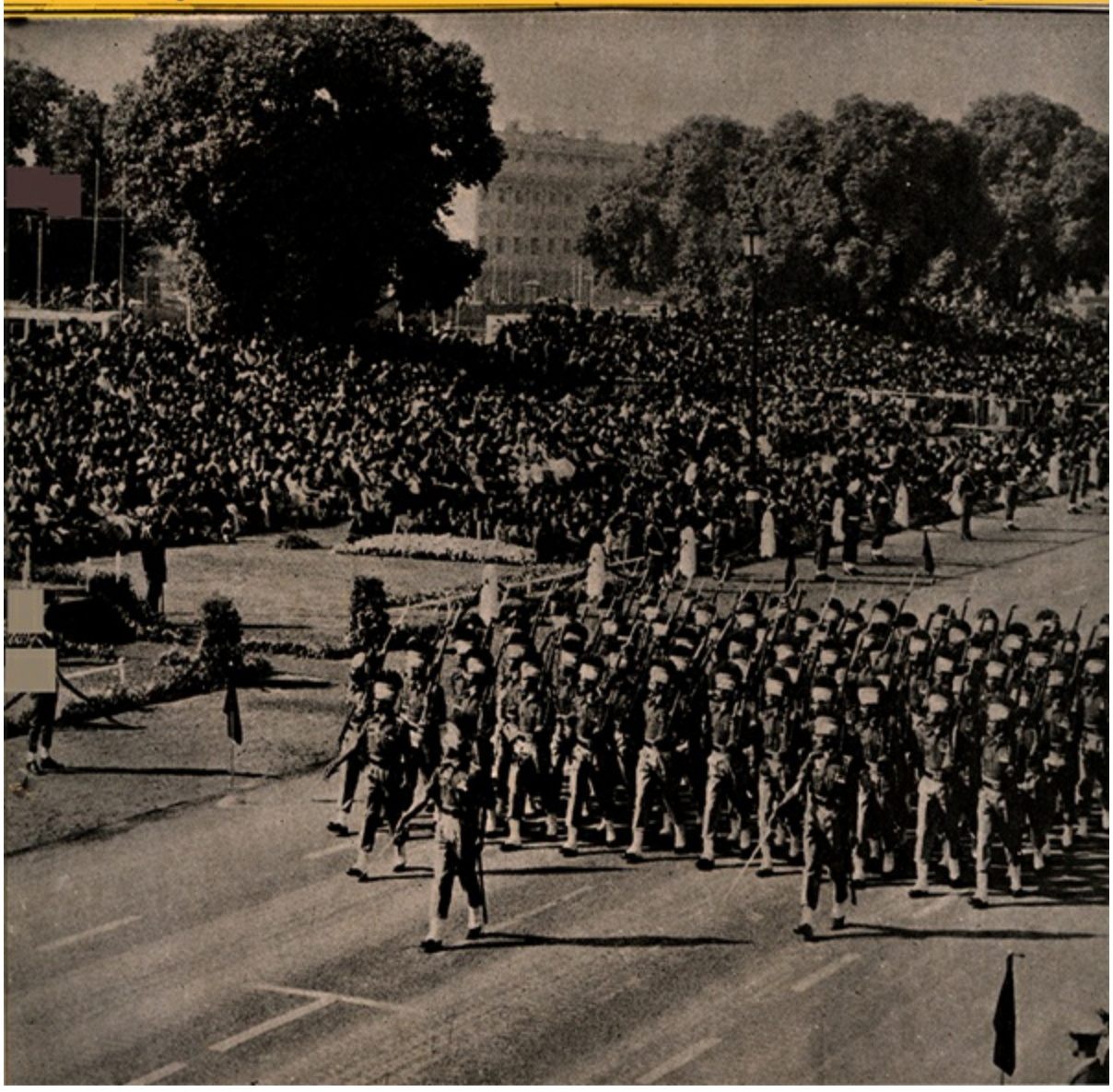


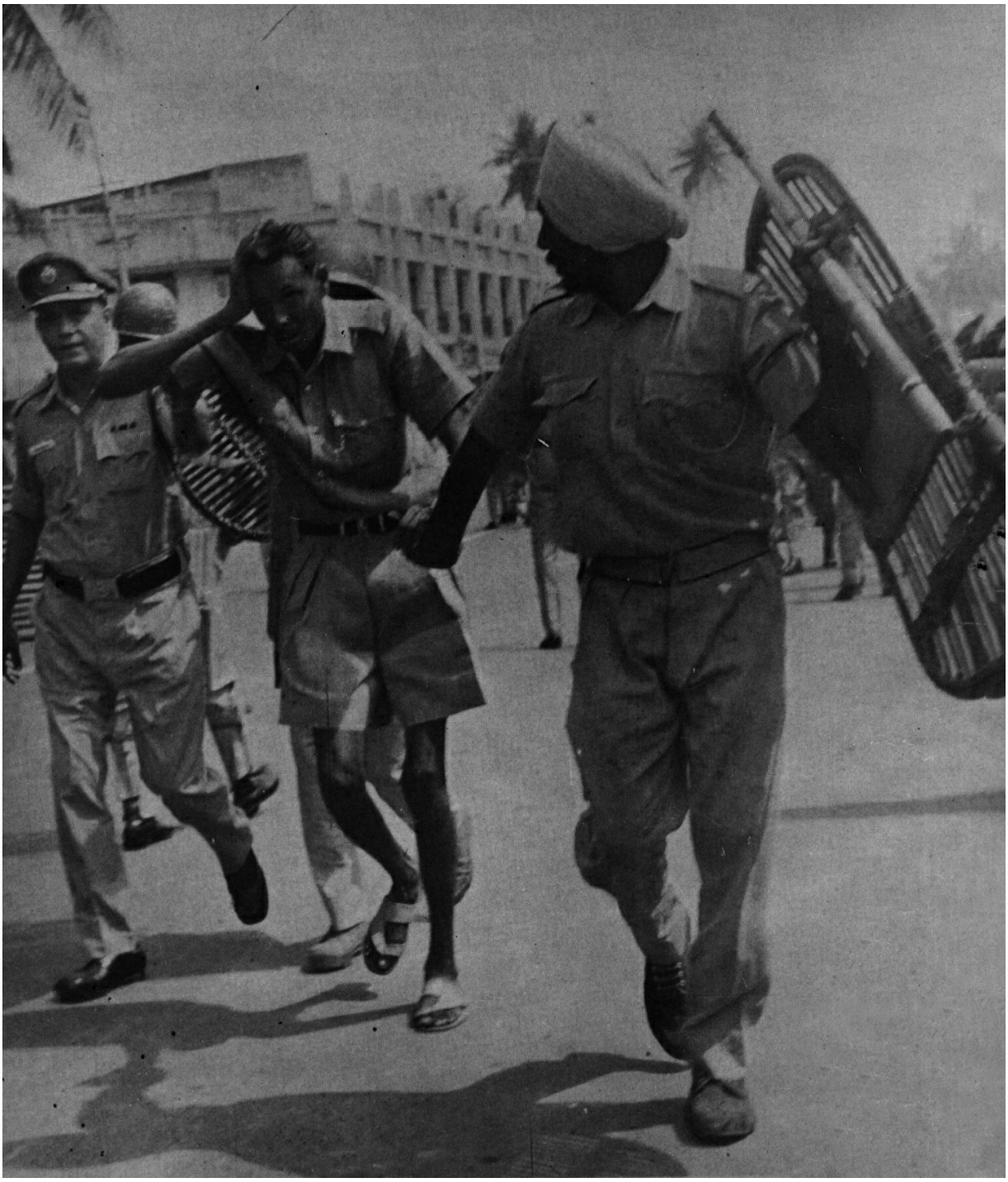
# ★ क्रैपलर ★

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

31 मार्च, 1980] खण्ड IX अंक 1 [11 चैत्र, 1902





तमिलनाडु के एक आन्दोलनकारी पुलिसकर्मी से निबटते हुये के०रि०पु० बल के जवान

# ★ क्रैपलर ★

द्वैमासिक]

[हिन्दी संस्करण

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका




**खण्ड IX**

**अंक 1**

**31 मार्च, 1980]**

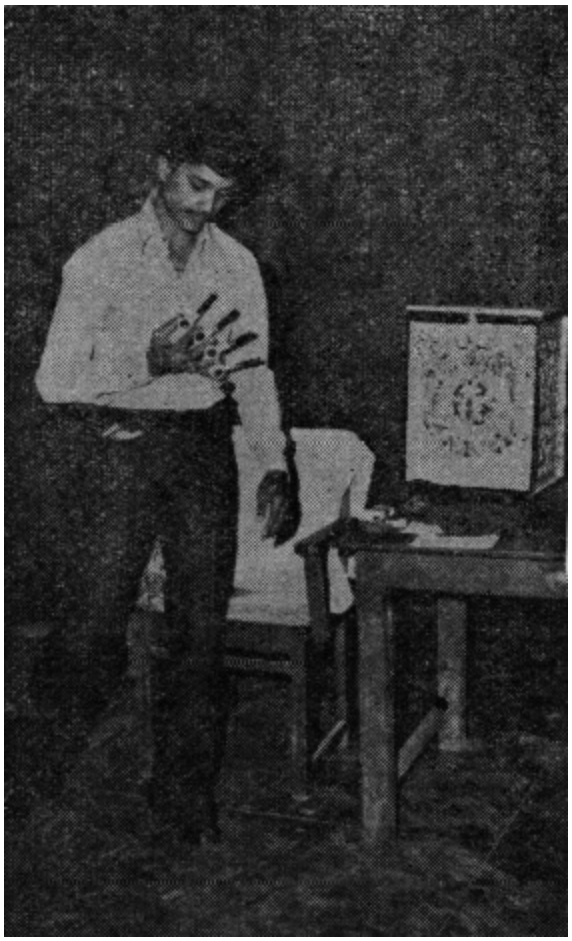
**[11 चैत्र, 1902**

मुख्य सम्पादक : **एच० एस० सेठी**

**छाया चित्रकार** : एस० के० खन्ना

हिन्दी सम्पादक :

**जे० एस० शर्म्मा**



**जादूगर वी. पुरुषोत्तम राव**

---

**मुख पृष्ठ** : गणतंत्र दिवस पर सलामी स्थल के निकट मार्च पास्ट करती हुयी के० रि० पु० बल की टुकड़ी।

---

**मुद्रक**—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072 ।
**प्रकाशक**—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से **एच० एस० सेठी**।
**सम्पादकीय कार्यालय :**
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल,
पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022 ।

**क्रम संख्या**

**विषय**

**I. गौरवगाथा** :—पदक, प्रशंसा, और पुरस्कार

**II. रिपोर्ताज :**

(क) रेडक्रास सोसाइटी को के०रि०पु० बल का कम्बलदान

(ख) लोक सभा चुनाव में के०रि०पु०बल का योगदान

(ग) गणतंत्र दिवस पर के०रि०पु० बल की शानदार टुकड़ी

(घ) मत्तन में गोली-चालन—न्यायोचित

**III. लेख :**

(i) अब ये अनाथ नहीं हैं, ले०–श्री एम. बंकट रामा राव

(ii) उन्होंने घुटने नहीं टेके, ले०—श्री एच. एस. सेठी, जन-सम्पर्क अधिकारी

(iii) लद्दाख में मेरे वे दिन, ले०—श्री राज सिंह

(iv) जादूगर राव, ले०–श्री सुनील कपूर, सहायक जन-सम्पर्क अधिकारी

**IV. कविता** :—केन्द्र पुलिस बल की जय हो, र०—का० हंस राज ओझा, 53 बटा०

**V. कहानी** :—काया पलट, ले०—श्री जे० एस० शर्म्मा, हिन्दी सम्पादक

**IV. क्रीड़ा क्षेत्रे** :—खेल प्रतियोगितायें

**VII. स्वास्थ्य-सन्देश** :—अपने बच्चों का रोग-निवारण, ले०—डा० एस. एस. पत्रा

**IX. विज्ञान के चढ़ते चरण :**

**X. विविध :**

(i) पहेलियाँ, प्रस्तोता—का०राम जी, 13 बटा०

(ii) शैक्षिक परीक्षायें

(iii) सुक्तिसुधा

(iv) यह भी खूब रही

**गौरव गाथा :**

## गणतंत्र दिवस पर 17 पुलिसजन पुरस्कृत

दिनांक 26 जनवरी, 1980 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर, के० रि० पु० बल के इन 17 सदस्यों को सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक प्रदान किये गये :

(1) श्री आर. नरसिंहम, कमांडैंट, ग्रुप केन्द्र (है०) (2) श्री एच० पी० सिंह चीमा, सहायक कमांडैंट, 29 बटा० (3) श्री केवल किशन, पुलिस उपाधीक्षक, 1 सिग० बटा० (4) सू० मेजर प्रकाश सिंह, 58 बटा० (5) सू० मेजर देशराज गौड़, ग्रुप केन्द्र (दुर्गापुर) (6) सू० नज़र सिंह, 1 सिग० बटा० (7) सू० गिरधारी लाल, रे० प्र० केन्द्र I (8) स० इ० ईश्वरी दत्त, 10 बटा० (9) हे० का० झाबर राम, 20 बटा० (10) हे० का० शंकर सिंह, 12 बटा० (11) हे० का० लाखा सिंह, 45 बटा० (12) हे० का० नेत राम, 4 बटा० (13) हे० का० राजेन्द्र सिंह, 41 बटा० (14) हे० का० हज़ारी राम, 62 बटा० (15) हे० का० राम अवतार, 62 बटा० (16) लां० ना० स्वर्ण सिंह, 25 बटा० (17) का० सरदारा सिंह, ग्रुप केन्द्र श्री-नगर।

महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने इन सब को बधाई दी।

## माचिस फैक्ट्री जलने से बचाई

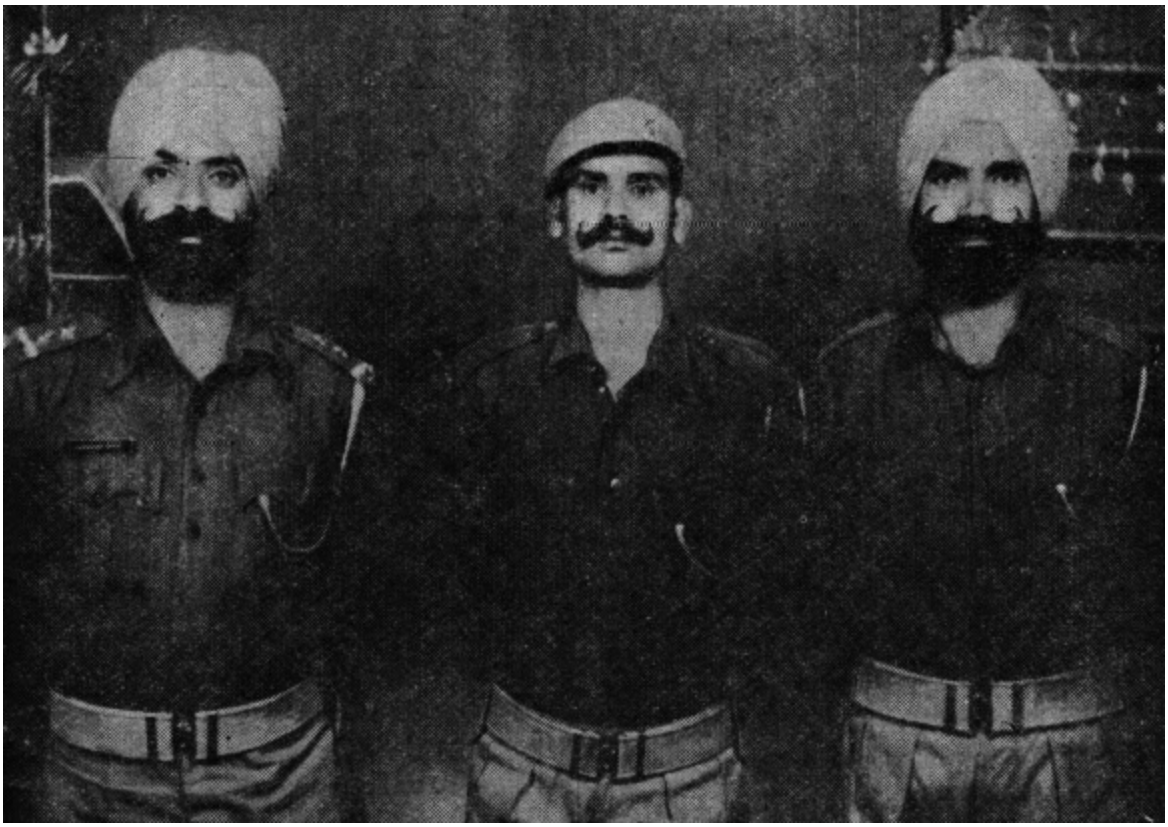
दिनांक 2 जनवरी, 1980 को पोर्टब्लेयर में माचिस की फैक्ट्री के गोदाम में आग लग गई। के० रि० पु० बल के जवान घटना-स्थल पर तुरन्त जा पहुँचे और आग बुझा दी। फैक्ट्री के जिन कर्मचारियों ने चोटें पाई थीं, उन्हें के०रि०पु० बल के वाहनों में अस्पताल पहुँचाया गया।



## उत्पाती गिरफ्तार

दिनांक 19 जनवरी 1980 की रात को, दीमापुर की स्थानीय फर्म के चौकीदार पर दो उत्पातियों ने गोली चलाई। नागरिक पुलिस के साथ, 25 बटालियन के जवानों ने छापा मारा। एक पिस्तौल और तीन गोलों के साथ, वे दो सशस्त्र नागा युवकों को पकड़ने में सफल हुये।

उन्हीं जवानों ने अगले दिन एक मोटरकार पर उस समय गोली दाग़ी, जब खोजबीन करने के लिए वह नहीं रुकी। कार और ड्राइवर दोनों हिरासत में ले लिये गये। इस उत्तम काम के उपलक्ष्य में, सहायक उपायुक्त दीमापुर ने उन जवानों को 500 रु० का नकद पुरस्कार दिया।



**कां० रामबाबू व कां० श्यामसिंह के साथ (सबसे बायें) स० इ० दर्शन सिंह**

## मदुरई में बाढ़-साहाय्य

नवम्बर 79 में अपूर्व बर्षा के कारण, मदुरई और उसके आस पास में भीषण बाढ़ें आयीं। इससे अनेकों पुलों और मार्गों में दरारें आ गई और नगर को बड़ी क्षति पहुँची। इस हानि को ठीक करने में महीनों लग जायेंगे।

8 दिसम्बर को, के० रि० पु० बल के तीन सेक्शन उस यातायात को नियमित करने के लिए लगाये गये, जिससे लोक निर्माण विभाग के काम में बाधा पड़ रही थी। एक सेक्शन ने यातायात को ठीक करने में मदद की और अन्य दो सेक्शनों ने कुर्वीकरन चलाई पर, मलबे को हटाने में तथा कच्चे बाँध बनाने के लिए कर्मचारियों के तथा पैदल यात्रियों के लाभ के लिए पगडंडी को चौड़ा करने में, लोक निर्माण विभाग की सहायता की, जिससे मलबा शीघ्र हट गया।

## डाकुओं से भिड़न्त

दिनांक 20 जनवरी 1980 को, बिहार के रोहतास जिले के धारूखोह गाँव में, 47 वटा० के स० इ० दर्शन सिंह के नेतृत्व में एक प्रहरी टुकड़ी से कुख्यात डाकुओं के गिरोह से भिड़न्त हुयी। रामजग खर्वर नामक डाकू तो मार दिया गया। एक दोनाली बन्दूक, एक एकनाली बन्दूक, एक देशीय बन्दूक, एक हथगोला और 25 कारतूस

बरामद हुये। उन डाकुओं के पास से, बिहार पुलिस और होम गार्डों की वर्दियाँ भी प्राप्त हुयीं।

## के०रि०पु० बल के 7 सदस्यों को वीरता पदक

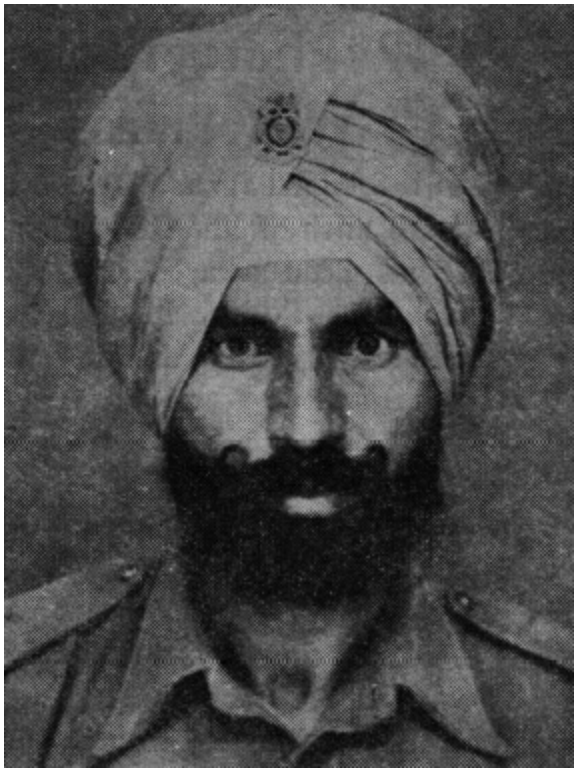
मणिपुर में, गिरिपाद पर लम्डंग ग्राम के निकट शिविर लगाये उग्र पंथियों—मैतियों—पर 11 नवम्बर, 78 को कमांडेंट नरेन्दर पाल 24 बटा० के नेतृत्व में के०रि०पु० बल तथा मणिपुर पुलिस की संयुक्त कार्रवाई की गई। शिविर पर पहुँच कर, उग्रपंथियों से आत्म समर्पण को कहा गया; तभी एक विद्रोही हथगोला लिये बाहर आया। कमांडेंट ने छलांगमार कर उसे धर दबोचा। विद्रोही नेता ने उसी समय दो हथगोले दिखाते हुए धमकी दी कि उसके साथी को छोड़ दिया जाए; वर्ना सबकी मौत है। फिर क्या था दोनों ओर से गोलाबारी एक घण्टे तक चली, जिसमें तीन विद्रोही मारे गए और विद्रोही नेता सहित अन्य तीन पकड़े गए। साथ में, भारी मात्रा में गोला बारूद प्राप्त हुआ।

इस मुठभेड़ में, अदम्य साहस तथा वीरता के उपलक्ष्य में, कमांडैंट नरेन्दर पाल को राष्ट्रपति पुलिस वीरता पदक तथा रामसिंह, ए० रामाकृष्णन, किशन पाल तथा देवी दत्त दास—सभी 24 बटालियन के सिपाहियों—को पुलिस वीरता पदक प्रदान किया गया।

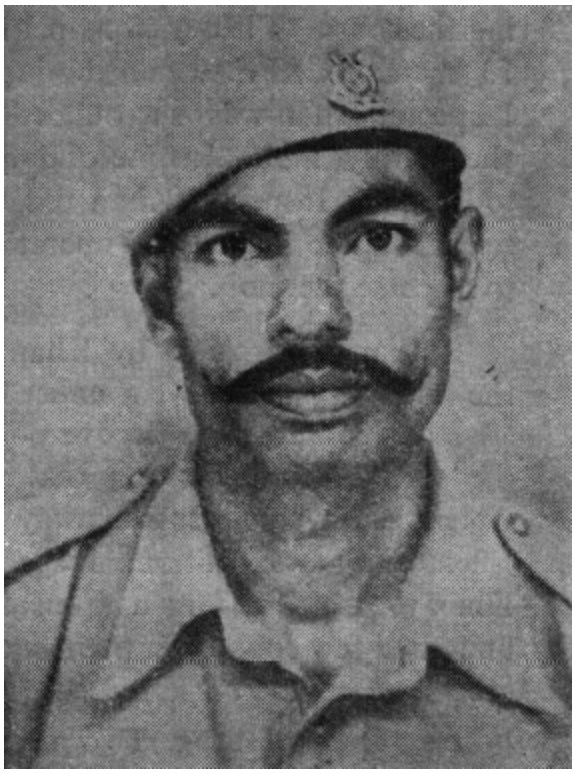
पिछले वर्षों, कांस्टेबल के० के० मुकन्दन और गुरुचरण सिंह, 22 बटा० ने मिज़ोरम राष्ट्रीय मोर्चे से मुठभेड़ में अनुकरणीय साहस दिखाया, जिसमें मिज़ोरम पुलिस का एक सिपाही मारा गया और चार घायल हुये। इन दोनों सिपाहियों ने तब तक विद्रोहियों को भिड़न्त में लगाये रखा, जब तक सैनिक साहाय्य नहीं आयी। अपने अदम्य शौर्य के लिए, इन दोनों को वीरता पदक प्रदान किए गए हैं।



**कमांडैंट नरेन्दर पाल**



**कां० गुरुचरण सिंह**



**कां० के०के० मुकन्दन**

## मुठभेड़ में दो उग्रपंथियों की मृत्यु

दिनांक 16 फरवरी 1980 को मणिपुर के पहाड़ी वनों में के० रि० पु० बल से भिड़न्त में ये दो बड़ उग्रपंथी मैती मारे गये—नाभा सिंह और भू० पू० सिपाही शान्त शर्मा, जो अपनी रायफल के साथ मणिपुर सशस्त्र पुलिस से भगोड़ा हुआ था, जिसने प्रेपोक मैती उग्रवादी आर. के. तुला चन्द्र सिंह को पुलिस हिरासत से बच भागने में मदद की थी।

मुठभेड़ में 29 बटालियन, के० रि० पु० बल के का० पृथी चन्द गोली लगने से घायल हो गया। उसे अस्पताल में भर्ती किया गया और वह खतरे से बाहर हो गया। सहायक कमांडैंट एन. एन. मिश्र के नेतृत्व में इस बल की टुकड़ी ने एक स्टेन गन और पाँच .303 रायफलों के सहित, गोला बारूद की वह भारी मात्रा बरामद की, जिसे मणिपुर के मोइरंग पुलिस थाने से मैती उग्रवादियों ने पिछले वर्ष लूटा था। तब उन्होंने एक सब-इंस्पेक्टर, दो सिपाही और मणिपुर पुलिस के एक बन्दी की हत्या की थी और 16 रायफलें छीन ले गये थे।

प्रेपोक वर्दियाँ, तुलाचन्द्र सिंह आदि के पहचान पत्र, रसीद बुकें तथा प्रेपोक साहित्य से भरा एक थैला भी हमारी टुकड़ी को मिला।

## कैलिको मिल की हमें 20% छूट

सारे देश भर में मान्यता प्राप्त अपनी खुदरा दुकानों से के०रि०पु० बल के सेवीवगं को अपने पहचान पत्र दिलाने पर 20 प्रतिशत की छूट देना, **कैलिको मिल्स** अहमदाबाद ने स्वीकार कर लिया है।

## आयकर अधिकारियों को हमारा सहयोग

दिनांक 7 जनवरी 1980 को, 48 बटालियन (के०रि०पु० बल) के जवान दो-दो तीन-तीन की संख्या में दिल्ली के आयकर अधिकारियों की रक्षा के लिये निरत किये गये। इन अधिकारियों को चांदनी चौक के सर्राफ़ा बाजार और कूँचा बाग में छापे मारने थे।

अनेक दुकानों पर एक साथ छापा पड़ा और चाँदी के क्रय-विक्रय करने वाली विभिन्न फर्मों से चाँदी की ईंटों की भारी संख्या पकड़ी गयी। छापे के समय, दो मनुष्य एक-एक ईंट लेकर खिसकना चाहते थे; हे० का० रामनरेश और का० कमालसिंह की तीक्ष्ण दृष्टि ने ताड़ लिया। वे दोनों मनुष्य पकड़े गये और आयकर अधिकारियों को सौंप दिये गये। उन दो ईंटों का भार लगभग 90 कि०ग्रा० था।

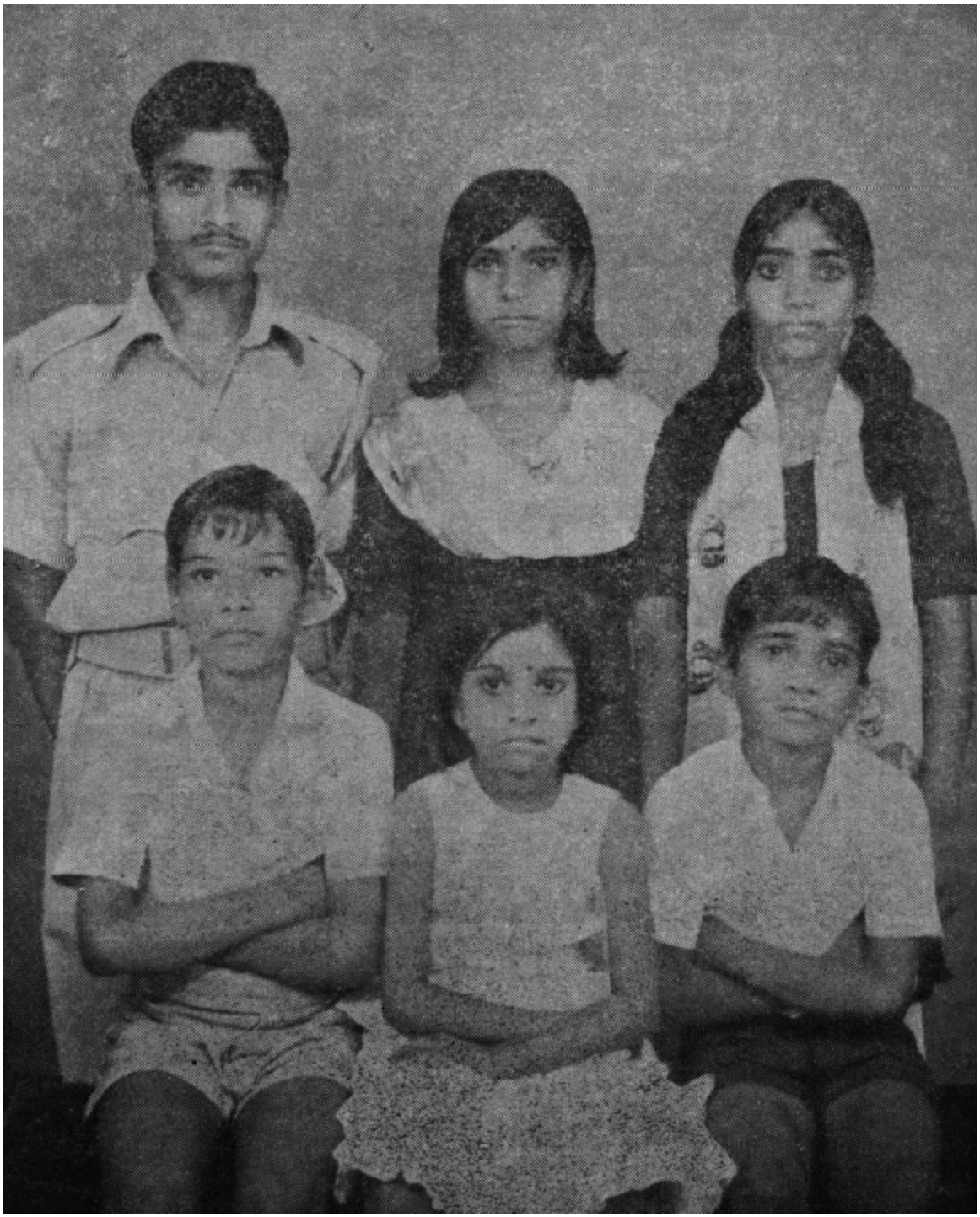
वज़ीरपुर औद्योगिक क्षेत्र में भी उसी समय छापे पड़े। दो फर्मों पर सील लगा दी गयी।

इन छापों के फलस्वरूप, लगभग 92 लाख रु० के मूल्य की कोई 3,000 कि० ग्रा० चाँदी पकड़ी गई।

छापों के बाद, आयकर विभाग के भंडार गृह में सुरक्षित पहुँचाने के लिये, हमारा दल लगाया गया। 10 जनवरी को स्थानीय समाचारपत्रों में इसकी चर्चा रही और के० रि० पु० बल के कार्य की सराहना हुई।

## वीरता पदक के भत्ते में वृद्धि व पदोन्नति

वीरता के लिये राष्ट्रपति के पुलिस पदक की पट्टी से संलग्न वित्तीय भत्ता 30 रु० से बढ़कर 40 रु० प्रति मास 1 दिसम्बर 1979 से लागू हो गया है।



# अब ये अनाथ नहीं हैं

**ले०—श्री एम० वंकट रामा राव**

यह बहुत समय की बात नहीं है जब छः अनाथ बच्चों के परिवार को ग्रुप केन्द्र

रामपुर के कामैयों ने अपना लिया था। दिसम्बर 1974 में, नाई नानक चन्द की अकाल मृत्यु तथा उसके बाद उसकी हताश पत्नी की आत्महत्या ने छः अल्पायु बच्चों को अन्न, आश्रय और स्नेह से वंचित कर दिया। मानवता के नाते, उस ग्रुप केन्द्र के अधिकारियों और जवानों ने उन सभी बच्चों को अपना बनाने का साहस किया (पढ़िये जनवरी 1977 का क्रैपलर-हिन्दी)। अपने-अपने अंशदानों से, उनके भोजन, वस्त्र तथा शिक्षा को धन आया; किन्तु आगे वर्षों में उन बच्चों की यह सहायता मिलते रहने कि समस्या मुँह फाड़े खड़ी थी। प्रयत्नों के फलस्वरूप, केन्द्रीय कल्याण कोष से 200 रु० प्रति मास का अनुदान मिला और बच्चे अल्पायु होने के कारण, पेंशन और उपदान उन्हें नहीं मिल सकते थे, अतएव उन बच्चों का वैध संरक्षण कमांडैंट को सौंपा गया।

छहों में सब से बड़े 'राजकुमार', जो अब 19 वर्षों का है, देर में पढ़ाई शुरू की और पिछले तीन वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद के०रि० पुलिस में भर्ती होने के लिये न्यूनतम शैक्षिक अर्हता पाली; परन्तु भर्ती पर रोक लगी थी, और रिक्त स्थान नहीं थे। फिर भी के०रि०पु० के अधिकारियों कि निरन्तर चेष्टा फलीफूली, क्योंकि जुलाई 1979 को के०रि०पु० बल की मुख्यधारा में वह शामिल हो गया।

प्रसन्नचित तथा गर्वीले राजकुमार को अपनी नई प्राप्त वर्दी में, यह विश्वास है कि समय आने पर, अपने पिता के नाई काम को वह ग्रहण कर लेगा।

दोनों छोटी बहनें, 13 और 12 वर्षीय रानी और मीना पढ़ाई में लगी रहती हैं और अपने छोटे भाईयों और एक बहिन का पालन-पोषण करती हैं। अपने छोटे भाइयों और बहिनों को, सब से बड़ी कन्या रानी माँ कि भूमिका निभाती है। वह उनके भोजन व गृह कार्य की देखभाल करती है और उनके वर्दी-वस्त्रों को सीती संभालती रहती है। अपने फालतू समय में, अपनी माता की छोड़ी हुयी सीने की मशीन से, वह कुछ कमा लेती है। वह बुनाई सीखने को भी इच्छुक है।

इन बच्चों का 'संरक्षक' चुपचाप उनके भविष्य की भी चिन्ता करता रहता है। पिछले चार वर्षों में, सही हिसाब-किताब और सावधानीपूर्वक व्यय करने से, उन्होंने मासिक कल्याण अनुदान से 3,750 रु० बचा लिये हैं। साथ ही, पेंशन और उपदान से भी 8,050 रु० उन्होंने इकट्ठे कर लिये हैं। अब, राजकुमार की नई आय से, रानी और मीना के विवाह खर्च के लिये धन इकत्रित करने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

उन बच्चों के हँसते हुये चेहरे तथा नेत्रों में चमक देखकर, यह विश्वास होता है कि उनका भविष्य सुरक्षित है और इस पिछले संकट की उन्हें याद नहीं दिलाई जाए, जब उनके माता-पिता निराश्रित छोड़ गये थे।

ग्रुप केन्द्र के संरक्षक कर्मियों के सामने, कल के अनाथ बच्चों को भावी उत्तम नागरिक बनाने का बड़ा भारी काम है। उनकी मानवीय दयावादिता की जितनी प्रशंसा की जाये, वह थोड़ी है।

---

## ॥ पहेलियाँ ॥

[प्रोस्तोता—का० राम जी—13 बटा०]

हरा खड़ा खेतों लहराता,
नीचे लाठी, ऊपर पाती।
मेरा उत्तम स्वाद,-खड़े को,
खड़ी खड़ी सब दुनिया खाती॥1॥
तीन अक्षर का मेरा नाम।
अंत कटे तो वीर कहाऊँ।
आदि कटे तो धूल उड़ाऊँ।
मध्य कटे सूजन बन जाऊँ।
दुनिया को में ज्योति दिखाऊँ।
तुम्हीं बताओं, क्या कहलाऊँ ॥2॥
गाड़ी मुझको सब कहें,
बिना बैल, बिनु रेल।
रातोंदिन सड़कों चलूँ,
बिनु इञ्जन, बिनु तेल ॥3॥

**उत्तर** (1) गन्ना (2) सूरज (3) रिक्शा ।

**कहानी :**

# काया पलट

### ले०–श्री जे० एस० शर्म्मा

"अब्बा, यह भी कोई निकाह है, जिसमें हमें दहेज में फूटी कौड़ी नहीं मिली है" उदास मन से अहमद ने निश्वास ली।

"बरखुरदार। हमने कौन से हज़ारो खर्च किये हैं" वृद्ध पीर बख्श ने ठंडी साँस ली; फिर धीरे-धीरे बोला "हम ग़रीबों की तो खुदा भी नहीं सुनता। लेकिन तुझे तो अब सब्र करना चाहिए। मुफ़लिस होते हुए भी, मैंने तेरी तमन्ना पूरी कर दी—ढोल ताशें — नौबत नगाड़े—सभी बजवा दिये।"

इतना सुनते ही, अहमद का चित्त प्रफुल्लित हो गया। होता भी क्यों नहीं, जब वह जानता था कि उसके पिता ने अपने वश से अधिक धन व्यय किया था। कदाचित् वह

और भी धन लगाता; परन्तु इस वर्ष आम की 'फसल' हल्की हुयी थी और रही सही प्रलंयकर आँधियों ने नष्ट कर दी थी। फसल ठेके पर लेना उसका धंधा था। सो इस वर्ष उल्टे लेने के देने पड़ गये थे। वह तो इस वर्ष विवाह करना भी नहीं चाहता था; किन्तु कन्या वालों को वचन दे रखा था। इधर उनका आग्रह भी अतितीव्र था। गृह में भी अहमद की माता, अत्यन्त रुग्णी चल रही थी। वह सदा इस विवाह के लिए अनुरोध करती हुई निश्वास लेती थी "मुझे मालूम है, मेरे मुक़द्दर में अहमद की शादी देखनी ही नहीं लिखी है।"

इन्हीं सब बातों से विवश हो कर, उसने अहमद का विवाह रचाया था। मुसलमानों में घनिष्ठ सम्बन्धी छोड़, भाई बन्धुओं में शादियाँ हो जाती हैं। अहमद के साथ भी ऐसा ही हुआ था। ससुर दूर के मामा लगते थे। उनकी सब्ज़ी की दुकान थी। उस समय आजकल की सी स्थिति तो थी नहीं, जो एक-एक सब्ज़ी वाला लखपति बन रहा है। बने भी क्यों नहीं ? जितने दामों की मंडी से पसेरी लाते हैं, उतने की एक किलो ग्राहक को देते हैं। उन दिनों तो, कौड़ियों में सौदा बिकता था। कोई कितना कमा लेता और कितना बचा लेता। वर्षों के टूटे छप्पर पर पलान भी नहीं डाल पाते थे तथा टूटी खाट के बुनाने को बान तक नहीं जोड़ पाते थे । न जाने कैसे 'अल्लाह-अल्लाह' करके दो जून का जुगाड़ जुटा पाते थे।

भारत में आदि काल से सभी धर्मों और जातियों में विवाह अनिवार्य परम्परा मानी जाती रही है। निर्धन से निर्धन व्यक्ति को भी इसे करना पड़ता है। उनके अन्यथा दुःखी जीवन में यही तो एक समय आनन्द की हिल्लोरें पाने का होता है। तभी तो, बहुत से बेचारे महाजन के चंगुल में फँसते हैं, जिनका नक़द छोड़, ब्याज तक कभी उतार नहीं पाते हैं। किन्तु इस विवाह में दोनों पक्षों ने संकल्प कर रखा था कि महाजन से एक कौड़ी उधार उन्हें नहीं लेना है। आख़िर यह रिश्ते में रिश्ता था; कोई आज का नया तो था नहीं । इसी कारण, दोनों ने कुछ नहीं लेने-देने की शपथ खायी थी।

जब बारात विदा हो कर, अवध के महल सरा के पास से निकली, तब सब दासियाँ "धमड़-धमड़, का धूम-धड़क्का" सुनकर उत्सुकतापूर्वक उसे देखने छज्जे पर आ इकट्ठी हुई। पर यह क्या? सबमें सहसा एक खिलखिलाहट दौड़ गई—"लाहोल बिला कुब्बत ! फूल न पाती, देवी—हा हा"

तत्क्षण भीतर से किसी से डाटने की ध्वनि आई "अरे कलमुँहियों, क्यों किसी की मुफ़लसी की मज़ाक उड़ाती हो। सब उंगलियाँ एक बराबर नहीं होतीं।"

"बेगम साहिबा, ज़रा मुलाहिज़ा तो फ़र्मायें। ऐसी अजीबोग़रीब बारात आज तक सरकार ने नहीं देखी होगी" कहती हुई एक मुँहलगी बाँदी ने मुँह बिचकाया और ऊपर से जड़ दिया "घर में नहीं लत्ता, पान खाये अलबत्ता।" कहती हुई वह कुदसिया बेगम की बाँह पकड़ कर छज्जे पर ले आई। बेग़म उसका अनुरोध नहीं टाल सकी ; अन्ततः कभी वह उसी बाँदी की सिफारिश पर ही तो महलसरा में ख़ादिमा नियुक्त हुई थी।

छज्जे पर कहकहे जारी थे। कोई कह रही थी "हर्र लगी न फिटकरी, पटाक बहु

आय पड़ी," तब कोइ "छटाक चून, चौबारे रसोइ" की फबती कस रही थी। कुदसिया बेगम ने उनकी उस वाग्विलासिता में कोई भाग नहीं लिया ; तुरन्त द्वार पर से एक क़रौलीबन्द तुरक़ी बाँदी को बुलाया—'कनीज़, इस बारात को महल में ले आयो।"

बाँदी ने स्वीकारात्मक मुद्रा में ग्रीवा हिलायी और तीन बार कोर्निस करके बारात की ओर प्रस्थान किया, इस कौतुहलप्रद दृश्य को देखकर सब दासियाँ हतबुद्धि रह गईं। कोई भी बारात को भीतर बुलाने का तात्पर्य नहीं समझ सकी।

उधर जब तुरकी बाँदी ने बारात को बेगम का आदेश सुनाया, तब मृत्यु के सदृश सन्नाटा छा गया; सब सकते में आ गये। अहमद और पीरबख़्श, दोनों पुत्र-पिता के तो पग तले की भूमि निकल गई।

"छिः कानी के ब्याह की नौ सौ जोखें। मैं पहले ही कह रहा था कि आम सड़क से डोली मत निकाल । ज़रूर किसी बेगम के काम काज में दखल पड़ गया है; अब मयाऊँ के ठौर को कैसे पकड़ा जायेगा?" पीरबख़्श ने हाथ मले; उसके मुख पर प्रश्नचिह्न अंकित हो गया।

"अब्बा, मुझे क्या पता था कि सिर मुड़ाते ही ओले पड़े.....।"

वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि तुरकी बाँदी ने कड़क कर कहा "अरे सलाह-मशवरा ही करते रहोगे कि महलसरा चलोगे। क्या तुम्हें मालूम नहीं—हुक्मे हाकिम मर्ग़मफाज़ात ?"

सुनते ही, दोनों के प्राण सूख गये । वे भली भाँति जानते थे कि निकुरंश स्वामी का आदेश-मृत्यु का आह्वान होता है । अन्य सब बारातियों ने भी उन्हें यही समझाया "जब ओखली में सिर दिया है, तब मौत से ख़ौफ़ फिज़ूल है । बेगम-मलिका से मिन्नत करके माफी मांगने में ही कोई ख़ैरियत बन जाये, तो बन जाये ।"

सबके समझाने पर, वे चिल्ला पड़े "बन्द करो, बाजे गाजे। ले चलो इस मुहर्रमी बारात को महल सरा।"

तुरन्त घोर नीरव छा गया। बारात मानों शव-यात्रा में बदल गयी। उधर कुदसिया बेगम यह सब कुछ अपनी चिलवन से देख रही थी। उसे अपने चिरन्तन दिवस याद आ रहे थे। कितने निर्धन थे उसके मात-पिता। कैसे 'अदना आदमी' से उसका विवाह हुआ था—ठीक इसी प्रकार निरीहता तथा निष्कंचनता में। उसकी बारात में भी दान दहेज का नाम नहीं था और ना ही बने थे कोई मिठाई-पकवान...। उससे बहुत पहले, एक दिन उसके गृह में उसके पिता के मित्र-ज्योतिषी अनवर अली आये थे। पिता भोजन कर रहे थे; दस्तक सुनते ही उन्होंने कहा था "बिस्मिल्ला ख़ादम, जब तक में दस्तरख़ान से उठूँ, तुम नजूमी साहब को गिल्लोरियां दे आयो।"

जब नन्हें-नन्हें हाथों में पान की गिल्लोरियाँ लाते ज्योतिषी ने देखा, तब तुरन्त आगे बढ़ कर उसने हाथ चूम लिये । पर यह क्या ? वह उन नन्हें हाथों को पकड़े ही रह गया; जब थोड़ी देर बाद सुधि आयी, तब उसने उस सुकुमार बालिका के कपोल थपथपाते हुये कहा "बेटी जब परवर दिगार तुम्हें मालिका-ए-अवध बनाये, तब हमें

मत भूल जाना" और कह कर हँस दिया।

अन्य सब तो इसे श्रवण कर अतीव प्रसन्न हुये, किन्तु बिस्मिल्ला बाद में वृद्ध ज्योतिषी को बहुत कोसा करती थी; और निश्वास लेती हुई कहा करती थी "कहाँ है हमारी किस्मत, जो सितारा बुलन्द होता ! बेड़ा गर्क़ हो इन नजूमियों का, जो दुनिया को धोखा देते हैं।"

रही सही उसकी विषण्णता तब त्रासदी में बदल गयी थी, जब उसका विवाह हुआ था। उसका पति उसके ही शब्दों में 'शोहदा' था। वह स्वयं तो एक 'डोमनी' से 'गुलछर्रे' उड़ाता था; किन्तु गृह में विस्मिल्ला ख़ादम को दाने-दाने को मोहताज रखता था। कई-कई दिन तक बेचारी की बातें कुल हू अल्लाह पड़ती रहती थीं । गृह में उसके दर्शन नहीं होते थे । मदिरापान से उन्मत्त हो कर, वह बेचारी को बुरी भाँति भला बुरा कहता तथा मारता-पीटता था। बेचारी बिस्मिल्ला को अपना जीवन साक्षात् नरक 'जीता जागता दोज़ख़' लगता था ।

एक दिन तो मदोन्मत्त दशा में, उस शराबी ने अपना प्याला ही बिस्मिल्ला के सिर पर दे मारा था। बेचारी के माथे से रक्त बहने लगा था। रक्त को बहते विलोक कर, वह घबड़ाती हुई उसी आज की मुँहलगी दासी पर गयी थी और अपनी सारी व्यथा फूट फूट कर उसे सुनायी थी। द्रवीभूत होकर, उस दासी ने बेगमों से अनुनय-विनय कर, उसे महल सरा में चाकरी दिला दी थी।

विस्मिल्ला को वैसे काला अक्षर भैंस बराबर था; किन्तु व्यवहार कुशलता में वह अत्यन्त निष्णात् थी। इसी प्रकार, वह कोई अद्वितीय गौरांगना नहीं थी; परन्तु उसकी मुखाकृति अतीव मनमोहिनी थी। उसके इन्हीं गुणों पर आसक्त होकर, एक दिन अवध के नवाब नसीरुद्दीन हैदर ने उस पर प्राण न्यौछावर कर दिये तथा उसके उस शोहदे पति पर झूठे आरोप लगा कर, अवध से निष्कासित कर दिया था और बना लिया था विस्मिल्ला को निकाह कर 'नवाब बेगम'। फिर आज तो वह 'कूदसिया बेगम' के नाम से प्रख्यात थी।.....

इन्हीं विगत स्मृतियों के चलचित्र उसके मानस पट पर खिंचते चले गये। उसका अन्त: करण किसी मर्मस्पर्शी संवेदना से उद्वेलित हो उठा। उसने अपनी विचलित कुन्ठा को शांत करना चाहा—तभी तो, उसने उस बारात को महल सरा में बुलाया था।

इधर पीर बख़्श और अहमद को मानों साँप सूंघ गया था। उन्हें हर क्षण दण्ड पाने की आशंका पर्याकुल किये हुये थी। यद्यपि अवध के नवाब दिल्ली सम्राट के अधीन थे, किन्तु दिल्ली के सम्राटों की निर्बलता के कारण, वे सर्वथा स्वच्छन्द थे। उनका और उनकी मलिकाओं के आदेश अन्तिम शब्द थे। उनकी कहीं भी कोई अपील नहीं थी।

इसी आकुलता में व्यथित, उन लोगों ने एक भयंकर वेषधारी तातारिन को पास आते बिलोका। वह कुछ नहीं बोली, किन्तु अपनी करौली को घुमा कर दूर से बड़े रौव से संकेत किया। बेचारे हताश हृदयों को आज्ञापालन के अतिरिक्त अन्य चारा ही क्या था ? ऊपर का श्वास ऊपर और नीचे का श्वास नीचे किये सब अन्दर चलने लगे।

अहमद ने सुन रखा था कि नवाबों को जिस स्त्री पर कामुक दृष्टि पड़ जाती थी, उसे वे 'हरम' में रख लेते थे। इसी कारण, शाही हाथियों के घन्टे बँधे रहते थे, जिससे शाही सवारी के समय, अपनी अपनी महिलाओं की 'असमत' बचाने के लिये लोग पर्दे में करलें। जब ये विचार उसने पिता से प्रकट किये, तब पीर बख़्श ने कहा "क्या बावला हुआ है ?"

"मुझे तो पूरा डर है; आखिर लैला कौन सी गोरी—"

"अरे बेवकूफ़, नवाब ने नहीं, नवाब बेगम ने बुलाया है । क्यों भाई करीम बख़्श ?"

करीम बख़्श पहले ही जला भूना बैठा था। उससे एक नवाब ने देशी आम के बाग़ को दशहरी बता कर ठगा था। बुदबुदाया—"नवाबों का बाबा आदम निराला होता है। वे टट्टी की ओट शिकार करते हैं। अहमद का अन्देशा सही हो सकता है। **बेगम** के बहाने से नई दुल्हन को अन्दर बुलाया है। थोड़ी देर में धता बता कर, हम सबको भगा देना उनके बायें हाथ का खेल है ।"

"आख़िर तुम भी अहमद के चचा ठहरे। भला नवाबों के यहाँ खूबसूरती की कमी है।"

"गुस्ताख़ी माफ़। कुदसिया बेगम कौन सी हुस्न सरापा है।"

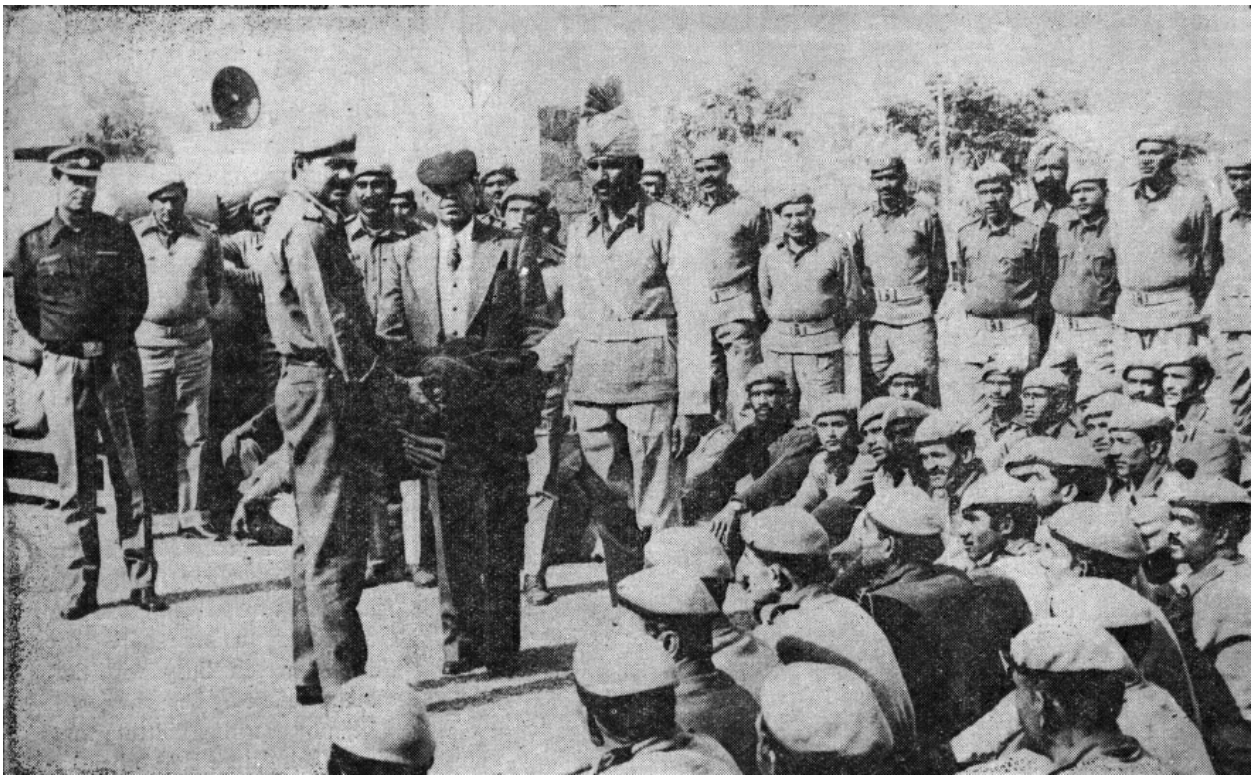
"मगर हम तो निहायत मुफ़लिस—"

आपको इस बेगम की मुफलिसी का आलम नहीं मालूम । ख़ादिमा नाम था; ख़ादिमा काम था। घर के आगे फटा टाट तक मुहय्या.....।"

उसी समय छमछम की बड़ी मधुर ध्वनि श्रुतिगत हुयी । सम्मुख देखा तो नई दुल्हन ऊपर से लेकर नीचे तक स्वर्णाभरणों से पीली हो रही थी। हीरे जवाहरातों से लदी थी। उसके पीछे पीछे दासियाँ मणिमाणिक्य से भरे थाल भेंट में लिये चली आ रही थीं। सबने आकर कोर्निस की । तातारी बाँदी ने उच्च स्वर में कहा "यह सब कुदसिया बेगम साहबा की तरफ़ से आपको भेट है" फिर मुस्कराते हुये बोली 'आख़िर दुल्हा डेढ़ घड़ी का शहंशाह जो होता है ?—अच्छा आप सब अब जा सकते हैं। उम्मेद है आप कभी कभी हमारी बेगम साहिबा को याद कर लिया करेंगे।"

"कभी कभी क्या; हम ज़िन्दगी भर उनकी दरियादिली व सख़ावत को नहीं भल सकते, जिन्होंने हमारी काया पलट ही कर दी है" अहमद ने भावविभोर होकर कहा "क्यों अब्बा जान"

पीर बख्श तो प्रसन्नता से पूरा पागल हो रहा था। वह खुशी में चिल्ला पड़ा "कुदसिया मलिका जिन्दाबाद ! बिस्मिल्ला बेगम बेमिसाल।"



**कमांडैंट पाण्डेय द्वारा कम्बल-दान के समय उपस्थित जवान**

# रेडक्रास सोसाइटी को के० रि० पु० बल द्वारा कम्बल-दान

भारत की रेड क्रास सोसाइटी को, श्री चिन्तामणि पांडेय, कमांडैंट, ग्रुप केन्द्र दिल्ली (के०रि०पु० बल) ने 18 जनवरी 1980 को, 1, 600 कम्बल झड़ौदा कलां में एक छोटे समारोह में भेंट किये। ये कम्बल सारे देश में निरत के० रि० पु० बल की विविध यूनिटों से इकट्ठे किये गये थे, जो काम में लाये जा चुके थे।

यह स्मरणीय है कि के० रि० पु० बल पीड़ित जनता की भलाई के लिये यथासंभव सहायता करता रहा है। ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां, दिल्ली हर वर्ष रक्तदान की व्यवस्था करता रहा है। रक्षा-सेवाओं और अर्द्ध सेना संगठनों में सर्वाधिक रक्तदान करने के कारण, के० रि० पु० बल को पिछले वर्ष रेड क्रास सोसाइटी की दिल्ली राज्य शाखा से **ट्राफी** मिली थी।

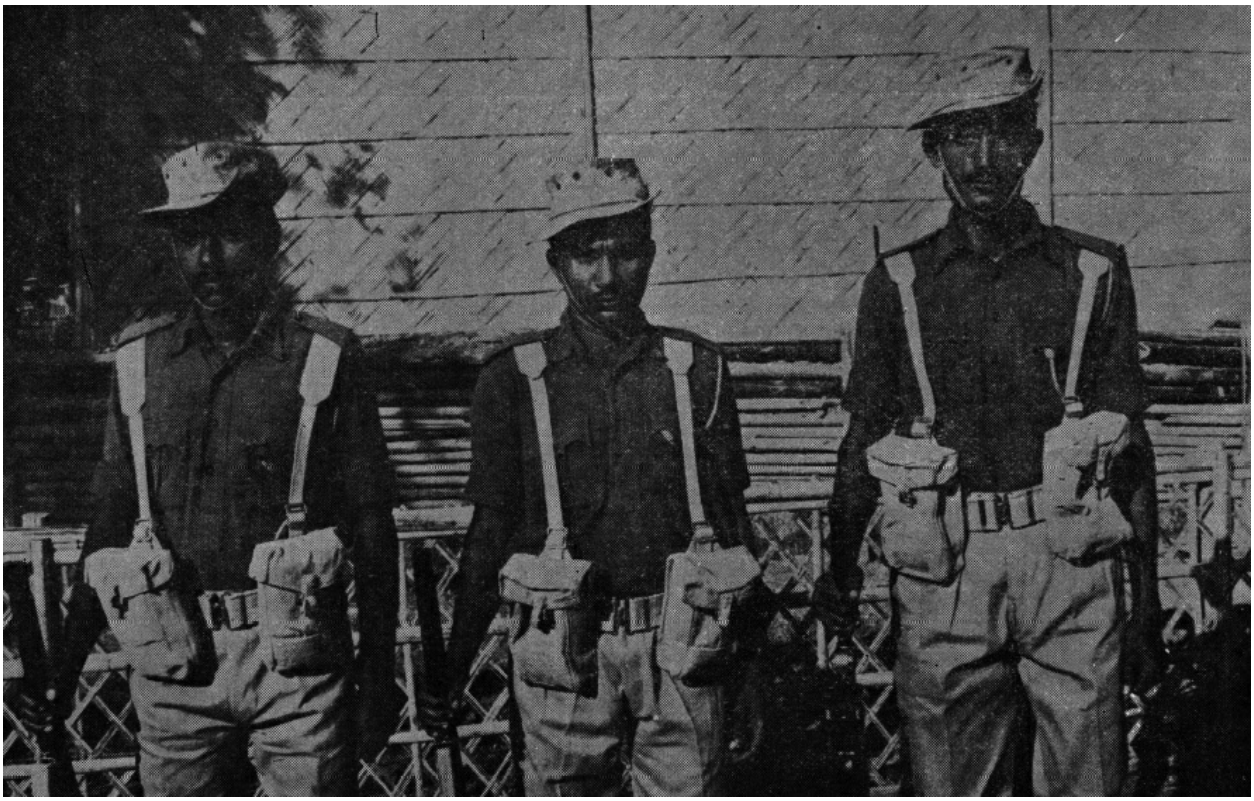
के०रि० पु० बल के जवान सारे देश में आई बाढ़ों और अन्य दैवी संकटों से ग्रस्त व्यक्तियों को जन सेवायें प्रदान करता रहा है। दिल्ली में ही, इस बल का योगदान सन् 1977 की बाढ़ों में उल्लेखनीय है, जब नजफ़गढ़ क्षेत्र में बाढ़ग्रस्तों को भोजन वितरित करते समय 1 बटालियन के एक सपाही के प्राण चले गये थे। 1978 की बाढ़ में भी, इस बल ने बाढ़-पीडितों की सहायता कर, उत्तम जन सेवा की थी। इसी दिशा में, इन कम्बलों का दान भी एक अगला चरण है।

**कविता :**

# केन्द्र-पुलिस-बल की जय हो

**[रचयिता—का० हंसराज ओझा 'प्रभात' 53 बटा०]**

जिह्वा पर जिसकी हो गाथा जिस से जनता निर्भय हो ।
वही देश का है 'दल' अपना, केन्द्र-पुलिस-बल की जय हो ।
अनुशासन देदीप्यमान हो, कर्मों में जो नष्टामय ।
अम्बर में ध्वज फहरे जिसका, केन्द्र-पुलिस बल की जय हो ।
सच्चाई-निष्पक्षभाव हो, हो हितैषिता जनगण की ।
सदा 'शान्ति-पहरी' जनता का, केन्द्र पुलिस बल की जय हो ।।
रिपुत्रों से लड़ता जो हँस कर, भूख-प्यास का ध्यान न कर ।
अथक परिश्रम निशि-दिन करता, केन्द्र-पुलिस-बल की जय हो ।।
नहीं विषमता जिन में तिल सर, प्रेम-सूत्र में बँधे सभी ।
जो 'जयहिन्द' लगाता नारा, केन्द्र-पुलिस-बल की जय हो ।
कठिनाई-कष्टों से लड़ता, विकट संकटों को सह कर ।
मुस्काता बलि हो जाता जो, केन्द्र-पुलिस-बल की जय हो ।
जहाँ-जहाँ जाता जो जग में, न्याय-व्यवस्था करे वहाँ ।
'सेवा-भक्ति' सदा जिसको प्रिय, केन्द्र-पुलिस-बल की जय हो ।
यही प्रार्थना है, अब प्रभु से, सुख-जय-यश पावे यह बल ।
समुद कहे 'प्रभात' निरंतर, केन्द्र-पुलिस-बल की जय हो ।



**बायीं ओर से : कां० पिल्लई (केरल), कां० लक्ष्मण सिंह (राजस्थान) और कां० विजय इन्द्र सिंह (हरियाणा)**

# उन्होंने घुटने नहीं टेके

## ले०—श्री एच० एस० सेठी

त्रिपुरा के आनन्द बाज़ार में स्थित के० रि० पु० बल की चौकी के जवानों को 9 नवम्बर 1979 की संध्या अन्य जैसी ही थी।

ये जवान बिल्कुल विच्छिन्नता की स्थिति में रहते थे। वहाँ पहुँचने के लिये, 235 कि० मी० की अच्छी-बुरी सड़कों पर चलना पड़ता है और फिर 16 कि० मी० के संकीर्ण पथों और लट्ठों पर जाना पड़ता है, जो दलदली भूखंडों से जुड़े होते हैं, और देव नदी को तीन बार खड़े-खड़े पार करना होता है तथा मार्ग में काष्ठ-पुलों से दो बार पार जाना पड़ता है। यदि तनिक सन्तुलन बिगड़ा या पाँव फिसला, तब सीधे दलदल या नदी में गिरे दिखाई देते हैं। एक अन्य उससे भी बुरा मार्ग है—त्रिपुरा, मिज़ोरम और बंगला देश के त्रिसंगम पर खंतालंग से चौकी तक पैदल चलना पड़ता है।

अपनी पूर्ण विच्छिन्नता में, वहाँ जवान चिर काल से शान्तिपूर्वक रहते थे। उस निर्णायक दिन, चौकी पर 24 जवान थे। साथ में, अपनी चौकियों में से एक पर जाते हुये वहीं सी० सु० दल के 26 जवानों ने भी रात्रि-विश्राम किया था।

रात्रेभोज के उपरान्त, जवान शेष संसार के एक मात्र सम्पर्क 'आकाशवाणी' से समाचार सुन रहे थे। जैसे ही रेडियो ने कहा "लीजिये समाचार सुनिये..." बड़े ही पास से; बल्कि, शिविर के घेरे पर स्थित दो घरों से हल्की मशीन गन से विस्फोट हुआ। सभी जवान हक्के-बक्के रह गये । किसी भी संभाव्य धावे या राजद्रोह-कार्रवाही की जानकारी उन्हें नहीं थी। पूर्ण शान्ति छाई हुई थी, कोई कुत्ता तक नहीं भौंक रहा था।

संतरी चीख पड़े कि शिविर पर आक्रमण हुआ है। शास्त्रागार (कोत) पर पहुँचने और हथियार निकालने के लिये; रेंगन की खाइयों में से जवान रिंगे। तेज विस्फोटों की चिन्ता नहीं करते हुये, चौकी समादेष्टा पिथौरागढ़ का राजपूत स० इ० दीवान सिंह 'कोत' की ओर भागा और 'कोत' पर पहुँचे हुये जवानों को गोला-बारूद बाँटने के लिए उसे खोला।

वह तो तीन ओर से मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे के विद्रोहियों की भारी संख्या द्वारा पूरा आक्रमण था; हल्की मशीन गनें और रॉकेट फेंक सहित स्वचालित हथियार प्रयुक्त हुये थे। स०इ० दीवान सिंह ने तीन हल्की मशीन गनें, रायफलें और बारूद जवानों को दिया। के० रि० पु० और सी० सु० दल के जवानों ने गोली चालन का भरसक उत्तर दिया। दीवान सिंह के शब्दों में---"मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे के लोगों ने अपनी शक्ति दिखाने के लिए चीख-पुकार की। हमने गोलाबारी से उत्तर दिया। क्योंकि इस अभागे स्थान पर अधिक सैन्य कमक मिलने में देर लगती, हमने अपना बारूद बुद्धिमत्ता से प्रयुक्त किया। और कौन जानता था कि तीन ओर वाला यह धावा कितनी देर तक चलेगा? हम पर 2" मार्टर था; किन्तु इस भय से कि कहीं स्थानीय जनता को उससे क्षति पहुँच नहीं जाए, हमने उसे प्रयुक्त नहीं किया ?

किन्तु मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे ने अपना रॉकेट-फेंक का प्रयोग किया। सौभाग्य से, रॉकेट एक सौ गज दूर गिरा। वह बम की तरह फटा। हम पर 2" मार्टर को प्रयुक्त करने के सिवा, अब अन्य कोई चारा नहीं रह गया। उससे वांछित प्रभाव पड़ा। मोर्चे की धुँआधार गोलाबारी रुक गयी, परन्तु रुक रुक कर फिर भी चलती रही।



**स० इ० दीवान सिंह**

90 मिनट तक यह कार्रवायी रही, तब मोर्चे ने सीटी बजाई। वह शायद लौट जाने के लिये थी। फिर भी, शत्रु ऊँचाई से छिटपुट गोलाबारी करते रहे। हमें थोड़ा बहुत भरोसा था कि वे लौट रहे हैं, किन्तु हम उस पर निर्भर नहीं हो सकते थे; वह छलने के लिये नीति भी हो सकती थी।"

के० रि० पुलिस और सी० सु० दल के कितने ही जवानों ने वीरता दिखाई। उनमें एक था 'कोत' लांसनायक बी० एस० गोपने, जो 'कोत' पर तत्क्षण आ पहुंचा। कां० वी० एस० पिल्लई (केरल) ने रायफल दाग़ी और फिर क्वार्टरगारद के सामने से हल्की मशीन गन से मोर्चा लगाया। क्वार्टर गारद का संतरी कां० लक्ष्मण सिंह (राजस्थान) पहला जवान था, जिसने कोत खुलने से पहले, मिज़ो विद्रोहियों पर गोली चलाई और कां० विजय इन्द्र सिंह (हरियाणा) ने लक्ष्मण सिंह के साथ 'मोर्चे' से हल्की मशीन गन चलाई।

दुर्भाग्य से, सी० स० दल का हे० कां० मनोरंजन घोष, 'कोत' की ओर दौड़ते समय संघातक रूप से घायल हो गया। सी० सु० दल के दो अन्य सिपाहियों की भी टांगों में गोलियो से चोटें आईं।

आनन्द बाज़ार से कोई 20 कि० मी० दूरी पर, त्रिपुरा की ज़म्पुई रेंज पर स्थित फुलदंगसाई, निकटतम स्थल था, जहाँ से और सैन्य सहायता पहुँच सकती थी। ऊँचाई पर होने के कारण, इस चौकी के जवान यह जान गये थे कि आनन्द बाज़ार चौकी पर धावा हो गया है और उन्होंने ही दूसरों को सबसे पहले इस अभिद्रोह की सूचना दी। आनन्द बाज़ार चौकी तुरन्त मदद इस लिये नहीं कर सकी, क्योंकि उसके

बेतार घर पर हो सीधी गोलाबारी हो रही थी।

कम्पनी कमांडर भल्ला और राव के नेतृत्व में, के० रि० पुलिस की सैन्य सहायता आनन्द बाज़ार पर रात के 3 बजे ही जाकर पहुँच पायी। उन्होंने यह पाया कि जब हमारी चौकी गोलाबारी में व्यस्त थी, मिज़ो विद्रोहियों ने बाज़ार लूट लिया था। जब वे दोनों कम्पनी कमांडर शिविर पहुँचे, तब उन्हें शिविर में प्रवेश करने में कठिनाई हुयी। केवल अपनी पहचान बताने पर ही जख्मी जवानों को वे आश्वस्त कर सके। बाद को, पूछताछ से मालूम हुआ कि खंतालंग के त्रिसंगम से त्रिपुरा में विद्रोही घुसे थे और उनकी संख्या 84 थी। यह मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे की एक बटालियन की जनशक्ति के शायद बराबर थी। उन्होंने रॉकेट फेंकों के सहित, स्वचालित तथा उच्च प्रक्षेप पथ वाले हथियार प्रयुक्त किये थे। चौकी के जवानों के सौभाग्य से, छोड़े गये चार रॉकेटों में से तीन में आग नहीं लगी। जवानों की कृतसंकल्पता के बिना, वह चौकी, जटिल हथियारों से लैस विद्रोहियों की इतनी भारी संख्या से रौंद डाली गई होती।

इन जवानों को अपने हथियारों में अटल विश्वास था; विद्रोहियों से निपटने के लिये अपनी क्षमता में दृढ़ भरोसा था। और सबसे अधिक थी पक्की, आस्था परमात्मा में। चौकी के बीच में, वृक्षों का निकुंज है। ये वृक्ष ही थे, जो गोलियों और उनके बीच आ गये । गोलियों से छिदे उनके तने, आक्रमण की भीषणता के मौन प्रमाण दे रहे हैं । जवान उन वृक्षों के आभारी हैं; तब से एक तरु के मूल में तेल-दीप सदा जलता रहता है।

---

## के.रि.पु. बल के फोटोग्राफर पुरस्कृत

इंडियन पुलिस जर्नल द्वारा आयोजित पुलिस फोटो प्रतियोगिता 1978 में , महानिदेशालय के जनसम्पर्क विभाग के स० इ० एस. के. खन्ना को 125 रु० का द्वितीय पुरस्कार मिला है। उसी विभाग के स० इ० शिवकुमार को भी 50 रु० का सान्त्वना पुरस्कार मिला है।

**पिता**—श्राद्ध पितर को तार देता है ।
**नन्हा पुत्र**—उस तार में वह क्या लिखता है पिताजी ।

# लोक सभा—चुनाव में के० रि० पु० बल का योगदान

देश में 3 और 6 जनवरी, 1980 को लोक सभा के लिए चुनाव हुये। सभी राज्यों और केन्द्रशासित क्षेत्रों में, चुनाव से पूर्व, उसके दौरान तथा उसके उपरान्त भी, कानून और व्यवस्था बनाये रखने की ज़िम्मेदारी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने निबाही। इसने 73 अधिक कम्पनियां इस काम के लिए लगायीं। ग्रुप केन्द्रों तथा प्रशिक्षण संस्थानों से जवान लेकर तदर्थ कम्पनियाँ तथा/अथवा बटालियनें बनायी गईं; उत्तर

प्रदेश तथा पांश्चमी बंगाल जैसे राज्यों ने के०रे०पु० बल को वहाँ उपास्थित जनशांक्ति के अतिरिक्त, ग्यारह कम्पनियाँ और मांगी। आन्ध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, हरियाणा, राजस्थान और उड़ीसा के हर राज्य को छह अधिक कम्पनियाँ और भेजी गईं। साथ ही साथ, विविध राज्यों

को एक-दो कम्पनियों की छोटी टुकड़ियाँ भी भेजी गई।

जैसी आशा थी, हमारे जवानों ने सराहनीय कार्य किया। व्यापक प्रविस्तारण होने पर भी, उनके विरुद्ध कहीं से कोई शिकायत नहीं मिली।

श्री पी०आर० राजगोपाल, महानिदेशक के०रि०पु० बल ने कमांडैंटों को सम्बोधित करते हुये अपने एक पत्र में लिखा है "विभिन्न राज्य सरकारों ने निर्वाचन के समय के० रि०पु० बल द्वारा की गई सेवा की सर्व प्रकार से प्रशंसा की है। सारे बल को यह एक कठिन परीक्षा की घड़ी थी और मुझे यह लिखने में प्रसन्नता हो रही है कि समस्त बल ने समय पर अपनी कुशलता का उत्तम परिचय दिया। कृपया मेरा धन्यवाद स्वीकार कीजिए और इस कुशल कार्यवाही वाले अन्तिम जवान तक को मेरी कृतज्ञता पहुँचा दीजिए।"

वस्तुतः लगभग सभी राज्यों के पुलिस महानिरीक्षकों ने चुनाव के समय इस बल द्वारा उठायी हुई सेवाओं तथा शान्ति व्यवस्था बनाये रखने की प्रशंसा महानिदेशक को लिखी है।

# गणतंत्र दिवस पर के० रि० पु० बल की शानदार टुकड़ी

सदा की भाँति, गणतंत्र दिवस परेड में के०रि०पु०बल की टुकड़ी इस वर्ष भी प्रभाव शालिनी रही। पहले की अपेक्षा, समारोहिक वर्दी में नीली रंगत के कारण, यह इस वर्ष बड़ी रंगीन लगती थी। जिस खाक़ी पगड़ी पर पहले एक नीली पट्टी केवल होती थी, इस बार उस पर गहरे नीले रंग का तुर्रा भी लगा था। साथ ही, पगड़ी पर नीले कपड़े के संग सुनहरी झालर भी अब थी। दूसरी विशेषता, के० रि० पु० बल का मॉनोग्राम (गुम्फाक्षर) वाला नीला स्कार्फ जवानों के गलों में था। वे भूरे रंग की चमड़े की पेटी के साथ नीला कमर बन्द भी पहने थे । बायीं भुजा पर आसमानी रंग में के० रि० पु० बल के अधिचिह्न के नीचे नीले सर्ज की पट्टी थी।

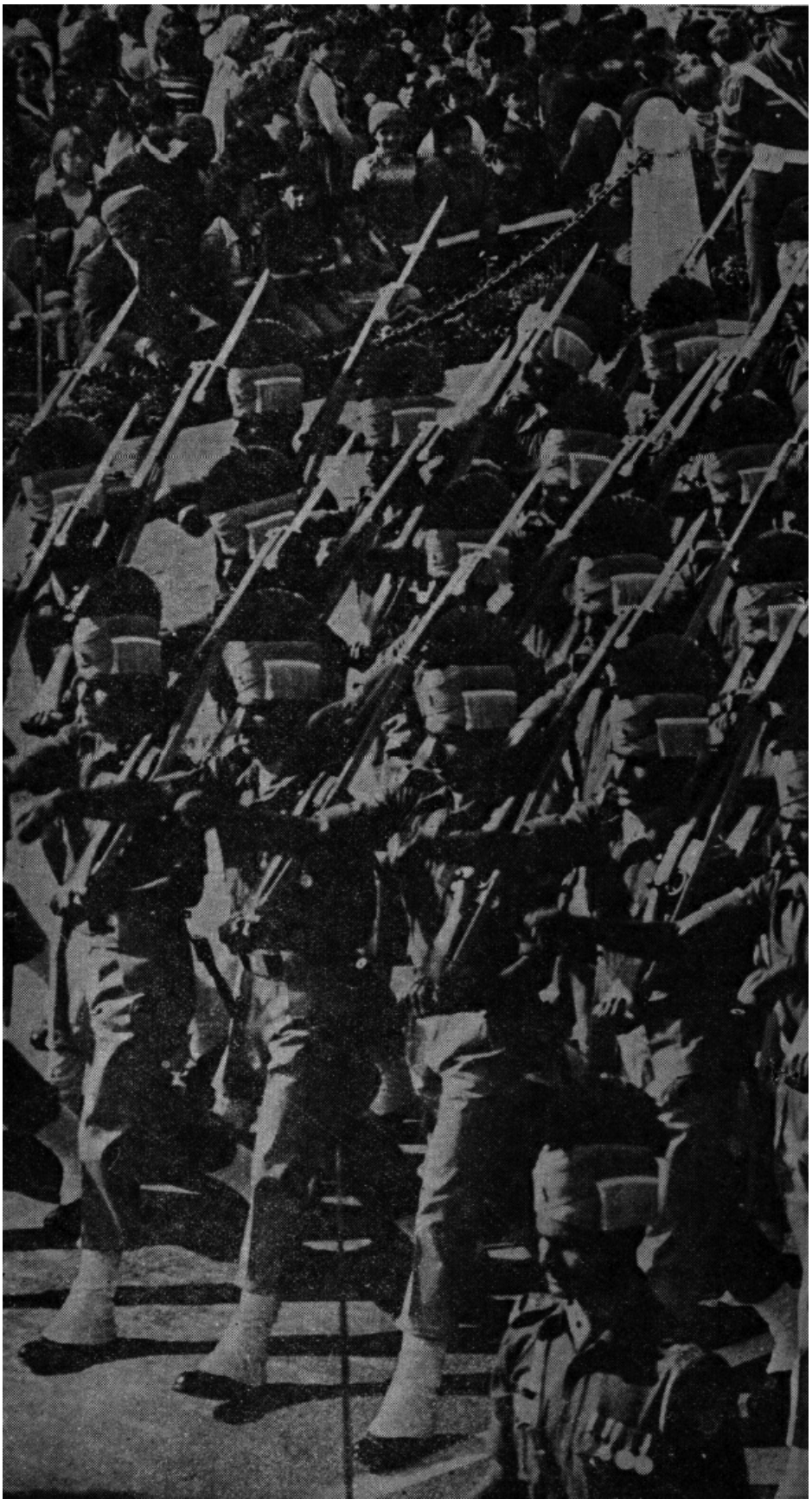
सभी छह फीट से ऊँचे, 75 अफसर और जवानों की इस टुकड़ी का नेतृत्व पुलिस उपाधीक्षक गुरिन्दर जीत सिंह (9 बटा०) ने किया । इस टुकड़ी में के० रि० पु० बल की सभी बटालियनों से जवान चुने गये थे। लगभग सभी राज्यों के जवान इसमें होने के कारण, बल का अखिल भारतीय स्वरूप क़ायम रखा गया। इसमें राष्ट्रपति के पुलिस

पदक के ये चार विजेता भी थे—1. का० ए० रामकृष्णन नायर 2 का० राम सिंह 3. का० किशन लाल, और 4. का०देवीदत्त दास ।

यह टुकड़ी 'कदम बढ़ाये जा' की धुन पर प्रयाण कर रही थी।

## श्री पी० आर० राजगोपाल की के० रि० पु० बल के महानिदेशक-पदभार से मुक्ति

दिनांक 1 मार्च 1980 को महानिदेशक के० रि० पु० बल श्री पी० आर० राजगोपाल अपने पदभार से मुक्त कर दिए गए और उनका पदभार श्री श्रवण टंडन, महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल ने अधिक कार्यभार के रूप में ग्रहण किया।



# लद्दाख में मेरे वे दिन

**लेखक—श्री राज सिंह**

जब सितम्बर 1959 में जम्मू-कश्मीर में निरत 4 बटालियन (के० रि० पु० बल) का मैं एक कम्पनी कमांडर था, तब मुझे पता लगा कि उत्तरीय, केन्द्रीय तथा पूर्वीय लद्दाख की हिमाच्छादित चौकियों के लिए के० रि० पु० बल के स्वेच्छा से सेवाभार उठाने वाले व्यक्तियों की भारत सरकार को आवश्यकता है। चीन से हमारे सम्बन्ध तब मैत्री पूर्ण थे; वह युग 'भाई भाई' का था।

लद्दाख और वहाँ रहते हुए हमारे जवानों के जीवन के विषय में मैंने लेख पड़े थे। मैं उस भूमि को देखने को कृत-संकल्प था, जिसे "मनुष्य को अकारथ तथा प्रभु को अयश" के नाम से कुछेकों ने वर्णन किया है। अतः मैंने अपनी सेवायें अर्पित कर दी। तत्कालीन उपमहानिरीक्षक श्री बी० बी० मिश्र ने मुझसे पूछा कि क्यों मैं नन्हे-नन्हें बच्चों को छोड़कर लद्दाख जाना चाहता हूँ? गवेषणा करने की प्रेरणा मेरे चित्त को इतनी उद्वेलित कर रही थी, कि मैंने अपने निकटतम सम्बन्धियों तक की बात नहीं सुनी; मेरा निश्चय दृढ़ था।

3 बटालियन, के०रि०पु० बल के स्वैच्छिक जवानों की टुकड़ी लेह को वायुयान द्वारा जाने के लिये, मुझे श्रीनगर में मिली। श्रीनगर में एक गुप्तचर विभाग के वरिष्ठ अधिकारी ने मुझे कुछ हिदायतें दीं। पूर्वीय तथा मध्य लद्दाख में प्रवेश कर 17,000 फीट तथा उससे भी ऊँचे पर साईमैलुम्पा और सिलंग स्थानों पर पहुँच कर हमारी टुकड़ी को चौकियाँ स्थापित करनी थीं। स्थानीय भर्ती किये हुये लद्दाखी तथा के०रि०पु० बल, पंजाब पुलिस और अन्य राज्यों से डेपुटेशन पर आये जवानों के सहित, जिस दल का मुझे कमान करना था, वह भारत-तिब्बत सीमा दल कहलाता था। गर्मियों में कालीन आदि वस्तुयें लाते हुये तिब्बती व्यापारियों की जाँच पड़ताल करना हमारा काम था।

लेफ्टीनेंट कर्नल के अधीन तीसरी मिलीसिया के नाम से लेह पर एक छोटे गैरिज़न के सिवा, लद्दाख में कोई थल सेना नहीं थी। इस ग़ैरिजन की कुछ चौकियाँ नम्बर दर्रे तथा चंगथंग क्षेत्र में स्थापित थीं। शियोक और चुशुल कुछ ऐसी ही चौकियाँ थीं, जहाँ कोई नियमित सेना निरत नहीं थीं। आन्तरिक भागों में वार्षिक अभियानों के समय भा० ति० दल अपना ध्वज हिलाता था और लौटकर रिपोर्ट भेजा करता था।

**गुप्त वार्ता :** इस क्षेत्र में चीनी द्वारा बनाये गये मार्ग के विषय में श्री करमसिंह खुफ़िया अधिकारी से दी गई अन्तिम रिपोर्ट पर भारत सरकार चिन्तित थी। प्रमाण के

लिये वह एक मोल प्रस्तर लाये थे। इस अज्ञात भयावह क्षेत्र में सतर्कता और साहस को चुनौती देने वाले स्पष्टतया कठिन तथा छली काम के विषय में हिदायतें मुझे दी गईं। लेह से श्रीनगर तक कोई सड़क नहीं होने के कारण, हमारी टुकड़ी वायुसेवा द्वारा लेह पहुँची, जहाँ से अन्तरंग भाग में पहुँचने को लम्बी पदयात्रा करनी थी। वहाँ पर भा० ति० सी० लेह का कमान अफसर नामक एक अधिकारी था, जो लेह में स्थापित, श्री करमसिंह के परामर्श से पड़ताल चौकियों और अन्य कर्मचारियों पर नियंत्रण रखता था। मुझे बताया गया कि उस क्षेत्र में अधिक समय से रहने के कारण, श्री करमसिंह और एक पुलिस उपाधीक्षक श्री त्यागी इस हिमावरुद्ध प्रदेश में चौकियाँ स्थापित करने के लिये अग्रिम दल बनायेंगे, जहाँ मेरे स्वयंसेवक स्थायी रूप से रहेंगे । अग्रिम दल से दो-तीन दिन वाली निपथ यात्रा की दूरी रखने को मुझसे कहा गया। चंगथंग में फोब्रंग के स्थान पर मेरा मुख्या लय बना। एक जे०सी०ओ० (कनिष्ठ आयुक्त अधिकारी) और 10 जवानों वाली पहली टुकड़ी के साथ, मुझे विमान यात्रा करनी पड़ी। 1959 के मध्य सितम्बर में, हम लेह पर उतरे। रंगीन लद्दाखी और उनके लामाओं के तात्कालिक स्वागत से मैं विभोर हो गया। ऊँचाई से अभ्यस्त होने के लिये, हमें वहीं पर सीमित रहना पड़ा। लेह में, मैं लगभग एक सप्ताह रहा। बुरे मौसम के कारण, अन्य स्वयंसेवकों के लिये उड़ानों में देर लगी।

**अग्रगति :** श्री करम सिंह, श्री त्यागी और उनके लोगों ने आगे बढ़ने की तैयारियां की। उनके ही साथ, अपने जवानों की बिना बाट जोहे, मैंने फोब्रंग जाने का निश्चय किया। बहुत से याकों और खच्चरों को बोझा ढोने के लिए किराये पर लिया गया। दो दिन के बाद, चांगला (18,000 फीट) के पाद पर शक्ति नामक स्थान पर हम पहुँचे। हमें दर्रे को दूसरे दिन पार करना था। मनोबल ऊँचा था; तो भी मैंने यह उत्तम समझा कि सर्वश्री करम सिंह और त्यागी हमारे लोगों को क्षेत्रीय स्थितियों के विषय में समझा दें। अगली सुबह, हम चढ़ चले। ओषजन की कमी से रफ़्तार धीमी रही। साथ ही, यात्रा एक सी रहनी चाहिये थी। शाम होने से पहले, चोटी पार करनी थी। दर्रे की दूसरी ओर, सुल्तक (17,000 फीट) पर हम संध्या तक पहुँच गये । हमारे लिये काल कोठरी सा एक शरण स्थल था, जिसमें से निकलती एक बूढ़ी ने श्री करमसिंह को पहचाना और लद्दाखी में स्वागत किया। हमारा सामान उतारा गया और वह रात हमने उसी कोठरी में ज़मीन पर सो कर बितायी। ओषजन की कमी से बेचैनी हुई; कुछ के सिरों में दर्द हुआ। फ्रोब्रंग पहुंचने से पूर्व, हम दुर्बक, तंगेही तथा मघूलंग पर पड़ाव डालते हुये हम चलते रहे। तिब्बती और अपनी सीमा पर 140 मील के विस्तार वाली पांगो ट्रो नामक एक खारी झील हमने देखी।

**संकट संदेश**—फोब्रंग पर मुख्यालय के लिये मैं स्थान खोजने लगा। मेरे जवान अभी लेह पर पहुँचने वाले थे; बुरे मौसम से देरी हो रही थी। सर्वश्री करमसिंह और त्यागी तथा उनके लगभग 70 लोग मार्समिक्ला के पार अपने गंतव्य स्थल को कूच कर गये; मुझे फोब्रंग पर एक सप्ताह रुकना पड़ा। तभी एक रात घबड़ाये हुये एक बेतार आपरेटर ने मुझे जगाया। उसने बताया कि 'हॉटस्प्रिंग पर चीनियों से मुठभेड़ के विषय में श्री करमसिंह की टुकड़ी से एक संदेश उसने अनुश्रवण किया है। संकट-

संदेश बारम्बार प्राप्त हो रहे हैं।' एक सेक्शन के साथ वहाँ से प्रस्थान करने के सिवा, मुझे कोई और चारा नहीं था; साथ में, मैंने आने वाले साथियों को यह हिदायत छोड़ी कि जब भी हो सके, वे मुझ से हॉट स्प्रिंग पर मिलें। श्रीनगर और दिल्ली में स्थिति के विषय में सन्देश भेजे गये।

अक्टूबर में, फोब्रंग में कड़ाके की सर्दी पड़ती है; पानी जम जाता है और तेज हवायें अस्थियाँ काटे डालती हैं। 22 अक्टूबर की तड़के, हम फोब्रंग से चल पड़े और चांगला से भी विकट दर मार्स मिक्ला के पाद पर विश्राम किया। तौभी, चंगचिम नदी के तट पर त्रोगतसालू पर दूसरे दिन हम पहुँच गये। जिस अग्रिम दल ने हॉट स्प्रिंग पर चीनियों से लोहा लिया था, उसका एक अंश आहत जवानों के साथ त्रोगत सालू पहुँच गया था। मुझे ज्ञात हुआ कि श्री करमसिंह और के०रि०पु० बल के जमादार रूलिया के सहित 18 मनुष्य या तो मारे गये अथवा मृत माने गये। क्योंकि हॉट स्प्रिग से श्री करमसिंह के पूर्व सन्देश में चीनियों को कोई चर्चा नहीं थी, मैं मुठभेड़ की रिपोर्ट से सन्तुष्ट नहीं हो सका। मैं हत बुद्धि रह गया। ऐसा विदित हुआ कि श्री त्यागी की एक टुकड़ी ने बनैले बकरे को हॉट स्प्रिंग के निकट मार दिया था और एक दूसरे दिन श्री करमसिंह के दल के दो व्यक्ति बनैले बकरे की खोज में गये थे। मुझे पता लगा कि वे दोनों चौबीस घंटे में लौट कर नहीं आये। स्वभावतः श्री करमसिंह उनकी खोज में गये। श्री त्यागी भी उनके साथ रक्षा के लिये चल दिये; मुख्यकर, क्योंकि प्रकाशीचिन क्षेत्र से मील प्रस्तर लाकर चीनियों की निर्माण सम्बन्धी गतिविधियों का उन्होंने ही पर्दाफाश किया था।

**आँखों देखा वर्णन**—प्रत्यक्ष गवाहों के अनुसार, हॉटप्रिंग से कुछ मीलों दूर, एक सुरक्षित टीले पर हमारे जवानों ने कुछ चीनियों को देखा था। श्री करमसिंह के वे दो व्यक्ति उन्होंने ही पकड़ रखे थे। टीले से नीचे उनके घोड़े भी उन्हीं चीनियों ने बांध रखे थे। भाषायी कठिनाइयों ने और गड़बड़ी कर दी। चीनी बड़े आवेश में आकर हमारे उन लोगों को डाटने लगे। उनके सुरक्षित स्थल से, एक रायफ़ल की गोली दनदनायी और फिर तेज गोलाबारी हुई। रायफ़ल की गोली का रहस्य कभी नहीं खुल सका। दोनों ही ओर, तेज गोलीचालक थे। हमारे लोग खुले में होने के कारण लौट आये।

जो लोग बच कर आये थे, उनसे मैंने उनकी इस धारणा के विषय में पूछा कि क्या श्री करमसिंह समेत सभी 18 मनुष्य मारे गये ? टुकड़ी के अध्यक्ष श्री त्यागी को यह बात वचने वालों ने बतायी थी। कुछ समय को, मुझे त्रोगतसालू और श्री त्यागी को हॉट स्प्रिंग पर मृतकों की खोज करने के लिये ठहरने को कहा गया; हमें कभी ऐसी आशा नहीं थी कि चीनी दस शवों और श्री करमसिंह सहित पाठ जीवित पुरुषों को हमें दे जायेंगे। चीनी एक वाहन में उनको हॉट स्प्रिंग के निकंट लाये तथा उन्हें पाने के लिये, हमारे जवानों को 250 कि० मी० कठिन पद यात्रा करनी पड़ी।

**दाह संस्कार**—हॉट स्प्रिंग पर दाह-संस्कार हृदय विदारक था। 16,000 फीट पर जलवायु, प्रबल झंझाओं और हिमानी हवाओं से, ख़तरनाक़ थी। हम पर चितायें

जलाने को लकड़ी तक क़ाफ़ी नहीं थी; चंगाचेनमों नदी के तट से सूखी झाड़ियाँ इकत्रित कर सब मृत देहों को एक साथ जलाया गया। सन्ध्या के समय चिता प्रज्वलित की गई; किन्तु तभी हिमपात होने लगा और दाह संस्कार को पूरा करना एक समस्या हो गई। झाड़ियाँ तुरंत जल गई और शव जैसे के तैसे ही पड़े रह गये । जीवन के लिये बहुमूल्य वस्तु मिट्टी के तेल को काम में लाना पड़ा । कोटपर्खा और उत्तरीध्रुवीय जूतों जैसे भारी सुरक्षक आवरणों को धारण किये हुये भी, हमारे जवान ठन्डे से नीले पड़े काँप रहे थे। कुछ तो सख्त बीमार पड़ गये।

चीनियों से जूझने वाली टुकड़ी विक्षुब्ध थी। उसके कमान अधिकारी श्री त्यागी को तब तक हॉटस्प्रिंग पर रहने को आदेश हुये, जब तक ऊपर से कोई निर्णय नहीं लिया जाये। सैनिक साहाय्य का कोई प्रश्न ही ही नहीं था । चंगचिनमो क्षेत्र में मेरी कम्पनी के जवान धीरे-धीरे मेरे पास आने लगे। क्यों कि श्री त्यागी ने दिल्ली को यह सूचित कर दिया था कि उनके जवान हॉट स्प्रिंग पर ठहरने की स्थिति में नहीं है, उन्हें लेह और श्रीनगर लौटने के आदेश मिले ।

मुझसे बेतार द्वारा अपने बारे में पूछा गया। मेरा उत्तर था कि स्वेच्छा से सेवा समर्पित व्यक्ति सदा सेवाभार उठाने को तैयार रहता है। अतः हमें हॉटस्प्रिंग पर ठहरे रहने को कहा गया।

**हाटस्प्रिंग पर जीवन**—सख्त सर्दी के कारण, हाटस्प्रिंग पर जीवन एक समस्या बन गया था; और कभी कभार तो असह्य हो जाता था। बड़ी कठिनता से, नदी से कीचड़ ला लाकर एक शरणस्थल बनाया। घोर नीरव तथा अकेलापन था। चंगला और मासी मिक्ला के दोनों दर नवम्बर में पार करना दुस्तर था; हमारा सम्पर्क विश्व से केवल बेतार से ही था। जब खाद्य-सामग्री समाप्त होने लगी, हमने वायु द्वारा उन्हें गिराने के लिए घबड़ाकर बारम्बार बेतार सन्देश भेजे। अन्त में, हमें बताया गया कि वायुसेना का

एक डकोटा विमान भोजन फेंकेगा। हमें “अवपातन-क्षेत्र’ (जैड डी) बताना था। क्योंकि हमारे जवानों ने कभी वायुयान से गिरती वस्तु नहीं देखी थी; वे रेलगाड़ी की प्रतीक्षा में यात्रियों की भीड़ की भांति इकट्ठे हो गये। वायुयान ने अवपातन क्षेत्र के ऊपर कई चक्कर लगाये; किन्तु खाद्य-सामग्री गिराई नहीं, क्योंकि विमान चालक को भय था कि कहीं हमारे जवान उसके गिरने से क्षतविक्षत न हो जायें। बाद में, वह गिराई गई और चावल के एक बोरे ने हमारे धोबी के प्राण ले ही लिये । धोबी को हाटस्प्रिंग पर दफनाया गया।

हाटस्प्रिंग और त्रोगतसालू में कुछ समय रहने के उपरान्त, मेरे मसूढ़ों में दर्द उठ आया और दुःखी मन मुझे लेह में विश्राम और रोग निदान के लिये आना पड़ा। मेरे लद्दाखी जवानों ने मुझे बताया कि कड़ाके के जाड़े में मार्समिक्ला को पार करना बड़ा खतरनाक है। त्रागतसालू (15,000 फीट) पर ही, जीवन एक वेदना थी। मिट्टी के तेल की बुखारियों से किये हुये गर्म बंकरों में हम रहते थे। आभ्यंतरिक ऊष्मा के लिये चार औंस रम दी जाती थी। चारों ओर पानी जमा मिलता था, वायुयानों से गिरे टमाटर और

आलू पत्थर की तरह कठोर होते थे। पैराशूटों (हवाई छतारेयों) से गिराये हुये बकरे उतरने पर भिन्न तापमान के कारण मर जाते थे। धोकर फैलाये हुये पंलगपोश पतली टीन की चादरें जैसे उठाये जा सकते थे।

ओषजन के अभाव से, न्यूमोनिया साधारणतया घातक होता था; फिर भी, मैं जाने का इच्छुक था और श्रीनगर ने मार्समिक्ला और चंगला सर्दी में पार करने की मेरी योजना मान ली। सात लोगों की मेरी टुकड़ी के लिये जिस में एक नाई, एक भंगी और मेरे साईस थे) मुझे एक खच्चर और याक मिले। वे करुणा मूलक आधार पर लेह जा रहे थे। एक लद्दाखी की देख रेख में, सामान और खाद्यान्न याकों पर लादे गये थे। त्रोगतसालू से चलकर, हमें मार्समिक्ला के पाद पर विश्राम लेना था और दूसरी ओर फोब्रंग पहुँचने के लिए, अगले प्रातः को दर्रा पार करना था।

**धोख़ेबाज़ याक**—निशा से पूर्व, हम मार्समिक्ला पहुच गये; किन्तु लद्दाखी और याकों को नहीं पा कर चकित रह गये । वह शायद अष्टमी थी। हमें जीवित रखने का आधार याक थे और रात के 10 बजे तक उनका पता नहीं था। पहाड़ी के छिद्र में (जहाँ हिम कम दिखायी दे रही थी) हम पड़े काँप रहे थे। जाति और पदों को भूलकर, भगी समेत हम सब एक दूसरे से सिमटे बैठे थे, ताकि कुछ अधिक गर्मी महसूस करें। मेरे पैर जम गये थे और मुझे सबसे बुरे रोग, पाले से मारे जाने का भय खा रहा था। मेरे जवानों ने मेरे हाथ पांव मलने शुरू कर दिये । मेरे साईस ने रुलाँसू चेहरा बना रखा था; मैंने उसे ढाँढ़स बँधाया। आधे मार्ग पर, हमने बर्फ में गतिविधि पायी। मुझे तो घिनौना यति (हिम पुरुष) वह लगा। जितना निकट वह आता जाता था, उतना ही वह मानव प्राकृति धारण करता जाता था। अरर देखा, तो वह हमारा याक रक्षक था। उसने संकेत किया कि सामान ढोने वाला याक कहीं भाग गया है। मेरे काग़ज़ात लिए हुए याक के चीनी क्षेत्र में चले जाने की आशंका ने मेरी नसें तोड़ दीं। त्रोगत सालू लौटकर, याक की खोज करने की मैंने ठानी। लगभग दो घण्टे के बाद, हम दर्रे के पादविन्दु पर लौट आये और सौभाग्य से, हमारी टुकड़ी अब भी वहीं थी। हम त्रोगतसालू को चल पड़े; हमारे सब जवान थक कर चूर हो गए थे। एक बार तो मेरे लद्दाखी साईस ने एक चट्टान के पास बैठ कर भाग्य पर अकेला छोड़ जाने को कहा। वह केवल इतना चाहता था कि उसके वीर देहान्त की सूचना उसकी माता को अवश्य मिल जाए। कुछ मीठी-मीठी लल्लो-चप्पो से हमने उसे साथ में चलने को फुसला लिया। ख़च्चर की सवारी से सायं काल तक मैं त्रोगतसालू पहुँच गया। वहाँ का चौकी कमांडर मुझे देख कर दंग रह गया, उसे यह आशंका हुयी कि चीनियों से हमारी फिर भिड़न्त हो गयी है। चिन्ताकुल होकर पूछताछ की। मुझे खच्चर से उठा कर आग के पास बिठाया गया। मैंने उन्हें बताया कि मेरे जवान कुछ मील पीछे आ रहे हैं और उनके तभी प्राण बच सकते हैं, जब उन्हें तुरन्त उठवा कर वहाँ मंगाया जाए। सारी चौकी उनकी ओर दौड़ पड़ी और उन्हें ले आयी। कुछ को पाला भी मार गया।

सुबह को, मुझे एक बेतार सन्देश फोब्रंग से मिला कि (स्पष्टतया हमारे) तीन याक

वहाँ बुरी दशा में पहुँचे हैं; किन्तु उनकी पीठ पर बोझा नहीं है। सामान और गोपनीय प्रपत्रों के मिलने की आशा जाग पड़ी; कुछ स्वयंसेवक ऊँचाई की ओर मैंने भेजे। लांस नायक टेक चन्द के नेतृत्व में उस वीर दल को सफलता हस्तगत हुयी। उन लोगों ने बर्फ में उभरे हुए मेरे बक्से को देखा, और मेरे सामान को खोदकर ले आये। दर्रे में दूसरे यत्न करने के लिए शक्ति पाने के हेतु, मैं वहाँ एक सप्ताह रुका रहा ।

**चंगला का पारण**—दो सप्ताह के बाद, एक कश्मीरी खुफ़िया. अधिकारी मुझसे बोला कि वह मुझे दर्रा पार करने में मदद देगा (हाथ में फूल की भाँति मुझे पार ले जाने की उसने आश बँधाई) मैं उसकी उत्सुकता समझ गया; श्रीनगर में स्थित अपने परिवार के लिए, वह चिन्तित था। 'हॉटस्प्रिंग की मुठभेड़ के समय में, श्रीनगर में गर्म अफवाह फैल गई थी।

मार्समिक्ला को पार करने का दूसरा यत्न शुरू हुआ। इस बार याकों और खच्चरों को अपने से दूर रखने की ग़लती हमने नहीं की। साँझ तक, हम मार्समिक्ला के पाद पर पहुँच गये, जहाँ हमने तम्बू लगाये और रम तथा भोजन से स्वयं को पुष्ट किया। आधी रात को, खुफ़िया अफसर की चीख़ हमने सुनी। एक औषध (जो सामान्यतः मैं अपने पास रखता था) मैंने उसे दी; उसको कुछ चैन मिला। पारिस्परिक सहायता से दोपहर तक, हम चोटी पर पहुँच गए। मैंने एक ख़च्चर लेकर, फोब्रंग पहले पहुँचने की ठानी। संध्या से पूर्व, मैं फोब्रंग पहुँच गया; पड़ताल चौकी के अध्यक्ष और मेरे जवान मुझे देख कर फूले नहीं समाये । भोजन का समारोह हुआ—हिम कर्वुरी, मछली पकोड़े और गर्मागर्म पानी मे रम । ख़ुफ़िया अफसर और उसके दल के दर्शन दूर तक नहीं हुये। रात के नौ बजे जाकर, उन्हें अपने बंकर के आगे मैंने खडा पाया और अन्दर बुलाया। पाते ही, वह अफसर तो फूट-फूट कर रोने लगा। जवान उसे उठा कर अन्दर लाये। पूछने पर, ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके बाँये अंग पर हल्का पक्षाघात हुआ है। स्वयं का विकलांग समझ कर, उसने बर्फ में मरने को अकेला छोड़ने का अनुरोध किया। हमने उसकी पारचर्या प्रारंभ कर दी और वचन दिया कि जब तक वह भला चंगा नहीं हो जायेगा, हम फोब्रंग पर ठहरे रहेंगे; किन्तु वह हमारे कम्पाउन्डर की चिकित्सा से तीन दिन में ही स्वस्थ्य हो गया।

हमने यात्रा चालू की; अभी भी चंगला पार करना था। पेमगेम झील से घूमकर, मघुलंग पर जाकर हमने पहली रात बितायी और ताँची पर दूसरी रात । जब सुबह को हम चलने वाले थे, तब खुफ़िया अफसर को एक कुत्ते ने काट लिया। इससे एक अन्य दिवस और वहीं बिताना पड़ा।

**मनोबल का ह्रास**—कुछ दूर टुकड़ी के साथ चल कर, मैंने तो एक ख़च्चर लिया और चंगला के नीचे सुल्तक पर पहुंच गया। मेरे नेत्र वृद्धा को खोज रहे थे; मुख्यकर चढ़े-चढ़े मेरे अंग सख़्त हो रहे थे । वस्तुतः मैं ख़च्चर से उतर नहीं सका। मैंने वृद्धा को पुकारा; किन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। अन्त में, आलू के बोरे की भाँति ख़च्चर से मैं भूमि पर धड़ाम से गिर पड़ा और येन केन प्रकारेण, अन्धेरी कोठरी में जा पहुँचा। एक टिमटिमाती मोमबत्ती से प्रकाशित कोठरी में वृद्धा भूमि पर पड़ी थी। सचमुच, वह

बहुत बीमार थी; उसने मेरे सम्मुख ही, अपना दम तोड़ दिया। मैं हताश हो गया और ज़ोर-ज़ोर से अपने को कोसने लगा। मैं प्रभु से यही पूछ रहा था कि क्यों मुझे इतनी तीव्र वेदना दी जा रही है ? जिस वृद्धा ने वर्षों से यात्रियों की सेवा शुश्रूषा की थी, उसके प्राण क्यों उस समय ले लिये, जब मुझे उनकी अतीव आवश्यकता थी?

जब मेरी टुकड़ी सुल्तक पहुँची, तब उसने भी वृद्धा को पुकारा। मैंने चिल्लाकर कहा कि वह प्राणोत्सर्ग कर गयी है और मैं करने वाला हो रहा हूँ। सुनते ही, मेरे जवान अन्दर दौड़ कर आये और आग जलाई तथा रम की कुछ खुराक़ों से स्वास्थ्य लाभ कराने में मेरी मदद की। दूसरे दिन तड़के ही, मृत वृद्धा को छोड़ कर, हम सुल्तक से चल पड़े।

सुल्तक की दूसरी यात्रा में, उसका शव वहीं मैंने पड़ा पाया। वहाँ न तो दाह संस्कार के लिये लकड़ी थी और न ही बर्फ़ जमी भूमि में वह दफ़नायी जा सकती थी। अग्रिम क्षेत्र में, मैंने उन पुरुषों के शव पड़े पाये, जिनका देहान्त शताब्दि के शुरू में हो गया था। पुराने समय में, हिमझंझाओं में क़ाफिले फँस जाते थे और हिम में समाधिस्थ हो जाते थे। उनके शव वर्षों तक सुरक्षित रहते थे।

मार्समिक्ला की अपेक्षा, चंगला (18 सहस्त्र फीट) पार करने में सुगम है। चंगला की दूसरी ओर स्थित **शक्ति** पर हम शाम तक पहुँच गये; शक्ति से लेह पहुँचने में दो दिन लगे थे । मुझे यह देख कर प्रसन्नता हुयी कि गुप्तचर विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी मुझे लेने आये थे तथा कुछ खाद्य पदार्थ और प्रपत्रों का पुलिन्दा साथ लाये थे । वे श्री करम सिंह और प्रधानमंत्री स्वर्गीय नेहरू द्वारा संसद में दिये गये वक्तव्यों की प्रतिलिपियाँ थीं। और दो दिन के बाद, मैं लेह पहुँचा तथा दिल्ली को रिपोर्ट भेजी। श्री त्यागी के स्थान पर नियुक्त श्री दुबे ने इसी बीच में चंगला को पार किया और वह फोब्रंग की ओर चल पड़े।

**सैनिक-प्रवेश**— अब हम लेह में सैनिक गतिविधियाँ देख सकते थे। हॉट स्प्रिंग की दुर्घटना के बाद, एक ब्रिग्रेड गठित की गयी थी। दुबे की टुकडी के एक रोगी को मैं फोब्रंग से निर्वात करना चाहता था, तभी मेरे सौभाग्य से, तत्कालीन एअर कमोडोर इन्जीनियर और विंग कमांडर ग्रेवाल कुछ प्रयोगों के लिये हेलीकॉप्टर से लेह आये । मैंने एअर कमोडोर से उस रोगी के निर्वात का अनुरोध किया। वह मान गये; बशर्ते फोब्रंग तक का एक गाइड उन्हें मिल जाए। मैंने स्वयं को प्रस्तुत किया। साथ में, श्री दुबे की निजी डाक भी मैं ले गया। नदी के निकट चौकी पर हम उतरे। अपने घर से पत्र पाकर, श्री दुबे ने ख़ुद को बेहतर महसूस किया । वापसी में, मुझे चुशुल उतरना पड़ा, क्योंकि हेलीकॉप्टर का ईंधन-टैंक चूने लगा था। दूसरे दिन, मैंने किसी वायुयान पकड़ने की चेष्टा की। चुशुल में हवाई अड्डा बन चुका था, जिस पर डकोटा और ए० एन० 12 जहाज़ उतर सकते थे।

**लेह में अति विशिष्ट व्यक्ति**—सितम्बर 1959 वाले मेरे अवतरण के समय से, लेह में बड़ा परिवर्तन हो गया था। हॉट स्प्रिंग के पश्चात्, लद्दाख में एक पर्वतीय ब्रिगेड रखा गया। जिन कच्चे मार्गों पर मेरी जीप सहित केवल दो तीन जीपें दिखाई देती थीं, अब

सेना की जीपें दौड़ती रहती थीं। जीपों को खोलकर, डकोटा विमानों द्वारा लेह लाया जाता था। एक जीप से एक भयाक्रांन्त याक के टकराने और चोटों से मर जाने की याद मुझे आज तक है। यह दुर्घटना तब हुयी थी, जब श्री सोनम नार्बु, तत्कालीन इंजिनियर तथा बाद को मंगोलिया में हमारे राजदूत और कश्मीर कबीना के मंत्री, श्रीनगर से लेह में प्रथम बार जीप, सड़क द्वारा लाये थे।

बैकेन योजना में सीमा मार्ग संगठन की बड़ी मांग थी। उस क्षेत्र में, उसने सड़कें बनानी शुरू कर दी थीं। लद्दाखी भूदृश्य में नीली वर्दी धारे दक्षिणी भारतीय मज़दूर, बैकेन योजना की निसान जीपें तथा बुलडोज़र तालमेल खा गये थे। पहले श्रीनगर-लेह में केवल एक डकौटा की उड़ान थी। अब डकोटों के साथ बड़े परिवहन विमान सी० 130, दौलतबाग-ओल्डी, चुशुल तथा फुक्चा जैसे भीतरी लम्बे चौड़े खुले स्थानों पर उतरा करते थे। बाद में, चुशुल लेह के हवाई अड्डों में पी० एस० पी० चादरें बिछाकर सुधार किया गया था और ए० एन० 12 विमान उतरा करते थे।

**लेह में जीवन**–1960 की ग्रीष्मऋतु मैंने लेह में बिताई। वहाँ जीवन आनन्दमय और साहसपूर्ण था। लद्दाखी लोग बड़े सीधे साधे थे और उन्हें परदेशियों से कोई ईर्ष्या नहीं थी। वे बौद्धमतावलम्बी थे; किन्तु कुछ शिया और सुन्नी मुसलमान भी वहाँ रहते थे। ईसाइयों की छोटी बस्ती में अच्छे पुस्तकालय थे और उनमें पच्छिमी सभ्यता का प्रभाव था। ईसाइनें केक बनाना जानती थीं, उनकी देशभक्ति किसी से कम नहीं थी; हॉट स्प्रिंग के बाद, उन्होंने अन्य मदद के अतिरिक्त, मोज़े, स्वेटर आदि का दान हमारे जवानों को किया था। लेह में एक छोटा अस्पताल था और सिन्धु के निकट (जिसका फाट लेह में चौड़ा था) मुर्तज़े नामक एक शाक उद्यान था।

वहाँ पर्यटन पिकनिक के लिये एक सुन्दर स्थल है। एक छोटे क्लब में कुछ अधिकारियों का मिलना-जुलना मात्र ही सामाजिक जीवन था। अधिकांश अधिकारी बिना परिवार के वहाँ रहते थे। हर बन्दरगाह पर पत्नी के साथ लोकप्रसिद्ध नाविक की भाँति, कुछ श्रीनगर से आये हुये थे। लद्दाख में बहुपति प्रथा आम है; परन्तु आदतें बदल रही थीं। वहाँ कोई मनोविनोद का अच्छा साधन नहीं था। कभी-कभार, लेह के मुख्य बाज़ार में पोलो खेलते लोग देखे गये थे।

मृतकों को दाह संस्कार परदेशियों को कुछ विचित्र सा लगता है । जब कोई मनुष्य मरता है, तब वे टाँगे मोड़ कर उसे एक कोने में बिठा देते हैं। स्थानीय लोग इकट्ठे होकर, 'चंग' का पान करते हैं और मंत्रोच्चार करते हैं। धनी मृतक को एक मास तक और निर्धन को एक सप्ताह तक रखते हैं। 'तन्दूर' की भाँति, एक आवाँ बनाते हैं। और शव को उसमे रख देते हैं; फिर नीचे से आग लगाते हैं । इस प्रकार, केवल दस-बीस कि० ग्रा० लकड़ी से शव-दाह हो जाता है। इस पद्धति का चलन यहाँ लकड़ी की कमी के कारण प्रतीत होता है।

वहाँ बुद्ध की आदम-क़द मूर्तियों वाले प्रसिद्ध बौद्ध मठ हैं, जिनमें कुछ तो दो मंज़िले ऊँचे विशालाकार हैं। जनता अत्यधिक धर्म भीरु है और बड़े-बड़े मठों के आगे लामा और चोमों (भिक्षुणियाँ) की भारी संख्या दीखती है। उनमें दो मत हैं—पीला मत

और लाल मत । पहले वालों के सर्वख्यात मठ थे रेजंग और दूसरों के हेमा । श्री कुशक बकुला, लद्दाखी मंत्री, लाल मतावलम्बी हैं और लेह के शंकर मठ के अनुयायी हैं। प्रथा के अनुसार, हरेक परिवार एक पुत्र या पुत्री मठ को अर्पित करता है। ये लामा और भिक्षुणी अधिकतर पूजोपासना में लगे रहते हैं। मठ को समर्पित बड़ी-बड़ी ज़ायदादें, जीवन तथा धन का साधन है। लाल मतावलम्बी मांसाहारी हैं। जबकि पीले मतवाले शुद्ध शाकाहारी हैं । हेमा के मुख्य लामा (कुशुक) को तिब्बत में चीनियों द्वारा इस कारण रोक रखा सुना गया है कि वह चीनी नागरिक है। चीन के भारत से बिगड़े सम्बन्धों के कारण उसे हेमा को नहीं लौटने दिया है।

**फल तथा पेय :** लद्दाखियों की खाने की आदतें साधारण हैं। मूलरूप से, वे मांसाहारी हैं । जौ के सत्तुओं के साथ, स्थानीय पेय 'चंग' लद्दाखी रम है; हर घर अपनी चंग तैयार करता है। कुछ लोग तेज पेय 'अरक' नाम से भी चुआते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में श्रीनगर की तुलना में, लद्दाख सुहावना होता है। मई से अगस्त तक ढेरों सब्ज़ियां उगती हैं और ओषज़न की कमी पूरी करती हैं। वृक्ष दो प्रकार के होते हैं —बेंत और चिनार। बेंत घने होते हैं और शीशम की भाँति बहुत छाया दार होते हैं। चिनार इकूलिप्टस की तरह होते हैं।

नगर उपान्तों में चकोर और ख़रगोश का बहुत शिकार होता है। तीतर से अच्छा स्वाद, चकोर के खाने में आता है। ऊँचे पर्वतों (18,000 फीट के लगभग) पर नर चकोर बड़े चूजे जैसे होते हैं। सिन्धु नदी में मछलियों का बाहुल्य है; किन्तु लद्दाखी उन्हें खाते नहीं। उनका यह अन्धविश्वास है कि यदि वे मछली खायेंगे, तब चोटियों पर हिमपात नहीं होगा और नदी सूख जायेगी। वहाँ की सर्वोत्तम मछली "ट्राउट" (चित्तलीदार) होती है।

वह वर्ष मुझे याद है जब हॉट स्प्रिंग दुर्घटना के उपरान्त, वस्तुस्थिति जानने के लिये प्रधान मन्त्री नेहरू और गुप्तचर विभाग के निदेशक श्री बी० एन० मलिक ने लेह की यात्रा की थी। भव्य स्वागत के बाद, प्रधान मन्त्री मन्त्री ब्रिगेड के मुख्यालय गये, लेह बाज़ार में पोलो मैच देखी और फिर भारत-तिब्बत सीमा पुलिस और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के आवासों में भी श्री मलिक के साथ गये । जब हॉट स्प्रिंग मुठभेड़ के घायल तथा बुरी भाँति ज़ख्मी जवानों को उन्होंने देखा, तक वह द्रवीभूत हो गये।

इस समय कोई परिवार लेह में नहीं रहता था; किन्तु मैंने अपने कुटुम्ब को ले जाने की ठानी। मेरी पत्नी और दो बच्चे (जिनमें छोटा तो कठिनता से तीन मास का था) मुझ से आ मिले। लेह में उन्हें छोड़ कर, मैं श्री दुबे को कार्य मुक्त करने के लिये, फोब्रंग चल पड़ा।

**हॉट स्प्रिंग पर स्मारक :** सरकार ने, हॉट स्प्रिंग के शहीदों की याद में एक स्मारक बनाने के लिये, 30 हज़ार रु० स्वीकार किये। 21 अक्टूबर को, पुलिस शहीदों के निमित्त, राष्ट्रीय दिवस मनाया जाना था। यथाशक्य यत्नों के करने पर भी, हॉट स्प्रिंग पर स्मारक निर्मित करने के लिये, कोई भी ठेकेदार 250 कि० मी० कठोर पद यात्रा करने की तैयार नहीं हुआ। एक बार फिर मैंने अपनी सेवायें प्रस्तुत की तथा लेह से

सीमेंट के बोरे एक ओवरसियर और दो लद्दाखी राजगीरों के साथ भेजे। स्मारक के नीले नक्शे का मैंने अध्ययन किया। मार्समिक्ला को पार कर, हम हॉट स्प्रिंग पहुँचे। मौसम ख़राब था; परन्तु मेरे जवानों में जोश भरा था। श्रमिकों की समस्या पर विचार हुआ। सैकड़ों याकों के साथ, कितने ही खम्पा परिवार तिब्बत में चीनियों से भाग कर लद्दाख चले आये थे। उन्होंने नदी से स्मारक स्थल तक अपने याकों पर पत्थर ढोने के लिये, अपनी सेवायें प्रस्तुत की। 15 अगस्त, 1962 को, स्मारक पर पुष्पाञ्जलि अर्पित हुयी। एक केन्द्रीय स्तम्भ में शहीदों के अवशेष रखे गये, जिस पर द्वितीय विश्व युद्ध के समय कोहिमा पर लिखे अमर शब्दों को उत्कीर्ण किया गया। मुझे नहीं विदित कि सीमेंट पर लिखे वे शब्द अब भी पढ़े जा सकते हैं—

बतलाना घर जाय कर,
यही हमारा राज।
उनके ही कल के लिये,
दिया आज निज आज।

तथा गीता का यह प्रसिद्ध श्लोक भी प्रवेश द्वार पर अंकित किया गया—

'कर्मण्येव अधिकारस्ते मा फलेषु कदाचिन्'

स्मारक निर्माण कराने के बाद, हम फोब्रंग लौट आये।

**युद्ध :** लेह पर एक डिवीज़न और चंगला पार दुर्बक में एक ब्रिगेड के होने से, थल सेना अपेक्षाकृत अधिक प्रत्यक्ष रूप में आई। जिन जर्नल टी० एन० रैना ने (जो बाद को सेनाध्यक्ष के रूप में सेवा निवृत्त हुये) उस ब्रिगेड का नेतृत्व किया था, उन्हें महावीर चक्र मिला। पेमगेम झील के पार मेरी कम्पनी के मुख्यालय के पास यू-ला की चौकी स्थापित हुई, जहाँ चीनी आक्रमण के समय, गोरखों के मेजर थापा ने परम वीर चक्र पाया।

चुशुल में रहते मुझे न्यूमोनिया हो गया और ओषजन की कमी के कारण, मेरी दशा गम्भीर हो गयी। गुप्तचर विभाग के निदेशक श्री बी० एन० मलिक ने ए० एन० 12 के द्वारा मुझे चुशुल से अम्बाला पहुँचाया, जहाँ सैनिक अस्पताल में मैंने एक पखवाड़ा बिताया। स्वस्थ घोषित होने पर, लद्दाख लौटने से पूर्व, मैं अपने पुत्र और खड़कवासला में अपने भाई से मिला (वह राष्ट्रीय प्रतिरक्षा अकादमी में प्रशिक्षक थे)। कठिनता से एक सप्ताह के अनन्तर ही, चीनियों ने धावा बोल दिया और मुझे लद्दाख जाना पड़ा। ब्रिगेडियर होशियार सिंह, जो इस अकादमी के उपादेशक थे, नीफा गये; वहाँ वीरगति को प्राप्त हुये। श्रीनगर में वातावरण भिन्न था। हरेक मदद को तैयार था; सैनिक अधिकारियों तक ने मिठाइयाँ बाँटीं। उनकी शुभकामनाओं के साथ, हमने लद्दाख को प्रयाण किया।

लेह पर, मुझे बताया गया कि सभी चौकियों से पीछे हटना पड़ा है। जवानों के विषय में जानकारी नहीं थी। कैलाश रेंज के पास एक चौकी स्थापित कर, मैं ज़रसर चला। दुंगती और दमचौक के क्षेत्र में युद्ध छिड़ा हुआ सुना गया। मैंने घोड़े सेनायत्त

किये और उपलब्ध जन शक्ति के साथ हैनले को चला। सिन्धु के किनारे-किनारे भरसक प्रयत्नों द्वारा हम हैनले पहुँचे। चीनियों की गोलाबारी हम सुन सकते थे। वहाँ, मुझे यह पता लगा कि ज़रसर पर मेरे जवान उपस्थित हैं और इस ग़लत फहमी में कि चीनी लेह पहुँच गये हैं, वे रोहतंग कन्दरा से हिमाचल प्रदेश में घुसने की चेष्टा कर रहे हैं। उस समय ज़रसर पर झट पहुँचने का ही प्रमुख काम था, जिससे जवान ग़लत क़दम नहीं उठायें। वे बेतारी मौनता कुदरतन धारण किये थे। जब मैं ज़रसर पहुँचा, तब हमें चीनी समझ कर, वे गोलाबारी करने वाले थे। हमने उन्हें अपनी पहचान बतायी और युद्ध विराम तक, हम दमचुक और चुशुल क्षेत्र में ही रहे।

**गुड़ गुड़ चाय**—संग्राम के बाद, मुझे पड़ताल चौकियाँ फिर स्थापित करने का आदेश मिला। यह एक और साहसी काम था। सदा की भाँति, याकों और ख़च्चरों की टुकड़ी तथा अपने जवानों के साथ, मैं चल पड़ा । निश्चय ही, चीनियों द्वारा छोड़ी गयी सुरंगों से हमें सतर्क रहना था। मुझे एक घटना आज भी याद है, जब बर्फ़ पर चलते-चलते थकेमाँदे, याक के ऊन के बने खम्पा तम्बू में पहुँचे । मुझे बहुत प्यास लगी और तम्बू में घुसते ही, धुयें भरे स्थान में एक महिला को अस्पष्ट पहचान सका। एक पात्र, आग पर चढ़ा हुआ था, जिसमें अपनी प्रथागत 'गुडगुड़ चाय' तैयार हो रही थी। प्यारे प्यारे नंगे उमंगभरे बच्चों को देख कर, मैं अचम्भे में रह गया। महिला जान गयी कि मुझे चाय चाहिये। तिब्बत से शायद लाये हुये चिन्नीमिट्टी वाले छोटे पात्र में, उसने गाढ़ी-गाढ़ी पेय डाली। मैंने पात्र को धोने को कहा; यह ध्यान ही नहीं रहा कि चारों ओर पानी तो जमा पडा है। उसने मेरा कहना माना; पात्र में थूका और कपड़े से उसे साफ़ कर दिया । उसकी सादगी की मैंने तारीफ़ की तथा चाय को हलक में उडेल लिया।

विश्राम के बाद, हम चल पड़े। समय बिताने के लिये, मैंने सिक्ख एन. सी. ओ. (ग़ैर आयुक्त अफसर) से विचार विमर्श किया। सहसा, मुझे लगा कि कुछ गड़बड़ है; वह उत्तर नहीं दे रहा था। यह देखकर कि उसके होंठ बर्फ से बन्द हो गये हैं, मेरे होश फ़ाख़्ता हो गये । उसकी साँस से उसकी दाढ़ी पर हिमकणिकायें छा गई थीं, जिन्होंने होंठो का चलना बन्द कर दिया था। मैं खूब हँसा और हिमकणिकाओं को दूर किया।

अन्त में, मार्समिक्ला को हमने पार किया और ओगतसालू पर अपनी पुरानी चौकी स्थापित की। हॉटस्प्रिंग पहुँच कर, मैं बड़ा प्रसन्न हुआ कि हमारे द्वारा निर्मित स्मारक को चीनियों ने कोई क्षति नहीं पहुँचायी थीं । लेह लौटने पर, मैं अपने परिवार और मित्रों से मिल कर प्रसन्न हुआ । कुछ मासों के बाद, लद्दाख में चार वर्ष के कठोर तथा साहसी सेवा करके, मैं के० रि० पु० बल में फिर आ गया। अब तक, लेह से श्रीनगर तक मार्ग बन गया था।

मेरे बच्चे पूरे लद्दाखी बन गये थे। वे डकोटा और ए. एन. 12 वायुयानों को तो जानते थे; किन्तु घोड़े से चलते ताँगे को नहीं। श्रीनगर में एक ताँगे को देखकर, मेरा ज्येष्ठ पुत्र चिल्ला पड़ा कि घोड़ा कुछ लिये भागा जा रहा है। लोग आश्चर्य में रह गये कि कौन से लोक से ये नन्हें बच्चे आये हैं !

लद्दाख में की गई मेरी सेवाओं को सरकार ने मान्यता दी ; सराहनीय सेवा के लिये, राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा बाद में विशिष्ट सेवा पदक भी मुझे प्रदान किया गया।

## * सूक्ति सुधा *

• जिसके मन में सन्तोष है, उसके लिये सब जगह ही सम्पत्ति है।

**—बाल्मीकि**

• दूसरे के प्राण की रक्षा से बढ़कर धर्म नहीं है।

**—पुरुष परीक्षा**

● गुणों का सर्वत्र सम्मान है। गुणी के वंश का नहीं। लोग वासुदेव (कृष्ण) की ही वन्दना करते हैं, उनके पिता वसुदेव की नहीं।

**—चाणक्य**

## क्षय तथा वक्ष रोगों में एम०डी०



डॉक्टर डी० एन० कार, चिकित्सा अधिकारी, ग्रुप केन्द्र गाँधी नगर ने क्षयरोग तथा वक्ष विकारों में एम० डी० की डिग्री गुजरात विश्वविद्यालय से पायी है । वह बी. जे. मेडीकल कॉलेज, अहमदाबाद में पढ़ने के लिए 'अध्ययन अवकाश' पर भेजे गये थे । के.रि. पु. बल से यह पहले डॉक्टर हैं, जिन्होंने अपने सेवा-काल में स्नाकोत्तर शिक्षा पूरी की है। यह उड़ीसा निवासी हैं, तथा 1969 में इन्होंने उत्कल विश्वविद्यालय से एम. बी. बी. एस. पास किया था और 1970 में के. रि. पु. बल में यह भर्ती हुए थे।

## शैक्षिक परीक्षायें

शिक्षा के प्रथम श्रेणी प्रमाण-पत्र और अंग्रेजी तृतीय श्रेणी की परीक्षायें, भविष्य में के०रि०पु० बल के महानिदेशालय के प्रशिक्षण विभाग के प्रबन्ध से केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज-II, देवली में हुआ करेंगी। ये परीक्षायें वर्ष में दो बार (मई और नवम्बर में) हुआ करेंगी।

परीक्षा-प्रक्रिया को सरल करने के लिए प्रशिक्षण विभाग से चालू की गयी नयी हिदायतों में परीक्षा से पूर्व शिक्षा कक्षायें भी शामिल हैं। परीक्षार्थी इन कक्षाओं में

के०प्र० कॉलेज देवली में चार सप्ताह तक शिक्षा पा सकते हैं। नाम, पद, क्रमांक आदि लिखने की पुरानी प्रथा समाप्त कर दी गई है और रोल नम्बर की पद्धति शुरू कर दी है। उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करने वाले भी महानिदेशालय से नियुक्त किये जायेंगे।

शिक्षा के द्वितीय श्रेणी के प्रमाण-पत्र के प्रश्न-पत्र अब प्रशिक्षण विभाग द्वारा तैयार किये जायेंगे और उप-महानिरीक्षकों द्वारा मनोनीत परीक्षा केन्द्रों को भेजे जायेंगे। इन परीक्षाओं की शेष प्रक्रिया अपरिवर्तित रहेगी। इसी प्रकार, तृतीय श्रेणी प्रमाण-पत्र की परीक्षा की प्रक्रिया में भी कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। विविध विषयों पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तकें पाठ्यक्रम में लगायी गई हैं।

# जादूगर राव

## ले०—श्री सुनील कपूर

बी० पुरुषोत्तम राव, कम्पनी कमांडर, 1 बटालियन (के० रि० पु० बल) सारे बल में **"जादूगर राव"** के नाम से भली भाँति प्रसिद्ध हैं।

उन मृदुभाषी अधिकारी का कहना है— "जादू मेरा शौक़ है।" इस कला का प्रयोग, वह बल के मनोरंजन तथा लाभ के लिए करना चाहते हैं।

अरुणाचल प्रदेश में, जहाँ वह आजकल निरत हैं, इस कला को वह पुलिस-जनता-सम्बन्ध के साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। उनके शब्दों में "आदिवासी जादू की पूजा करते हैं।" जादूगर के रूप में, उन्होंने जो प्रभुत्व पाया है, उससे वह अनेकों झगड़े निपटाते हैं।

जादू के विषय में, वह बहुत अध्ययन करते रहते हैं। जादूगरी पर प्रकाशित अनेकों विदेशी पत्रिकाओं के वह ग्राहक हैं। उन्हें वह घर के पते से मंगाते हैं। उनके माता-पिता उन पत्रिकाओं को, उनकी नियुक्ति के स्थान पर भेज देते हैं। वह बंगाल की जादूगर संस्था के सदस्य हैं, जो उन्हें नये जादुओं के विषय में सूचना देती रहती है।

राव के अनुसार, जादूगर बनने के लिए, प्रशिक्षण के चार चरण हैं—हथेली में (ताश के पत्ते, सिक्के आदि) छिपाना, विवश कर मनचाही कराना, इन्द्रजाल तथा योगनिद्रा। उनका कहना है कि "मैं पहली तीन कलाओं को सीख चुका हूँ।" इन दिनों, वह योगनिद्रा सीख रहे हैं। हाथ की सफ़ाई और बाध्य करना प्रारम्भिक चरण हैं, जबकि सच्चा जादू तो इन्द्रजाल (नज़रबन्दी) तथा योगनिन्द्रा में है। उनके शब्दों में, 'तालेबन्द बक्से से बाहर निकल आना केवल भ्रान्ति (नज़रबन्दी) है।'

परम्परागत रस्सी का जादू—अन्तर्धान होने की कला—को वह असम्भव मानते हैं। उनकी यह धारणा है कि यह जादू किया ही नहीं जा सकता।

जादू के संसार से वह कैसे आकर्षित हुये ? के० रि० पु० बल में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी बनने से पूर्व, 1971 में वह कलकत्ते जब गये, तब उन्होंने मज़मुआ लगाने वाले एक जादूगर को जादू बेचते पाया और दो रुपये में कुछ जादू वह खरीद लाये । उन्होंने नीमच में मौलिक प्रशिक्षण के समय उन जादुओं का अभ्यास किया। ले० कर्नल उमराव सिंह, केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज I के तत्कालीन प्रिंसीपल ने एक मेस-सम्मेलन में उन्हें अपने जादू दिखाने को प्रोत्साहित किया। वह उनका पहला खेल था और वह सफल रहा। तब उन्होंने और भी जादू एक स्थानीय जादूगर से सीखे।

उनकी पहली नियुक्ति जादू के जन्मस्थान पश्चिमी बंगाल में हुयी। वहाँ उन्होंने स्थानीय जादूगरों से और भी जादू सीखे । अब तक, वे यूनिट में जादू के खेल दिखाने लगे थे। 1976 में, उनकी बदली नागपुर ग्रुप केन्द्र को हो गयी और वहाँ उनकी मुलाक़ात महान जादूगर श्री पी० सी० अग्रवाल से हुयी। उनका कहना है "श्री अग्रवाल ने उन्हें व्यावसायिक सफ़ाई सिखाई।"

अब वह दो-तीन घंटे तक दर्शकों को मंत्रमुग्ध रख सकते हैं। अपने कार्यक्रम को रंगीन बनाने के लिए, वह संगीत की सहायता लेते हैं और अपनी गतिविधि का संगीत स्वरों से तालमेल रखते हैं। उनके शब्दों में "जादू के खेल दिखाकर लोगों को आनन्दित करने में मुझे बड़ा मज़ा आता है।"

राव का एक यह प्रस्ताव है—अधिकारीगण विभिन्न स्थानों पर जादू के खेल दिखाने में उनकी कला का प्रयोग कर सकते हैं और उससे इकट्ठा किया धन, देश के लिए तथा के० रि० पु० बल के शहीद जवानों के परिवारों के कल्याण के लिए इस्तेमाल हो सकता है।

## सिक्किम बाज़ार भस्म होने से बचा

सिक्किम के सैंगतम बाज़ार में 11 दिसम्बर 79 की रात को बड़ी भयंकर आग लग गयी। 38 बटालियन के जवान तुरन्त जा पहुँचे और आग पर काबू पा लिया। इस सामाजिक कल्याण के लिये, क्या स्थानीय प्रशासन और क्या जनता, सब ने के० रि० पु० बल की प्रशंसा की।

## ३ मैती उग्रपंथी बन्दी

सहायक कमाँड़ैंट एन० एन० मिश्र के नेतृत्व में 5-6 दिसम्बर 79 की रात्रि को मणिपुर के निंगथमाचा ग्राम में 29 बटालियन के एक प्लाटून ने छापे मारे । बड़ी भाग-दौड़ के बाद, तीन मैतेयी उग्रपंथी बना लिये गये । कितने ही अपराधों में ग्रस्त, एक बजाज स्कूटर भी पकड़ा गया। इस अभियान के कर्मियों को, महानिदेशक ने अपनी बधाई भेजी है।

## विज्ञान के चढ़ते चरण

ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि एक टन घरेलू कूड़े से लगभग आधा टन तेल निकाला जा सकता है, जिसका उपयोग तापन प्रणाली के लिये बिजलीघरों, उद्योगों और घरों में हो सकेगा।

चीन में सब जोड़ों के दर्द के लिये, चुम्बक पत्थर की कुर्सियों और खाटों का प्रयोग बड़ा लोकप्रिय है। चीनियों का विश्वास है कि चुम्बक पहनने से गठिया ठीक होता है।

ब्रिटिश अनुसंधान कर्त्ताओं ने, 'प्राक्सपीनोल' नामक गोली का आविष्कार किया है, जो भय के सभी प्रभावों को दूर करती है।

ब्रिटेन में सागर की लहरों से बिजली तैयार की गई है। यह कभी भी समाप्त नहीं होने वाला ऊर्जा-स्रोत है। बिजली का निर्माण हाइड्रॉलिक मोटर चला कर किया जाता है।

पुणे की राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला ने नीम से एक ऐसी औषध तैयार की है, जो कुछ कीड़ों-मकोड़ों को अंडे देने से रोकती है। इस औषधि का प्रयोग आलू व कन्द में लगने वाले कीड़ों पर सफलतापूर्वक किया गया है।

# मिज़ोरम से प्राप्ति

दिनांक 20 दिसम्बर 1979 को, 21 बटालियन की एक टुकड़ी ने स्थानीय पुलिस के साथ मिज़ोरम के ग्राम न्यूहारुईकान् नैथियल में छापा मारा, जहाँ मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे के कुछ विद्रोही छिपे हुये थे। विद्रोहियों ने गोलाबारी की; उसका उत्तर दिया गया। एक स्वघोषित 'प्राइवेट' (अशासकीय) अबलखुमा पकड़ा गया, जब कि दो अन्य विद्रोही जंगल में बच भागे । गोलाबारूद और कुछ गोपनीय प्रपत्र प्राप्त हुये, जिनमें एक हल्की मशीनगन तथा 228 छर्रों के साथ, दो 303 रायफलें भी थीं।

महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने इस काम की बड़ी प्रशंसा की और उन जवानों को 500 रु० का नक़द पुरस्कार दिया।

मिज़ोरम में निरत के० रि० पु० बल की बटालियनों ने पिछले दिसम्बर में, 19 विद्रोहियों को बन्दी बनाया और गोलाबारूद की बड़ी मात्रा प्राप्त की।

**क्रीड़ा क्षेत्रे**

## २९वें अखिल भारतीय पुलिस खेल-कूदों में हमारी फिर शानदार विजय

**पुणे में 28 फरवरी 1980 को सम्पन्न हुई 29वीं आंखेल भारतीय पुलिस खेल कूद प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल ने 292 अंक पाकर पुनः शानदार चैम्पियनशिप जीती; सदा का प्रतिद्वन्द्वी सी० सु० दल इस वर्ष 71 अंकों से पीछे धकेल दिया गया; तृतीय स्थान पर पंजाब पुलिस (70 अंक) रही। कुल मिला कर, सात कीर्तिमान स्थापित हुए।**

**तमिलनाडु का सुब्रह्मण्यम सबसे तेज धावक रहा तथा के० रि० पु० बल के हरीचन्द सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट घोषित हुये। इन्होंने 5,000 मी० और 10,000 मी० दौड़ों में स्वर्ण पदक जीते, जबकि 1,500 मो० दौड़ में यह तृतीय रहे। यह स्मरणीय है कि फरवरी 80 में ही, इनके उत्तम दौड़ प्रदर्शन के उपलक्ष्य में, पंजाब सरकार ने लगभग 6½ एकड़ (53 कनाल) भूमि इनको प्रदान करने का निर्णय लिया है, जिसका मूल्य लगभग 70 हजार रुपये है। मास्को ओलिम्पिक के लिये भी वह चुने गये हैं।**

**[इस प्रतियोगिता का विस्तृत विवरण अगले अंक में पढ़िये]**

## पटियाला स्टेडियम में हमारे सात खिलाड़ी

विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिये प्रशिक्षण एवं चयन करने के हेतु, के० रि० पु० बल के सात प्रसिद्ध एथ्लीटों को पटियाला स्टेडियम के प्रशिक्षण शिविर में बुलाया गया।

मार्च 1980 वाले पाकिस्तान खेलों में भाग लेने के लिये, इ० आर० एस० बल (घन फेंक), इ० प्रभात सिंह (डिकॅथलॅन) के वास्ते मनोनीत हुये हैं। 9 मार्च 1980 से पेरिस में आयोजित विश्वकासकंट्री दौड़ के लिये, डीवाई० एस०पी० हरीचन्द, ला० ना० एस०एस० योहनान, स०इ० रसदेव सिंह और स० इ० प्रेम सिंह को बुलाया गया।

## राष्ट्रीय बास्केट बाल

जनवरी 1980 में आयोजित 30वीं राष्ट्रीय बास्केटबाल चैंपियनशिप में, दिल्ली राज्य बास्केटबाल टीम की ओर से भाग लेने के लिए, इ० एस. एस. शेखावत, स० इ० एस. पी. यादव और हे० का० गोकुल चन्द को चुना गया।

## प्राणनाथ हॉकी टूर्नामेंट में हमारी जीत

बरेली में, 1 फरवरी 80 को खेले गये अखिल भारतीय प्राणनाथ कपूर हॉकी टूर्नामेंट के फाइनल में, सेना सेवा कोर (जालंधर) को 1-0 से हरा कर, केंद्रीय रिजर्व पुलिस ने सिरमौर जीता। इसका श्रेय राइट आउट निर्मल राज को है, जिसने शार्ट कार्नर पर वह विजयदायी गोल किया।

## 'कराते' खिलाड़ी शिवचरण सिंह

अगस्त 1979 के आन्तेम सप्ताह में, मद्रास में आयोजित तामेलनाडु राज्य कराते प्रतियोगिता में के० प्र० कॉलेज I (के० रि० पु० बल) के स० इ० शिवचरण सिंह ने भाग लिया। 60 प्रतिद्वन्द्वियों में, उसने दूसरा स्थान पाया। अन्तिम मैच में, "लाल 4" पट्टी में चिंगलपत टीम के कप्तान के० सुन्दर राजन से हार गया। शिवचरण सिंह ने प्रशिक्षण का प्रथम चरण समाप्त कर "हरी 1" पट्टी का पद पा लिया है। 1976 में, छह मास का प्रशिक्षण के० प्र० कॉलेज I में पूरा कर, उसी कॉलेज के निरस्त्र युद्ध पाठ्यचर्या के इस प्रशिक्षक ने "नारंगी पट्टी" का पद पा लिया था।

## कमांडो और रॉक क्लाइम्बिंग कोर्स

इन्ही दिनों शुरु हुये 'कमान्डो और रॉक क्लाइम्बिंग' ( सैन्यदल तथा शैलारोहण) कोर्स में, प्रथम स्थान पाने वाले को 200 रु० का पुरस्कार दिया जायेगा। उसके बाद चार स्थान पाने वाले को क्रमशः 150 रु०, 100 रु०, 75 रु०, और 50 रु० मिलेंगे। परन्तु यदि प्रशिक्षार्थियों की संख्या 20 से कम होगी, पुरस्कार केवल प्रथम तीन स्थान पाने वालों को ही मिलेगा।

## मत्तन पर गोली-चालन न्यायोचित

एक भूखण्ड के ऊपर सामुदायिक तनाव होने के कारण, जम्मू-काश्मीर के अनन्तनाग जिले के मत्तन कस्बे को 1 जुलाई 1978 को उपद्रवी क्षेत्र घोषित कर दिया गया। कुछ झंडे और 'जिनाजगाह' और 'शाह हमदम पार्क' शब्द लिखे हुए फट्टे, एक शिविर-स्थल पर कुछ मुसलमानों ने लगा दिये, जिससे स्थिति उद्वेगपूर्ण हो गयी। स्थिति सामान्य लाने के लिए 40 बटालियन (के० रि० पु० बल) की 'डी' कम्पनी को 13 जुलाई 1978 को वहाँ तैनात किया गया। 30 इ०ए.क्यू. ख़ान के नेतृत्व में, कम्पनी ने पहरा लगाने की योजना बनाई, जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा और आन्दोलनकारियों का मनोबल क्षीण हो गया।



**इं० ए. क्यू. खान**

21 जुलाई के प्रातः में, इ० खान ने उस समय अपनी कम्पनी निरत की, जब शिविर-स्थल से झंडे हटाये जाने पर मुसलमानों में तीव्र प्रतिक्रिया हुयी। कितने ही स्थानों से वे वहाँ आये और निषेधाज्ञा का उल्लंघन किया। तुरंत अश्रुगैस की टुकड़ी के साथ 'ई' कम्पनी के दो प्लाटून वहाँ भेजे गये। अपनी उपलब्ध जनशक्ति से, इ० खान ने अनियन्त्रित भीड़ को तितर-बितर करने का यत्न किया और शिविर-स्थल में घुसने से उसे रोक दिया। भारी पथराव से, के० रि० पु० बल को 13 जवान घायल हो गए। इ० खान को उग्र भीड़ ने घेर लिया। जीवनभय होने पर भी, इ० खान ने भीड़ को छिन्न-भिन्न करने की कार्यवाही जारी रखी। उसकी बारम्बार चेतावनी पर भीड़ ने ध्यान नहीं दिया और यह के० रि० पु० बल के जवानों पर हावी होने के लिये निकट आती रही। इस भय से कि कहीं हिमात्मक भीड़ रायफलें और बारूद छीन नहीं ले जाये, इ० खान ने एक सिपाही से रायफल लेकर उत्तेजित भीड़ पर कई गोलियाँ चलवाई। भीड़ भाग गई। फलस्वरूप, दो लोगों की मृत्यु हो गई।

नेतृत्व, ईमानदारी और स्थिति को चतुराई से सुलझाने के उपलक्ष में, श्री बी० वर्मा, महानिरीक्षक से० III ने 1,000 रु० का नकद पुरस्कार दिया।

बाद को, घटना की छानबीन करने के लिये, जम्मू-कश्मीर सरकार ने एक जाँच आयोग बिठाया। उक्त आयोग ने इ० खान के गोली-चालन को न्यायसंगत पाया और के० रि० पु० बल की सेवाओं की उसने सराहना की।

**स्वास्थ्य संदेशः**

# अपने बच्चों का रोग-निवारण

## ले०—डॉ० एस० एस० पत्रा

भारत में हर वर्ष 20 लाख से अधिक बालक जन्म लेते हैं। अधिकांश बच्चे, तीन वर्ष की आयु पाने से पूर्व ही, विभिन्न संक्रामक रोगों से मर जाते हैं। अनेक फ़ालिज़, फ़ेफ़ड़ों के पुराने रोगों तथा अन्य अक्षमताओं से विकलांग हो जाते हैं।

प्राम्भिक शैशवकाल में, अस्वस्थता और मृत्यु के लिये ये छः संघातक रोग हैं — कंठरोहिणी, (डिपथेरिया,) काली खाँसी, टेटेनस (धनुष्टंकार), पोलियो (अगंघात), खसरा और क्षयरोग। ग्रामीण बच्चे इन रोगों से तथा मस्तिष्क क्षति, अन्धापन, फ़ालिज़ तथा बहरापन जैसे रोगोत्तर समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं। स्वास्थ्य-शिक्षा के अभाव और सुविधाओं की कमी के कारण, अधिकांश ग्रामीण जनता रोग निवारण के लाभों से वंचित रह जाती है।

प्रशिक्षित हाथों से शक्तिशाली टीके सही प्रकार से ठीक आयु में लगाने से बच्चे रोग-निमुक्त हो जाते हैं और रोगों की प्रभावसीमा कम हो जाती है। क्योंकि जीवन के आरंभ में संरक्षण के लिये संघर्ष की शक्ति कम होती है, रोग-निवारण तभी हो जाना चाहिये। पहले ही वर्ष में, क्षयरोग के लिये बी.सी.जी. डिपथेरिया और काली खाँसी धनुः रोग के लिये डी.पी. टी., पोलियो और खसरे के टीके बच्चों को लगा देना चाहिये। शरीर के रोग-निवारण के वाँछित स्तर को उठाने के लिये, कुछ टीके बारम्बार लगाने पड़ते हैं, जैसे डी.पी. टी. और पोलियो के टीके तीन खुराक़ों में चार-चार सप्ताह के अन्तर में लगाये जाते हैं और 18-24 मास की आयु में सम्बर्धन को एक और टीका लगता है। यदि कम खुराक़ें दी जायेंगी, तब बच्चे को रोग से ग्रस्त होने की आशंका रहेगी और पूरा-पूरा संरक्षण नहीं मिल पायेगा।

विभिन्न रोगों से निर्मुक्ति इस प्रकार पायी जा सकती है :—

**डिपथेरिया (कंठरोहिणी):** एक से दस वर्ष की आयु तक, बच्चों को यह रोग जल्दी सता सकता है। श्वास-नली के ऊपर यह स्थानीय संदूषण होता है। गले में उत्पन्न झिल्ली, श्वास नली में रुकावट पैदा करती है और सांस लेने में दिक़्क़त होती है। जीवाणुओं से छोड़े हुये विष हृदय पेशियों और परिणाह तंत्रिकाओं पर धावा बोलते हैं।

ज्वर, गले में खराश और निगलने में कठिनाई प्रारंभिक लक्षण होते हैं। तुरन्त और कारग़र चिकित्सा नहीं मिलने पर, दम घुटने से शिशु की मृत्यु तक हो सकती है।

यदि डी. पी. टी. का टीका तीन मास की आयु से ही 4-6 सप्ताह के अन्तर से लगता रहे और एक संवर्धक टीका 18-24 मास की आयु पर लगे, तो यह रोग रोका जा सकता है।

**काली खाँसी :** 1 से 5 वर्ष की आयु तक, बच्चों की काली खाँसी होने की आशंका

रहती है। यह गम्भीर रोग है और प्रथम वर्ष में ही, अधिक मत्युयें इसके कारण होती हैं। यह रोग बच्चे का विकास रोकता है।

लाल आँखें, नाक का बहना और निरन्तर खाँसते रहना, इस रोग के लक्षण है। 'हूफ्हूप' के विशेष स्वर के साथ, खाँसी गम्भीर होती है; बच्चों पर बड़ा दबाव डालती है, भोजन करने की अक्षमता तथा उल्टियाँ तक लगा देती है।

तीन मास की आयु से 4-6 सप्ताह के अन्तर में और 18-24 मास की आयु में सम्बर्धक टीके से इस रोग की रोकथाम की जा सकती है।

**धनुष्टंकार :** यह रोग सभी आयुवर्गों, मुख्यकर गर्भवती महिलायें तथा नव जात शिशुओं को ग्रस्त करता है। मांसपेशियों की दीर्घ तथा दर्दभरी सिकुड़न से धनुष की भाँति देह के झुकने से इस रोग को पहचाना जा सकता है। श्वास-पेशियों के सिकुड़ने से साँस नहीं ली जाती है और मृत्यु हो जाती है। धूलि में मिले प्ररेणार्थक जीव खरोंचों या घावों से देह में घुस कर इस रोग को पैदा करते हैं। अस्वच्छ स्थितियों में नाभिनाल काटे जाने पर, यह संक्रमण साधारणतया हो जाता है।

गर्भधारण के 16वें सप्ताह से 'टेटेनस टाक्सिड' (जीवविषाभ) की तीन खुराक़ों से गर्भिणी रोगनिमुक्त हो जाती है। जेर के द्वारा यह भ्रूण में पहुँचता है और सद्यजात शिशु को भी बचा लेता है। तीसरे मास की आयु से 4-6 सप्ताह के अन्तर में तीन टीकों से तथा 18 से 24 मास में, एक संवर्धक टीके से इस रोग की रोकथाम की जा सकती हैं। टेटेनस टाक्सिड को 10-16 वर्ष की आयु में फिर तथा आजीवन पाँच-पाँच वर्ष बाद लगवाते रहना चाहिए।

**पोलियो (शिशु अंगघात)**—आंत्रविषारणु से उत्पन्न यह जल्दी फैलने वाला रोग है। यह मुख्यकर मानव मौलिक तंत्रिका का संक्रमण है; किन्तु केन्द्रीय स्नायुजाल को प्रभावित कर लकवा पैदा करता है। एक बार लकवा होने पर कुछ भी नहीं हो सकता है। दूषित अन्नजल से, यह रोग फैलता है।

तीस मास की आयु से मुंह से पोलियो की टीकादवा को 4-6 सप्ताह के अन्तर में तथा 18-24 मास की आयु पर सम्वर्धक खुराक़ लेने से इस रोग को रोका जा सकता है।

**खसरा (छोटी माता)**—एक विशेष विषारणु तथा नज़ले के लक्षणों से उत्पन्न विस्फोटक ज्वर होता है, जिसमें एक प्रकार के चकत्ते पड़ जाते हैं। बचपन में यह साधारण संक्रामक रोग होता है। इससे बालक कमज़ोर हो जाता है और उसमें न्यूमोनिया (फुफ्फुसदाह), दस्त, मध्य कर्णशोध जैसे उपाघात पैदा हो जाते हैं। फलस्वरूप, बहुत से बच्चों की मृत्यु हो जाती है।

इसका टीका भी उपलब्ध है तथा 9-12 मास की आयु में इसकी एक खुराक, जीवनभर को इस रोग से मुक्ति दिला देती है।

**क्षय रोग (तपेदिक़)**—यह माईकोवैक्ट्रियम ट्यूबरक्लोसिस से शीघ्र फैलने वाला विशेष रोग है। यह तीक्षण या पुराना, सामान्य या स्थानीय हो सकता है। यह सर्वव्यापी

रोग है। बच्चों को यह रोग जल्दी होता है ट्यूबरक्यूलर मोनेंजाइटीज़ (क्षय शोथ) से वे ग्रस्त हो जाते हैं। कुछ विकासशील देशों में, 70% से अधिक बालक 14 वर्ष की आयु तक इससे ग्रस्त हो जाते हैं। बी० सी० जी० के टीके को 3-9 मास की आयु में लगाने से इसे रोका जा सकता है।

देश में सभी टीके साधारण प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं, जिसके कारण रोग से मुक्ति मिलती है। यह प्रतिक्रिया रोग की तुलना में बड़ी क्षीण होती है। भयंकर रोग की अपेक्षा, यह चुकाने योग्य क़ीमत है।

पढ़े लिखे माता पिताओं को इस विषय में दूसरों को जानकारी देनी चाहिये और सही समय पर अपने बच्चों को रोगनिर्मुक्त करना भी नहीं भूलना चाहिये।

# यह भी खूब रही

**भक्त**—साधु महाराज, प्रसन्न हो कर, आप मुझ से वर मांगने को कहते हैं। पर मैं तो पुरुष हूँ; मुझे वर नहीं, कन्या चाहिये।

**आधुनिक लैला**—जब आप जैसे मजनूं हमारे पास खड़े ठंडी आहें भरते रहते हैं; तब हमें इन चुस्त कपड़ो में कैसे गमी लग सकती है ?

**पत्नी**—वकील साहब, आप भी अजीब प्रश्न पूछते हैं कि तलाक़ लेने की असला वजह क्या है ? कौन नहीं जानता कि उसका मूल जड़ है विवाह ?

**माता :** (क्रोध में) चुड़ैल की औलाद।

**पुत्री**—देखिए आप मुझे कुछ कह लीजिये; पर सुबह-सुबह अपने आप को गाली मत दीजिये।

**राम**—श्याम, विद्यालिंगम आयोग ने, पालीएस्टर की आयात-नीति प्रभावित करने में, कान्ति देसाई को 'निज' भलाई की सोचता पाया है।

**श्याम**—ग़लत, 'निज, नहीं, 'वनिज' कहो मित्र (हँस कर) पर तुम भी ठोक हो। वनिज बना ही निज से है; दरअसल, निज के अतिरिक्त वनिज होता हो क्या है ?

**कृष्ण**—गोविन्द, जनता पार्टी के नेता अंगुली दिखा-दिखा कर चुनाव की हाथापायी में हाथ धोकर कांग्रेस के **पीछे पड़ गये;** बल्कि बहुत से वे तो हाथाछाँटी मे रंगे हाथ पकड़े तक गये। परन्तु काँग्रेस ने भी अपना वह हाथ दिखाया कि वे हाथ मलते रह गये। पर हाथकंड़ों में बेजाड़, वे हाथ पर हाथ धरे अब भी नहीं बैठ हैं ; दल बदल कर, वे अब हाथ जाड़े कांग्रेस के पीछे फिर रहे हैं।

**गोविन्द**—(हँस कर) अपनी जगह पर सदा पीछे रहने की, उन्हें दाद देनी पड़ेगी।

**सीता**—गीता, सुना है कि एक बुढ़िया मतदान केन्द्र पर खड़ी भीड़ को, मिट्टी के तेल के लिये लगा 'क्यू' समझी और टीन कनस्तर झट लाकर, पंक्ति में खड़ी हो गई।

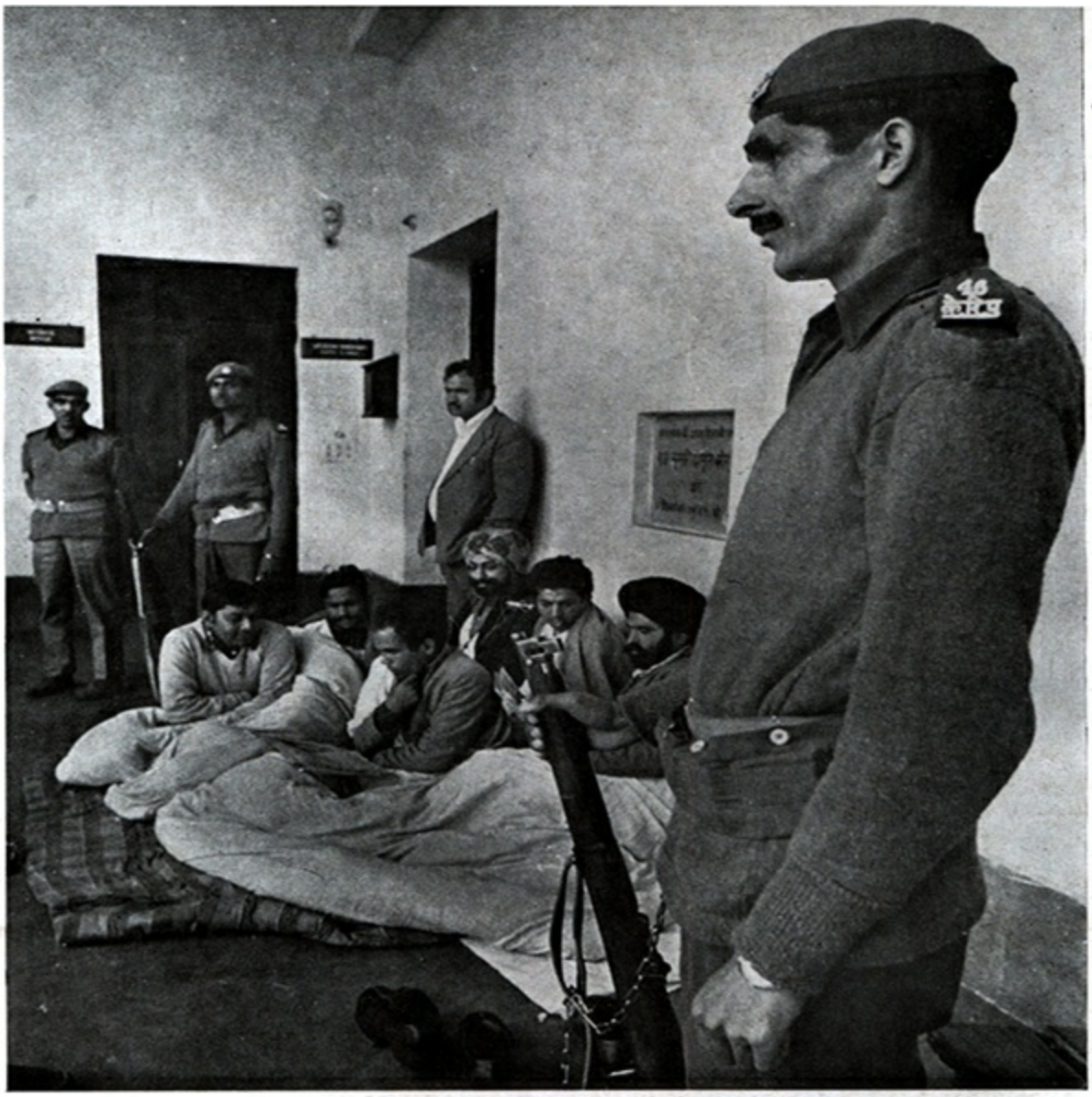
**गीता**—यह तो कुछ भी नहीं। कांग्रेस के इस नारे पर 'मुहर लगाओ हाथ पर,' पाच हज़ार मतदाताओं ने पिछले चुनाव में अपने ही हाथ पर मुहर लगा कर, खाली मतपत्रों को मतपेटी में डाला।

**विजय**—यार, एक तुम्हारे सूर्य देवता हैं जिन्होंने दो ढाई घंटे के ग्रहण की परेशानी से सारे संसार में कोहराम से आसमान सिर पर उठा लिया है और एक हम मनुष्य होकर अपने पाणिग्रहण की क़िल्लत चुपचाप जीवन भर सहे चले जा रहे हैं।

**हलधर**—'सेवा करे तो मेवा खाए' यह कहावत आप शहरियों के लिये है। हम हलधरों की कहावत तो है 'हल चले, तो हलवा मिले। हम हलवाये ही सच्चे हलवाई हैं।'



**त्रिपुरा के आनन्द बाज़ार में लकड़ी का पुल बनाते हुये के०रि०पु०बल के जवान**

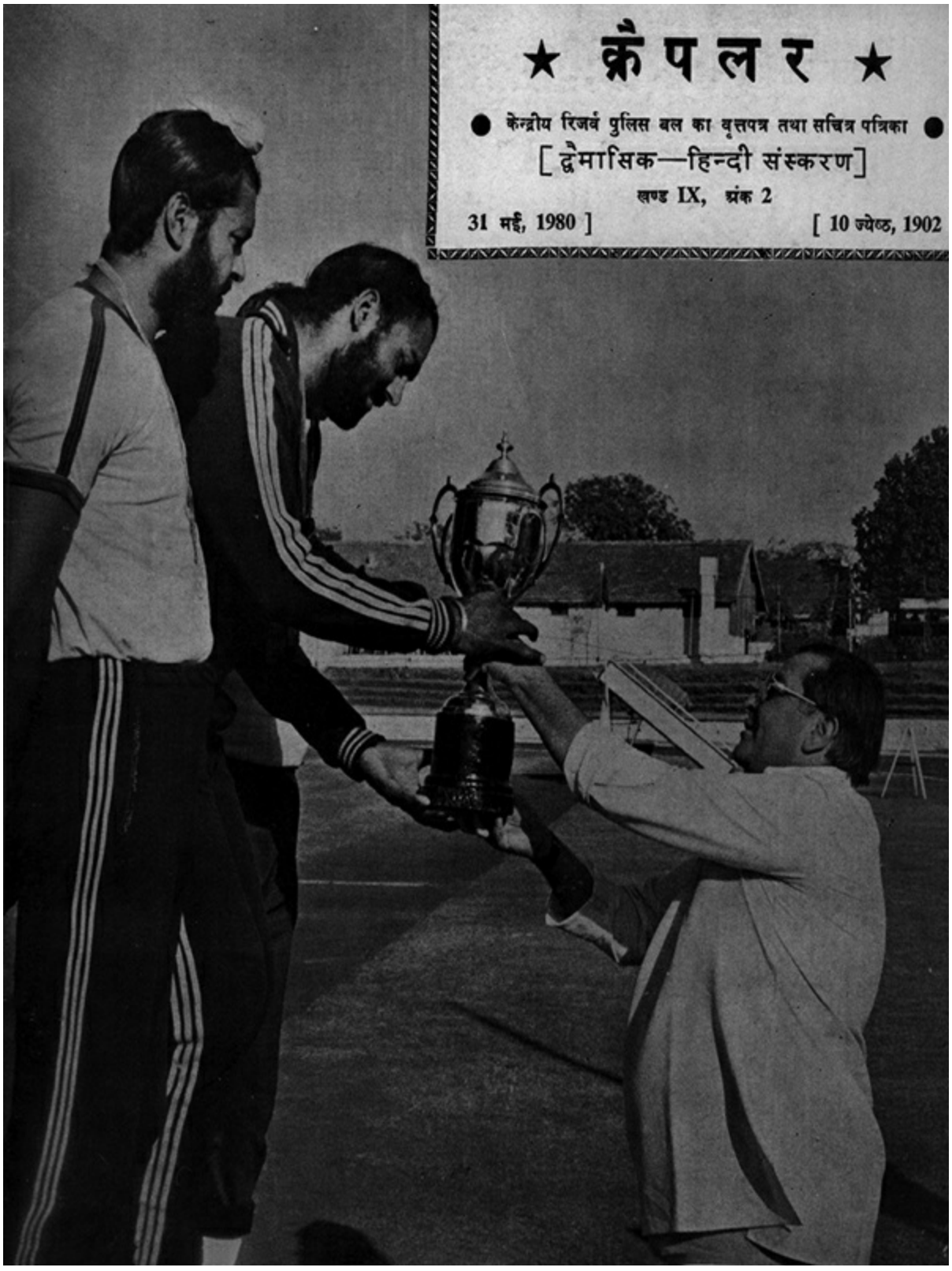


नई दिल्ली की मतपेटियों पर सतर्क पहरा लगाते हुए लोकसभा प्रत्याशियों के प्रतिनिधियों के साथ के० रि० पु० बल के जवान ['हिन्दुस्तान टाइम्स' से साभार; छाया : एस० एन० सिन्हा]

[रजिस्टर्ड नं० 25627/74]



राम सिंह　　किसन पाल　　रामकृष्णन नायर　　देवदत्त दास



# ★ क्रैपलर ★


● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक—हिन्दी संस्करण]

खण्ड IX, अंक 2

31 मई, 1980 ] [ 10 ज्येष्ठ, 1902



# ★क्रैपलर★

द्वैमासिक]

[हिन्दी संस्करण

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र

तथा

सचित्र पत्रिका




**खण्ड IX**

**31 मई, 1980**

**10 ज्येष्ठ, 1902**

**मुख्य सम्पादक :**

**एच० एस० सेठी**

**छाया चित्रकार :**

**एस० के० खन्ना**

**हिन्दी सम्पादक :**

**जे.० एस० शर्मा**

---

**I मुख पृष्ठ :** फ़िल्मी सितारे राजकपूर से घनफेंक में प्रथम आने पर ट्राफी पाता हुआ एथ्लीट रघुबीरसिंह।

**II सम्मुख पृष्ठ :** महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री सादिक़ अली के कर-कमलों से पुलिस खेलों में दौड़कूद प्रतियोगिता की ट्राफ़ी प्राप्त करते हुए ब्रिगेडियर पी० एन० खन्दूरी।

**III अन्तिम पृष्ठ :** महानिदेशक श्री टण्डन से पारम्परिक भेंट पाते हुए के० रि० पु० बल के वादक गण।

---

**मुद्रक**- सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072।

**प्रकाशक**- महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से **एच० एस० सेठी**।

**सम्पादकीय कार्यालय :**

द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022।

**क्रम संख्या**

**विषय**

**I. गौरव गाथा:-** प्रशंसा और पुरस्कार

**II. रिपोर्ताज:-** के०रि०पु० बल के नये महानिदेशक

**III. लेख :**

(i) पुलिस-कार्य में जन-सहयोग, ले०-श्री आई० एस० डागर

(ii) अभागा हेलमेट, ले०-श्री एम० पी० नैथेनियल

(iii) धूमिल स्मृतियाँ, ले०-इ० गोवर्द्धन प्रसाद बहुगुणा, 27 बटा०

(iv) मनोबल, ले०-लेफ्टीनेंट कर्नल के० गोस्वामी

(v) रेल यात्रायें, ले०-जी० एफ० डिस्यूज़ा डीवाई० एस० पी०, 56 बटा०

**IV. कविता :-** लम्बी छुट्टी, रचयिता रे० आ० पारथसिंह 26 बटा०

**V. कहानी :-** पुरस्कृत चोर, ले०-श्री जे० एस० शर्मा, हिन्दी सम्पादक

**VI. क्रीडा क्षेत्रे :-**

(क) 29 वें अखिल भारतीय पुलिस खेल, ले०-श्री एच० एस० सेठी, जनसम्पर्क अधिकारी

(ख) भारत-पाक प्रतियोगिता-सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट

(ग) अन्य प्रतियोगितायें

**VII. विज्ञान के चढ़ते चरण :-**

**VIII. स्वास्थ्य-सन्देश :-** गर्मी के फल और स्वास्थ्य, ले०-श्री जे० एस० शर्मा-हिन्दी सम्पादक

**IX. विविध :**

(i) पहेली, प्रस्तोता सिपाही सुरेन्द्रनाथ मिश्र, 62 बटा०

(ii) सूक्ति सुधा

(iii) यह भी खूब रही

**गौरव गाथा :**

## भारत सरकार द्वारा के० रि० पु० बल की प्रशंसा

इन्हीं दिनों लोक सभा के मध्यावधि चुनाव में, के० रि० पु० बल के अधिकारियों और जवानों द्वारा की गई अनुकरणीय सेवाओं की प्रशंसा, भारत सरकार ने हमारे महानिदेशक को लिखकर भेजी है। समस्त देश में बल के प्रविस्तारणों में उत्तम समन्वय के लिए, श्री एम० एस० बावा, उपनिदेशक (परिचालन) के विषय में, मुख्य चुनाव आयुक्त ने विशेष उल्लेख किया है।

## अरुणाचल के मुख्यमंत्री द्वारा सराहना

श्री गेगांग अपांग, मुख्य मंत्री, अरुणाचल प्रदेश ने इंगकांग पर स्थित 31 बटालियन की 'बी' कम्पनी के शिविर पर 3 मार्च 1980 को दौरा किया। उन्होंने यह लिखा है-"सारा शिविर बड़ा साफ़ सुथरा था। जवान बड़े चुस्त, सतर्क और सुनियंत्रित थे। के० रि० पु० बल के जवानों से, जनता तथा सरकार को उत्तम सहयोग तथा श्रेष्ठ सेवायें मिली हैं। एक स्थायी तथा सुदृढ़ सरकार बनाने के लिए, केन्द्र के इस सुशासित क्षेत्र को उनकी सेवाओं की बड़ी आवश्यकता है।"

## सिक्किम के राज्यपाल द्वारा 38 बटालियन की प्रशंसा

सिक्किम से प्रस्थान की पूर्व संध्या 12 जनवरी, 1980 को, गंगतोक के पलजोर स्टेडियम में 38 बटालियन के०रि०पु० बल ने एक विदाई परेड आयोजित की। श्री कपूरसिंह, सहायक कमांडैंट ने परेड का नेतृत्व किया। श्री बी०बी० लाल, सिक्किम के राज्यपाल ने सलामी ली। सिक्किम के मुख्यमंत्री, काबीना मंत्री, विधानसभा अध्यक्ष, मुख्य सचिव, पुलिस तथा अन्य नागरिक विभागों के अध्यक्षों ने उस समारोह में भाग लिया।

अपने अधिभाषण में, राज्यपाल ने कहा-'आपने सिक्किम की जनता का हृदय पूर्णरूपेण जीत लिया है। अब आप मिज़ोरम राज्य में जा रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप साहसपूर्वक, निष्ठासहित तथा ईमानदारी से अपने सेवाभार उठायेंगे और इस प्रकार अपनी बटालियन का नाम ऊँचा करेंगे। मेरी शुभकामनायें सदा आपके साथ हैं।'

## श्री इम्दादअली द्वारा सराहना

दिनांक 16 मार्च 1980 को अहमदाबाद में 14 बटालियन (के०रि०पु० दल) और 18 बटालियन (सी०सु० दल) के बीच कबड्डी प्रतियोगिता हुई। उसमें के०रि०पु० दल

विजयी हुआ। श्री इमदाद अली, भूतपूर्व महानिदेशक, के०रि०पु० दल, मुख्य आतिथि थे। उन्होंने ही पुरस्कार वितरित किये।

कबड्डी के बाद, 14 बटालियन ने निरस्त्र युद्ध का प्रदर्शन किया। प्रशिक्षित कमांडो जनों ने भी अपने करिश्मे दिखाये, जिसमें बिना मदद के 20 फीट ऊँची दीवार पर चढ़ना भी था।

इस अवसर पर बोलते हुये, श्री इम्दाद अली ने कहा 'सारे देश के अन्दर भारी खींचा-तानी में काम करते हुये, के०रि०पु० बल उच्च स्तर की कार्यकुशलता और परिचालन-दक्षता तथा साथ ही, खेल और कूदों में बड़ी रुचि बनाये हुये है।'



**14 बटालियन (के० रि० पु० बल) और 18 बटालियन (सी० सु० दल) की कबड्डी टीमों के साथ श्री इम्दाद अली, भूतपूर्व महानिदेशक, के० रि० पु० बल**

## साहसी सिपाही पुरस्कृत

'हफ़ीज़ा' नामक कुख्यात डाकू को बन्दी बनाने के उपलक्ष्य में, का० हरवन्श लाल, (55 बटालियन) को श्री के० के० बक्षी, ज़िला मजिस्ट्रेट, अलीगढ़ ने एक 'ट्रांजिस्टर' प्रदान किया। इस सिपाही ने 15 अक्टूबर 1979 को उक्त डाकू को पकड़ने में जान को ख़तरे में डाल कर, अदम्य साहस दिखाया था।

## असावधान चालक बन्दी

रवीन्द्रशाला दिल्ली, के निकट, 30 जनवरी 1980 की रात को एक असैनिक गाड़ी के चालक ने दो पैदल यात्रियों को घायल कर बच भागने की चेष्टा की। दिन की सेवा करके, निज शिविर को लौटते हुये 46 बटालियन के स० इ० राम प्रसाद और का०

सुरेन्द्रनाथन ने उसकी चेष्टा विफल कर दी।

उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा के लिए, उपमहानिरीक्षक, के० रि० पु० बल, नई दिल्ली ने पचास-पचास रु० का नक़द पुरस्कार उन्हें दिया है।

## बैंक चोर बन्दी

भारतीय स्टेट बैंक की सूरी शाखा की सुरक्षा के लिए 13 बटालियन, के० रि० पु० दल की एक टुकड़ी निरत है। 25 फरवरी 80 को बैंक में चोरी का प्रयास किया गया, जिसको उस टुकड़ी की सतर्कता ने विफल कर दिया। हमारे जवानों ने चोर को पकड़ कर स्थानीय पुलिस थाने के सुपुर्द कर दिया। उन जवानों को, बैंक अधिकारियों ने नक़द पुरस्कार दिया है।

## मालगाड़ी को लूट बचाई

दिनांक 24 फरवरी 1980 को, जब के० रि० पु० बल के जवान 319 ऊपरी यात्री रेलगाड़ी की सुरक्षा में चल रहे थे, तब उन्हें पता लगा कि बनहाई और रघुनाथपुर के बीच एक मालगाड़ी को कुछ उपद्रवी लूट रहे हैं। वे घटनास्थल पर जा दौड़े और उपद्रवियों ने गोलाबारी की। के० रि० पु० बल ने उत्तर में गोली चलाई। उपद्रवी भाग खड़े हुए। किसी ओर से भी कोई हताहत की घटना का समाचार नहीं मिला है। अलवत्तः तीन बक्सों को बरामद कर, उन्होंने रेल अधिकारियों को दे दिया गया।

## राज्यपाल श्री एल. पी. सिंह द्वारा के० रि० पु० बल की सराहना

राज्यपाल एल० पी० सिंह ने श्री ज़ैल सिंह, गृह मंत्री को लिखे अपने एक पत्र में, के० रि० पु० बल की कार्य-साधकता की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। "पिछले वर्षों में पूर्वोत्तर अंचल में प्राप्त अनुभव के आधार पर, यह मैं बिना हिचकिचाहट के कह सकता हूँ कि इस बल ने उस आकांक्षा की पूर्ति सराहनीय ढंग से की है।"

पत्र के पाठ्य भाग का अविकल रूप इस प्रकार है-'संकट के दिनों में, हमें मणिपुर, मेघालय तथा आसाम जाना पड़ा है; न्याय-व्यवस्था से सुलझने के लिए तथा शान्तिप्रिय नागरिकों, मुख्यकर अल्पसंख्यकों में सुरक्षा की भावना भरने के लिए, हमें अधिकतर के० रि० पु० बल पर निर्भर रहना पड़ा है। इन दुस्साध्य सेवाओं में, के० रि० पु० बल की कार्यक्षमता प्रत्युत्तम रही है। यदि कुछ नुक़्ताचीनियाँ हुई भी हैं, तब के० रि० पु० बल के जवानों की कोई ज्यादतियाँ, अत्याचार या दुर्व्यवहार इनका कारण नहीं है, क्योंकि के० रि० पु० बल इन सब बातों से विलक्षण रूप से मुक्त है। यह इस बल की कार्य-साधकता का ही फल है कि उन लोगों ने ये शिकायतें की हैं, जो अल्पसंख्यकों के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला हिंसा का प्रयोग करना चाहते हैं।

स्थिति से निपटने को ज़रूरी कठोर उपायों या बल-प्रयोग के प्रति अनिच्छा के कारण, राज्यों की सशस्त्र पुलिस प्रायः कारगर या दक्ष नहीं सिद्ध हुई है। बहुसंख्यकों के लड़ाकू वर्गों के प्रति सहानुभूति तथा पक्षपात के भी कुछ मामले हुए हैं।

"छठे दशक के मध्य में, जब के० रि० पु० बल की शक्ति 14 से 56 बटालियन बढ़ाई गई, तब ऐसी आशा उत्पन्न हुई कि अल्पसंख्यक जातियों को तथा सामान्यतः जनता के कमज़ोर वर्गों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए, यह बल मुख्यतः केन्द्रीय साधन होगा। पिछले वर्षों में पूर्वोत्तर अंचल में प्राप्त अनुभव के आधार पर, यह मैं निर्द्वन्द्व कह सकता हूँ कि इस बल ने उस आकांक्षा की पूर्ति सराहनीय ढंग से की है।

"के०रि०पु० बल के अधिकारियों तथा जवानों द्वारा की गई उत्तम सेवाओं के प्रति अपना आभार प्रकट करना, मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। जहाँ किसी अन्य सेवाभार, उदाहरणार्थ राजद्रोह शमन, में उन्हें निरत में किया गया है, वहाँ उन्होंने ऐसे अन्य सेवा भारों को भी अत्युत्तम प्रकार से उठाया है।"

## ओबराय होटल में जवानों द्वारा अग्नि शमन

ओबराय पैलेस द्वार (श्रीनगर), पर क्वार्टर गार्ड सेवा पर नियुक्त, 40 बटालियन के का० प्रभात चन्द ने 22 फरवरी 1980 की सुबह, कर्मचारी क्वार्टरों से धुआँ तथा लपटें निकलती देखीं। सिपाही ने तुरन्त अपने कम्पनी हवलदार मेजर को इसकी सूचना दी तथा अग्निशमन के उपकरणों के लिए उपलब्ध जवान घटनास्थल पर पहुँच गये। तब तक, सारे कम्प्लेक्स में आग फैल गई थी। जवानों ने पहुँचते ही आग बुझाना शुरू करदी; ओबराय पैलेस के निरत कर्मचारियों को सतर्क कर दिया गया और के० रि० पु० बल के, जवानों ने जन तथा सम्पत्ति की निकासी प्रारम्भ कर दी। बाद को, दमकलें भी पहुँच गई और हमारे जवानों की मदद से, आग बुझा दी गई तथा लाखों की सम्पत्ति बचा ली गई। होटल अधिकारियों यथा स्थानीय प्रशासन ने के० रि० पु० बल के जवानों की सामयिक कार्रवाई की बड़ी प्रशंसा की।

## अग्निशमन

मकामाघाट के निकट इन्द्रापुर ग्राम में अग्नि लग गई। ग्रप केन्द्र (के० रि० पु० दल) के जवान तुरन्त घटनास्थल पर जा दौड़े और आग पर काबू पा लिया। कोई प्राण हानि नहीं हुयी।

इन्द्रप्रस्थ इस्टेट दिल्ली ग्रिड के सब स्टेशन के ट्रांसफार्मर में 15 अप्रैल 80 को अग्नि लग गई। के०रि०पु० दल के जवानों ने घटनास्थल पर तुरन्त पहुँच कर आग बुझा दी।

# केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के नये महानिदेशक सर्वश्री टण्डन तथा बीरबल नाथ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक का अधिक पद भार संभालते ही, श्री श्रवण टंडन ने के० रि० पु० बल के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए इस बात पर सन्तोष प्रकट किया कि सरकार ने उन पर भरोसा किया है। इस बल में पहले चार वर्षों से अधिक रहने के कारण, यहाँ के अधिकारियों के मध्य उन्होंने सुख सन्तोष अनुभव किया। उन्होंने जवानों की समस्याओं पर शीघ्र ध्यान देने की मंत्रणा दी।


महानिदेशालय
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
DIRECTORATE GENERAL
ENTRAL RESERVE POLICE FORCE

**महानिदेशालय (के० र० पु० बल) में प्रवेश के समय श्री श्रवण टण्डन**

कमांडैटों को लिखे अपने एक पत्र में, उन्होंने लिखा है–'पूर्वोत्तर अंचल में, के. रि० पु० बल न्याय तथा व्यवस्था बनाये रखने के लिए भरसक यत्न कर रहा है। इसकी सेवायें 'परमोत्कृष्ट' मानी गयी हैं।"

महानिदेशालय के अधिकारियों, लिपिक वर्ग के कर्मचारियों तथा जवानों को सम्बोधित करते हुये, निवर्तमान महानिदेशक श्री पी० आर० राजगोपाल ने के० रि० पु. बल के उत्तरोत्तर गौरव बढ़ाते रहने के लिए उनसे अनुरोध किया। उन्होंने इस बल को 'पुनीत धरोहर' बताया तथा जवानों के नेत्रों में उन्होंने 'एक भारतीय की सच्चाई तथा निष्ठा' झांकी। उन्होंने जून, 1979 की दुर्घटना को फिर कभी नहीं होने की अपील की। उनकी विदाई बड़ी मर्मस्पर्शी थी।

ऐसे ही विचार उन्होंने कमांडेंटों को लिखे अपने पत्र में व्यक्त किए हैं "यद्यपि इस महान बल से मेरा सम्बन्ध कुछ महीनों का ही रहा है, किन्तु इसके सम्पर्क से मैंने कितना प्रतिष्ठित तथा कृत्कृत्य स्वयं को माना है-इसका बतलाना मेरा कर्तव्य हो जाता है। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक, आप सब के सम्पर्क की सर्वाधिक सुखद तथा मधुरिम स्मृतियाँ मेरे साथ रहेंगी।

"इस बल और इस महान देश की जनता के लिए उपयुक्त काम करने की बुद्धिमत्ता, साहस तथा चरित्र, प्रभु इस बल के हर किसी सदस्य को प्रदान करें।"

**छपते-छपते**

**स्वागतम् ! शुभागमन!!**

**श्री बीरबल नाथ**

**दिनांक 12 मई 1980 को, श्री बीरबल नाथ, महानिरीक्षक सीमा सुरक्षा दल ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक का कार्यभार संभाला। 54 वर्षीय श्री नाथ पंजाब कॉडर के हैं। आप सी.सु० दल में 1967 में उपमहा निरीक्षक के पद पर नियुक्त हुये थे।**

# पुलिस कार्य में जन-सहयोग

**(ले०-श्री आई० एस० डागर)**

न्याय-प्रशासन और क़ानून-प्रवर्तन सदा ही चिन्ता के विषय रहे हैं और आजकल तो, क़ानून-प्रवर्तन के इतिहास में, सारे राष्ट्र में पुलिस जन को सर्वाधिक कठोर कार्य करना पड़ रहा है।

वृद्धि, विकास और परिवर्तन के इस अपूर्व युग में, आज हम रह रहे हैं । सरकार के अन्य कारणों की अपेक्षा, परिवर्तनों से क़ानून-प्रवर्तन पर अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है। देश के क़स्बों और शहरों में, पुलिस-समाज सम्बन्धों की आवश्यकता आज सर्वाधिक है। इन सम्बन्धों को एक ऐसी अलग समस्या नहीं माना जा सकता,-जिसको उन कारकों से ही जूझना होता है, जिनका अपराधी-न्याय के प्रशासन में निहित स्वार्थ होता है।

**परिभाषा**-सर्वसाधारण के लिए, पुलिस समाज-सम्बन्ध, वे सम्बन्ध हैं, "जो पुलिस समाज से रखती है।" ठोस परिभाषा के लिए, डॉक्टर कोविस ए० रेडेट लिखते हैं– "यह ऐसे अनेकों तथा विविध प्रकारों का कुल योग है, जिनमें इस बात पर बल दिया जा सकता है कि जिस समाज की पुलिस सेवा करती है, वह उससे अलग नहीं हो कर उसका अंश है।"

एक अन्य उपयोगी परिभाषा यह हो सकती है कि पुलिस-समाज-सम्बन्ध एक कला है; यह अपने अधिकार क्षेत्र में समाज की समस्याओं को समझने तथा ठीक-ठीक सुलझाने के लिए पुलिस-योग्यता से सम्बद्ध है। पुलिस की भूमिका तथा कठिनाइयों के प्रति, समाज की जागरूकता का विचार तथा सहयोग और सामञ्जस्य के लिए सच्ची कोशिशों से पुलिस और समाज, दोनों की समस्या को समझने के उभयनिष्ट उद्देश्य में भाग लेने के खरे तन्त्र इसमें निहित हैं। जो समाज हमारा ध्येय है, वह सामूहिक एकता का समाज है।

जैसा डीन थॉमसन का निष्कर्ष है, सहयोगी समाज के विचार की जड़, दया में नहीं, संरक्षण में नहीं, बचाव में नहीं; किन्तु अपने साथियों को आवश्यक माने जाने वाले तत्व के अंश समझते हुये जीवन के किसी स्तर पर भी नर-नारी द्वारा मानी जाने वाली प्रतिष्ठा तथा महत्त्व में है ।

**पुरानी पद्धति**-पुलिस-समाज-सम्बन्ध और पुलिस-कार्य में समाज का योगदान— यह कोई नई विचारा धारा नहीं है। भारत में पहले पुलिस-कार्य, जनता की सामूहिक ज़िम्मेदारी के सिद्धान्त पर निर्भर थे। उस समय के सरल तथा कृषिप्रधान समाज के लिए, यह पद्धति उपयुक्त थी । हिन्दू राजाओं ने सामूहिक संरक्षा के इस आदर्श को नहीं छेड़ा; प्रत्युत्, इस ज़रूरी सामाजिक कर्तव्य में, उन्होंने ग्राम-समाज के सहयोग को बढ़ावा दिया। उस समय क़ानून और अपराध की अधिकांश समस्यायें ग्राम की हदों तक सीमित थीं और समानता तथा न्याय के तब प्रचलित धारणाओं के आधार पर ही, उनको हल करना सम्भव था तथा उनको सस्ते तथा सत्वर पाकर, लोग सन्तुष्ट भी थे। वस्तुतः, मेरे मत में आज जिस समस्या से पुलिस जूझ रही है, उसको सुलझाने में सामाजिक सहयोग, नियंत्रण तथा आरक्षण की पुरानी प्रथा कहीं उत्तम थी।

आज जिस समाज की सेवा पुलिस करती है और जिससे निरन्तर संलग्न रहती है, उसकी सहकारिता, समर्थन तथा सद्भावना के बिना, पुलिस-विभाग कुशलतापूर्वक तथा कारग़र रूप से काम कर ही नहीं सकता। जिस पुलिस विभाग को जनता का मान, खुशी खुशी सहयोग तथा समर्थन नहीं प्राप्त है, वह महासंकट में पड़ जाता है।

**पुलिस का रवैया**–पुलिस समाज की सेवा में है, परन्तु सेवक नहीं है। पुलिस के सही रवैया का सार, सेवा करने की इच्छा में है; परन्तु साथ ही साथ, सेवा तथा दासता और विनम्रता तथा भोंदूपने में भेद रखना भी है। किसी भी अधिकारी को दृढ़ तो होना चाहिये, किन्तु क्रूर नहीं; उसे मित्रवत् तथा निष्पक्ष, अनिर्बन्ध स्थितियों में प्रसन्नचित्त तथा वैयक्तिक बनना चाहिये तथा नियंत्रणयोग्य स्थितियों में दृढ़ और अवैयक्तिक होना चाहिये ।

एक लोकतंत्रीय देश में, देश की आन्तरिक सुरक्षा तथा न्याय-व्यवस्था बनाये रखने के लिए, अपराध की छानबीन और रोकथाम तथा अपराधियों को काबू में रखने के वास्ते कार्यकारी शक्ति की शाख का, 'पुलिस' शब्द ही गुण-निर्देश करता है। अतएव पुलिस, अपनी सुपुर्दगी में सभी नर-नारी तथा बच्चे की सुरक्षा, अंगरक्षा, शान्ति तथा व्यवस्था के लिए जिम्मेदार है।

**महत्त्वपूर्ण तत्त्व**

**I. लोकमत**-समाज के जीवन में लोकमत एक बन्धनकारी तथा निदेशात्मक शक्ति होती है और व्यष्टि तथा समष्टि दोनों के लिये बड़ा महत्त्व का है। तब प्रश्न ये उठते हैं अपने समाज में, पुलिस के अधिकारियों के विषय में जनता, क्या सोचती या कहती है ? क्था इसका निर्णय अनुकूल या प्रतिकूल होता है ? क्या यह विश्वास करती है कि जिस पुलिसजन को उसकी सुरक्षा सौंपी गई है, वह परिश्रमी, ईमानदार, निष्पक्ष तथा पुण्यचित्त है ?

यदि लोकमत प्रतिकूल हो, तब पुलिस और जनता में सम्पर्क और सहयोग स्थापित करने के लिए लोकमत बदलने के वास्ते, यत्न तथा उपाय करने चाहिये।

**II. समाचारपत्र**-लोकमत को भलाई में ढालने के वास्ते, पत्रकारों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना और बनाये रखना ज़रूरी है। यथासम्भव, वरिष्ठ अधिकारियों को सम्वाददाताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करना चाहिए। सामान्य लोकहित के विषय से सम्बद्ध प्रेस रिपोर्टों को पुलिस द्वारा नियमित रूप से जारी करते रहना चाहिये।

**III. अन्य साधन**-रेडियो, टेलीविज़न, नाटकों तथा अन्य साधनों के जो भी आज-कल सूचना तथा प्रचार के महत्त्वपूर्ण साधन हैं, जनता और पुलिस में स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए, उनको प्रयोग में लाया जा सकता है।

**IV. व्यक्तिगत सम्पर्क**- समाज के सभी सदस्यों तथा पुलिस में व्यक्तिगत सम्पर्क से पुलिस के प्रति सद्भावना उत्पन्न की जा सकती है। चाहे वह सेवा-निरत हो या सेवामुक्त हो, पदीय हैसियत से यह बात लागू होती है। 24 घंटे, जनता की दृष्टि पुलिस अफसरों पर लगी रहती है और जब वह कोई दुर्व्यवहार करता है, उससे सारा बल

बदनाम होता है। समाज से पुलिस अधिकारियों को पूरी तरह घुलामेल जाना चाहिए।

**समाज और पुलिस**-जीवन के सभी वर्गों के लोगों के प्राचरण को नियमित करना तया उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही, पुलिस अधिकारी का मूल दायित्व है। क़ानून-प्रवर्तन एजेन्सियों की सेवाओं के ये लोग पूरे-पूरे हक़दार हैं। कुछ अन्य कर्तव्य भी हैं, जो कानून-प्रवर्तन के क्षेत्र में अब आ गये हैं; परन्तु मूलतः सभी, जनधन की सुरक्षा की तथा अपने समाज के सभी मनुष्यों के आचरण-नियमन की परिधि में आते हैं।

पुलिस के समाज-सेवा-कार्य पर, डॉ० माइकेल बंटन के विचार इस प्रकार हैं– 'एक पुलिस कर्मी....."अपने समाज से परिभाषित और स्वीकृत नैतिक स्तरों का प्रबन्ध करता हुआ, एक प्रकार का व्यावसायिक नागरिक है...."अपने सेवाभार उठाते समय जिस प्रकार से वह अपने उत्तम विवेक को काम में लाता है, उससे वह जनता का सहयोग तथा सम्मान पाता है और जनता के दृष्टिकोणों के प्रति जागरूकता ही उसके उत्तम विवेक का आधार होता है ..... अधिकार तथा शक्ति रखते हुये भी, वह कानून पालन कराने के स्थान पर शान्ति रक्षक कहीं अधिक है-एक नैतिक तत्त्व के सहित, जो ऐसी आज्ञाकारिता को बाध्य करता है, जो आवश्यकरूप से न्याय सम्मत नहीं है, उसका अधिकार जनता से खुशी खुशी आज्ञाकारिता दिला देता है-कानूनी शक्तियों की अपेक्षा उसके नैतिक अधिकार पर, मुख्यकर जातीय तथा सांस्कृतिक भेदों वाले जिलों में, उसकी भूमिका, निर्भर करती है।

आजकल विश्वभर में, पुलिस अफसर अभूतपूर्व चुनौतियों से जूझ रहे हैं। मनुष्य ने चन्द्र पर विजय पा ली है; किन्तु सम्पर्क की खाई बढ़ गई है। इतिहास में कभी भी पहले पुलिसकर्मी का कार्य इतना कठिन नहीं रहा है । आज पुलिसजन को सुशिक्षित तथा सुप्रशिक्षित होना चाहिये। उसमें एक सिपाही, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा जन सम्पर्क विशेषज्ञ के सभी गुण होने चाहिए।

**दृष्टिकोण में परिवर्तन**-विवेकपूर्ण जन सम्पर्क ही से, पुलिस को अपने काम में समाज के सहयोग की चाहना करनी चाहिये, जिसे पाने के लिये, क्या समाज और क्या पुलिस-दोनों के दृष्टिकोणों में परिवर्तन तथा पारस्परिक सद्भावना की कोष निधि होना बहुत जरूरी है। इसके दो पहलू हैं—प्रथम तो, अराजक तत्व पुलिस से डरेंगे; द्वितीय, ईमानदार नागरिक, पुलिस को अपना मित्र मानेंगे । जो भी व्यक्ति थाने आवें, उनकी बात सहनुभूति तया सहनशीलता के साथ सुननी चाहिये । पुलिस आचरण में इन तीन 'स' का पालन ज़रूरी है -सभ्यव्यवहर, सत्वरता तथा समुचित कार्रवाई।

पुलिस जनों को इस प्रकार से सेवा करनी चाहिये कि वे जनता का विश्वास प्राप्त करें। मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने के लिए, दैवी प्रकोपों के समय, ऐसे पुलिस जनों की सेवा जनता को उपलब्ध करानी चाहिये, जिन्हें सर्प पकड़ने, तैराकी, अग्निशमन जैसे विशेष कार्यों की जानकारी हो । उनका व्यवहार उत्तम होना चाहिये और न्यायालयों में अभियोगों का अधिक प्रतिशत दाखिल करना चाहिये तथा चाहिये जल्दी से जल्दी छानबीन पूरी करने की उनमें क्षमता ।

ग्रामीण क्षेत्रों में, क्षेत्रीय समितियाँ होनी चाहिये, जिनमें थानाध्यक्षों तथा मण्डल निरीक्षकों (सर्किल इंस्पेक्टरों) को पुलिस का प्रतिनिधित्व करना होगा। इन समितियों में क्षेत्र के जन प्रतिनिधि, लोक सेवक, कृषक तथा व्यापारी होने चाहिये । विभिन्न मामलों में पुलिस द्वारा की हुयी कार्रवाई का व्योरा इन समितियों में पुलिस अधिकारियों को देना चाहिये।

**समाज सम्पर्क परिषद्**-सम्पर्क से समाज विकास को मदद करने के लिए, पुलिस को हर जिले में पुलिस-समाज-सम्पर्क समिति/परिषद् गंठित करनी होगी। इसके सदस्यों को कानून के अन्तर्गत कोई विशेषाधिकार नहीं होंगे। समाज सम्पर्कों को सुलझाने के लिए नियुक्त विशेष अधिकारी और कर्मचारी के नेतृत्व तथा निदेशन में, इस समिति या परिषद् को काम करना होगा।

जिले परिषद या समिति के सामान्य उद्देश्य ये हो सकते हैं–

(i) क़ानून-व्यवस्था सुरक्षित बनाये रखने के उत्तरदायित्वों से हरेक नागरिक को अवगत कराने के लिए कार्यक्रमों की योजना तथा कार्यान्वयन; (ii) सामान्य जनता को पुलिस कार्रवाइयों से अवगत कराना; (iii) अपराधों की रोकथाम में सहायता; (iv) अपराध की दर कम करने में मदद; (v) पुलिस प्रतिनिधि और पड़ोस से सम्पर्क के रूप में सेवा; तथा (vi) अन्तः वर्ग तनाव, समस्यायें तथा संघर्षों को कम, समाप्त तथा रोकने में सहायता ।

प्रत्येक सरकारी सेवक में नैतिकता का स्तर उच्च होना चाहिये । आचरण संबंधी नैतिकता, वित्तीय नैतिकता के समान ही महत्वपूर्ण है। जिन भावावेशों, मनोवेगों संकीर्ण विचारों तथा साम्प्रदायिक जोशों से, जनता किसी समय प्रभावित हो सकती है, हमें नसे उपर उठना होगा। स्थितियों से सुलझने के समय, डॉक्टरों और वकीलों के समान, पुलिस को एक व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाना होगा तथा अपने व्यक्तिगत या क्षेत्रीय विचारों से अलग, व्यवसाय की मांगों को देखना होगा। साम्प्रदायिक दंगों से निबटते समय, सभी अल्पसंख्यक वर्गों के लिए, हमें केवल नैतिक पद्धतियों का प्रतिपादन ही नहीं करना है; प्रत्युत् इससे दंगों के होने से पूर्व उन्हें टालने की प्रक्रियाओं के उपाय भी सोचना है।

श्री बी० एन० मलिक के शब्दों में– 'पुलिसजन, समाज के सेवक हैं। यदि उनके कार्य जनता की स्पष्ट इच्छाओं के विरुद्ध होंगे, तब उनका सरकारी पद पर रहना असम्भव हो जायेगा। लोक-स्वीकृति पर अपनी कुशलता के लिये निर्भर रहना पड़ता है। लोक-विश्वास पर आधारित लोक-समर्थन और लोक स्वीकृति के बिना, कोई भी पुलिस कार्य सम्भव नहीं है। किसी भी कार्रवाई पर निर्णय लेते समय, यह हरेक पुलिसजन को ध्यान में रखना चाहिये कि वह समाज का सेवक है और इससे उसको अपने समक्ष मुख फाड़े सघंर्षों का समाधान खोजने में मदद मिलेगी।'

## ॥ पहेली ॥

(र० सिपाही सुरेन्द्र नाथ मिश्र, 62 बटा०)

कैसी सुन्दर चोंच हमारी,
सब का मन हर्षाये ।
जभी पेट में भोजन पहुँचे,
आग उगलती जाये।
मेरे ऊपर सींग अनोखा,
कितनी कला दिखाये ।
स्वामी मेरा उसे पकड़ कर,
दूर बहुत ले जाये।
यक झटके से पीछे आऊँ,
जीभ जभी दब जाये।
बारिश हो या धूप झुलसती,
दुश्मन भाग न पाये।
तीन पैर पर जभी चढ़ूँ मैं,
हर कोई डर जाये।
बता कौन मैं, साये में, जन
जिसके प्राण गँवाये ?

**उत्तर**— एल० एम० जी० ( हल्की मशीगन)

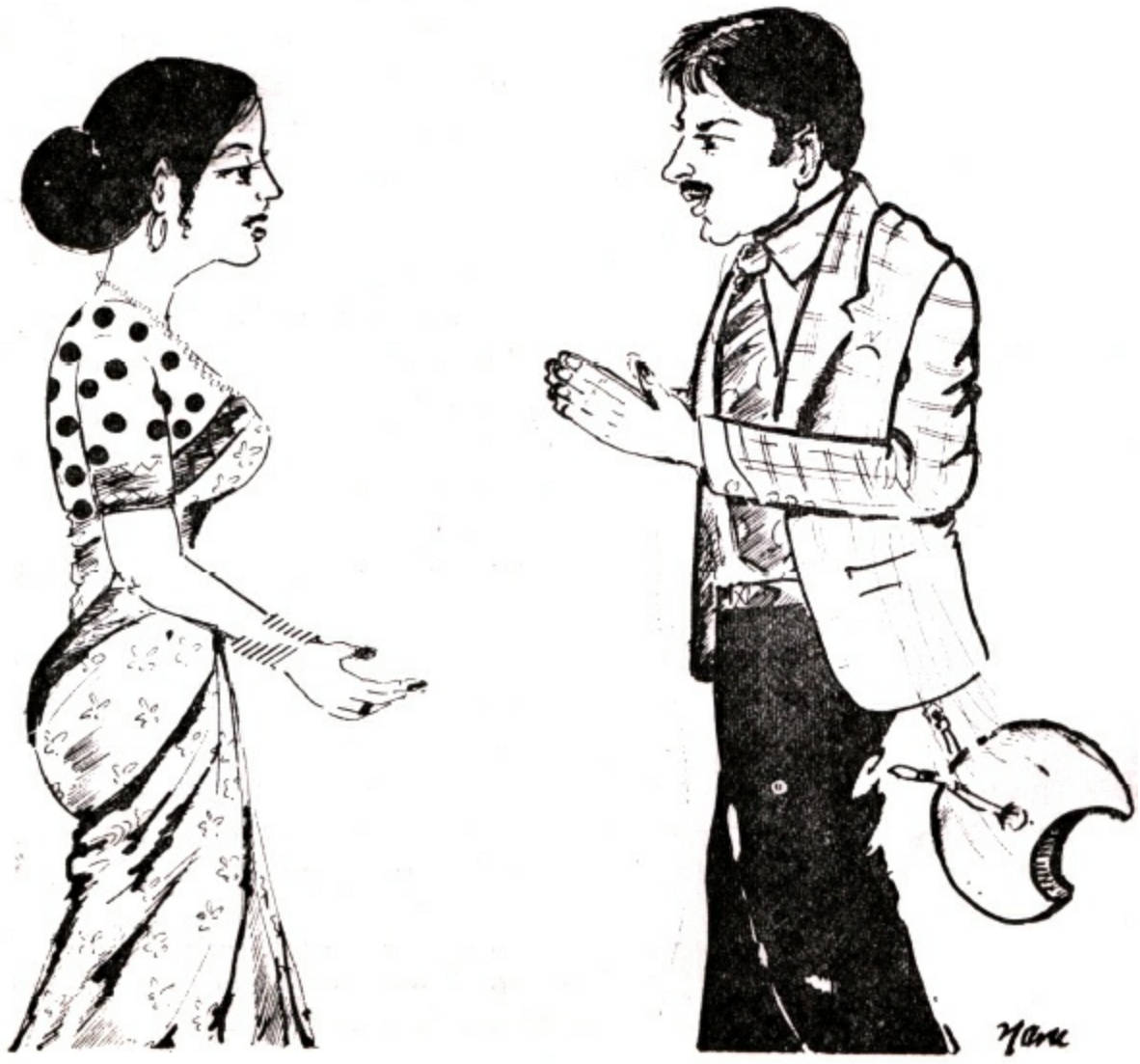
# अभागा हेलमेट

**ले०-श्री एम० पी० नैथैनियल**

**मे**री मोटर साइकल की पिछली सीट पर मेरी प्रेयसी बैठी थी; तब मेरी उमंगें पर लगा कर उड़ रही थीं। सहसा, एक पुलिस गाड़ी पीछे से आगे बढ़ कर आयी और रुक गई। टक्कर से बचने के लिये ब्रेक मैंने लगाये । पुलिस गाड़ी से एक सब-इन्स्पेक्टर उतरा और लगा पूछने हेलमेट नहीं पहनने के कारण । मेरे द्वारा सफाई देने के पूर्व ही, उस पुलिसकर्मी ने जेब से चालान-पुस्तिका निकाली। उसे मैंने बताया कि हेलमेट मरम्मत कराने को दिया हया है। किन्तु इस स्पष्टी करण का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और सो ही मेरी प्रेयसी का विनम्र अनुरोध भी विफल मनोरथ रहा। पुलिस कर्मी ने मेरा नाम पुकारा, चालान-पुस्तिका पर मुझ से हस्ताक्षर कराये और चालान की एक प्रति लिपि मेरे हाथ में पकड़ा दी।

जिस जीवन सांगेनी को मैं एक आवश्यक बुराई समझता हूँ, उसकी खोज में एक बड़ी दूर के सम्बन्धी का (जिससे मैं प्रथम बार मिलने जा रहा था) निमंत्रण उसी हेलमेट के कारण अकारथ हो गया। अवसर के अनुसार चुस्त कपड़े पहन कर, मैं अपनी मंजिल को चला। उधार लिये एक स्कूटर को खड़ा करके जैसे ही मैं घर में घुसा, मेरा आमना-सामना अपनी भावी पत्नी से हो गया। भारतीय सभ्यता का रोव गाँठने की नीयत से, ठेठ भारतीय ढंग से, अभिवादन के लिये, मैंने दोनों हाथ ऊपर उठाये । तभी मेरा हेलमेट धड़ाम से गिर पड़ा और लुढ़कता पुढ़कता हुआ दीवार के सहारे जा रुका। इधर मेरी भावी पत्नी और उधर घबड़ाया हुआ बेचारा मैं, कभी एक दूसरे को और कभी हेलमेट को देखते थे। मुझे अशिष्ट व्यवहार वाला भुतना समझ कर, अस्वीकार कर दिया गया और सारा गुड़ गोबर हो गया।

मेरे मित्र इकराम-उल-हक़ को अपनी सगाई के लिये दिल्ली से मेरठ जाना था, और उन्हें बड़ी देर हो गई थी। मरम्मत किया हुआ मेरा हेलमेट उन्होंने मांगा और अपनी सगाई के लिए चल दिए। मेरठ के निकट पहुंचते ही, उन्हें ध्यान आया कि वह खगोलयात्री नहीं लग रहे हैं। अपने हेलमेट की खोज में, उन्होंने पहिये पीछे को चलाये; कई किलोमीटर पीछे जाकर, उनकी खोजती आँखों ने सड़क के किनारे लहलहाते हरे खेतों में, छद्मावरण रूप से छिपे हरे हेलमेट को पड़ा पाया। अपनी मंजिल पर जब वह पहुँचे, तब उनका स्वागत कुछ उतरे-उदास चेहरों ने किया, जो यह सूचना दे रहे थे कि देरी से उनके पहुँचने के कारण, वह मंगल संस्कार स्थगित करना पड़ा है। कारण :–शुभ समय बीत चुका था।



## विज्ञान के चढ़ते चरण

•टोकियो विश्व विद्यालय में, शरीर में प्राकृतिक गुर्दो का स्थान ले सकने वाले **कृत्रिम गुर्दों** का विकास किया है; यह गुर्दा एक कुत्ते के शरीर में सन्तोषजनक ढंग से काम कर रहा है।

•ब्रिटेन में **सागर की लहरों से बिजली** तैयार करने में सफलता मिली है। इसमें तीन प्रक्रियाओं द्वारा कभी भी समाप्त न होने वाला उर्जास्रोत उपलब्ध हो रहा है; जो वर्तमान ऊर्जा संकट में बड़ा सहायक सिद्ध होगा।

•केन्द्रीय औषध अनुसंधान संस्थान के अनुसार, जो **गुग्गल** बात रोगों में लाभ कारी पाई गई है, वह कोलेस्ट्रोल को भी कम करने में सफल सिद्ध हुई है, जिससे दिल के दौरे रुकेंगे।

•ाफेनलैंड में एक ऐसा इलेक्ट्रॉनेक यंत्र बनाया है, ाजिससे गंगा मनुष्य अपना सन्देश दुनिया को बता सकेगा। गूंगा अक्षर कुंजी पर छपे सम्बोधित अक्षर वाले बटन दबाता चला जायेगा और सन्देश खत्म होने पर, जैसे ही वह अन्तिम बटन दबायेगा, वैसे ही मशीन सन्देश बोलना शुरू कर देगी।

**स्वास्थ्य-संदेश**

# गर्मी के फल और स्वास्थ्य

### ले०-श्री जे० एस० शर्मा

**ज**हाँ प्रकृति ने विविध ऋतुयें बनायी हैं, वहां हर ऋतु के स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्य प्रद फल भी उसने पैदा किये हैं। वैसे भारत गर्म देश है; किन्तु असली गर्मी की ऋतु तो तब होती है, जब 'सन सन लुये हैं चल रही,भूतल तवा सा जल रहा होता है । प्यास के कारण, कंठ-सूख रहा होता है और बेचैनी महसूस हो रही होती है। ऐसे समय में, गर्मी में उत्पन्न कुछ फल, प्यास बुझाते हैं; बेचैनी दूर करते हैं और चित्त को शान्ति तथा आनन्द देते हैं। वे हमारे लिये, सचमुच, वरदान सिद्ध होते हैं। इनमें हैं मख्य—(I) ककड़ी (II) खीरा (III) लुकाट (IV) लीची (v) शहतूत (VI) आलूबुखारा (VII) फालसा (VII) तरबूज (IX) खरबूजा (X) नीबू और (XI) आम।

**(I) ककड़ी**-कभी समय था, जब ककड़ी बेचने वाले गा गा कर बेचते थे– "लैला को उंगुलियां, मजनू की पसलियां, रेशमी मुलायम हैं ककड़ियाँ ।" गर्मी शुरु होते ही, हरी हरी ककड़ियां सब का ध्यान आकर्षित करती हैं। बसस्टापों और रेल स्टेशनों पर वे दनादन बिकती हैं।

इसे फल, सब्ज़ी और रायता बना कर खाते हैं। सस्ती होने के कारण, भारत की गरीब जनता में यह बड़ी लोकप्रिय है। इस में चूना, फासफोरस, लोहा, प्रोटीन, खनिज लवण, और शर्करा काफ़ी होती है। कच्ची ककड़ी खाने में स्वादिष्ट, मलरोधक और पित्तनाशक होती है। काले नमक और मसाले साथ खाने में यह बड़ी ज़ायकेदार लगती है। यह प्यास बुझाती और सोजिश मिटाती है। ज़िग़र को शान्ति देती है। पक्की ककड़ी अग्निवर्द्धक मानी जाती है तथा मूत्र लाने वाली होती है।

**(II) खीरा**-'सुबह को हीरा; दोपहर को खीरा तथा रात की जहरीला' माने जाना वाला फल खीरा है। रात को इसे खाना वर्जित था। इसको भी फल, सब्जी और रायते के रूप में खाया जाता है। नीबू, नमक, गर्म मसाला डालकर इसे खाने में बड़ा स्वाद आता है। इसमें विटामिन बी, कार्वोज और प्रोटीन काफ़ी मात्रा में होता है यह शरीर को शीतलता प्रदान करता है। इसीलिये, इसका एक नाम 'सुशीतल' है । पेट के रोगों को यह फायदेमन्द है। मधुमेह (डायवटीज़) में, इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है।

**चेतावनी**-खीरे खाने के तुरन्त बाद ही पानी पीने से हैज़ा तक हो सकता है।

**(III) लुकाट**-के आते ही, गर्मी का श्रीगणेश मान लिया जाता है। यह पित्त नाशक स्वादिष्ट फल है और उल्टियां रोकता है। कुछ लोग इसकी चटनी बना कर खाते हैं। इसमें विटामिन, खनिज और लवरण हैं तथा चित्त को प्रसन्न करता है।

**(IV) लोची**-लुकाट खत्म होते हुये, अपना काम लीची को सौंप जाता है। सब से प्रसिद्ध लीची देहरादून की होती है, जिसमें भीनी-भीनी सुगन्ध भी होती हैं। इसमें पौष्टिक तत्व होते हैं और यह चित्त को शान्ति देती है।

**(v) शहतूत**-शहतूत भी गर्मी के प्रारंभ में आते हैं। ये कई रंग और स्वाद के होते हैं। काले-पीले, मोटे-लम्बे, तथा खट्टे-मीठे होते हैं। ये मृदुसार कहलाते हैं तथा जिग़र को शान्त करते हैं। शर्बत-शहतूत खाँसी में दिया जाता है और गला साफ़ करता है। गले बैठने पर, इसके पत्ते बेर और अमरूद के पत्तों साथ उवालकर पीने से लाभ होता है।

**(VI) आलूबुखारा**-शहतूतखत्म होने पर, आलूबुखारा चल पड़ता है। यह 'दिल और दिमाग़ को बड़ी तरावट और - चैन देता है। इसको पीस कर तथा शर्बत बना कर नमक काली मिर्च आदि डाल कर पीने से बेचैनी दूर होती है।

**(VII) फालसा**-जब तपती गर्मी पड़ती है, तब गली-गली में ये आवाज दोपहरों की शून्यता में गूंजती रहती हैं—काले, काले खाओ फालसे, काले काले। नमक लगे इनको बच्चे-बूढ़े बड़े चाव से खाते हैं। इन्हें मृदुफल भी कहते हैं। खट्टे मीठे, शीतल, पाचक और शान्ति दायक लेते है। इनका शर्बत भी बड़ा स्वादिष्ट और गुण कारी होता है। इससे पित्तविकार, हृदयरोग, रक्त दोष तथा उदर कृमि का नाश होता है। इसकी पत्तियाँ घिस कर फोड़े फुंसियों पर लगाई जाती हैं तथा इसकी जड़की छाल गठियों में फायदेमंद है। हिचकियाँ बन्द करने तथा पेचिश में फालसा काम आता है।

**नोट**—यदि फालसे खाने से रोग उत्पन्न हो, तब नीम की निमोलियाँ खाना लाभप्रद होता है।

(VIII) **तरबूज** को कालिन्द भी कहते हैं। कदाचित् कालिन्दी **(यमुना) के तट पर** अधिक होने से यह नाम पड़ा है। इसका गूदा लाल होने के कारण, लोग मांसफल और रक्त बीज भी पुकारते हैं। यह बहुत ही मधुर, विटामिनों लवण आदि पोष्टिक तत्वों से भरपूर और शान्तिप्रद होता है। जलीय अंश बहुत होने के कारण इससे प्यास शीघ्र बुझती है। इसका पक्का गूदा खाने में, और कच्चा गूदा तथा छिलका सब्ज़ी बनाने में, काम आता है। इसका अचार और सब्ज़ी क्षुधावर्द्धक और सुपाच्य होती है । इसके बीज बलवर्द्धक तथा धातु षोषक होते हैं और कई प्रकार की औषधों में काम आते हैं। ठंडाई में भी ये पड़ते हैं। भून कर खाने और मिठाइयों में प्रयुक्त होते हैं। इनको पीस कर लेप करने से, मुँहासों को आराम मिलता हैं। मूत्र ज्यादा लाने से, इसे मूत्रल भी कहते हैं ।

**सावधानी :** कच्चा तरबूज नहीं खाना चाहिए और ना ही खाली पेट इसे खाना

चाहिए। इसके साथ पुदीना भी नहीं खाना चाहिए।

(VI) **खरबूजा :** ग्रीष्म ऋतु का बड़ा लोकप्रिय फल खरबूजा है। इसकी मीठी-मीठी सुगन्ध मुँह में पानी भर लाती हैं। सचमुच में, गर्मी का यह फलराज है। लखनऊ के खरबूजे मिठास और लज्ज़त के लिए प्रसिद्ध हैं; जौनपुरी की अपनी शान है। इसमें भी जलीय अंश अधिक होता है। विटामिन, ग्लूकोज, लवण, प्रोटीन, कार्बोज आदि भी काफ़ी होते हैं । यह शीतल, पाचक, वीर्य प्रद, रक्तशोधक और मूत्रवर्द्धक होता है। यह दिल-दिमाग़ को ठंडक पहुँचाता है और उन्माद तथा संग्रहणी में गुणकारी है। इसकी खट्टी-मीठी रसीली सब्जी, छिलकों की सूखी तरकारी, इसका पना, शर्बत, खीर, आइस क्रीम तथा चीनी और गुलाब जल में भिगोकर रसीला व्यंजन बनाया जा सकता है। इसके बीज ठंडाई बनाने, भूनकर खाने और मिठाइयाँ बनाने में प्रयुक्त होते हैं। बीजों का तेल शरीर पर मलने से लू लगने का भय नहीं रहता है और उससे उत्तम साबुन भी बनता है।

**चेतावनी**—खरबूजे के साथ, दही का सेवन मना है, जबकि चीनी का शर्बत फायदेमन्द है।

(x) **नीबू**—वैसे नीबू अन्य ऋतुओं में भी होता है, किन्तु ग्रीष्म ऋतु में उसका अपना महत्व है। इसी ऋतु में, नीबू की शिकंजी पी जाती है, लेमन (नीबू) सेट इन्हीं दिनों काम में आते हैं और शीतल पेयों में नीबू के लेमोनेड, लिमका आदि का बाज़ार गर्म रहता है। अन्य पौष्टिक तत्वों के साथ इसमें विटामिन 'सी' अधिक होता है। नीबू का रस—पेट दर्द, जलन उल्टी और हैज़े तक में गुणकारी है । सिर चकराने में, एक प्याली गर्मपानी में नीबू निचोड़ कर पीने से लाभ होता है; गर्मियों में तो निहार मुँह एक नीबू को एक पाव पानी से अवश्य पीना चाहिये। इससे शरीर हल्का—और मोटापा दूर होता है। नीबू सेंधा नमक के साथ खाने से तिल्ली को लाभ होता है। ख़ूनी बवासीर में, एक नींबू के दो टूक कर छह माशा कत्था पीस कर उन टुकड़ों में लगा कर रात भर रखे रहने पर सुबह को चूसने से लाभ होता है। गुलाब जल में नीबू निचोड़ कर कुल्ला करने से मुँह की बदबू चली जाती है । नीबू के रस को मलाई में मिला कर मुँह पर मलने से रंग साफ़ होता है और कील-मुँहासे दूर होते हैं । इसके रस में नौसादर पीस कर लगाने से दाद ठीक होता है। बालों में सिकरी होने पर, नींबू का रस लगाना गुणकारी है; इससे बाल रेशम से मुलायम हो जाते हैं। दालों, सब्जियों, सलाद आदि में नीबू का रस डालने से वे ज़ायकेदार हो जाते हैं। इसका अचार बहुत ही स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्य वर्द्धक होता है।

**नोट**—इसके साथ, दूध नहीं पीना चाहिए। नीबू से उत्पन्न विकार में, नमक लाभदायक होता है।

(xi) **आम**—यद्यपि आम दरअसल वर्षा का फल है, किन्तु यह गर्मी में ही आना शुरू हो जाता है। आँधी कच्चे आम गिराती है। कच्चे आम गर्म राख में भून कर उसके गूदे को चीनी और पानी में डालकर 'पना' पीने से लू का बचाव होता है । इसकी कैरी, मीठा अचार और तेल का अचार बड़ा ही ज़ायकेदार होता हैं । कच्चे और पक्के आमों

की चटनी भी स्वादिष्ट होती है। इनकी सब्ज़ी भी बहुत अच्छी बनती है । आमों की जेली और जाम भी बनते हैं तथा आइस क्रीम भी तैयार की जाती है। आम के पापड़ भी ज़ायकेदार होते हैं और इसका अमचूर तो साल भर सभी खानों में पड़ता रहता है। आम का रस, गुलाबजल, ग्लूकोज़ तथा कैल्शियम वाटर में लेने से गर्भिणी की उल्टी रुकती हैं तथा इसे सोंठ के साथ लेने से हाज़मा ठीक होता है, जबकि मीठे दूध के साथ पीने से, शारीरिक कमज़ोरी दूर होती है। इसके पत्तें तक गुणकारी हैं, उन्हें छाया में सुखा कर बारीक कपड़े में छान कर गर्म पानी के साथ पीने से, पेचिश ठीक होती है और ताजे पानी के संग पीने से मधुमेह को लाभ होता है। इन सूखे पत्तों को जलाकर दाँतों में मलने से, दाँतों का खून बहना रुकता है तथा नर्म पत्तों को उबाल कर पीने से हैज़े में लाभ होता है। इन्हीं कारणों से, आम अमृतफल कहलाता है।

**चेतावनी**—खट्टे आम के साथ, दूध नहीं पीना चाहिये, पर आम खाने से उत्पन्न विकार में दूध की छाछ लाभप्रद है।

फलों की उपयोगिता इस बात से भी सिद्ध होती है कि व्रतों में फलाहार (फलों का आहार) ही विहित है। सन्यास तक में, ऋषिमुनि कन्दमूलफल सेवन करके ही सौ-सौ वर्ष तक जीवित रहते थे।

**कविता**

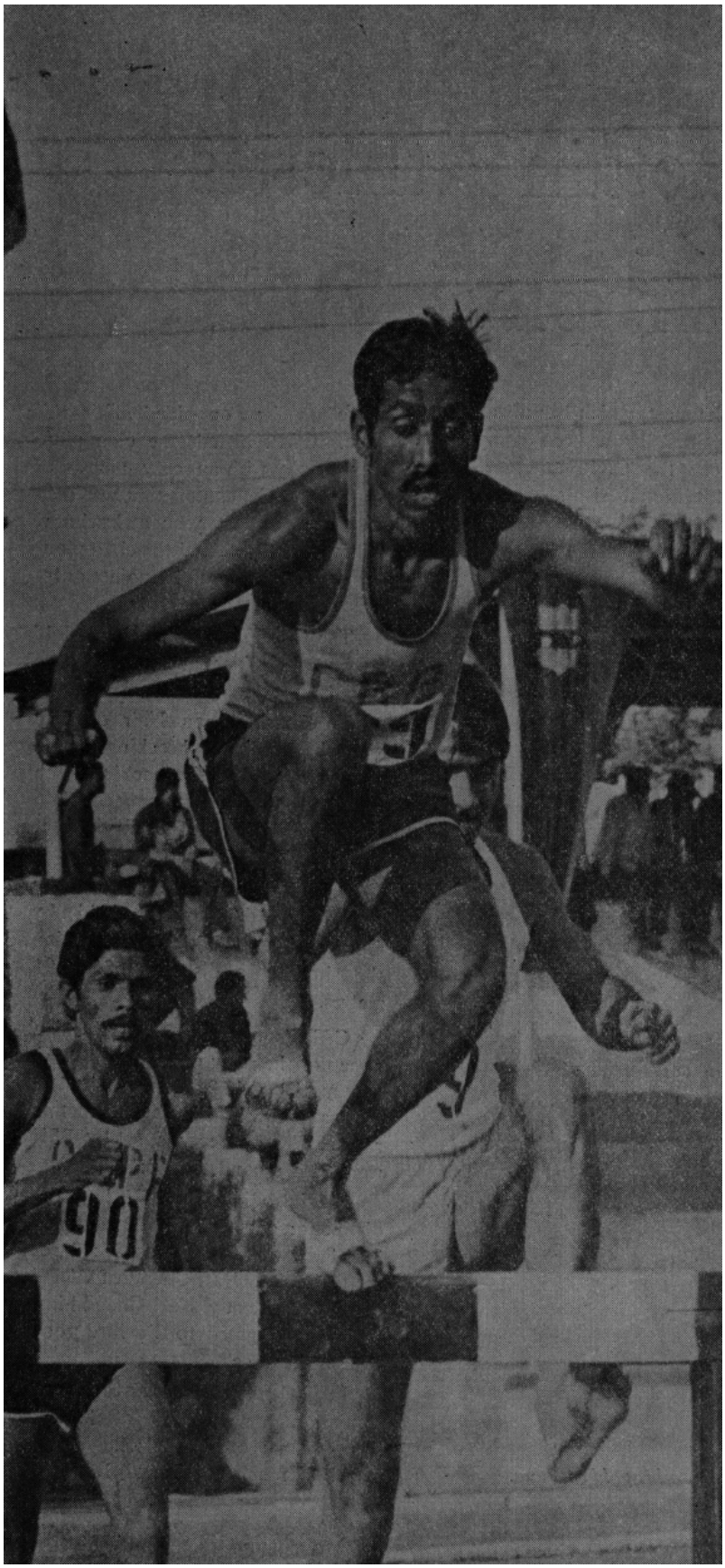
## • लम्बी छुट्टी •

**[ रचयिता—रे० आ० पारथसिंह**

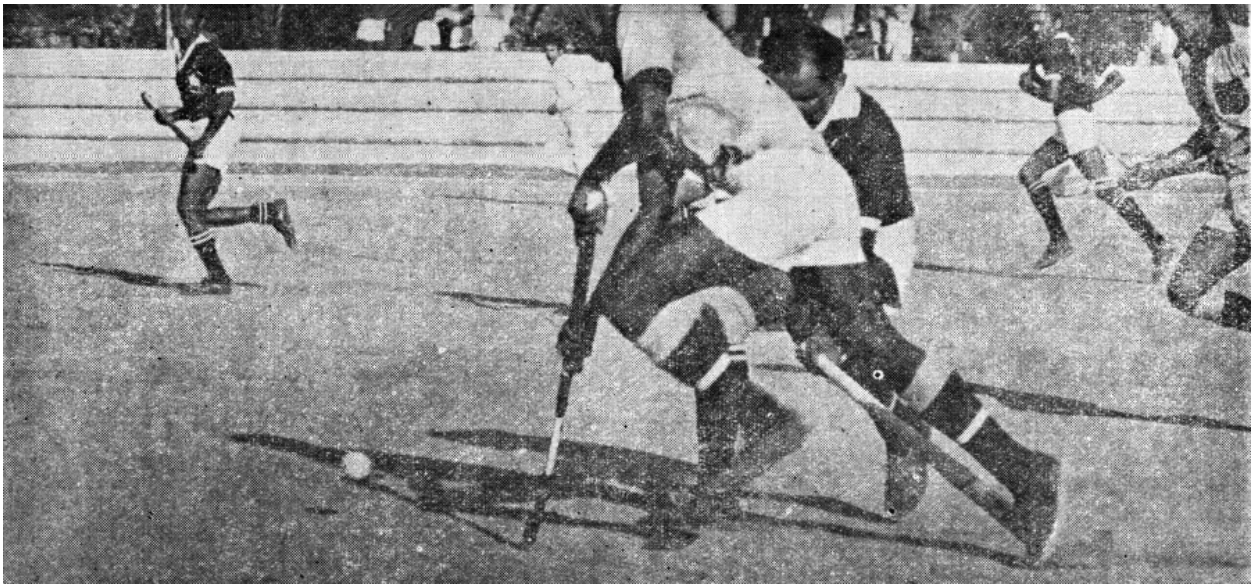
आया है दिन दीर्घ प्रतीक्षित, लम्बी छुट्टी मिल जाने का ।
घर ही घर के सपने आते, नहीं होश वापस आने का ॥
पाँव नहीं पड़ते धरती पर, दौड़-दौड़ कर काम किये सब ।
किये अथॉर्टी पर हस्ताक्षर, पैसे-टके उधार लिए तब ॥
हुई सुबह कब, शाम हुई कब, दिन बदला-बदला है लगता ।
होश नहीं खाने पीने का, मन में चाव बड़ा हैं जगता ॥
सारी जब तयारी कर ली, तब सोने की आई बारी ।
नींद नहीं पलकों में आती, बेचैनी करती सिर भारी ॥
कभी दीखते 'डब्लू बब्लू', कभी दीखती वह बेचारी ।
रखवाली जो सास ससुर की, रही विरह की जो है मारी ॥
कभी दीखती मोटर गाड़ी, रेल कभी दीखे द्रुत दौड़ी ।
घर आने का नाम न लेता, लगती यात्रा लम्बी-चौड़ी ॥

कभी ऑकड़े आते मन में, क्या-क्या चीजें मुझको लेना।
कभी मारता हाथ जेब पर, कितना जाकर घर में देना॥
आज सफ़र का हर संकट भी, नहीं अखरता, बहुत सुहाता।
खीझ कभी होती तो यह ही, घर क्यों है नहिं जल्दी आता॥
आखिर पहुँच गए घर ही जब, पैर छुये बूढ़ों के जाकर।
आँख खोजती पत्नी को अब, चूम रहा बच्चों को जीभर॥
मिले अन्त में जाकर उससे, कहना क्या, कुछ समझ न आता।
होंठ कभी काँपे कहने को, वाक्य गले में उलझा जाता॥
शुरू हुए छुट्टी के दिन अब, हर पल जीवन रसमय सारा।
पलक मारते छुट्टी बीती, नहीं विदित कब समय सिधारा॥
कदम लौटने को नहीं उठते, माया ने भ्रम जाल बिछाया।
सेवा-निष्ठा-भक्ति सभी कुछ, घर की ममता ने बिसराया॥
तभी चन्द्रशेखर, सुभाष के (लगा) चित्र कर रहे इशारे।
स्वर्ग सदृश निज जन्मभूमि है, जिस पर हमने जीवन वारे॥
याद तभी आया निज यह 'बल', चमके दृग मन-सुमन गया खिल।
वीर सिपाही शीघ्र पहुंचने, लौट पड़ा तब अपनी मंजिल॥

# 29वीं अखिल भारतीय पुलिस खेल प्रतियोगिता
## की
# झलकियाँ


90

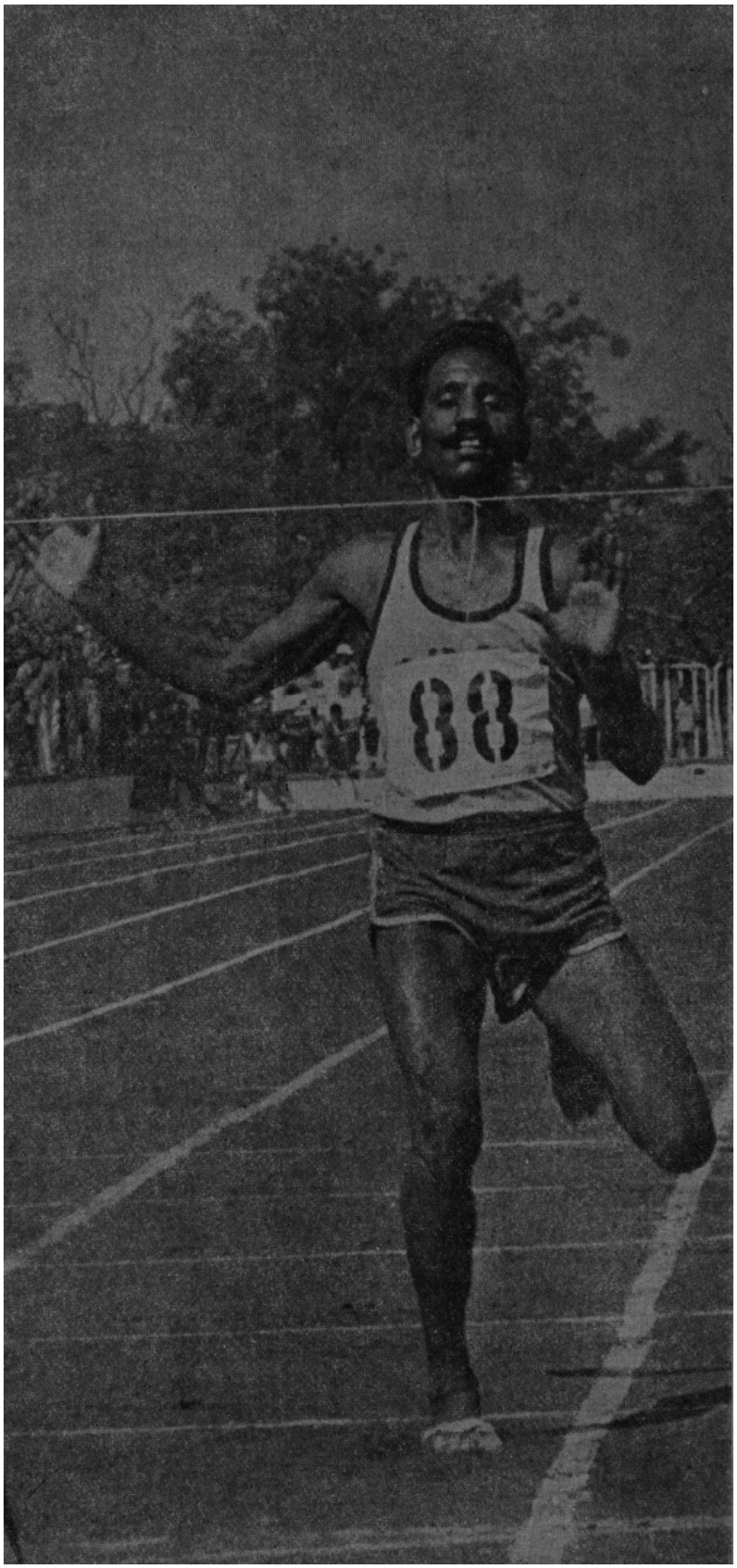
स्टीपल चेज़ में दौड़ता हुआ अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी प्रदीप कुमार।



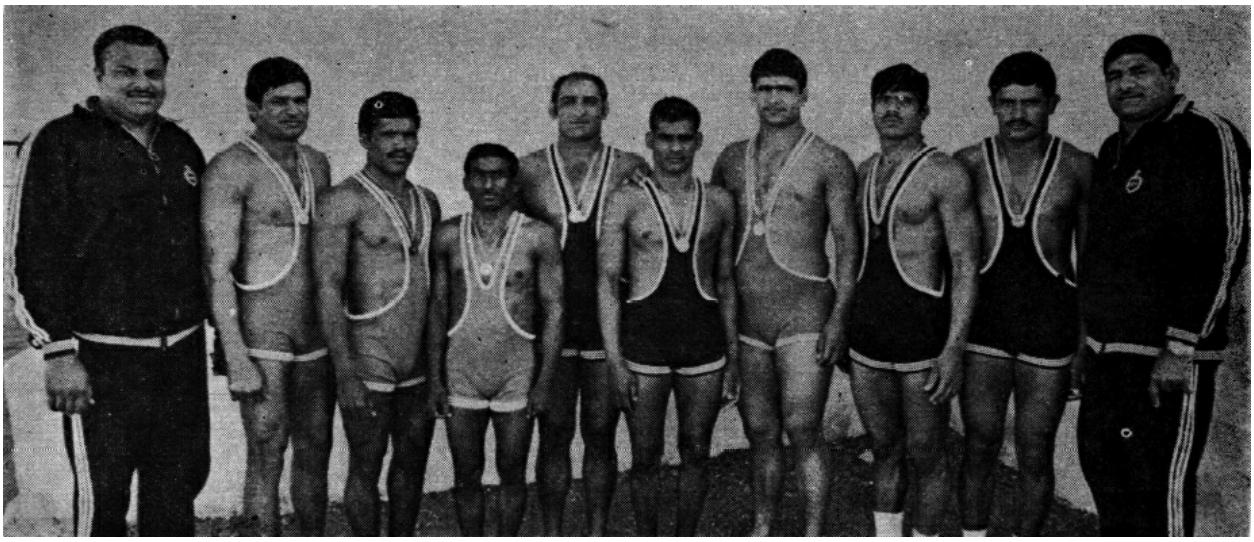
महाराष्ट्र से हॉकी खेलता हुआ के०रि०पु० बल



राजस्थान से फुटबॉल खेलता हुआ के०रि०पु० बल


88

**प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट हरीचन्द**



**29वीं अ० भा० पु० पुलिस खेलो में आठ पदक विजेता के० रि० पु० बल की दंगली टुकड़ी**

क्रीड़ा क्षेत्रे :

## 29वें अखिल भारतीय पुलिस खेल

# के० रि० पु० बल ने फिर सिरमौर जीता

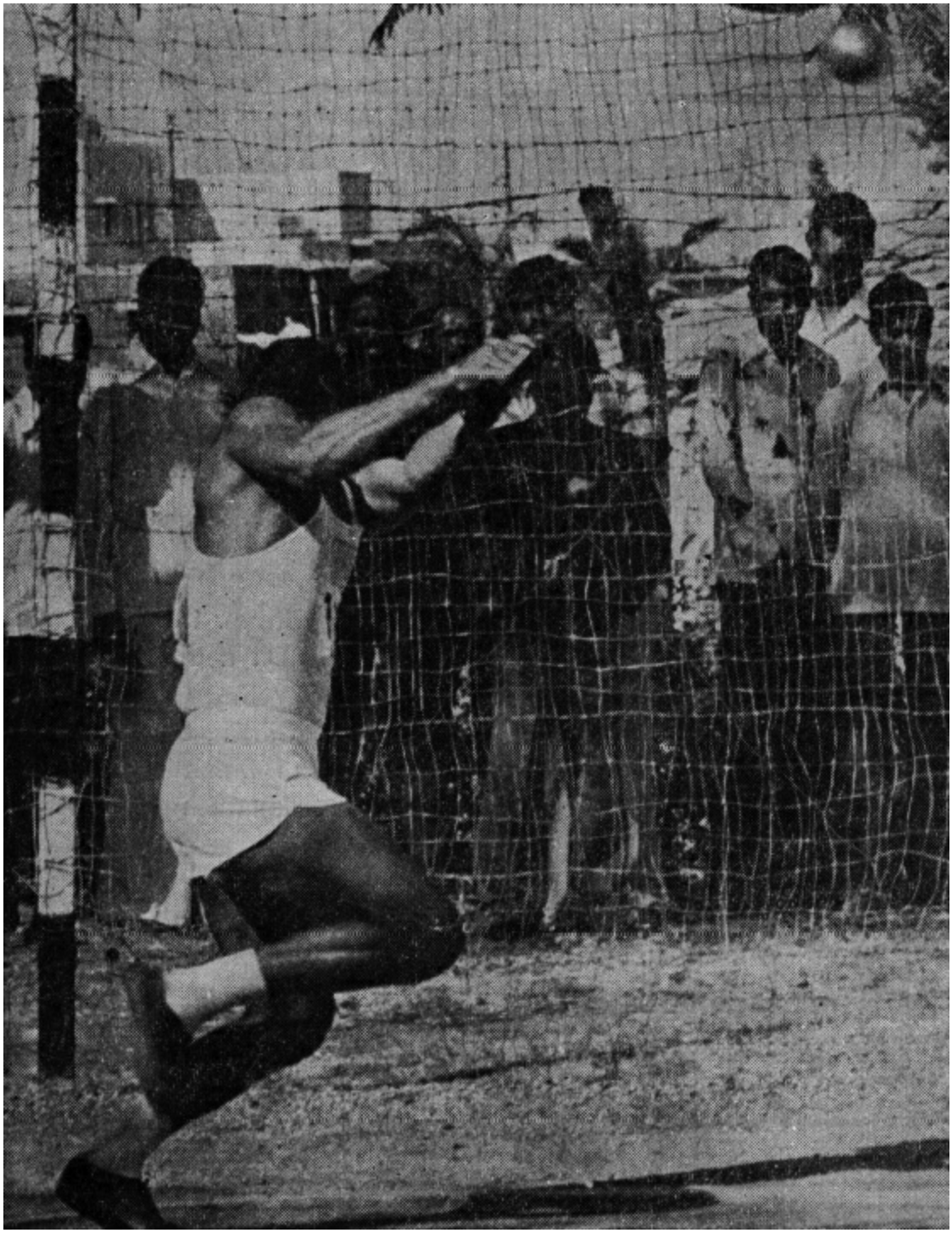
ले०—श्री एच० एस० सेठी

दिनांक 28 फरवरी 1980 को समाप्त हुये 29वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में छै कीर्तिमान स्थापित हुये। दो परम्परागत प्रतिद्वन्द्वी—के० रि०पु० बल तथा सी० सु० दल की जिस ज़बरदस्त प्रतिस्पर्धा से जो ये खेल गुदगुदी पैदा करते थे, इस वर्ष वह नहीं पाई गई; उनमें एक का ही पलड़ा भारी रहा। के० रि० पु० बल ने 71 अंकों के भारी अन्तर से सिरमौर जीता। पिछले वर्ष लखनऊ में हुए इन खेलों में जो प्रबल प्रतिद्वन्द्विता दिखायी पड़ती थी, जब बड़े लड़झगड़ कर के०रि०पु० बल ने केवल 17 अंकों से चैम्पियनशिप जीती थी, इस वर्ष उसके दर्शन नहीं हुये। के०रि०पु० बल ने 18 स्वर्ण, 8 रजत और 9 कांस्य पदकों की भारी संख्या अर्जित की।

**चौड़ी कद में :** ओलम्पिक खिलाड़ी गुरचरणसिंह रणधावा द्वारा 1966 में स्थापित 7.26 मी० वाले रिकार्ड को भंग करने का श्रेय, सी० सु० दल के शशिधरन नायर को मिला, जिसने 7.46 मी० की छलांग लगाई।

**शाटपुट में :** सी० सु० दल के विजय बहादुर ने सी० सु० दल के ही गुरदेवसिंह द्वारा स्थापित 16.80 वाले रिकार्ड को 16.91 मी० से सुधारा।

**रिले दौड़ों में :** के० रि० पु० बल के चौगड्डी ने 4X100 मी० को 42.4 से० में और 4X400 मी० को 3:17.4 मी० में पूरा कर नये कीर्तिमान स्थापित किये । पिछले कीर्तिमान सी०सु० दल द्वारा 4.4 से० और 3:18.4 मि० के स्थापित हुये थे।



**घन फेंकता हुआ रघुवीर सिंह**



**4X400 मी० रिले में हमारा चौगड्डा—पीटर एण्ड, बच्चूसिंह, गुरदयाल सिंह व दया सिंह**

**1,500 मी० दौड़ में :** 1977 में ओलिम्पिक खिलाड़ी हरीचन्द (के० रि० पु० बल) द्वारा 3:52 मि० वाला रिकार्ड, सी० सु० दल के मधुसूदन ने 3:51.8 मि. में दौड़कर भंग किया। हरीचन्द को इस वर्ष तीसरे स्थान पर सन्तोष करना पड़ा।

**800 मी० दौड़ में :** पंजाब के अमर सिंह ने, 1962 में राजस्थान के हर्ज़ीराम द्वारा स्थापित 1:52 से० वाले पुराने कीर्तिमान को, 1:51.4 से० से तोड़ा।

**हरीचन्द (के. रि० पु० बल)** इस प्रतियोगिता के **'सर्वोत्तम खिलाड़ी'** निरन्तर छठे वर्ष घोषित हुये। उन्होंने 10,000 मी० और 5,000 मी० दौड़ों में स्वर्णपदक और 1,500 मी० दौड़ में कांस्य पदक जीते। तमिलनाडु के सुब्रह्मण्यम् ने 100 मी० और 200 मी० दौड़ों में प्रथम स्थान पा कर प्रतियोगिता का सब से अधिक फर्राटे के धावक की कीर्ति पायी।

**अंक-प्राप्ति :** के० रि० पु० बल 292; सी० सु० दल 221 तथा पंजाब 70.

अन्तिम परिणाम इस प्रकार रहे :

**100 मी० दौड़ :** सुब्रह्मण्यम (तना०) I; शशिधरन नायर (सी० सु० दल) II व **के० जी० जोजेफ (के. रि. पु. बल) III**

**200 मी० दौड़ :** सुब्रह्मण्यम(तना०) I; शशिधरन नायर (सी० सु० दल) II व **पी. कन्जम्बू (के. रि. पु. बल) III.**

**400 मी० दौड़ :** सुचासिंह (पं०) I; **दयासिंह (के. रि. पु. बल)** II व बलदेवसिंह (सी० सु० दल) III.

**800 मी दौड़ :** अमरसिंह (पं०) I; मधुसूदन (सी० सु० दल) II व वीरपाल सिंह (दिल्ली) III.

**1,500 मी० दौड़ :** मधुसूदन (सी०सु० दल) **I; एम. एम. पाटिल (के. रि. पु. बल) II व हरीचन्द (के. रि. पु. बल) III.**

**5,000 मी० दौड़ : हरीचन्द (के०रि० पु० बल) I; प्रदीप कुमार (के. रि. पु. बल)** II व मंजीराम (उ० प्र०) III.

**10,000 मी० दौड़ : हरीचन्द (के.रि. पु. बल I; प्रदीप कुमार (के. रि. पु. बल) II** व टी. के. त्रिके (उड़ीसा) III.

**3000 मी० स्टीपल चेज: प्रदीपकुमार (के. रि. पु. बल)** I; ईश्वरसिंह (सी० सु० दल) II व **चन्दरभान (के.रि. पु. बल)** III.

**110 मी० बाधा :** एस० एस० नायडू (आं०प्र०) I; ए० एस० रणधावा (सी०सु० दल) II व **गुरदयालसिंह (के.रि.पु. बल) III.**

**400 मी० बाधा : गुरदयालसिंह (के. रि. पु. बल) I;** बी नागेश्वर राव (आं. प्र.) II व राजबलकरसिंह (सी. सु. दल) III.

**ऊँचीकूद : बलतेजसिंह (सी० सु० दल)** I; प्रभातीलाल (के. रि. पु. बल) II व सत्यवीरसिंह (के. रि. पु. बल) III.

**पोलवाल्ट : प्रेमचन्द्रन (के.रि. पु. बल)** I; दलबहादुरसिंह (बिहार) II व शमूगन (त० ना०) III.



**नेजा फेंकते हुए बी. सुशीलम**

**चौड़ीकुद :** शशिधरन नायर (सी० सु० दल) I; बलबिन्दरसिंह (सी० सु० दल) II व रामगोबिन्द (म० प्र०) III.


CRPF
C




**मैराथन दौड़ में रसदेव सिंह**

**त्रिकूद :** दक्षिणमूत्ति (त० ना०) **I; के० सुधाकरन (के. रि. पु. बल)** II व अजमेरसिंह (सी० सु० दल) III.

**शाटपुट :** विजय बहादुर (सी० सु० दल) I; गुरदीप सिंह (सी० सु० दल) II व रछपालसिंह (पं०) III.

**चक्काफेंक :** प्रवीण कुमार (सी० सु० दल) **I; आर. एस- बल (के: रि. पु. बल) II व ए. पी. एस. मान (के.रि०पु०बल) III.**

**घनफेंक : आर.एस. बल (केरि०पु०बल) I; जे. एस, भुल्लर (के.रि.पु.बल) II व**

**प्रवीण कुमार (सी. सु. दल) III.**

**नेजाफेंक : बी. सुसेदन (के.रि.पु.बल) I;** जोगिन्दर सिंह (सी.सु.दल) II व रामनरिन्दर सिंह (सी०सु० दल) III.

**4X100 मी०रिले दौड़ : (के.रि.पु.बल) I; सी. सु. दल II व पंजाब III.**

**मँराथाँन दौड़ः रसदेवसिंह (के.रि.पु.बल) I;** विनोद कुमार (पं०) **व रामभगत (के. रि.पु.बल) III;**

**डिकँथलन : प्रभात सिंह (के.रि.पु.बल)** I बलविन्दर सिंह (सी.सु.दल) II व **जनकचन्द (के.रि.पु बल) III.**

## 95 जवान पुरस्कृत

जिन 95 खिलाड़ियों और एथ्लीटों ने इस प्रतियोगिता में अपने खेल का उत्तम प्रदर्शन किया था, उन्हें 50 रु० से लेकर 500 तक के नक़द पुरस्कार दिये गये हैं।

## परिणामों पर विहाग दृष्टि

**जिम्नास्टिक्स : के० रि० पु० बल I;** भारत-तिब्बत सीमा पुलिस II व सी० सु० दल III.

**हॉकी :** सी० सु० दल I, पंजाब II व के० रि० पु० बल III,

**फुटबॉल :** सी० सु० दल I; भा० ति० पुलिस II व उ० प्र० III,

**बास्केटबॉल :** सौ० सु० दल I, के. रि० पु० बल II व उ० प्र० III.

**कबड्डी:** I पंजाब; म० प्र० II **ब के० रि० पु० बल III.**

## सुक्ति सुधा

जो व्यवहार अपने को बुरा लगे, वह दूसरों के साथ नहीं करो।

**--महाभारत**

श्रद्धा से ही सत्य मिलता है।

**--यजुर्वेद**

ना तो सब का विश्वास करो और ना ही करो सबके प्रति सन्देह।

**-योगवशिष्ट**

**आगामी अंक में:--**

## आंखेल भारतीय पुलिस लक्ष्यभेदन

नासिक में 17, अप्रैल 1980 को आयोजित अखिल भारतीय ड्यूटी प्रतियोगिता में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने पिस्तोल चालन तथा सफल लक्ष्यभेदन में सिरमौर जीता।

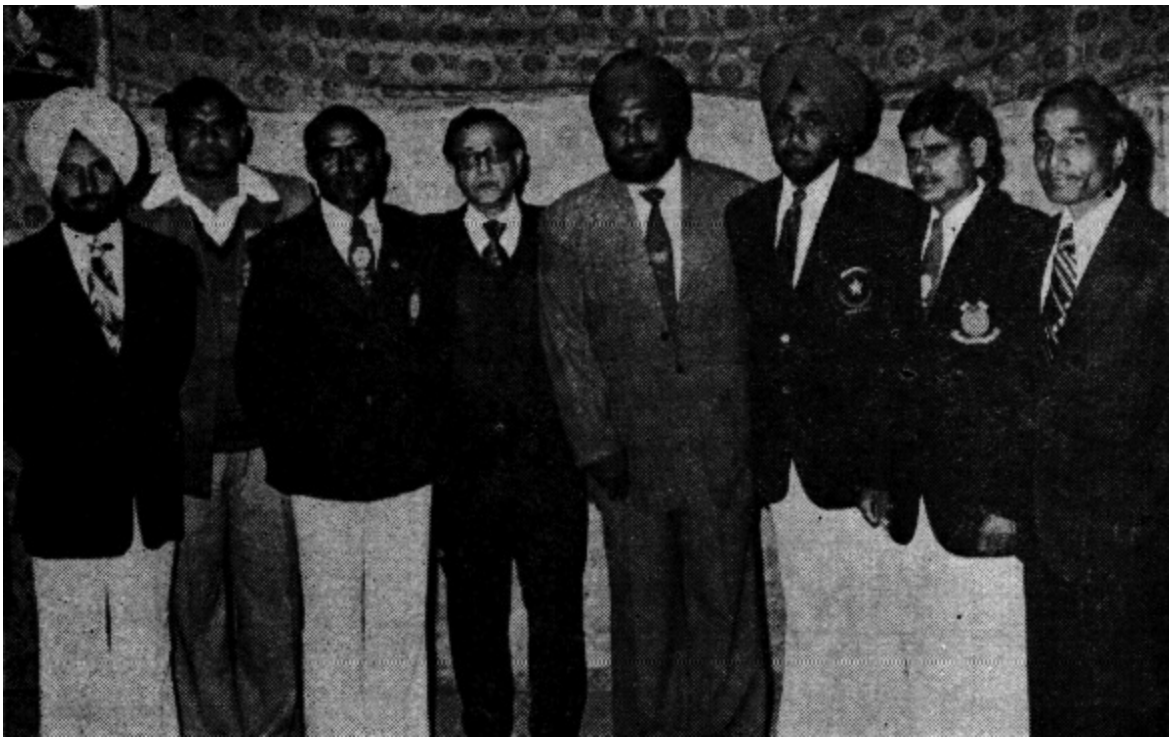
[विस्तृत विवरण आगामी अंक में प्रकाशित होगा]

---

## 14वीं अन्तर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता

दिल्ली के रेलवे तरण ताल में 1 मई 1980 को सम्पन्न हुई 14वीं अन्तर्रेंजतैराकी प्रतियोगिता में, अजमेर रेंज (155 अंक) I, मद्रासरेंज (119 अंक) II तथा हैदराबाद रेंज (77 अंक) III रही। पटना रेंज का **दिलीपसिंह** इस प्रतियोगिता का सर्व श्रेष्ठ तैराक घोषित हुआ। 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में प्रथम, 400 मी० व्यक्तिगत मेडले में द्वितीय तथा 200 मी० बटरफ्लाई में तृतीय रहा । मद्रास के अब्राहम कोरियन की तैराकी भी सराहनीय रही। उसने 200 मी० फ्री स्टाइल तथा 400 मी० फ्रीस्टाइल स्पद्वयिं जीत कर दोहरी सफलता प्राप्त की।

[विस्तृत विवरण आगामी अंक में पढ़िये ]



**कहानी :**

# पुरसकृत चोर

## लेखक : श्री जे० एस० शर्मा

'आखिर माजरा क्या है, सर?" पुलिस कर्मचारी ने विज्ञापन दिखाते हुए इंगलैंड के धनकुबेर सर विलियम हार्स्टन से पूछा।

हार्स्टन मुस्कराते हुए बोले "आप खुद समझ सकते हो। इसमें कोई रहस्यमयी भाषा तो लिखी है नहीं, जिसके समझने के लिये सांकेतिक शब्द कोष की आवश्यकता हो"

'नहीं, यह तो 'खुली शीशम' है, जिसमें कारू के खज़ाने के लूटने की पूरी छूट है। ऐसा विज्ञापन तो आज तक कभी न देखा और न सुना गया।" हार्स्टन फिर मुस्काये "और न भविष्य में ऐसा देखोगे व सुनोगे।"

"सचमुच में, आपने समस्त पुलिस तंत्र को विस्मय में डाल दिया है।"

"अफ़सोस है । हमारा ऐसा इरादा कभी भी नहीं था। हमारी तो चुनौती केवल चोरों से है, उनको खुला निमंत्रण है।"

"मगर चोर और पुलिस का तो चोली दामन का सा सम्बन्ध है । यदि आपने चोरों को निमंत्रण दिया है तब उससे पूर्व आपने पुलिस को चुनौती दी है।"

"कदापि नहीं, आप फिर ध्यान से पढ़िये । आपको तो कष्ट उठाने की आवश्यकता ही नहीं है। हमने स्पष्ट लिख दिया है-" कहते हुए हार्स्टन ने विज्ञापन को पढ़कर पुलिस कर्मचारी को सुनाना प्रारम्भ कर दिया "यदि चोरी करते समय कोई पकड़ा भी जायेगा, तब उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं होगी। बोलिये, आप पुलिस जन तो खुद दालभात में मूसरचन्द बनना चाहते हैं । हमने तो वह रक़म केवल पुरस्कार स्वरूप रखी है। उससे वापिस नहीं लेने का बचन तक दिया है।"

"कुतूहल है। सात हज़ार रुपये कोई कम रक़म तो नहीं होती।"

"क्या मुज़ायका है। जहाँ छह लाख रुपये इस भवन के निर्माण में लगाये हैं, वहाँ सात हजार रुपये की भूरि दक्षिणा और समझ लेंगे" कहते कहते हार्स्टन का मुख लाल हो गया "वस्तुतः इस प्रकार हम यह परीक्षा लेना चाहते हैं कि है कोई माई का लाल, जो हमारे इस भवन में चोरी कर सकता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि कोई भी कैसा ही चतुर चोर क्यों नहीं हो, हमारी आफिस वाली मेज़ की दराज से वह धनराशि नहीं चुरा सकता है।"

“ऐसा नहीं सोचिये सरकार। संसार में एक से बढ़ कर एक शातिर पड़ा हुआ है।”

हार्स्टन ने तपाक़ से उत्तर दिया “हमें उसी की तो प्रतीक्षा है। आप भली-भांति जान लो यह प्रतिद्वन्द्विता तो चोरों और हमारे बीच है। आप को ज़हमत उठाने की कोई आवश्यकता नहीं है।”

बेचारा पुलिस कर्मी अपना सा मुख लेकर लौट गया। उसे अन्य चारा ही क्या था?

इधर हार्स्टन अपनी धुन के पक्के नित्य उठते ही प्रथम दराज़ को खोल कर देखते और धनराशि को उसी प्रकार सुरक्षित पा कर फूले नहीं समाते थे। “बहुत कहता था वह पुलिसकर्मी कि एक से एक फ़ितना पड़ा है। मगर आज कितने सप्ताह बीत चुके हैं किसी राबिनहुड तक की तो दाल गली नहीं है। आख़िर हमने छह लाख रुपये संतमेंत में तो नहीं बहाये हैं। भवन नहीं तिलिस्म बनवाया है तिलिस्म” सोचते हुए वह वक्षस्थल फुलाते थे।

इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने बारम्बार वही विज्ञापन इंगलैंड के सभी नामीग्रामी समाचार पत्रों में प्रकाशित कराया और महीनों चोरी की बाट जोही; परन्तु सब विफल मनोरथ। अन्त में, उनका जोश ठंडा पड़ गया और वह अपने भवन पर कदाचित् उस राजा परीक्षित से भी अधिक गर्व करने लगे, जिन्होंने सर्प दंश से बचने के लिए एक स्तम्भ पर सुरक्षित सदन निर्मित करा कर स्वयं को निरापद समझ लिया था। परन्तु अन्ततोगत्वा क्या वह निरापद रहे ?

“तुम तो बहुत बीमार से नज़र आते हो” एक निरीह निर्बल अतिथि पर दया दृष्टि डालते हुए सर हार्स्टन ने कहा।

“बीमार होना ही हुआ सरकार, जब कोई नौकरी-चाकरी नहीं है। सब से बड़ी बीमारी तो बेकारी है...”

“हूँ, तो क्या तुम कोचवानी कर सकते हो ?”

“बहुत अच्छी तरह से; बल्कि छुट्टी पर गये आपके कोचवान-”

“ताज्जुब है, तुम्हें मालूम है कि हमारा कोचवान छुट्टी पर इन दिनों चल रहा है।”

“बात यह है हुज़ूर। मेरे एक मित्र - कोचवान ने ही तो यह उलाहना दिया कि एक ओर तो मैं बेकार मर रहा हूँ और दूसरी ओर हार्स्टन साहब का कोचवान-”

वाक्य पूर्ण भी नहीं हो पाया था कि “आग-आग” की व्याकुल ध्वनि समस्त भवन में गुंज गई। हार्स्टन को बरामदे में रखी अलमारी से धुआँ निकलते खुद दृग्गत हुआ। वह सुध बुध खो बैठे ? क्योंकि उस अलमारी में तो उनकी बहु मूल्य वस्तुयें रखी थीं। वह सिर पर पैर रख कर बरामदे की ओर दौड़े। कोचवानी की नियुक्ति के लिये आया हुआ वह रुग्ण दुर्बल व्यक्ति भी भागा; किन्तु निर्बलता के कारण दो पग चल कर ही लड़खड़ा कर गिर गया। हार्स्टन ने अपनी घबड़ाहट में, उसको उठाने में भी समय बर्बाद नहीं करना चाहा। वह तीर की भाँति आगे बढ़ते चले गये।

पर यह क्या ? हार्स्टन के जाते ही, वह युवक तो उठ कर झट बैठा हो गया और

लगा मन्द मन्द मुस्काने। वस्तुतः उसने ही तो रद्दी की टोकरी में फासफोरस को आग के साथ डाला था, जो अब जलकर घटाटोप धुयें का गुब्बार निकाल रहा था। भवन के सभी निवासी अग्निकांड की आशंका से भया क्रान्त हुये विक्षिप्तों की भाँति व्यवहार कर रहे थे। जिसको जो वस्तु बुझाने को मिल रही थी, उसे ही लिये बरामदे की ओर दौड़ा चला जा रहा था। किसी को अन्य स्थान की तनिक भी सुधि नहीं थी।

इस स्थिति का लाभ उठा कर, वह युवक हार्स्टन की उसी मेज़ के पास बिजली के सदृश पहुँचा, जहाँ चोरी के लिए सात हज़ार का नकद पुरस्कार ताले में बन्द रखा था; किन्तु उस जैसे कुशल चोर ने तुरन्त दराज़ खोल कर वह धनराशि निकाली और चम्पत हो गया।

इधर पर्याकुल लोग अग्नि बुझाने में जुटे रहे। यद्यपि अग्नि ने कोई भयंकर रूप धारण नहीं किया और न ही उसे करना था। चोर ने थोड़ी देर के लिए वह शगूफा किया था। लगभग आध घंटे के उपरान्त अग्नि शमन से सन्तुष्ट हो, हार्स्टन ने अपनी कुर्सी पर आकर चैन की साँस ली "ईश्वर को सकोटि धन्यवाद है। अग्नि जल्द काबू में आ गई; कोई महती क्षति नहीं --"

वाक्य कहते हुए उनकी दृष्टि मेज़ की दराज़ पर गई, तब तो उनके पैर तले की भूमि निकल गई। उन्होंने उसको आगे खेंचा हुआ पाया; तब तो उनके हाथ के तोते' उड़ गये ! शीघ्र उसमें हाथ डाला। उनका हृदय स्तब्ध रह गया। हा हन्त ! उनके वे सात सहस्र रुपये अन्तर्धान हो चुके थे।

हार्स्टन को तुरन्त सब बात समझ में आ गई; क्योंकि उन रुपयों के साथ वह बेकार बीमार युवक भी तिरोधान हो गया था। वह बारम्बार यही बुदबुदाते थे "उस प्रच्छन्न जन के अतिरिक्त, अन्य कोई अजनबी व्यक्ति यहाँ आया ही नहीं। यह अवश्य ही उसी की कारस्तानी हो सकती है; परन्तु आश्चर्य है वह तो निपट मृतप्राय दृष्टिगत हो रहा था; प्रत्युत् अपनी रुग्णता के कारण ही-"

"वह सब नाटक था हार्स्टन साहब" कहती हुयी तभी उस अद्यशंस की मुखाकृति अट्टहास करती उनके मनश्चक्षु के सम्मुख दृग्गत हुयी। वस्तुतः तथ्य भी यही था क्योंकि दूसरे दिन जब उन्हें एक पत्र मिला, तब उसने रही-सही शंका का भी निराकरण कर दिया। उसमें लिखा था "कहिए, मान गए हमारा लोहा। बोलिये, होते हैं नहीं आप जैसे शतावधानों से भी चोर अधिक सावधान, साहसी तथा कुशल ! आप नितान्त चिन्ता नहीं करें। आपका वह पुरस्कार सही पुरुष को मिल गया है। आशा है कि मुझे बीमार और बेकार मनुष्य समझ कर, आप अवश्य मेरा अपराध मार्जन करेंगे। आपका ही पुरस्कार विजेता।"

## स-इंस्पेक्टरों के 58 नये पदस्थान

**के** रि० पु० बल के अराजपत्रित कर्मचारियों की पदोन्नति के अवसर

बढ़ाने के लिए सरकार ने सब-इन्स्पेक्टर (सम्पक आधेकारी) के 58 पदस्थान स्वीकृत किये हैं। ये 1977 से प्रसुप्तावस्था में पड़े थे। | जो हेड कांस्टेबल अनुमोदित सूची में हैं, वे इन रिक्त स्थानों पर पदोन्नति पायेंगे।

# धूमिल-स्मृतियाँ

## [ले०-इ० गोबर्द्धन प्रसाद बहुगुणा]

पूर्वोत्तर मञ्चल के कहीं पहाड़ों की कन्या, ब्रह्मपुत्र नदी के सुरम्य तट पर मैं अपने कैम्प में कर्तव्य-निष्ठा में लीन था। दिनांक 17.5.1979 को अचानक मुझे अपने मुख्यालय ग्रुप केन्द्र आवडी से अपनी माता जी की गम्भीर रुग्णता के विषय में बेतार संदेश प्राप्त हुआ। मुझे तुरन्त ही 45 दिनों का अर्जित अवकाश स्वीकृत हो गया। मैं कम्पनी का चार्ज अपने ही एक साथी को सौंप कर शाम की गाड़ी से आवडी चल दिया।

ग्रप केन्द्र आवडी की वैभवशाली नगरी देखकर, मैं कुछ क्षण ठगा सा रह गया । आज से 21 वर्ष पहले की याद मुझे आने लगी, जब मैंने नई दिल्ली की चाणक्यपुरी की इसी प्रकार भव्य नगरी में अपनी प्लाटून के साथ प्रवेश किया था-ठीक इसी प्रकार सजग प्रहरी, चौड़े-चौड़े राजमार्ग, हरे-भरे विशाल उद्यान तथा दायें बायें ऊँची-ऊँची इमारतें । उस समय, मन में एक हीन भावना पैदा हुयी थी-कि हम भी इन्सान हैं और...किन्तु आज, अपने ग्रुप केन्द्र की वैसी ही शान देख कर मुझे अजीब ही खुशी हुई। वस्तुतः तुलना में, चाणक्य नगरी तक फ़ीक़ी लगने लगी। उस समय, मेरे मानस-पटल पर विगत की धूमिल स्मृतियाँ एक-एक कर के तैरने लगीं। 26.11.59 को, मेरे साथ पूरी एक प्लाटून हिमाचल की गोद, गढ़वाल अञ्चल, से भर्ती होकर, कर्नल रतन सिंह के कमान में 8वीं बटालियन के अन्तर्गत रामपुर आई थी । वहाँ नवाब रामपुर की कुछ बारिकें थीं, जो अच्छी स्थिति में थीं। उनमें कार्यालय, कोत, भंडार आदि का बन्दोबस्त किया गया। बाक़ी कुछ टूटी-फूटी बारिकें थीं, जिनमें कभी नवाब के घोड़े बँधते थे । उन्हीं में से एक बारिक हमें बता दी गई थी, जिसे हमें अपने आवास के लिए ठीक करनी थी। इसमें बड़े-बड़े गड्ढे थे, जिन्हें भरा गया। दीवारें कच्ची ईंटों की थीं, जिनकी चौड़ी दरारों से दुनिया नज़र आती थी। साथ में, चूहों की धमा चौक़ड़ी हमें ललकार-ललकार कर कहती प्रतीत होती थी 'खबरदार, यह हमारी जगह है। परन्तु हमने भी मिट्टी पत्थरों से बिलों को भर कर, चूहों को 'आउट आफ बाउंड्स' का नोटिस लगा दिया। तत्पश्चात् बड़े प्रेम से रहने लगे। उस समय, कूँये से बाल्टी भर कर खुला स्नान होता था। लंगर में लिपाई-पुातई गोबर से की जाती थी; एक साथ पाल्थी मार कर भोजन होता था। 'डे' अफसर को चमड़े की बेल्ट लगाये आते देख, भय खाता था कि कहीं लंगर टूट नहीं जाये। सोमवार और शुक्रवार के निरीक्षण में जब प्लाटून कमांडर आते थे, तब डर रहता था कि कहीं सुबह-सुबह ही 'फ्रन्ट-रूल' नहीं

लग जाये। पिठ्ठू तो बड़ी सज़ा मानी जाती थी, और 'क्वाटर गार्ड बन्दी' को तो जेल के एक भयानक क़ैदी के समान समझा जाता था; उससे लोग दूर रहते थे और बात करने से कतराते थे। कम्पनी कमांडर के आर्डली रूम में कोई जाता था, तब उसको उसी भावना से देखा समझा जाता था, जैसे कोर्ट में मजिस्ट्रेट के सामने, पुलिस किसी क़ैदी को ले जा रही हो। सी० ओ० साहब के आफिस में कोई आर्डरली रूम होता है, इसका ज्ञान हमें ट्रेनिंग के समाप्त होने के दो-तीन साल बाद भी नहीं लगा। कम्पनी कमांडर के ही दर्शन दुर्लभ रहते थे। ट्रेनिंग के दौरान, की किसी इन्फैन्ट्री यूनिट की पुरानी कमीज़, और निकर हमें मिलती थी।

उस समय तथा आज की स्थिति की तुलना मैं करने लगा। आज ग्रुप केन्द्रों में शौचालय और स्नानघरों का निर्माण संगमर्मर के पत्थरों से हुआ है; सैनीटरी फिटिंग किसी सर्किट हाउस से कम नहीं हैं। भोजनालय दर्जनों ट्यूब लाइटों, और पंखों से सुसज्जित हैं। डाइनिंग हाल के फर्श पर चेहरे साफ़ नज़र आते हैं, और इन में चमचमाता फर्नीचर हैं। पहनने को उत्तम और नई वर्दियाँ हैं। मनोरंजन की कोई कमी नहीं है-अनेकों पुस्तकें-पत्रिकायें, भीतर बाहर खेले जाने वाले खेल, सप्ताह में तीन दिन नियमित रूप से नवीनतम चल चित्र पौर नित्य टेलीविज़न प्रोग्राम।

अन्त में, मन में एक ही प्रश्न उठा इतनी सब श्रेष्ठता के बावजूद भी यह अन्त र्द्वन्द्व क्यों ? इन्हीं दिनों, वहाँ कुछ देश द्रोही तत्वों ने क्यों हमारे साथियों को गुमराह किया ? प्रश्न बड़ा ही जटिल था ! मैं साधारणबुद्धि मानव, इस समस्या का क्या समाधान खोज पाता? सिर्फ़ फिल्मी गीत की एक पंक्ति याद आ गई–'नज़र लागी राजा, तोरे बंगले पर।

**क्रीड़ा क्षेत्र**

**भारत-पाक प्रतियोगिता**

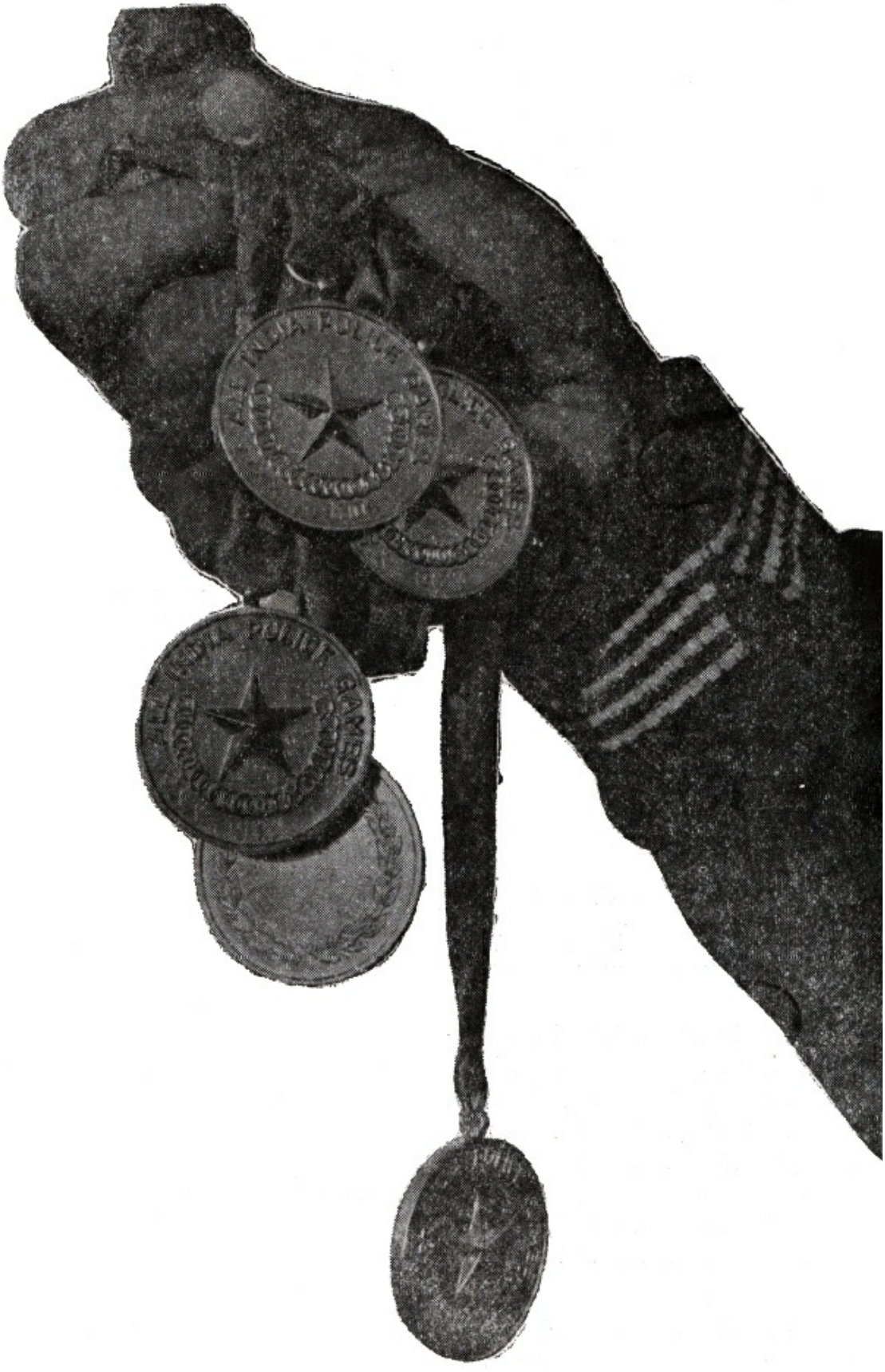
# सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट - एन. बी. भोंसले

कराची में मार्च 1980 में हई, भारत-पाक जिम्नास्टिक प्रतियोगिता में, के.रि.पु० बल के **एन.बी. भोंसले सर्वोत्तम जिम्नास्ट** घोषित हुआ। वह भारतीय टीम का कप्तान था तथा पैरेलल बार में प्रथम, वाल्टिंग हार्स और होराइज़न्टल बार में द्वितीय तथा रोमन रिंग और पोमेल्ड हार्स में तृतीय रहा।



पाकिस्तान राष्ट्रीय खेलों की एथ्लीट प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल के हरीचन्द तथा आर० एस० बैल ने भारत को एक स्वर्ण पदक तथा दो रजत पदक दिलाये; जब कि आर.एस. बल ने घनफेंक में स्वर्ण पदक तथा चक्का फेंक में रजत पदक पाया, हरीचन्द ने दौड़ में एक रजत पदक अर्जित किया।

बंगला देश में मई 80 में खेली गई प्रथम एशियाई तैराकी चैम्पियनशिप में भाग लेने के लिये, के. रि० पु. बल के ये 5 तैराक चुने गये-1 कपूर सिंह (गोताखोरी) 2 हरदयाल सिंह (गोता खोरी) 3. टी. थोबा सिंह 4. के. सोमशेखरन और 5. पी० पद्मनाभन।


INDIA POLICE
POLICE

**29वीं अखिल भारतीय पुलिस खेल प्रतियोगिता में जीते हुये पदकों को गर्वपूर्वक लिये हुये उस प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट एन० बी० भोंसले ।**

# म नो ब ल

## ले०—लेफ्टीनेंट कर्नल के० गोस्वामी

**प्रस्तावना**—मक़दुनिया के राजा फ़िलिप द्वितीय ने सभी को मात देने के लिए, एक सेना गठित और प्रशिक्षित की। फारसवालों की धमकियों से मुकाबला करने के लिए उसने मकदूनिया में एकता पैदा की और यूनानियों का प्रभुत्व स्थापित किया। यह वही सेना थी, जिसने उसके पुत्र सिकन्दर के नेतृत्व में 'विश्व' जीता था।

राजा फ़िलिप प्रायः यह तर्क करता था —'युद्ध में एक पक्ष क्यों भाग खड़ा होता है।' इस अपने प्रश्न का वह यह उत्तर देता था —'क्योंकि जीतने वाला दल अपेक्षाकृत बलवान होता है; या क्योंकि उसके नेता अपने जवानों में यह विश्वास भरते हैं कि वे उसी भाँति बलवान हैं।" आज की भाषा में, इस विश्वास को मनोबल कहते हैं ।

कितनी ही शताब्दियों के उपरान्त, नेपोलियन ने मनोबल का दैहिक बल से अनुपात 3:1 बताया। दूसरे शब्दों में, सभी परिसम्पदाओं को मिला कर भी, उनसे मनोबल तिगुना है।

मनोबल है क्या? हमारे जीवन में उसकी क्या भूमिका है ? उसको कैसे उच्च स्तर पर बनाया और रखा जा सकता है ? इन प्रश्नों पर इस लेख में विचार होगा।

**परिभाषा**—किसी कार्य के लिए एक जनसमूह लगा दीखता है। कठिन से कठिन काम में भी, वे प्रसन्नतापूर्वक काम करते हैं। दूसरी ओर, अपेक्षाकृत हल्के काम में भी निरत दूसरा जनसमूह उदास और उदासीन दीखता है। हमारी यह धारणा है कि पहले वृन्द में उत्तम मनोबल है और दूसरे में निकृष्ट है। काम करते हुये मनुष्यों के रुख से, उनका मनोबल आंका जा सकता है।

मनोबल मस्तिष्क की स्थिति है। अनुकूल होने पर, वह मनुष्यों को प्रसन्न रखता है, शारीरिक श्रम सहता है और प्राण न्यौछावर करके भी, भय को पास नहीं फटकने देता है।

भारतीय इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। दूर क्यों जायें? आज़ादी की लड़ाई की सूची में भगतसिंहों और चन्द्रशेखर आज़ादों की भरमार है, जिन्होंने हँसते-हँसते प्राण बलिदान कर दिये । प्रश्न यह उठता है कि ऐसा उन नर-नारियों ने क्यों किया?

मनोबल मस्तिष्क की स्थिति है और कई आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा भौतिक तत्वों

पर निर्भर है। आइये इन पर विचार करें—

**आध्यात्मिक तत्व**—यह सच कहा है "जो आत्मा हताश नहीं होती है, वही विजयी होती है, और यह तभी हो सकता है, जब आत्मा किसी उद्देश्य की सच्चाई में विश्वास करती है। दिल्ली सुल्तानों से सिक्ख गुरुओं का संघर्ष इसका उत्तम दृष्टान्त है। ऐसा कहा जाता है कि एक बार तो केवल तीन सिक्ख ही जीते बचे थे; किन्तु उनकी आत्मा निराश नहीं हुयी, क्योंकि उनका ध्येय सच्चा था और उसने उनमें प्रतिरोध तथा बचे रहने की क्षमता प्रदान की।

'चेहरे विहीन (अज्ञात) 'लाखों' का वाक्यांश सुन रखा है। मानवात्मा अपना एक चेहरा चाहती है : स्वयं को पहचाने जाने की इच्छुक होती है और चाहती है अहमन्यता। सिकन्दर महान् अपने सैनिकों को मानवयत्नों की अति करने के लिए उत्प्रेरित और प्रोत्साहित किया करता था और वह भी तब, जब घोर संग्राम छिड़ा होता था। उसकी केवल यह चाल थी कि अग्रभाग के सैनिकों के नाम ले लेकर वह पुकारता था और वह कभी विफल मनोरथ नहीं हुआ।

**बौद्धिक तत्व**—किसी संकट से उबरने के लिये, विश्वास को अकेला ही सबसे महत्वपूर्ण तत्व बताया जाता है। हर किसी को अपने नेताओं में, खुद अपने में, अपने अस्त्र-शस्त्रों में, आपस / इत्यादि में विश्वास करना चाहिये। इस सब विश्वास के अनुकल कुल योग से ही, अन्त में मनोबल जैसे दुर्बोध गुण की वृद्धि होती है। इससे उत्तम उदाहरण अन्य क्या होगा कि चन्द्रगुप्त मौर्य अपने चाचा से मगध साम्राज्य छीने जाने पर भी प्रात्म विश्वास नहीं खोता है। उसने मक़दुनिया की रणनीतियां सीखी थीं। तभी उसने एक ऐसी सेना को गठित, प्रशिक्षित तथा प्रोत्साहित किया, जिसने उसकी राजधानी 'पाटलीपुत्र' को फिर उसे दिला दिया।

आत्म-सम्मान एक अन्य ऐसा मल्हवपूर्ण गुण है, जिससे उत्तम मनोबल मिलता है। जब किसी को अपने ही गुणों तथा प्रतिभा का मान नहीं है, तब वह दूसरों से ऐसा करने की कैसे आशा कर सकता है ? जब किसी एक संयुक्त उद्देश्य में लगे किसी जनसमूह में इस गुण का नाश हो जाता है, तब पारस्परिक विश्वास को ठेस लगती है और अन्त में सारे मनोबलजनक ढाँचा चरमरा जाता है।

पिछले द्वितीय विश्व युद्ध में, अंग्रेजों से जापानियों ने बर्मा छीन लिया। तब अंग्रेजों का मनोबल निम्नतम स्तर पर पहुँच गया और आँगल भारतीय सेना के सम्मुख जापानियों की अजेयता, सुरसा का मुख बन गयी। तब उन्होंने आज के आसाम के पास नागालैंड पर अपना मोर्चा जमाया। फील्ड मार्शल विलियम स्लिम अंग्रेजी कमांडर था। उसने अपने सैनिकों को उस अन्तिम संघर्ष के लिये शिक्षित तथा समुद्यत करना शुरू कर दिया। जो आसाम में होना उसे बताया गया था। सब से महत्वपूर्ण काम, उसने अपनी पराजित सेना का मनोबल बढ़ाने का किया और इसमें जापानियों की अजेयता को नष्ट भ्रष्ट करके ही, वह सफल हुआ। उसने छोटी-छोटी बाह्य चौकियों पर अपने सैनिकों से धावे बुलवाये और इनकी सफलताओं के पर बड़े-बड़े आक्रमण शुरू किये, जिससे उसके सैनिकों में आत्म प्रतिष्ठा तथा मनोबल का

संचार हुआ। अन्त में, उन्होंने बमों फिर जीत लिया।

**भौतिक तत्व**—मनोबल मस्तिष्क का एक गुण है; परन्तु तन और मस्तिष्क में पारस्परिक प्रक्रियायें हैं। मस्तिष्क कुछ समय के लिये दैहिक सुविधाओं से चश्म पोशी कर सकता है; किन्तु हमेशा के लिये नहीं। नेपोलियन ने सारे योरुप को अपनी सेना से रौंधवाया; परन्तु उसने प्रयाण के समय के लिये, वाँछित स्थलों पर नौकायें इकट्ठी कर रखीं, जिससे उसका कोई भी सनिक रक्त से लथपथ नहीं चले—जैसा कि उस समय के युद्धों में आम बात थी।

भौतिक सुविधायें जवानों के लाड़प्यार तक भी अजहद नहीं देनी चाहिए; अन्यथा मनोबल का ह्रास होगा। एक जवान को क्या चाहिये—एक उपयुक्त सुविधाजनक बिछौना, नियमित तथा पौष्टिक आहार, निष्पक्ष व्यवहार या सैनिकों शब्दों में न्यायपूर्ण व्यवहार तथा उचित भोजन, एवं वापसी जीवन के कुछ पर्याप्त निवेश ।

**अत्युत्तम दृष्टान्त**— उत्तम मनोबल को बताने तथा बनाये रखने में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अकेला तत्त्व है, नेतृत्त्व । यदि वह नहीं है, तब मनोबल कभी नहीं रह सकता। इस विषय में सर्वोत्तम दृष्टान्त है—अर्बेला का युद्ध, जिसमें मक़दुनिया के सिकन्दर और फारस सम्राट दरियास महान् भिड़े थे। दरियास ने ढींग मारी कि मक़दुनिया की 25 सहस्र सेना उनके नेत्रों के सामने आते ही कीड़ों की भांति मसल दी जायेगी। उस समय के सर्वोत्कृष्ट माने जाने वाले 2 लाख धनुर्धरों की सेना उसके पास थी।

युद्ध के दिन, अमर जवानों के मध्य ईश्वरतुल्य वैभव वाले अपने फारसी मेज़वान को सिकन्दर ने देखा। उसने राजाधिराज के ठीक सामने, अपने कुछ संरक्षकों के साथ फारसी सैनिकों के बीच में सांग्रामिक प्रयाण प्रारम्भ किया। सिकन्दर को शीघ्र पाते देखकर, दारियास ने सोचा कि युद्ध में वह हार गया और युद्ध क्षेत्र से अपना घोड़ा ले भागा। सचमुच में, उसकी सेना जीत रही थी। अपने राजा को भागता देख कर, फारसियों का मनोबल नष्ट हो गया और वे युद्ध खो बैठे।

अनुशासन वह आधार शिला है, जिस पर नेतृत्व का भवन कायम रहता है। एक दूसरे के बिना स्थिर नहीं रह सकता और दोनों मिल कर उच्च मनोबल बनाते हैं।

सर्वोच्च ऐतिहासिक उदाहरणों में एक हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई है, जिसमें महात्मा गांधी ने विदेशी शासकों की सब प्रकार की उत्तेजनाओं के होते हुये भी अहिंसा के मार्ग की प्रेरणा दी ।

**प्रशिक्षण**—मनोबल को बनाने में प्रशिक्षण का बड़ा हाथ होता है। जब किसी काम के विषय में किसी व्यक्ति को यह मालूम हो जाता है कि उसने सब बातें सीख ली हैं, तब अत्यन्त उत्साह तथा प्रसन्नता से, वह काम करने को जाता है। जातीय भेदभाव से लड़ने के लिए, अहिंसा की कला सिखाने को अमेरिका के नागरिक अधिकार संगठन ने शिविर लगाये हैं।

जहाँ कहीं सैनिक या अर्द्ध सैनिक प्रकार की किसी गतिविधि के लिये, जनसमूह

को सेवा भार उठाना पड़ता है, तब उच्च मनोबल रखने के लिये 'साथीपन' की भावना जनाना ज़रूरी है। संगठन में गर्व भावना पैदा कर, स्थानान्तरण को कम कर जवानों के साथ में ले कर और सबसे बढ़ कर, उन्हें कठिन कार्यों में लगा कर (जिससे वे परस्पर निर्भरता का पाठ पढ़ सके) यह काम सम्पन्न हो सकता है।

जनप्रबन्ध एक कला है और उत्तम जनप्रबन्ध अधिकांशतः उत्तम मनोबल बनाता है। वास्तव में, कुछ मामलों में इसके अभाव ने मनोबल क्षीण नहीं किया, परन्तु तब उद्देश्य महान थे और मनुष्य थे सेवा समर्पित। उत्तम जन प्रबन्ध को तीन शब्दों में बताया जा सकता है—उचित, दृढ़ तथा मैत्रीपूर्ण। किसी भी टुकड़ी को इन तीनों के मिलने पर कठिन से कठिन कामों को करने में प्रसन्नता होती है। यह सच कहा है कि "सफलता के समान कोई सफल नहीं है।" यही बात मनोबल पर चरितार्थ होती है। मनुष्यों को सफलता मिलने पर मनोबल स्वयं बढ़ जाता है।

**मनोबल का मूल्यांकन**—किसी संगठन में, मुख्यकर वर्दीधारी दलों में, जहाँ औद्योगिक संगठनों से भिन्न, अपनी शिकायतें बताने का अवसर कम मिलता है, वहाँ मनोबल के मूल्यांकन का पहलू बड़ा महत्वपूर्ण है।

किसी भी यूनिट में, जवानों की गतिविधियों से उनके मनोबल का पता लग सकता है। यदि वे तत्परता से काम करते हैं, उनके मुख प्रसन्न हैं, उनकी वर्दी वगैरह चुस्त है और फुर्ती से सलाम मारते हैं, तब वे अधिकांशतः खुश हैं। हम उनके मनोबल को इनसे जाँच सकते हैं—खेलों में सफलता के स्तरों से, पदोन्नति परीक्षाओं से, भवनों और बारिकों के रखरखाव से, छोटे अपराधों की संख्या से, कल्याणकारी गतिविधियों में भाग लेने से तथा अनेकों अन्य चुगलखोरी आदि संकेतों से।

मनुष्य के मस्तिष्क में सहनशक्ति अमित है और वे कठोर से कठोर प्रकार के शारीरिक कष्ट सह सकता है, जिससे कभी कभार बड़ी सफलतायें मिल जाती हैं।

कार्रवाई में मनुष्यों को लगाने से पूर्व नेता को उनमें उच्च मनोबल भरना सबसे अधिक ज़रूरी है। उद्देश्य में अटूट श्रद्धा रखने के लिये इन पूर्वापेक्षित तत्वों की आवश्यकता है— आत्मविश्वास, अपने नेताओं में श्रद्धा तथा शस्त्रों में आस्था। अन्त में, यथासम्भव तथा यथालब्ध दैहिक सुविधायें भी मनोबल को बढ़ाने में सहायता देती हैं।

मनोबल के रखने में कोई कमी कभी कभी सैनिक दल के खून से, चुकता करनी पड़ती है।

# रेल यात्रायें

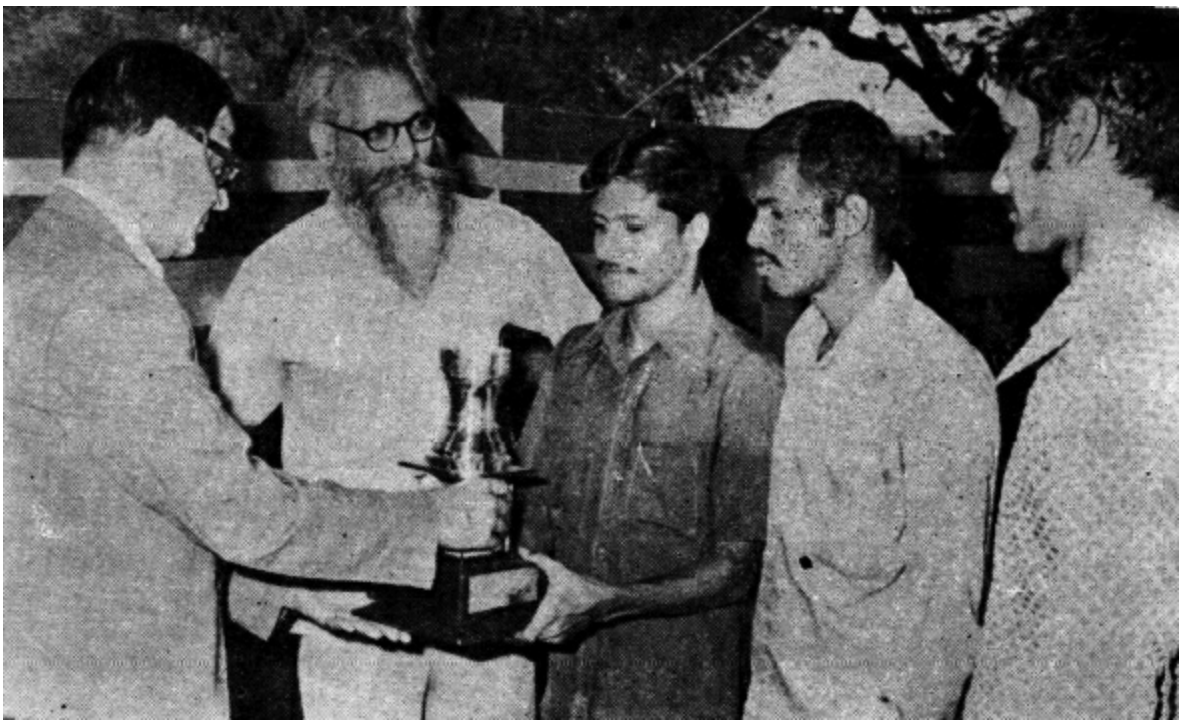
## ले०—श्री जो०एफ० डिस्यूज़ा, 56 बटा०

जबकि के० रि० पु० बल के कुछ कर्मियों को विशेष रेलगाड़ियों द्वारा यात्रायें आनन्द दायक सैर सपाटा लगती हैं, दूसरों को वे रोषजनक प्रतीत होती हैं। जब आप

नहीं जा रहे हों, तब विशेष रेलगाड़ी के छूटने से पहले शीघ्र आदेश आने पर जो खलबली मचती है, वह देखने योग्य होती है।

जिन विशेष गाड़ियों को छोटे छोटे दूर दराज़ के रेल स्टेशनों पर रुकना पड़ता है और अनेकों मार्ग बदलने पड़ते हैं, उनमें विशेषता ही क्या रह जाती है ? इनमें लम्बी-लम्बी यात्राओं के समय, मुख्यकर जब गंतव्य स्थान बदलते रहते हैं ? प्रशासनिक सुविधायें भी नहीं मिल पाती हैं । जहाँ तक जल, सफ़ाई, बिजली का सम्बन्ध है, रेल गाड़ियों की अपनी सीमायें होती हैं और विशेष गाड़ियाँ प्रायः मालगाड़ियाँ बन जाती हैं। अजमेर-डिब्रूगढ़ और दीमापुर-कम्बटूर वाली गाड़ियों पर चलने का मेरा अपना अनुभव है।

**उज्ज्वल पक्ष** : विशेष गाड़ी कभी-कभी मनोरंजक स्थानों का दर्शन कराती है; परिचित तथा लुभावने जंक्शनों और स्टेशनों पर रुकती है, परिवारों से मिलाती है और सबसे बढ़कर, नित्य के नीरस सेवाभार से विश्राम दिलाती है। कुल मिलाकर, असुविधाओं के होने पर भी, विशेष गाड़ियाँ पूरी यूनिट के सभी सदस्यों को एक साथ ले जाने की सुविधायें प्रदान करती हैं।



**महानिदेशक श्री टंडन के कर कमलों से शतरंज की ट्राफी पाता हुआ वेंकटेश्वरन**

## अन्तरेंज शतरंज प्रतियोगिता में दिल्ली रेंज विजेता

दिल्ली में 17-22 मार्च 1980 को खेली गई दूसरी अन्तर्रेज शतरंज प्रतियोगिता में दिल्ली रेंज की टीम ने सिरमौर जीता। उसे 20.5 अंक मिले। पटना रेंज (14.5 अंक) II तथा आन्तरिक सुरक्षा अकादमी (14 अंक) III रही। कुल मिलाकर, 32 खिलाड़ियों ने

भाग लिया और स्विटज़रलैंड को लीग पद्धति पर, प्रतियोगिता खेली गयी। सर्वश्री ए० एन० वेंकटेश्वरन, एम० जे० इस्माइल ने सात-सात अंक पा कर क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान पाये तथा श्री अब्दुल अज़ीम (6.5 अंक) तृतीय रहे।

श्री श्रवण टंडन, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने पुरस्कार वितरित किये।

---

## राष्ट्रीय लक्ष्यभेदन

मार्च 1980 चण्डीगढ़ में हयी 23वीं राष्ट्रीय लक्ष्यभेदन प्रतियोगिता में के.रि. पु.बल के हे०का एल.बी.राई. ने स्वर्ण पदक जीता। इस प्रतियोगिता में प्रथम बार भाग लेने वाली टीम का नेतृत्व, के०प्र० केन्द्र I नीमच के डीवाई एस.पी. जे०एस० ढिल्लों ने किया था।

## हेड कांस्टेबल पुरस्कृत

हेड कांस्टेबल ए० वी० पद्मनाभन को (जो आजकल के० रि० पु० बल से सरदार बल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में डेपूटेशन पर हैं), 1979 वर्ष का सर्वोत्तम सहायक ड्रिल व्यायाम-प्रशिक्षक निर्णीत हुआ है। भारतीय पुलिस सेवा के परिवीक्षाधिकारियों के दीक्षान्त परेड के समय, तत्कालीन गृह मंत्री श्री वाई० वी० चाह्वाण ने उसे पुरस्कार दिया।

## आमंत्रण हॉकी

सतना (म० प्र०) में मार्च 80 में सम्पन्न हुये खेले गये अखिल भारतीय आमंत्रण हॉकी टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल की हॉकी टीम ने ट्राफी जीती।

## राजपत्रित अधिकारी की गोपनीय रिपोर्ट

कमांडैंट तथा अधीनस्थ अधिकारियों समेत राजपत्रित अधिकारियों की वार्षिक गोपनीय रिपोर्टें, भविष्य में अब परिचालक (आपरेशनल) पुलिस उपमहानिरीक्षक (डी० आई० जी०) द्वारा लिखी जायेंगी।

बटालियन कमांडैंट, फिर परिचालक (आपरेशनल) पुलिस उपमहानिरीक्षक और अन्त में परिचालक पुलिस महानिरीक्षक, यह इसकी पद्धति होगी। वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट का सूत्रपात, पुनरीक्षण, स्वीकृति तथा पंजीबद्धकरण, परिचालक पुलिस महानिरीक्षक या परिचालक उपमहानिरीक्षक के कार्यालय में होगा।

मौक़े पर मूल्यांकन करने के बाद, परिचालक पुलिस उपमहानिरीक्षक पुरस्कार प्रदान करेंगे; किन्तु परिचालक पुलिस उपमहानिरीक्षक के आदेशों को औपचारिक मंजूरी आदेशों का रूप देकर प्रशासनिक पुलिस उपमहानिरीक्षक सत्यांकित किया करेंगे ।

## यह भी खूब रही

**नन्हा बच्चा :** पिता जी, आप कहते हैं कि ईश्वर सब को एक ही नज़र से देखता है; तब क्या वह काना है ?

**सीता**—कुछ सुना तूने गीता, परीक्षा भवन में ही एक गुरु जी ने एक छात्रा से छेड़खानी शुरू कर दी।

**गीता**—क्यों नहीं करते ? आज कल गुरु थोड़े ही गुरु घंटाल होते हैं।

**राम :**चुनाव के बाद सत्तारूढ़ लोक दल लोकलदल मात्र रह गया और अब तो उसके कार्यकारी अध्यक्ष राजनारायण लोक दल न कह कर, लोभदल पुकार रहे हैं।

**रिंकू**—सिनेमा की हीरोइन के मुकाबले अफ़ीम की हीरोइन कुछ भी नहीं है।

**टिंकू**—सो कैसे ? हमने तो दोनों के ही सेवन से लोगों पर नशा चढ़ते देखा है।

**रिंकू**—पर भेद तो देखो। कहाँ अफीमी हीरोइन को तो खाने पर ही तरंगे पाती हैं; जबकि फ़िल्मी हीरोइन को देखते ही , तरंगें उठने लगती हैं।

**गीता**—भाई, आजकल हिन्दी व्याकरण की कैसी नासापीटी हो रही है ? भला पुष्पा काले लिखते हैं काली नहीं।

**भाई**—बिल्कुल ठीक, लिखते हैं 'झिंगुरानी बोले' भला रानी बोले कैसे, बोली हो सकती है।

**अध्यापक**—बान से क्या तेज है ?

**शिष्य**—जबान । जबरदस्त बान; एक बार बान का मारा बच सकता है, परन्तु जबान का मारा नहीं।

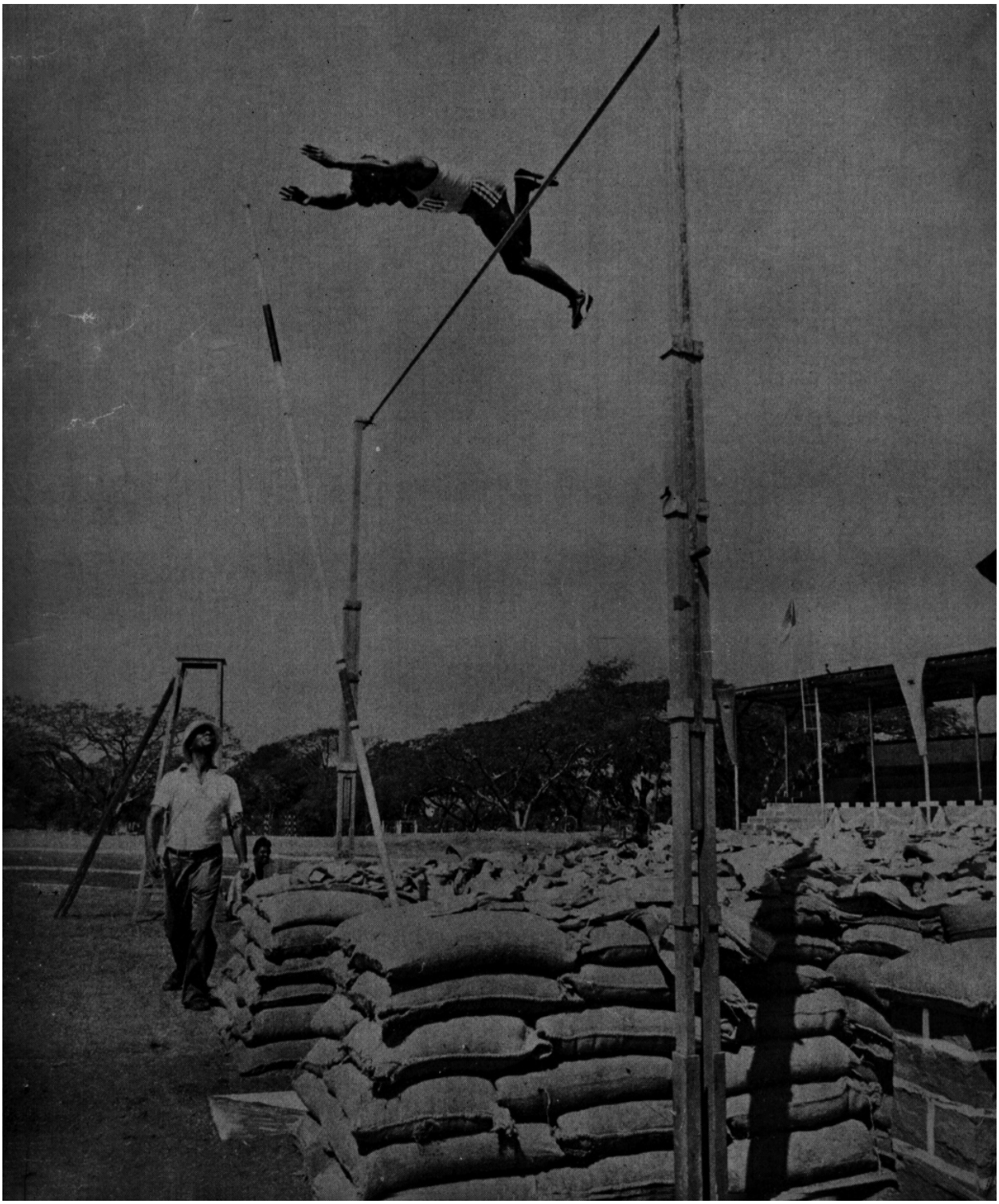
चांदनीचौक में एक दुकान पर बहुत बड़ा ताला लटकता देख कर, एक शायर, दुकानदार से बोले—'मियाँ यह ताला है कि अल्लाहताला।

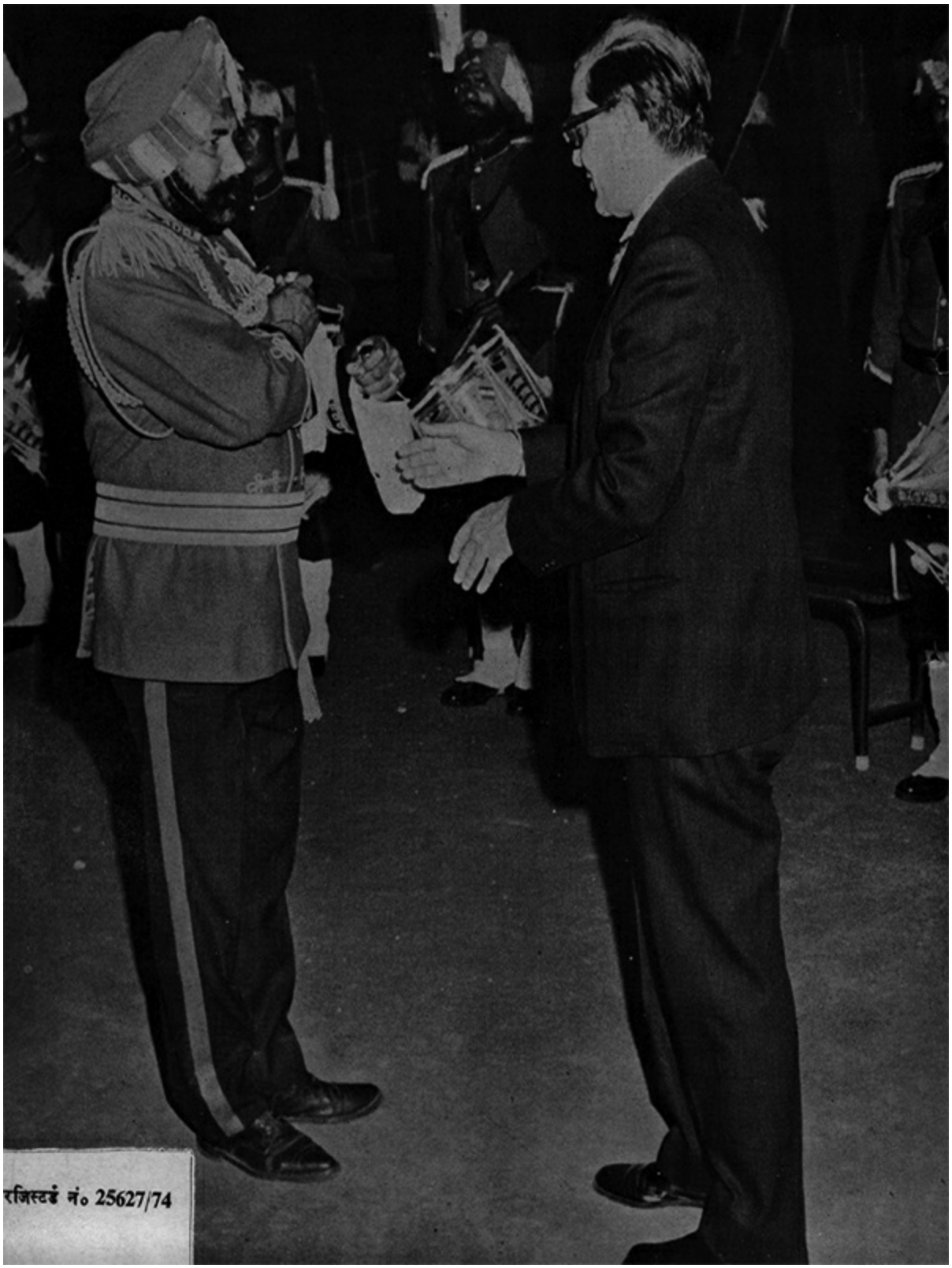
**विक्की**—विदेशी भारत को सोने की चिड़िया क्यों पुकारते हैं ?

**टिक्की**—क्योंकि भारतवासी चिड़ियों की भाँति चहचहाते तो बहुत हैं; पर काम करने के स्थान पर, रातदिन सोना ही सोना जानते हैं, फिर सोने की चिड़िया ही हुयी।

---

**सम्मुख पृष्ठ :** पोलवाल्ट में छलांग लगाता हुआ प्रेम चन्द





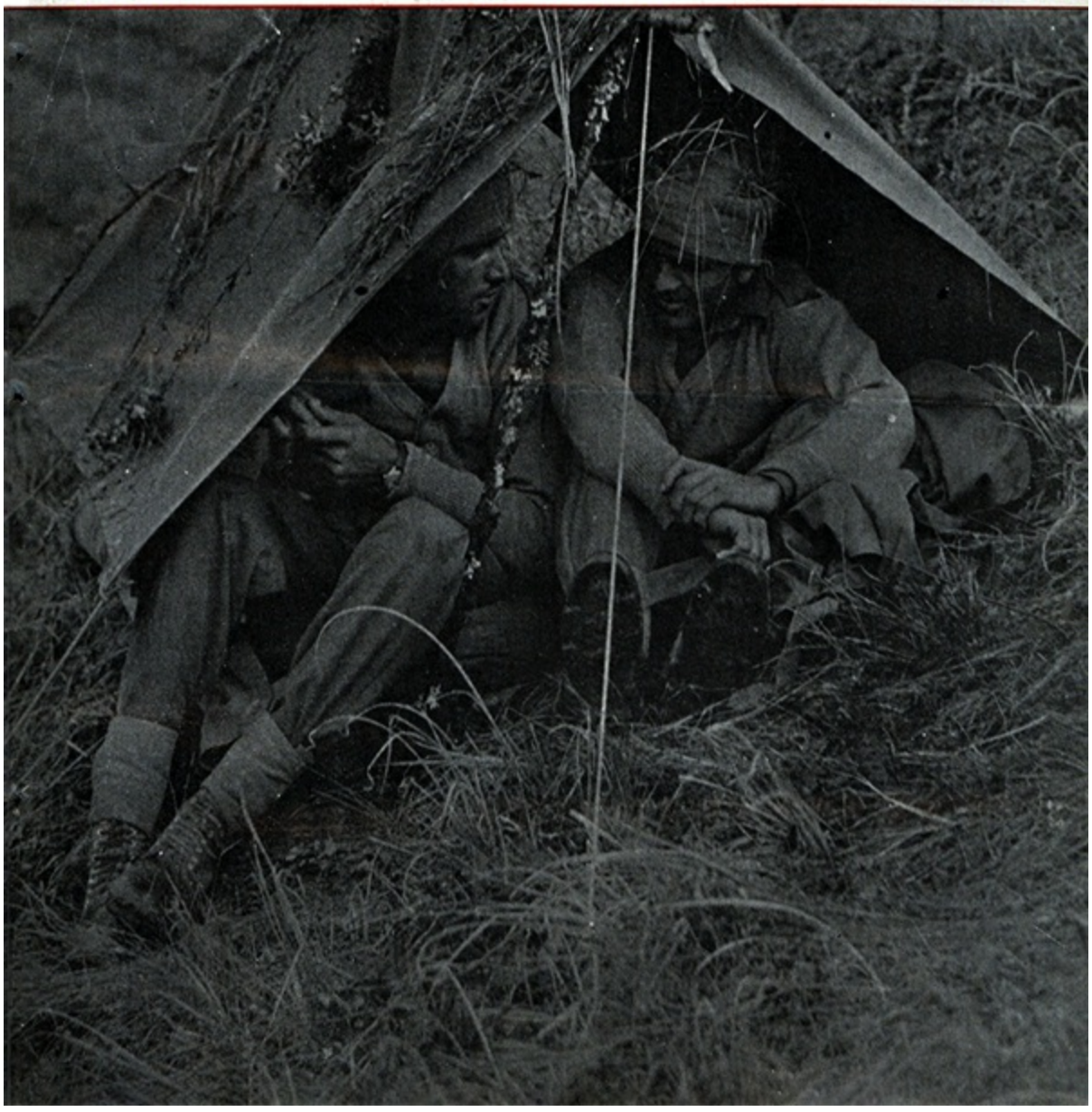
रजिस्टर्ड नं० 25627/74

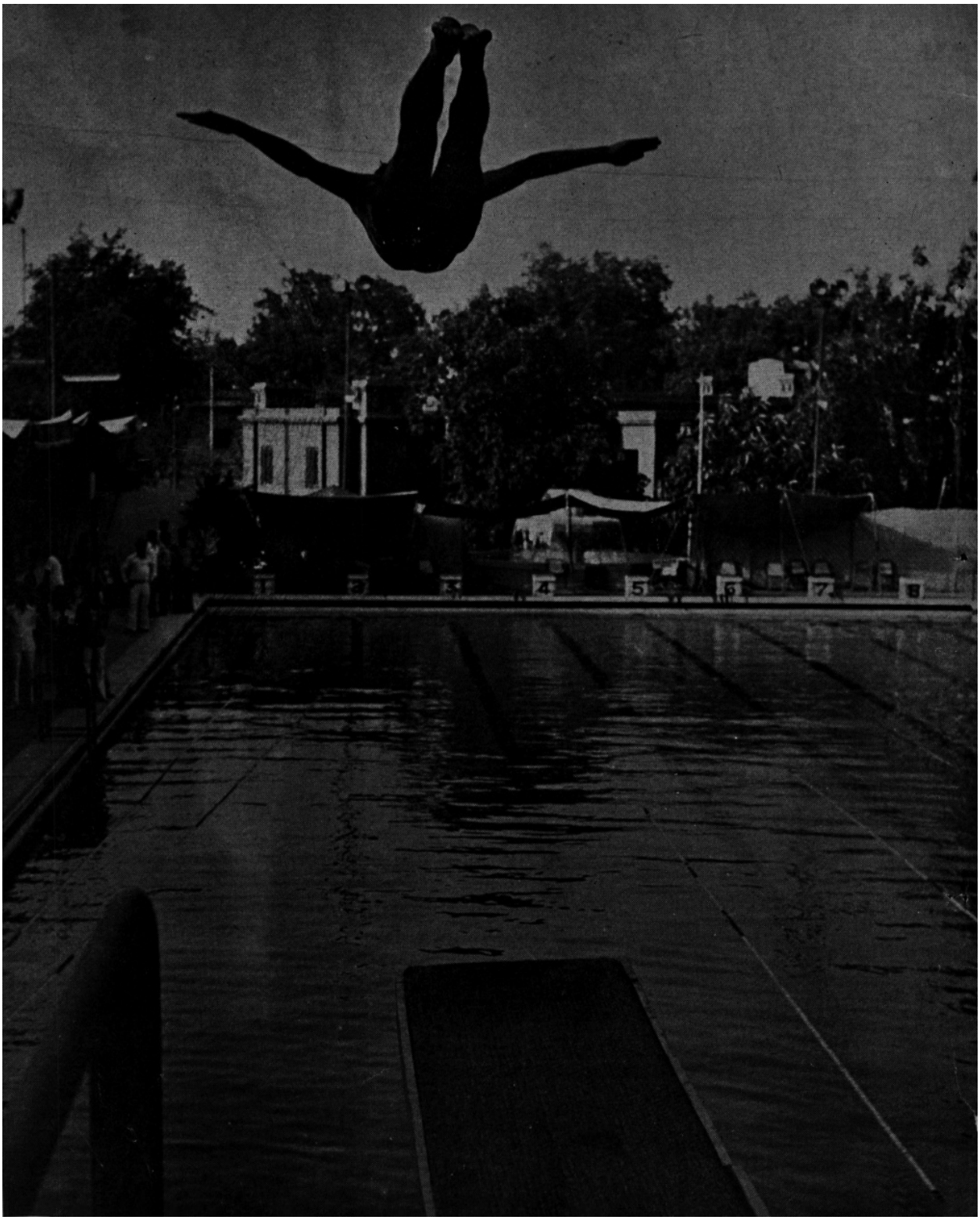
# ★ क्रैपलर ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

31 जुलाई, 1980] खण्ड IX, अंक 3 [9 श्रावण, 1902




4
5
6
7

# ★ कै पल र ★

**द्वैमासिक]**

**[हिन्दी संस्करण**

## केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र

तथा

## सचित्र पत्रिका



**खण्ड IX**

**अंक 3**

**31, जुलाई, 1980**

**9, श्रावण,, 1902**

मुख्य सम्पादक :

**एच० एस० सेठी**

हिन्दी सम्पादक :

**जे० एस० शर्मा**

**छायाचित्रकार : सतीश खन्ना**

---

**मुख पृष्ठ पर :**
अरुणाचल प्रदेश के विजन वन में कहीं के० रि० पु० बल के जवान।

**सम्मुख पृष्ठ पर :**
छलांग लगाता हुआ गोताखोर एम० एस० शेखावत।

**अन्तिम पृष्ठ :**
वाह्य चौकी पर नीरसता दूर करने को मनबहलाव।

---

**सम्पादकीय कार्यालय :**
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022।

**प्रकाशक**—महानिदेशक, के० रि० पु० दल ओर से एच० सेठी

**मुद्रक**—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072।

**क्रम संख्या**

**विषय**

**I. नये महानिदेशकः**—के० रि० पु० बल

**II. गौरव गाथा :**

**I. लेख :**

(क) आनन्द की कुन्जी, ले०—श्री पी० डी० शास्त्री

(ख) सविनय अवज्ञा और पुलिस, ले०—श्री के० एम० माथुर

(ग) वाह्य चौकी पर जीवन, ले०—श्री एच० एस० सेठी

**IV. कविता :**—परिवार नियोजन, रचयिता का० सुशील कुमार चौहान, 2 बटालियन

**V. कहानी :**—सबसे बड़ा तीर्थ, ले०—श्री एन० एस० गिल डीवाई० एस० पी० 42 बटालियन

**VI. क्रीडा क्षेत्रे :—**

(i) 14वीं अन्तर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता

(ii) 1979-80 में क्रीड़ा-क्रिया-कलाप ले०—श्री के० आर० के० प्रसाद

**VII. विज्ञान के चढ़ते चरण :—**

**VIII. स्वास्थ्य-सन्देश :**—परिवार नियोजन, ले०—सिपाही भारत सिंह, 50 बटालियन

**IX. विविध :**

(क) यह भी खूब रही

(ख) सूक्ति सुधा

(ग) पहेलियाँ प्रस्तोता—दफ्तरी गणेश प्रसाद, कार्यालय उप-महानिरीक्षक, श्रीनगर

**गौरव गाथा** :—

## बिहार अभियान में जवान जखमी

दिनांक 11 अप्रेल 1980 के तड़के ही, राजगिर के थानाध्यक्ष ने ललन बस्ती पर छापा मारने के लिये, 47 बटालियन (के० रि० पु० बल) की एक उस टुकड़ी को बुलाया, जो अवैधशस्त्रों का पता लगाने के लिये बिहार शरीफ़ के राजगिर ज़िले में निरत की गयी थी।

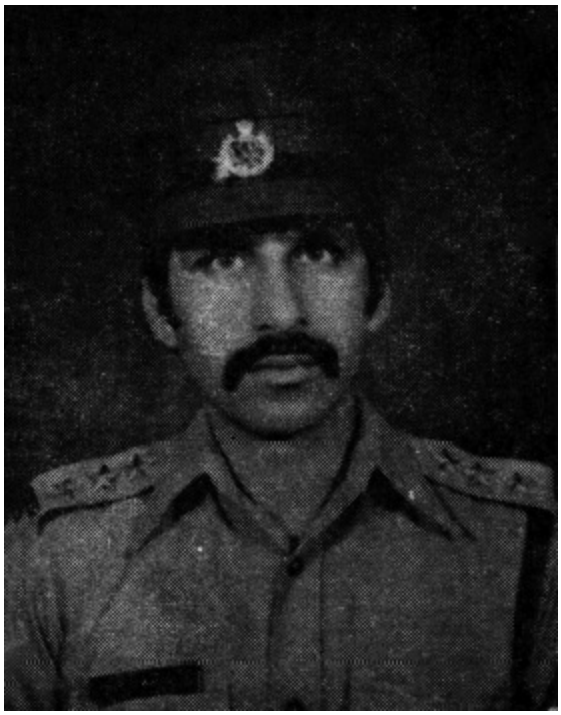
पुलिस दल में, स० इ० एस. पी. पांडेय के नेतृत्व में के० रि० पु० बल की एक प्लाटून, एक मजिस्ट्रेट तथा बिहार सैनिक (मिलीटरी) पुलिस का एक सेक्शन शामिल था।

के० रि० पु० बल को बस्ती घेर लेने को कहा गया। मजिस्ट्रेट के साथ नागरिक पुलिस ने अवैध शस्त्रों को घरों में खोजना प्रारंभ किया, जिससे क्षेत्र में हल्ला-गुल्ला मच गया। कुछ लोग के० रि० पु० बल के घेरे को तोड़ कर भागने का यत्न करने लगे। का० भुवनचन्द तिवारी की ओर एक देशीय बम फेंका गया, जिसके फटने से, वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। तर्जनी तथा अंगूठे को छोड़ कर, हाथ की सभी अँगुलियाँ जल गयीं, तथा जलते हुये बारूदी टुकड़ों से देह के और भी अंग जल गये। स० इ० पांडेय ने तुरन्त प्राथमिक चिकित्सा के लिये उसे अस्पताल भिजवाया। बड़ी गड़बड़ और हल्ले-गुल्ले के होते हुये भी, उस क्षेत्र से किसी को बच भागने नहीं दिया।

कुख्यात डाकू लल्लू राज़बर के सहित, 13 उपद्रवी इस कार्रवाई में पकड़े गये। बस्ती से आधा किलोग्राम तीक्ष्ण विस्फोटक भी प्राप्त हुआ।

## आग में कूद कर अफसर द्वारा एक परिवार को जीवन-दान

दिनांक 4 अप्रेल 1980 की रात को, एक भयंकर अग्नि के घोर रोर से बिहार में कृषि कॉलेज आरा का क्षेत्र गूँज उठा। उस कॉलेज में निरत 62 बटालियन (के० रि० पु० बल) की 'डी' कम्पनी के कमांडर श्री पी. जे. एस. वालिया ने वह शोर सुना, जब वह उस क्षेत्र की वाह्यचौकियों का रात्रि-निरीक्षण करने जा रहे थे। वह अपनी सुरक्षा टुकड़ी के साथ दौड़े-दौड़े होमगार्ड शिविर के पास आये। डॉ० अनिल कुमार सिन्हा के घर के सामने उन्होंने एक भीड़ खड़ी देखी। उस घर से धुआँ और लपटें उठ रही थीं। फर्श पर खिड़कियाँ और दरवाजे तितर-बितर पड़े थे।



पूछने पर, यह पता लगा कि घर में गैस-सिलेंडर फट गया है। श्री वालिया ने -घर के अन्दर से चीखें सुनीं। अपने प्राणों की बिल्कुल चिन्ता किये बिना, वह लपटों में कूद पड़े और रेफ्रीजेरेटर के पीछे फँसे डॉ० अनिल कुमार सिन्हा तथा उनकी नौकरानी को निकाल लाये । वह फिर जलते हुये घर में घुसे और डॉ० सिन्हा की दस बर्षीय पुत्री को बेसुध-अवस्था में निकाल लाये। उन्होंने उन सब को सिविल अस्पताल में भेजने का प्रबन्ध किया। डॉ० अनिल कुमार सिन्हा तो गम्भीर रूप से जलने के कारण प्राण गवाँ बैठे; पर अन्य बच गये।

श्री वालिया तीसरी बार घर में घुसे और लगभग 20 ग़ज़ रिंगे तथा रसोई घर में पहुच गये, जहाँ गैस-सिलेंडर रखा था। वह रिंगते रहे और सिलेंडर को खिसकाते हुये बाहर ले आये।

श्री वालिया की बाहें तथा कुछ बाल भी जल गये।

इस जन-सेवा के लिये, आरा में एक आम सभा में उनका अभिनन्दन हुआ। श्री अशोक कुमार, जिला मजिस्ट्रेट तथा श्री टी० पी० सिन्हा, पुलिसाधीक्षक, भोजपुर ने उनके अनुकरणीय साहस की सराहना की।

## जवानों की योगक्षेम

रोंगों तथा प्राकृतिक संकटों के समय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों को आर्थिक सहायता देने के लिये "संकट कोष" स्थापित किया गया है। सभी 17 ग्रुप केन्द्रों में, केन्द्रीय विद्यालयों को खोलने का भी सुझाव है।

## रेडक्रास सोसाइटी से प्रशस्ति पत्र

राज निवास दिल्ली में 11 जून 1980 को भारतीय रेडक्रास सोसाइटी की वार्षिक आम सभा में, उपराज्यपाल श्री जगमोहन ने निर्धनों को 1,600 कम्बल दान करने के उपलक्ष्य में, कमांडेंट, ग्रुपकेन्द्र झड़ौदा कलाँ, के० रि० पु० बल को एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

## विधान सभाओं के चुनाव में हमारी सराहना

विगत 28 से 31 मई तक नौ राज्य विधान सभाओं में मतदान हुआ। निर्वाचन के समय तथा उपरान्त न्याय-व्यवस्था के उत्तरदायित्व को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अत्युत्तम प्रकार से निबाहा। इन राज्यों में वर्तमान निरत बल के अतिरिक्त, 95 अधिक कम्पनियाँ भेजी गईं। ग्रुप केन्द्रों तथा प्रशिक्षण संस्थानों से जवानों को निकाल कर तदर्थ कम्पनियां और बटालियनें गठित की गईं।

राज्यों में इस चुनाव के समय के० रि० पु० बल के योगदान की प्रशंसा-क्या राज्य सरकारें, क्या जनता और क्या समाचारपत्र—सभी ने की है।

## इम्फाल में उग्रपंथियों से मुठभेड़

इम्फाल से 20 कि० मी० दूर स्थित स्गोलमंग ग्राम में, 5 बटालियन, के० रि० पु० बल की एक अग्रिम टूकड़ी, 16 मई 1980 को, 4 असम रायफल को सेवाभार से मुक्त करने जा रही थी। सहसा, उसका आमना-सामना, उग्रपंथियों की एक जीप से इम्फाल में 15 कि०मी० दूर हिकाकमापाल ग्राम के निकट हो गया। जब के०रि०पु० बल के डीवाई. एस. पी. कृष्णमूर्त्ति तथा अन्य जवान जोंगा से उतर रहे थे, उग्रपंथियों की वह जीप सहसा रुकी और के०रि०पु० बल के जवानों पर गोलियाँ चलाईं। उत्तर में के०रि०पु० बल के जवानों को भी गोली चलानी पड़ी, जिनसे जीप का ड्राइवर और एक अन्य उग्रपंथी मारा गया।"

उसी समय, थल सेना की एक टोह-टुकड़ी निकट आई और उग्रपंथियों से मुठ भेड़ में, एक अन्य उग्रपंथी को उसने भी मार गिराया। जीप में से, दो .303 रायफलें, 76 गोले, दो हथगोले तथा साम्यवादी साहित्य प्राप्त हुआ।

## कुख्यात डाकू का वध

दिनांक 18 अप्रेल 1980 को, नवगाँव ग्राम में 53 बटालियन के जवानों ने एक मुठभेड़ में बिहार के कुख्यात डाकू तथा तस्कर व्यापारी कामदेव को मौत के घाट उतार दिया, जो पिछले बीस वर्षों से पकड़ में नहीं आ रहा था और जिसके सिर पर पैंसठ हजार रुपये का नकद पुरस्कार था। उसके गिरोह के नौ दूसरे साथी भी पकड़े गये। डाकू, तस्कर-व्यापारी तथा जेल से भगोड़े होने के 19 अभियोगों में, कामदेव सिंह फँसा हुआ था।

इस कार्रवाई करने के लिये, देश के सभी समाचार पत्रों ने के०रि०पु० बल की सराहना की। **"इन्डिया टूडे"** के ये कुछ अंश उद्धृत हैं—जब 18 अप्रेल को पटना

के लाल ईंटों वाले पुलिस मुख्यालय में यह बेतार पुलिस-सन्देश सुना गया, तब विश्वास नहीं हुआ—"नवगांव में के० रि० पु० बल की कृतिक टुकड़ी द्वारा कामदेव की घात लगाई गई और गोली से भून दिया गया।" इस छोटे से वाक्य के साथ, उस कामदेव का अन्त हो गया, जो कथित हत्यारा था, तस्कर व्यापारी था तथा साम्यवाद विरोधी था, जिसके सिर पर कई पुरस्कार थे, जो कुछ को आतंक तथा दूसरों को अन्त समय का राबिन हुड (उदार डाकू) था तथा पिछले दो दशकों में, एक आख्यान सा बन गया था। ऐसे सरदार के चले जाने पर, पुलिस अधिकारियों को विश्वास है कि उसके पचास वीरबांकुरे भी तुरन्त विघटित हो जायेंगे।

## अकेले जवान ने उग्रपंथी खदेड़े

ग्रप केन्द्र इम्फाल के परिसर के बाहर, 26 अप्रेल 1980 को उग्रवादियों द्वारा लगाई घात में, वहाँ के परिवारों को जल-वितरण करते समय, टंकी वाहन के संरक्षक दल के तीन जवान मारे गये। उग्रवादियों ने उस वाहन के नित्य का निश्चय क्रम ताड़ रखा था। जैसे ही जल वितरित हो चुका, उन्होंने दुकानों के पास से स्वचालित शस्त्रों से धावा बोल दिया। निकट में ही, एक जीप उनके बच भागने के लिए खड़ी थी।

हे० का० एस. एन. राजे और का० आर. ए. हज़ारिका, घटना स्थल पर ही मर गये। का० नूर मुहम्मद बुरी भाँति घायल हुआ और अस्पताल में भर्ती करने पर भी, उसी दिन मर गया। निहत्था का० बाल बहादुर भी गम्भीर रूप से जख्मी हुआ । पांचवां जवान का० बद्रूहमान भी मौत के घाट उतार दिया गया होता, यदि के० रि० पु० बल का ट्रक अचानक वहाँ न पहुँच गया होता । ट्रक को देखते ही, हत्यारों का मनोबल खत्म हो गया और पास में खड़ी जीप की ओर भागे। प्राणों की बिल्कुल चिन्ता किए बिना तथा अन्य लोगों को साथ में लेने की प्रतीक्षा किए बग़ैर, का० बद्रू रहमान ने जीप का पीछा कर गोलियां बरसाना शुरू कर दीं तथा उत्तम कर्त्तव्यनिष्ठा दिखाई।

जीप में कुछ खराबी हो गई और हत्यारों को उसे छोड़ना पड़ा। कुछ पटसोई के निकटवर्ती ग्राम की ओर भाग गये, तथा दूसरे खुले खेतों की ओर दौड़े । का० रहमान

ने भी उनका पीछा किया और एक हत्यारे को भून दिया। तब तक ग्रुप केन्द्र इम्फाल से और जनशक्ति आ पहुँची तथा पटसोई ग्राम को घेर लिया गया। दोनों तरफ से गोलियां चलीं और दो हत्यारे और मारे गये। उग्रवादी ग्राम की एक गहणी को मार डालने में सफल हुए।

मणिपुर सरकार ने स्वर्गीय हे० का० एस. एन. राजे, का० हज़ारिका तथा का० नूर मुहम्मद को दस-दस हजार रुपये तथा उनके निकटतम सम्बन्धियों को सात-सात हज़ार रुपये स्वीकार किये हैं।

## जवानों द्वारा बदमाश बन्दी

आसंसोल में 15 अप्रेल 1980 को, 13 बटालियन (के० रि० पु० बल) के ना० एस. टी. पिल्लै और का० जगराम ने एक बदमाश से एक देशीय पिस्तौल और एक गोला

प्राप्त किया। उस बदमाश ने आसंसोल में कालीफन पर स्थित कोयले की एक खान के निकट, एक ट्रक रोक लिया। सूचना पाते ही, के०रि०पु० बल की एक टुकड़ी के साथ आसंसोल का थानाध्यक्ष घटना स्थल पर जा पहुँचा और ट्रक को घेर लिया। ना० एस. टी. पिल्ले तथा का० जगराम ने उस बदमाश धर दबोचा।

## सेलेक्शन (प्रवरण) ग्रेड दफ्तरी

भारत सरकार ने दफ्तरी के 18 प्रवरण कोटि (सेलेक्शन ग्रेड) वाले पद स्वीकार किये हैं। ये पद वर्तमान स्वीकृत पदों में से हैं। प्रवरण कोटि का वेतनमान यह होगा—रु0 210-4-250-दक्षता रोक-5-270.

## अग्निशमन

दिनांक 20 मार्च 1980 को, बर्धमान (प० बंगाल) के डांगपुर वाले घने क्षेत्र में एक घर की छत पर आग लग गई, जहाँ भूसा भारी मात्रा में इकट्ठा किया हुआ था। 13 बटालियन (के०रि०पु० बल) के डीवाई० एस० पी० बी. एस. चौहान अपने 50 जवानों के साथ घटनास्थल पर जा धाये और उन्होंने बचाव-कार्य शुरू कर दिया। स्थानीय लोगों ने भी अनुकरण किया। के० रि० पु० बल के जवानों के सामयिक हस्तक्षेप से, हजारों रुपयों की सम्पत्ति बच गई।

# ★साक्ष्यांकन परेड★

तीसरी साक्ष्यांकन परेड 11 अप्रेल 1980 को रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र I, के० रि० पु० बल बड़वाहा (म०प्र०) में आयोजित हुई। उन 81 रंगरूटों को साक्ष्यांकित किया गया, जिन्होंने 40 सप्ताह का मौलिक प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया था। पाइप (बीन) बैंड की धुन पर चलते हुये दो प्लाटूनों ने झण्डों की अनुरक्षा की।

मुख्य अतिथि, श्री के. एस. बाजपेयी, उपमहानिरीक्षक, नीमच ने सलामी ली और परेड का निरीक्षण किया । तत्पश्चात्, साक्ष्यांकन टुकड़ियों ने अन्दर को मुख किये पंक्तियाँ बनायीं। अपने अपने धर्मगुरुओं ने सेवा-भक्ति की शपथ उनसे दिलायी। उसके उपरान्त, राष्ट्रीय झण्डे का स्पर्शन और अभिवादन किया गया । हर जवान के सम्मुख के०रि०पु० बल की ध्वजा धीमे-धीमे चली।

सारी परेड ने तब शस्त्र प्रस्तुत किये और वादकों ने राष्ट्रीय गान बजाया। मंच के आगे चलती हुयी परेड का निरीक्षण मुख्य अतिथि ने किया। सभी ने परेड की मार्च पास्ट तथा चुस्त-प्रदर्शन की प्रशंसा की।

नये सिपाहियों को सम्बोधित करते हुये, श्री बाजपेयी ने उनको शपथ ग्रहण करने का महत्व समझाया। उन्होंने अनुशासन पर विशेष बल दिया तथा समाज के कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति और सहायता करने की मंत्रणा दी।

स्थानीय समाचारपत्रों में इस परेड का विस्तृत वर्णन छपा तथा 12 अप्रैल 1980 को अपने 'युवा-वारणी' कार्यक्रम में, आकाशवाणी ने इस समारोह के विषय ने पन्द्रह

मिनट का फ़ीचर प्रसारित किया।

# केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के नये कर्णधार—श्री बीरबल नाथ



श्री बीरबल नाथ, महानिरीक्षक, सीमा सुरक्षा बल (जालन्धर) ने 12 मई 1980 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक का पदभार संभाला। जैसा विदित ही है, श्री श्रवण टण्डन, महानिदेशक, सी०सु० बल इस अधिक कार्यभार को संभाले हुये थे।

श्री नाथ ने तस्कर-व्यापारी तथा अन्तः सीमा अपराधों के रोकने में अत्यन्त ख्याति पायी है। विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के उपलक्ष्य में, आपको अलग-अलग पुलिस पदक प्राप्त हुये हैं।

17 मई 80 को, महानिदेशालय के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुये, आपने इस बात पर बल दिया कि महानिदेशालय अधिकारियों को, क्षेत्र में निरत जवानों की सहायता करनी चाहिये। उनके कामों से ही हमें गौरव मिलता है।

के० रि० पु० बल को क्षेत्रीय दौडधूप में और भी अधिक कारग़र और संतुष्ट बनाने के लिए, आपने अधिकारियों को ध्यान देने की मंत्रणा दी । इसके लिए आपने बताया कि वरिष्ठ अधिकारियों को यह देखना उनका कर्त्तव्य है कि के०रि०पु० बल के जवान

सार्थक भूमिका निबाहें तथा उसको सुचारु रूप से निभाने के लिए, उन पर साधन हों। जहाँ कहीं भी कुछ गड़बड़ी हो, वहाँ उसकी ठीक जाँच पड़ताल करनी होगी तथा अधिकारियों को सम्मिलित कार्य के रूप में, काम करना होगा।

आपने के०रि०पु० बल को प्रशंसनीय असामान्य बल बताया, जो समय की परख पर खरा उतरा है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की सभी यूनिटों को अपने सन्देश में, श्री बीरबल नाथ महानिदेशक, ने यह परामर्श दिया है कि हम सब को देश की, उसके कमजोर वर्गों की तथा सभी न्याय-निष्ठ नागरिकों की सेवाओं में स्वयं को फिर से समर्पित करना होगा। आपका सन्देश निम्नलिखित है :—

"वीर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अध्यक्ष का उत्तरदायित्व संभालने पर, मैं इस बल के उन शहीदों को प्रणाम करता हूँ जो अब हमारे बीच में नहीं हैं तथा अपने सहयोगी-मित्रों का अभिवादन करता हूँ।

"समर्पण की भावना से, मैं आपकी तथा देश की भरसक सेवा करने की आकांक्षा करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि इस प्रख्यात बल के पाप सब, मुझे आवश्यक समर्थन देंगे, जिससे हम सब मिल कर सभी कठिनाइयों को दूर कर सकेंगे और सफलता की नई ऊँचाइयों को पार कर सकें।

"क्या मैं यह भी अनुरोध कर सकता हूँ कि एक बार फिर देश की, उसके कमजोर वर्गों की तथा सभी न्याय-निष्ठ नागरिकों की सेवा में हमें स्वंय को समर्पित करना चाहिये ?"

---

## ऑलिम्पिक्स के लिये हरीचन्द मनोनीत

डीवाई० एस०पी० हरीचन्द, मास्को में होने वाले ओलिम्पिक खेलों में, भारत का प्रतिनिधित्व 10,000 मी० दौड़ में करेंगे। 19 मई 1980 को पटियाला में हुये अपने चयन-परीक्षण में एशियाई स्वर्ण पदक विजेता हरीचन्द ने अपने एशियाई रिकार्ड (30 मि० 07.7 से०) को 29 मि० 42.5 से० से सुधारा; किन्तु मास्को में वह सफलता नहीं पा सके ।

### पूर्व ओलिम्पिक शिविर में के० रि० पु० बल का मल्लयोधा

मास्को में आगामी ओलिम्पक खेलों में भाग लेने के लिये, पटियाला में आयोजित शिक्षण शिविर में, दंगली-शिक्षण प्राप्त करने के लिये, हे० का० कुलदीपसिंह, के० प्र० कॉलेज II, आवडी मनोनीत हुआ है।

**प्रेमी**—मैंने तुम्हें प्रेमपत्र बड़ी मेहनत से लिखे थे। यदि तुम मुझ से प्रेम नहीं करती हो, तब उन्हें वापस कर दो, ताकि मैं किसी अन्य प्रेमिका के प्रति, काम उन्हें में ला सकूँ ।

## श्री कन्हैया लाल सेवामुक्त

श्री कन्हैयालाल, संयुक्त सहायक निदेशक (वेतन व लेखा इकाई) 31 मई 1980 को सेवा से निवृत्त हो गये। आपने 1943 के० रि० पु० बल में, निम्न श्रेणी लिपिक के रूप से सेवा प्रारंभ की थी। 1976 में, आप वर्त्तमान पद पर नियुक्त हुये थे।

आपके विदाई-समारोह में, श्री बीरबल नाथ, महानिदेशक (के० रि० पु० बल) ने भाग लिया।



# आनन्द की कुञ्जी

### ले०—श्री पी० डी० शास्त्री

सिकन्दर महान् के साथ आये हुये एक इतिहासकार ने कहा था कि विभिन्न देशों में जितने भी मनुष्य उसने देखे थे, उनमें सर्वाधिक सुखी और सन्तुष्ट भारतवासी थे।

यद्यपि भोजन, वस्त्र तथा आवास के सम्बन्ध में मनुष्यों की स्थिति दयनीय थी; किन्तु हमारा ध्येय राम राज्य है; क्योंकि बड़ी-बड़ी मशीनों के प्रयोग से पूर्व वस्तु

अभाव तथा निधनता के स्तर पर, संसार ने स्वयं को दृढ़ कर लिया था। ब्रिटेश-दासता के समय तक में, जब हम दुर्दिन भोग रहे थे, तब भी भारत के ज्ञान और आनन्द के विषय में सीखने, पच्छिमी लोग आते थे। आजकल गुरुओं को भारत से भेजने का व्यापार बहुत चमक रहा है। हमारे गुरुओं, सन्यासियों और धार्मिक वर्गों के नेताओं के 'आश्रमों' पर मानसिक शान्ति तथा सुख की खोज में भटके हये पाश्चात्यों की भीड़ें लगी रहती हैं।

हमारे वेद कहते हैं—और स्वामी दयानन्द ने इस बात पर बल दिया है—कि संसार में दु:ख की तुलना में सुख अधिक है। सर्वप्राणियों में श्रेष्ठ—मानव जीवन पाने के लिये हमें कृत्कृत्य होना चाहिये । हमारे ऋषियों ने हमें यही शिक्षा दी है कि हमें सभी प्राप्त उत्तमताओं के लिये नित्य प्रभु को धन्यवाद देना चाहिये और उत्तरोत्तर ऊँचा उठने का भरसक प्रयत्न करना चाहिये; किन्तु हम ठीक इसके विपरीत काम करते हैं। हम दैवीय कृपाओं को तो ग्रहण कर लेते हैं, पर यह शिकायत करते हैं कि एक नाकारा साथी ऊँचा पद भोग रहा है या वरिष्ठता उल्लंधित की गई है। स्वयं को अन्याय की बलि, प्रकृति की अभागी सन्तान या योग्यता से कम वेतन पाने वाले व्यक्ति दर्शाने की हमारी इच्छा रहती है—एक शब्द में, आत्मकरुणा में दु:खार्त्त तथा दूसरों की सम्वेदना के इच्छुक दयनीय प्राणी, हम स्वयं को समझते हैं और इस प्रकार से कुछ भी हम नहीं प्राप्त कर पाते हैं।

आत्म-सन्तुष्टि से भरपूर तथा अन्धेरे कमरे में ज्योति-पुंज सा हँसता हुआ मनुष्य, स्वागत पाता है। जबकि शिकायत करने वाले रोते-झींकते मनुष्य से प्लेग की भाँति सब बचते हैं। गीता बताती है कि महाभारत में खूनी संग्राम के लिये सन्नद्ध सेनाओं के मध्य, भगवान कृष्ण हँस-हँस कर वार्तालाप करते रहे।

हमारे मुनियों ने कहा है कि परिस्थितियों के स्थान पर हमारा मन ही है, जो हमारे जीवन को दु:खपूर्ण अथवा आनन्दमय बनाता है। (अंग्रेजी कवि) मिल्टन ने ऐसा ही कहा है :

मन अपने ही लोक में, तथा स्वयं ही आय।
स्वर्ग बनावे नरक को, यमपुर, देवनिकाय ॥

अमरीकी उपन्यासकार स्विन्टरटन अपनी युवावस्था के प्रारम्भ में भूखों मरता था, (कितने ही दिनों उसके परिवार को भोजन नहीं मिल पाता था); तब भी वह लिखता है कि वे हँसखेलकर अपना जीवन खुशी से बिताते थे। हमारी खुशी इस बात पर निर्भर नहीं करती है कि कैसी परिस्थितियाँ हैं; किन्तु इस पर आधारित रहती है कि हमारे मन की उनके प्रति क्या प्रतिक्रिया होती है या यह किस प्रकार उनको ग्रहण करता है।

अपने नाटक 'शकुन्तला' में, कालिदास ने लिखा है कि वह वनश्री की अप्सरा-कन्या इस समय उत्सव मनाती थी, जब उसकी उगायी हुई तरुलतिकायें फल-फूलों से लद जाती थीं। बिना एक पैसा खर्च किये भी, संसार की बड़ी से बड़ी खुशियाँ मिल सकती हैं—ऐसी प्रसन्नता मिलती है, फूलों के, किल्लोल करती सरिताओं के, सुरम्य

सूर्योदय तथा सूर्यास्त के मनभावन दृश्यों से (जवाहरलाल नेहरू जेल से छूटने पर अल्मोड़ा की पर्वतमालाओं पर सूर्योदय देखने गये, जिसकी याद उन्हें जेल में सताती रहती थी), हरी-हरी घास से तथा प्रभु और प्रकृति की समस्त सजधज से।

नैसर्गिक जीवन का अर्थ आनन्द है। प्रकृति का नियंत्रण, सेना के कठोर से कठोर अनुशास्ता की कल्पनाशक्ति से, बाहर है—करोड़ों प्रकाश वर्षों की अपनी यात्रा में, हमारी पृथ्वी समेत तारे-नक्षत्र नियम से एक क्षण भी तो नहीं हटे हैं। अनुशासन को दुःखदायी समझ कर, हम दुःख को निमंत्रण देते हैं और प्रायः उससे आँख-मिचौनी खेल कर चतुरता दिखाने में अपनी स्वतंत्रता की डींग हाँकते हैं। ट्रेड यूनियनों के कुछ नेता अपने स्वामी को पदेन पिशाच बताकर प्रचार करते हैं।

अतएव हमारे मनीषियों ने यथार्थवादी होने का उपाय बताया। ईश्वर सबसे बड़ी सच्चाई है और जो ईश्वर के नाम का प्रार्थी है, वह जीवन के घोर संघर्षों में भी, सबसे सुखी व्यक्ति है। हमारे ऋषि-मुनि तक भी विकट संकटों तथा मृत्यु के चंगुल से नहीं बच पाये। जैसा गुरु नानक ने कहा है, "नानक दुखिया, सब संसारा। वह सुखिया, जिसके नाम अधारा।"

किन्तु हमें इस सच्चाई को जीवन के नित्य-कर्मों में उतारनी चाहिये। कोई मनुष्य अपनी पत्नी या पुत्र को नाकारा बताता रहता है; किन्तु यदि वह उनके अच्छे और बुरे गुणों की तालिका बनावे, तब वह यह देख कर चकित रह जायेगा कि उत्तम गुणों की भरमार ही उनमें है। जब हम सारे संसार को बुरा बताते हैं, तब हम स्वयं को अपवाद स्वरूप उस विश्व-व्यापी तथ्य से अलग समझते हैं। आदमी बुरा वह है, जिसे हम नहीं जानते। किसी अनजाने व्यक्ति को निकट से जानने के अर्थ, उसमें सद्गुण खोजने हैं।

आनन्द के लिए भारतीय मापदंड विश्वव्यापी हैं। उदाहरणार्थ, विवाह या सन्तानोत्पत्ति सबसे अधिक सुखद घटना थी, जिसमें बिना धन व्यय किये अनेकों बधाइयाँ, वृन्दगान और हर्षोल्लास होता था। क्योंकि हर परिवार में ऐसे सुखद अवसर होते थे; प्रसन्नता सारे समाज में छा जाती थी। अब हमने अपनी मनोवृत्ति बिगाड़ ली है, हम सोचते हैं कि धन से सुख खरीदा जा सकता है।

अत्यधिक व्यस्त व्यक्ति सुखी है; शोच-चिन्ता का, रुग्ण होने का, प्रत्युत यह अनुभव करने तक का उस पर समय नहीं कि वह सुखी है। प्रकृति में अविराम गति से क्रियाशीलता है; पृथ्वी दो प्रकार से घूम रही है; सूर्य-चन्द्र चल रहे हैं; सारा सौर मंडल घूम रहा है; हमारे सोने पर भी, हमारी नसें चलती रहती हैं, हमारा हृदय चलता रहता है; हमारा रक्त चलता रहता है। कार्य और क्रियाशीलता प्रकृति का नियम है; आलस्य, विराम और कामचोरी अत्यधिक अस्वाभाविक है तथा उदासी और मृत्यु लाती है। तभी तो हमारे ऋषिमुनियों ने कहा है "संसार स्वर्ग के समान अच्छा है; इसको देखने को काला-चश्मा मत चढ़ाओ।"

# सविनय अवज्ञा और पुलिस

## ले०—श्री कृष्ण मोहन माथुर

सविनय अवज्ञा का आशय किसी मनुष्य द्वारा किसी ऐसे क़ानून के पालन करने की अस्वीकृति से है, जिसे वह नीति विरुद्ध, असम्वैधानिक तथा भ्रष्ट मानता है। ऐसे ग़ैर क़ानूनी कामों में सामूहिक जनसहयोग को सविनय अवज्ञा पुकारा जाता है।

**महात्मा गांधी** ने भारत के लिये आज़ादी की लड़ाई में सविनय अवज्ञा को सफलता का साधन बनाया। **मार्टिन लूथर** जूनियर (कनिष्ठ) ने सविनय अवज्ञा का प्रयोग किया और उसको ऐसा विकसित किया कि सामाजिक परिवर्तन के लिये शक्तिशाली दबाव के अत्यन्त प्रभावी तकनीक के रूप में बह उभर कर आया।

"सविनय अवज्ञा की शायद सर्वोचित परिभाषायों की जा सकती हैं कि तथाकथित शिकायतों को दूर करने के उद्देश्य से, मनुष्यों के अपेक्षाकृत समशील या समविचार वाले वर्गों द्वारा अपनाये हुये एक अतीव अहिंसात्मक शान्तिमय ढंग से एक ग़ैर-क़ानून आचरण की कार्यविधि है।" महात्मा गांधी ने इस विचारधारा को इस प्रकार स्पष्ट किया है—"सविनय अवज्ञा के सर्वप्रबल अर्थ हैं—किसी अकेले निरस्त्र पुलिस कर्मी के सम्मुख आत्मसमर्पण की हमारी भावना। बूचड़खाने में मेमनों की भाँति, जेलखानों में सहस्रों की संख्या में हमारे जाने में हमारी सफलता है (मो० क० गाँधी—अहिंसा आन्दोलन-1961)

सरकार को बलपूर्वक उलटने या उसके नियंत्रण को छीनने के अर्थ सविनय अवज्ञा नहीं है और ना ही इसके मायने हैं। जनता के किसी अंग को कुछ स्वायत्तता दिलाने के लिये सरकार को बाध्य करने के वास्ते हिंसा का प्रयोग; किन्तु एक विशेष क़ानून की अवहेलना करने के लिये उन मनुष्यों द्वारा अपनाई गई मूलतः अहिंसात्मक विरोध विधि है, जो उस क़ानून भंग करने में किसी भी दंड को निर्विरोध सहने को तैयार रहते हैं।

**दर्शन**—लेखक जे.एल ली. ग्राण्डे ने इन मौलिक नीतियों में अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दर्शन का सार यों भरा है—"(1) सरकारी क़ानून तथा सामाजिक रीति-रिवाज भ्रष्ट हो सकते हैं (2) हरेक मनुष्य को उनके नैतिक औचित्य को स्थापित करने के लिये उनके मूल्यांकन करने का कर्त्तव्य और अधिकार है (3) क़ानूनों तथा व्यवहारों को भ्रष्ट तथा अनुचित मान लेने पर, उनके आरोपण के विरोध करने को कोई भी मनुष्य नैतिक रूप से बाध्य हो जाता है (4) जब परम्परागत क़ानूनी उपचार क़ारगर सिद्ध नहीं होते हैं या निश्शक्त दीखते हैं, तब समाज के सम्मुख अन्याय को प्रदर्शित करने के लिये, मनुष्य नाफरमाँबरदारी का रुख अख्त्यार करता है (5) अवज्ञा या नाफरमाँबरदारी सार्वजनिक तथा अहिंसात्मक होनी चाहिए (6) अपने कार्यों के फलस्वरूप क़ानूनी दण्ड या सामाजिक नुक़्ताचीनियों को स्वीकार करने के लिये, मनुष्य को तैयार रहना चाहिए।"

सांवेनय अवज्ञा, अराजकता नहीं है और ना ही वह सब प्राधिकार को पूर्ण रूप से अस्वीकृति है; किन्तु प्राधिकार की वरीयता का वह चयन है। सविनय अवज्ञा आन्दोलन अपेक्षाकृत कुछ ही लोगों द्वारा छेड़ा जाता है; कुछ अल्प लोग किसी प्रचलित तथा सामान्यतः माने हुये आदर्श या कार्य व्यवहार के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़कर, **महात्मा गांधी** ने अपने जीवन काल में सविनय अवज्ञा के दर्शन को परखा। उन्होंने इन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया—(i) सामूहिक विनय अवज्ञा सही रूप में तात्कालिक, अगठित और बिना जोड़-तोड़ वाला होना चाहिये (ii) अपने उद्देश्य के औचित्य की चिन्ता, मन, वचन तथा कर्म में ठोस अहिंसा; कष्ट सहन की इच्छा तथा क्षमता, नैतिक अनुशासन, विनम्रता तथा सर्वोपरि, जिन लोगों की ओर से विरोध होता है उन के बीच उत्तम काम करके आत्मोद्धार—सविनय अवज्ञा के पूर्वापेक्षित प्रतिबन्ध हैं (iii) गुप्त हिंसा जैसे किसी उद्देश्य या तात्पर्य को छिपाने के लिये छेड़ा गया सविनय अवज्ञा आन्दोलन हेय है। इच्छापूर्वक आज्ञाकारिता की आदत रखना सविनय अवज्ञा का लक्ष्य है। यदि किसी को सामान्यतः न्याय-निष्ठ व्यक्ति नहीं माना जाता, तब उसका अवज्ञा-आन्दोलन कम सही माना जाता है (iv) असहयोग तथा निष्क्रिय प्रतिरोध, सविनय अवज्ञा से भिन्न हैं, जो कुछ चुने हुये ही लोग अन्तिम उपाय के रूप में प्रयुक्त करते हैं—अनैतिक क़ानूनी अधिनियमों का यह जानबूझ कर भंजन है, जिससे दण्ड तथा क़ैद को कोई भी स्वयं क़ानूनन आमंत्रित करता है।

**मीमांसा—हेनरी डेविड थोरियन** ने एक रात जेल में बिताई और "सविनय अवज्ञा में कर्त्तव्य' नामक लेख में अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। उसके अनुसार, 'सविनय अवज्ञा, एक राजनीतिक कार्रवाई का रूप है। सार्वजनिक प्रभावोत्पादकता की आशा से, जेल जाना संचार का एक साधन है।" "उसके मतानुसार, कभी कभी ऐसे समय आते हैं जब अन्याय इतना बढ़ जाता है कि सविनय अवज्ञा के परिणामों की गणना की ज़रूरत नहीं रहती—कोई भी दुष्परिणाम अन्याय के विवद्ध आवाज़ उठाने को नहीं रोक सकते।

**बेयर्ड रस्टिन** ने अपनी पुस्तक "सविनय अवज्ञा' में छै सूत्रधारी यह मीमांसा की है — (1) लोकतंत्रीय समाज में छिपे अन्याय को उजागर करने के लिये सविनय अवज्ञा ही कभी कभार एक मात्र साधन मिलता है (ii) जैसा अन्य कोई नहीं कर सकता, सविनय अवज्ञा ही धार्मिक तथा नागरिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करती है (iii) जब विधान सभायें निष्क्रय रहना चाहती हैं तब सविनय अवज्ञा न्यायपूर्ण क़ानून बनाती तथा स्थापित करती है (iv) न्यायशास्त्रों में लिखे ऐसे क़ानून का पालन सविनय अवज्ञा कराती है, जिसकी ओर येन केन प्रकारेण ध्यान नहीं दिया जाता है (v) सविनय अवज्ञा को नहीं दबाने वाला कोई समाज सुरक्षित नहीं है, जिसमें सविनय अवज्ञा आन्दोलन कर्त्ता नहीं है (vi) सविनय अवज्ञा से प्रायः न्यायालय के निर्णय निर्देशित तथा प्रभावित होते हैं।"

**रिचर्ड वैसरस्टाम** के विचार से, सविनय अवज्ञा में रणनीति तथा नैतिक विश्वास होता है और अवज्ञा की कार्रवाई व्यक्तिगत न होकर आम होना चाहिये, क्योंकि इसका पहला उद्देश्य तो शिक्षा देना है। क़ानून या नीति के प्रति अहिंसात्मक चुनौती के औचित्य को न्यायशास्त्र के सिद्धान्त, स्वीकार करते हैं तथा क़ानूनपालन करने का नागरिकों का कर्त्तव्य एकान्तिक नहीं होकर सापेक्षिक है और वह अहिंसात्मक विरोधों तथा चुनौतियों के कुछ ढंगों की अनुमति देता है। क़ानून या नीति की चुनौती देने के लिये तथा उसकी वैधता पर न्यायालय का निर्णय लेने के लिये या विधायकों द्वारा पुनर्विचार करने के लिये, सविनय अवज्ञा, एक माननीय पद्धति हो सकती है।

**सिडनी हुक** ने सविनय अवज्ञा की निम्नलिखित मीमांसायें बतायी हैं—(i) जब भी कोई बड़ा नैतिक प्रश्न विवादग्रस्त हो, तब सविनय अवज्ञा ही न्याय-संगत है, (ii) जब कोई अन्य उपचार प्राप्त नहीं हों, तव सविनय अवज्ञा करना नैतिकता के नाते बैध है। (iii) सविनय अवज्ञा के आन्दोलन कर्ताओं का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे क़ानून से दिये गये दण्ड और क़ानूनी आदेशों को स्वीकार करें; तथा (iv) वह अवज्ञा केवल रूप में ही नहीं, अपितु सचमुच में भी अहिंसात्मक तथा शान्तिपूर्ण होना चाहिये।

## सामाजिक अभ्यापत्तियाँ तथा सविनय अवज्ञा

जब संविधान, प्राकृत क़ानून या दिव्य क़ानून जैसे ऊँचे क़ानून के विरुद्ध, कोई दीवानी क़ानून साफ़-साफ़ जानबूझकर जाता दिखाई दे, तब लोकतंत्रीय समाज में न्याय पाने के लिये, विरोध की सार्वजनिक कार्रवाई द्वारा अभिव्यक्त आत्मा की आवाज़ के रूप में सविनय अवज्ञा, अन्तिम प्रयत्नस्वरूप में ही जायज़ है। इस चरम स्थिति में, अपने लोकतंत्रात्मक समाज में क़ानून द्वारा, दिये किसी दण्ड को सहर्ष स्वीकार करने की इच्छा के साथ-साथ, सविनय अवज्ञा के अहिंसात्मक रूप ही वे साधन हैं, जिन्हें न्यायोचित माना जा सकता है। (हिंसा के कारण तथा रोक— थाम पर राष्ट्रीय आयोग—न्याय-व्यवस्था के लिये, घरेलू शान्ति के सुनिश्चय के लिये—अमरीकी सरकार)।

**भारत में आन्दोलन**—1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में सविनय अवज्ञा के लिये प्रसिद्ध प्रस्ताव पारित हुआ; महात्मा गांधी को इस आन्दोलन चलाने का पूर्ण दायित्व दिया गया तथा उन्होंने सरदार बल्लभ भाई पटेल को बारदोली के सीमित स्थान पर इसे चलाने के लिये चुना। उनके नेतृत्व में किसानों ने सरकारी करों को देने से मना कर दिया और हिंसा पर कभी नहीं उतारू होने का प्रण किया। उनके पशु तथा सम्पत्ति नीलाम कर दी गयी; किन्तु वे टस से मस नहीं हुये। सरकार को झुकना पड़ा उसे राजस्व में रियायतें देनी पड़ीं और इस प्रकार वह आन्दोलन सफल हुआ।

दुर्भाग्य से, उसी समय उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के छोटे ग्राम चोरी चोरा में 1922 में एक प्रचण्ड प्रदर्शन हुआ, जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गये और थाना जला दिया गया। गाँधीजी ने उस आंदोलन को तुरन्त स्थगित कर दिया।

12 मार्च 1930 को, नमक सत्याग्रह करने के लिए, 79 चुने अपने आश्रमवासियों

को साथ ले कर गाँधीजी ने 214 मील की ऐतिहासिक यात्रा दण्डी को प्रारम्भ की। जैसे-जैसे साबरमती आश्रम से सत्याग्रही दण्डी को बढ़े, ग्रामवासियों ने उन मार्गों को मीलों फूलों से ढक दिया उनका ढाढस बंधाया।

**जवाहर लाल नेहरू** के शब्दों में "जैसे-ही जनता ने दिनों-दिन यात्रियों की कतारों का अनुगमन किया, देश के साहस का तापक्रम चढ़ गया।" 5 अप्रेल 1930 को, अपने चुने हुए सत्याग्रहियों तथा असंख्यक अनुयायियों के साथ, गाँधीजी दण्डी पहुँचे। दूसरे दिन प्रातः कालीन प्रार्थना के बाद, गांधीजी ने समुद्र में स्नान किया और प्राकृतिक नमक की डेलियाँ उठालीं तथा इस प्रकार, भारत सरकार के नमक क़ानून को तोड़ा। इसके तुरन्त बाद, उन्होंने पत्रकारों को यह घोषणा की—अब यह हर किसी को खुली बात हो गई कि जब कभी सुविधा हो और जब कभी कोई चाहे, नमक क़ानून के अन्तर्गत दण्ड पाने की जोखिम उठाकर, नमक बना सकता था।" (सविनय अवज्ञा और तदुपरान्त-मनोरंजन झा)

इस प्रकार, "क्रान्ति के शैशव काल" से पुकारे जाने वाले समय में, नमक सत्याग्रह के साथ-साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन फिर से शुरू हुआ। **(विरोधी भारत—हेनरी नेऐल ब्रेस्सफोर्ड)**। वह देशव्यापी **"निरस्त्र राजद्रोह"** था **(लुई फिशर)**।

ग्रामीणों ने सागरतट से पानी लेकर नमक बनाया। नगरों में लोकसभायें हुयीं; जहाँ वर्जित नमक बेचा गया। नमक क़ानून के विरुद्ध देश ने संघर्ष छेड़ रखा था। तथा सारे राष्ट्र में असन्तोष, उत्तेजना और विद्रोही भावना भीषण ताण्डव कर रही थी। सहस्रों लोगों ने आज्ञोल्लंघन किया। सरकार अपने व्यवहार में बड़ी दमनकारी बनी और सरकारी आंकड़ों के अनुसार, साठ हज़ार लोग जेलों में ठूंस दिये गये और छै सौ से अधिक लोग प्रदर्शनों, आन्दोलनों तथा विरोधों में हताहत हुये।

1931 में, सवा लाख से अधिक लोगों को सरकार ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन को दबाने के लिए पकड़ लिया। सरकार ने सभी दमनकारी उपाय किये जिनमें—, व्यापक हिंसा, शारीरिक यातनायें, गोली चालन, दण्डात्मक अभियान, गाँवों पर सामूहिक जुर्माने, और ग्रामीणों की ज़र-ज़मीन का अपहरण-सम्मिलित थे। किन्तु सविनय अवज्ञा आन्दोलन जनता का समर्थन पाता चला गया। जब इंगलैंड की सरकार ने 1935 का अधिनियम पारित किया, जिससे प्रान्तों को अधिक स्वायत्ता मिली और कितने ही विषय देश के प्रतिनिधियों को सौंप दिये, तब काँग्रेस ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन को समाप्त करने का निर्णय लिया।

**लोकतंत्रीय आदर्श :**—सविनय अवज्ञा के रूपों में आते हैं विशेष क़ानून भंजन, जैसे कर-क़ानून (करों का नहीं) देना; यातायात क़ानून (यातायात भंग करना); सभाओं, मुक्त अभिव्यक्ति, प्रकाशन आदि की निषेधाज्ञा वाले क़ानून। इसमें, सरकारी और निजी सम्पत्ति की थोड़ी-बहुत क्षति, हड़तालें, बहिर्गमन तथा सामूहिक त्यागपत्र के रूप भी आते हैं।

कुछ विद्वानों के मत में, सविनय अवज्ञा लोकतंत्र की जड़ें कमज़ोर करती हैं। सविनय अवज्ञा के वर्गों में तोड़फोड़ की कार्रवाइयों की सम्भावना हो सकती है तथा

यह दूसरे के अधिकारों को दबा लेती है। इस भाँति, लोकतंत्रात्मक देश में, सविनय अवज्ञा, अपराध की समस्यायें ही नहीं बढ़ायेगी; किन्तु अन्त में अराजकता की आग समाज में फैला सकती है।

**जे एडगर हुवर** के मतानुसार — 'सविनय अवज्ञा में दो खतरनाक़ पहलू हैं। प्रथम देश के युवा वर्गों में क़ानून व्यवस्था के प्रति घृणा पैदा करने तथा क़ानून भंग करने की अहमन्यता को बढ़ावा देने से, घोर आपराधिक समस्या को बढ़ोतरी ही मिल सकती है। द्वितीय, सविनय अवज्ञा के बर्फीले गोले की मार की चरम सीमा कहाँ लगायी जाये ? आजकल के जानबूझ कर आज्ञोल्लंघनकारी दुर्व्यवहार के अधिनियम और कल को घोर अपराधों का होना कहाँ तो, क़ानूनों वाली सरकार और कहाँ अराजक समाज की स्थापना तर्कतः सरासर एक उल्टी चाल है (एफ० बी० आई० क़ानून-प्रवर्तन बुलेटिन)।

लोकतंत्रीय समाज को सुव्यवस्थित रखने की दृष्टि से, सविनय अवज्ञा आन्दोलनों के सबक़, नागरिकों को बड़े खौफ़नाक़ रहे हैं। "सविनय अवज्ञा के आदर्श एवं उपदेश से व्यापक समाज को क्या शिक्षा मिलती रही है? क्या वह अहिंसा में संरक्षण हैं या सामाजिक बुराइयों के उपयुक्त संघर्ष वाले अधिकारी के विरुद्ध निगरानी है या अनुशासनहीन कार्रवाइयों में कोई हिफ़ाज़त है?" (एलेन–सविनय अवज्ञा और क़ानूनी आदेश)

**पुलिस की भूमिका**—समाज के संरक्षक, क़ानून के साधन तथा लोक सेवक होने के नाते, पुलिस को सविनय अवज्ञा आन्दोलनों में, एक बड़ी नाज़ुक तथा कठिन भूमिका निबाहनी पड़ती है। **एल्मर एच. जानसन** के अनुसार, "सविनय अवज्ञा आन्दोलनों में पुलिस के प्रयोग को एक नाज़ुक सन्तुलन खोजना होता है, यदि वह समुदाय की सामाजिक रचना के उन दीर्घकालीन परिवर्तनों की बाधक नहीं है, जो समुदाय को बदलने के लिए प्रयत्नशील सामाजिक दबावों की रचनात्मक प्रतिक्रिया के स्वरूप होते हैं।"

जब तक कि सविनय अवज्ञा के प्रति पुलिस की प्रतिक्रियायें सामाजिक लोकाचार में वैध नहीं मानी जातीं, तब तक एक बड़ा खतरा यह होता है कि पुलिस उसी समाज से बिल्कुल अलग-थलग तथा घृणित हो जायेगी, जिसकी सेवा तथा संरक्षा करना उसका धर्म है। सविनय अवज्ञा के प्रति पुलिस की प्रतिक्रिया, सम्विधान को बचने के हेतु अपने लोकतंत्रीय तथा संविधानी कर्त्तव्य के अनुरूप होनी चाहिये।

राजनीतिक विप्लव के विरुद्ध क़ानूनी रक्षोपाय करते समय, पुलिसजन को अम्पायर (पंच) और रेफरी (निर्णेता) के समान काम करना होता है, और उसका पहला कर्त्तव्य यह होता है कि वह ऐसे व्यवहार की ज्यादतियों को सीमित रखे, जिनसे समुदाय का सामाजिक जीवन नष्ट हो सकता है; किन्तु उसे सर्व-प्रकार के परिवर्तनों में रोड़े नहीं अटकाने हैं। सविनय अवज्ञा के अहिंसात्मक आन्दोलन से सुलझते समय, पुलिस की उस जनसमूह से मुठभेड़ होती है जो अहिंसात्मक होता है; तथा जो पुलिस कार्रवाई से बचने का यत्न नहीं करता। ऐसी नाज़ुक तथा कठिन स्थिति

में, पुलिस को अपने विवेक से काम लेना चाहिए तथा उदार लोकतंत्रीय रुख अपनाना चाहिए। **जे० एल० ली ग्रान्डे** का मत है कि अपने व्यापक विवेकाधिकार को काम में लाते समय, पुलिस "(i) अपराध पर ध्यान ही नहीं दे सकती है; या (ii) आन्दोलनकर्ताओं को मौखिक चेतावनी दे सकती है; या (iii) उन्हें लिखित चेतावनी दे सकती है; या (iv) उन्हें सम्मन दे सकती है जिससे उन्हें या तो न्यायालय में बुलाया जा सकता है या सीधा जुर्माना तलब किया जा सकता है; या (v) उन्हें पकड़ कर बन्दी बना सकती है जब तक उसे उपयुक्त जमानत नहीं मिलती है।"

पुलिस को विधिपूर्वक गठित समाजोन्मुखी क़ानून-प्रवर्तन नीति का विकास करना चाहिए और अत्यन्त सहनशीलता की नीति अपनानी चाहिए, वैध प्रदर्शनों को पूर्ण सहयोग देना चाहिए तथा चाहिये उसे आन्दोलनकर्ताओं के छोटमोटे दुर्व्यवहार पर ध्यान नहीं देना। पुलिस को विशेष तथा चुनींदा पकड़-धकड़ करनी चाहिए और क़ानूनी कार्रवाई तभी करनी चाहिए, जब आम ख़तरा हो या लोक-शान्ति स्थापित करने के लिए, अधिकांश लोग पुलिस की रोक-थाम की कार्रवाई का विरोध कर रहे हों।

प्रोफेसर **फ्रैंक रेमिंगटन** ने कहा है— "पुलिस का यह आग्रह करना कि क़ानून का पूरा-पूरा पालन करना उसकी ज़िम्मेदारी है—केवल एक गप्प है, जो कभी भी सही नहीं हो सकती और यदि सही हो भी जाये, तब वह अवांछनीय होगी।" सविनय अवज्ञा आन्दोलनों से निपटते समय, पुलिस को यथासम्भव बड़े पैमाने पर पकड़-धकड़ नहीं करनी चाहिए और आन्दोलनकर्ताओं से कभी भी उद्दण्ड, बर्बर या बेरहम नहीं होना चाहिए। दुर्भाग्य से, सविनय अवज्ञा आन्दोलनों में पुलिस भूमिका से सीधा सम्बन्धित साहित्य बहुत कम उपलब्ध है और अच्छे-बुरे अनुभवों को इकट्ठा नहीं किया गया है, जिससे सही-सही पुलिस नीतियों का विकास हो सके।

## विज्ञान के चढ़ते चरण

जापान और रूस में मैगनेटिक लोकोमोशन (चुम्बकीय चालन) का विकास हुआ है, जिससे रेलगाड़ी 500 कि० मी० प्रति घंटा चलेगी। वह पूर्णतः सुरक्षित ही नहीं होगी; साथ में, पर्यावरण भी दूषित नहीं करेगी। गाड़ी के नीचे बिजली से चुम्बकीय खिचाव उत्पन्न होगा। वह पटरी से आधा इन्च उठ कर चलेगी।

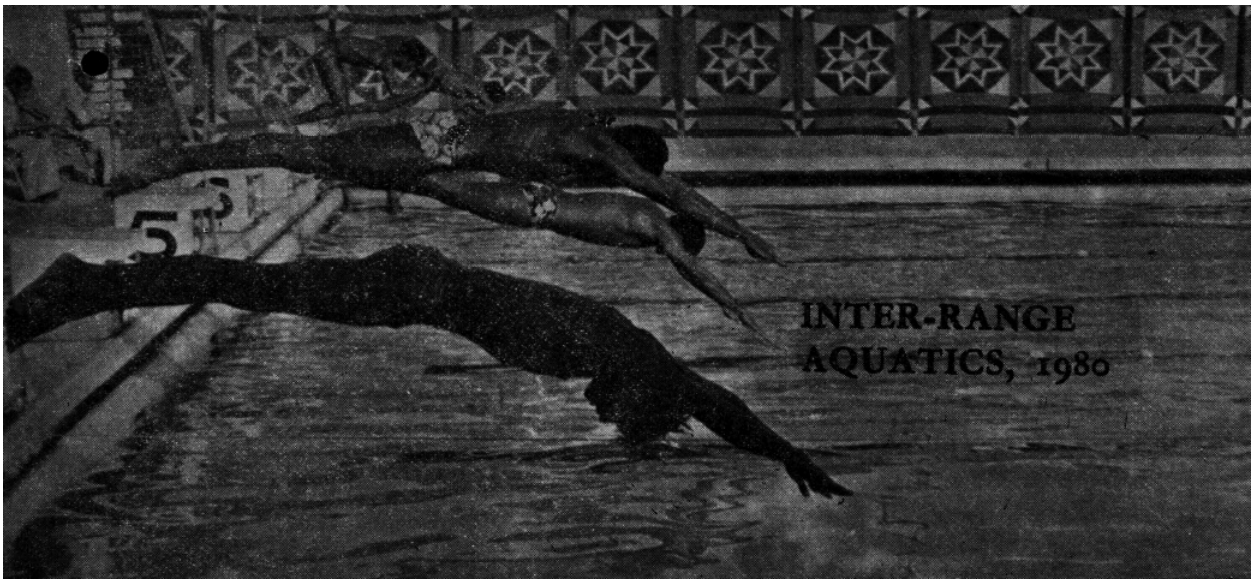
अमरीका में एक ऐसा लघु कम्प्यूटर का विकास हुआ है, जो लाल रंग के द्वारा शरीर का तापक्रम एक डिग्री के दसवें अंश तक सूचित करेगा तथा गर्भ निरीक्षण में मदद देगा। जापान में विकसित **इलेक्ट्रानिक 'दाई'** कंप्यूटर से प्रसव में आसानी होगी और खतरे घटेंगे।

हैदराबाद में माइक्रोवेव (लघुतरंग) पर आधारित ऐसा तन्दूर बनाया है, जो स्वादिष्ट भोजन तैयार करने में मदद देगा। तन्दूर की दीवारें तब भी गर्म नही रहती हैं, अतः भोजन को प्लास्टिक, काग़ज, चिकनी मिट्टी, सिरामिक और कांच तक के बर्तन में गर्म किया जा सकता है। इसमें केक, पेस्ट्री व तन्दूरी चिकन तक बहुत कम समय में

तैयार होगा।

अमरीका में अनुसंधानों द्वारा दही में ऐसे विषाणनाशक तत्व खोजे हैं, जिनसे ट्यूमर व कैंसर ठीक होते हैं तथा आँतों, जिग़र, गुर्दे व दिल के रोग, पेचिश और रक्त अल्पता की रोकथाम होती है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अनुसार विटामिन 'सी' को अँडे के साथ खाने से ही अंडे के लौह तत्व को पचाया जा सकता है। अतः नीबू, संतरे आदि फलों का सेवन जरूरी है।




**क्रीड़ा क्षेत्रे :**

# 14वीं अन्तर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता में अजमेंर रेंज विजयी

उत्तरी रेलवे के तरणताल (दिल्ली) में 29 अप्रेल से 1 मई 1980 तक आयोजित 14वीं अन्तर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता में, पटना रेंज का दलीपसिंह सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित हुआ। वह 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में I; 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक और 400 मी० व्यक्तिगत मेडले में II; 200 मी० बटर फ्लाई, 200 मी० बैक स्ट्रोक तथा 100 मी० बटर फ्लाई में III रहा।

पिछले वर्ष की उपविजेता अजमेर रेंज ने 155 अंक जीत कर चैम्पियनशिप अर्जित की। मद्रास रेंज, जो विगत वर्ष तृतीय स्थान पर रही थी, 119 अंक लेकर इस बार उपविजेता रही। पिछले वर्ष की चैम्पियन, हैदराबाद रेंज को 77 अंक पाकर केवल तीसरे स्थान पर सन्तोष करना पड़ा।

पटियाला के प्रशिक्षण-शिविर में अभ्यास लेने के कारण, के० रि० पु० बल के उच्चकोटि के ये तीन तैराक इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सके—1. सोमशेखरन 2. पद्मनाभन और 3 थोबासिंह।

श्री श्रवण टण्डन, महानिदेशक, के० रि० पु० बल, ने पुरस्कार वितरित किये।

अन्तिम परिणाम इस प्रकार रहे :—

**100 मी० फ्री स्टाइल :** स० इ० के. एलोसियस (है०) I; स० इ० आर. एस. नायर (दि०) II व का० अब्राहम कुरियन (म०) III.

**200 मी० फ्री स्टाइल :** का० अब्राहम कुरियन (म०) I; स० इ० के० एलोसियस (है०) II व हे० का० एस० लोचनन (अज०) III.

**400 मी० फ्री स्टाइल :** का० अब्राहम कुरियन (म०) I; हे० का० एस० लोचनन (अज०) II व का० रूपसिंह (अज०) III.

**1,500 फ्री स्टाइल :** हे० का० एस. लोचनन (अज०) I; का० अब्राहम कुरियन (म०) II व का० रूपसिंह (अज०) III.

**100 मी० बैक स्ट्रोक :** हे० का० पीतम्बरदास (श्रीनगर) I; इ० पी. वेणुगोपाल (है०) II व का० रूपसिंह (अज०) III.

**200 मी० बैक स्ट्रोक :** इ० पी. वेणुगोपाल I; हे० का० पीतम्बर दास (श्रीनगर) II व स०इ० दलीपसिंह (प०) III.

**100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक :** स० इ० दलीपसिंह (प०) I; ला० ना० ए. हकीम (अज०) II व का० के. आर. हीरामथ (अज०) III.

**200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक :** ला० ना० ए. हकीम (अज०) I; स० इ० दलीपसिंह (प०) II; का० के. आर. हीरामथ (अज०) III.

**100 मी० बटर फ्लाई :** स० इ० आर. एस. नायर (दि०) I; का० जे. मारकस (म०) II व स० इ० दलीपसिंह (प०) III.

**200 मी० बटर फ्लाई :** स० इ० आर० एस० नायर (दि०) I; स० इ० डी. क्लीमेंट (श्रीनगर) II व स० इ० दलीपसिंह (प०) III.

**400 मी० मेडले रिले (व्यक्तिगत) :** स० इ० डी. क्लीमेंट (श्रीनगर) I; स० इ० दलीपसिंह (प०) II व स० इ० आर. एस. नायर (दि०) III.

**4X100 मी० फ्रीस्टाइल रिले :** मद्रास रेंज I; अजमेर रेंज II व हैदराबाद रेंज III.

**4X200 मी० फ्री स्टाइल रिले :** अजमेर रेंज I; मद्रास रेंज II व हैदराबाद रेंज III.

**4X100 मी० मेडले रिले :** अजमेर रेंज I; मद्रास रेंज़ II व हैदराबाद रेंज III.

**हाईबोर्ड डाइविंग :** हे० का० पी. एन. वी. पिल्लै (अज०) I; हे० का० हंसराज (गौ०) II व हे० का० डी. जी. सुभाष (है०) III.

**स्प्रिंग बोर्ड डाइविंग :** स० इ० एम.एस. शेखावत (अज०) I; इ० ढाकासिंह (नी०) एस. II; व का० पी० मणि (अज०) III.

# 14वीं अन्तर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता

## की

# झलकियाँ



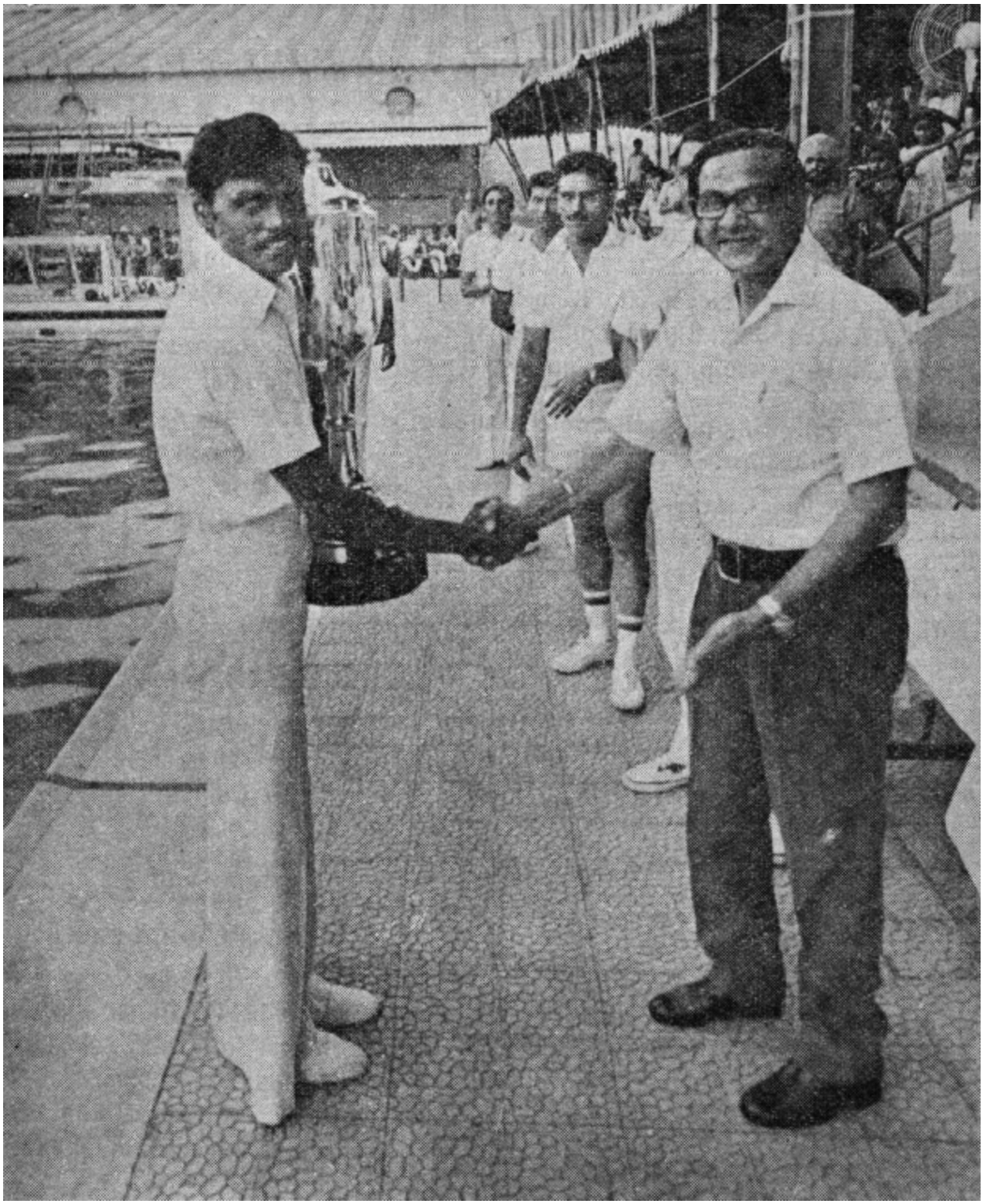
दूसरे वर्ष का भी सर्वश्रेष्ठ तैराक-दिलीप सिंह



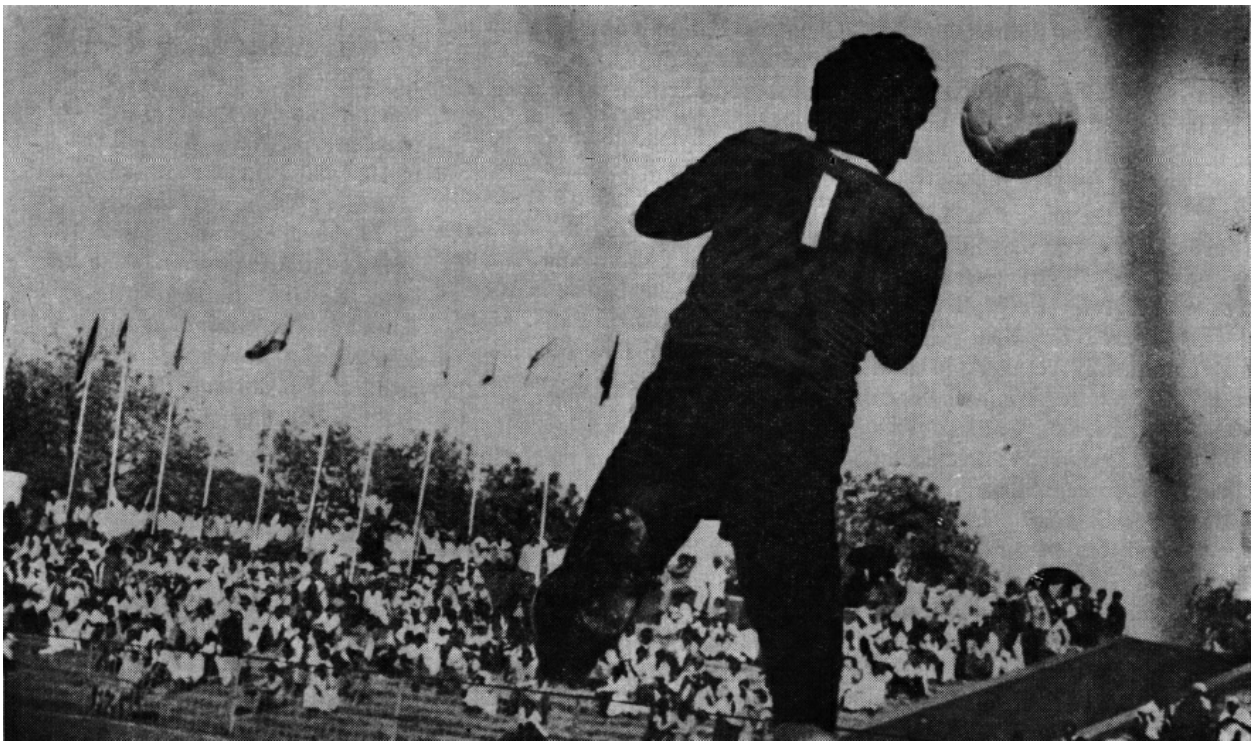
4x100 मी० फ्रीस्टाइल रिले में मद्रास रेंज का विजयी चौगड्डा—डी. सोमन, विलास चन्द्रन, श्री कंठन व अब्राहम कुरियन



श्री टी. त्रिपाठी, उपमहानिरीक्षक, अजमेर रेंज के साथ विजयी टीम



श्री श्रवण टंडन के कर-कमलों से ट्राफी पाता हुआ अजमेर रेंज का हर्षोत्फुल्ल कप्तान



**गोल कीपर खालिद का अध्ययन**

**क्रीड़ा क्षेत्रे :**

# 1979-80 में क्रीड़ा-कार्य-कलाप

**ले०-श्री के० आर० के० प्रसाद**

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 1979-80 के क्रीड़ा-वर्ष में शानदार सफलतायें पायीं। इस बल के, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर इन उल्लेखनीय उपलब्धियों का सारा श्रेय, हमारे खिलाड़ियों तथा एथ्लीटों को है।

फरवरी मास में लखनऊ में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस खेलों में एथ्लीट सिरमौर पुनः जीत कर, 1979 ने के० रि० पु० बल के लिए उत्तम खाता खोला। गृहमन्त्री के पदक को हरीचन्द ने संयुक्त विजेता के रूप में पाया। तदनन्तर, जमशेदपुर में खेली गयी अखिल भारतीय खुली एथ्लीट प्रतियोगिता में, हमारी टीम ने दो स्वर्ण तथा तीन रजत पदक जीत कर फिर अपनी श्रेष्ठता का बिगुल बजाया। अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, हमारी क्रासकन्ट्री टीम ने फिर ट्राफी जीती तथा हमारी तैराकी टीम ने पहले दो दिन पीछे घिसट कर, अन्त में चैम्पियनशिप हथिया ली। इन सिरमौरों को हमने तब जीता, जब एक वर्ष की सेवा पूर्ण नहीं होने के कारण, हमारे धुरन्धर धावक और तैराक केवल रिजर्व में ही रहे। जिस पुलिस टीम ने प्रथम

बार सेना टीम को आखेल भारतीय क्रासकंट्री दौड़ में हरा कर दौड़ जीती, उसमें के० रि० पु० बल के 6 धावक थे। हमारे तैराकों की वह उत्तम तैराकी रही कि हम लखनऊ में ही केवल चैम्पियन नहीं रहे, साथ ही विजय का यह क्रम बनाये रखा, जब अख़िल भारतीय खुली तैराकी में तमिलनाडु तथा दिल्ली राज्य की ओर से तैर कर हमारे कुछ तैराकों ने स्वर्ण तथा रजत पदकों की अच्छी संख्या पायी। बाद में, कोलम्बो में आयोजित भारत-लंका-बंगलादेश प्रतियोगिता में जिस भारतीय टीम ने भाग लिया, उसमें हमारे पाँच तैराक थे।

जब राजधानी के शिवाजी स्टेडियम में के० रि० पु० बल की हॉकी टीम अपने परम्परागत प्रतिद्वन्द्वी सी० सु० दल को हराकर, टूर्नामेंट के इतिहास में नेहरू हॉकी ट्राफी कोप्रथम बार हस्तगत किया तब वह के० रि० पु० बल के लिए एक सुनहरा दिन था। राँची तथा देश के अन्य भागों में, हमारे युवा हॉकी खिलाडियों ने खूब धाक जमाई, क्योंकि देश की शिरोमणि टीमों से इनका संघर्ष निरन्तर सभी टूर्नामेंटों में हुआ।

हमारी फुटबॉल टीम, जो कुछ वर्षों से पिछड़ी तथा अभागी रही थी, उसने भी अखिल भारतीय पुलिस खेलों में कांस्य पदक जीत कर अपना करिश्मा दिखाया । श्री जी० पंटाइहा के प्रशिक्षण में, टीम से कुछ और चमत्कार दीखने की आशा है।

हमारी श्रेष्ठ बास्केट बॉल टीम विशेष रूप से भाग्यवान रही। लखनऊ तथा पुणे दोनों में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, वह सुचारु रूप से खेली तथा जयपुर और जालंधर में खेले गये टूर्नामेंटों में भी मनोमुग्ध करती रही; किन्तु वह रजत पदकों को ही एकत्र कर पायी।

अपनी शक्ति तथा योग्यता में प्रसिद्ध हमारे जिम्नास्ट लखनऊ के अखिल भारतीय खेलों में बिना कोई अपनी त्रुटि के, केवल तृतीय स्थान पा सके; किन्तु पुणे में उन्होंने सिरमौर जीत कर, फिर अपनी श्रेष्ठता स्थापित की, जब कि भारत-तिब्बत-सीमा पुलिस द्वितीय स्थान पर रही। इ० एन. बी. भोंसले सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट घोषित हुआ तथा तदुपरान्त उसने पाकिस्तान राष्ट्रीय खेलों में भाग लेने वाली हमारी टीम का नेतृत्व किया। यह सफलता इसलिए और भी शानदार रही कि सरमजीत सिंह को रिजर्व में रखा गया। सरमजीत सिंह मनीला के लिए भारत का प्रतिनिधित्व करेगा और वह आजकल राष्ट्रीय भारतीय स्टेडियम पटियाला में अभ्यास कर रहा है। दूसरा मूर्द्धन्य जिम्नास्ट बलराम शील भी चोट के कारण भाग नहीं ले सका । राष्ट्रीय लक्ष्यभेद प्रतियोगिता में प्रथम बार के प्रवेश में , हमारी टीम के प्रतिनिधि ना० बिरका ने स्वर्ण पदक जीता।

पाकिस्तान राष्ट्रीय खेलों में, भारत की ओर से खेलों के लिए, हरीचन्द, आर० एस० बल तथा एन बी. भोंसले को मनोनीत किया गया। मास्को ऑलिम्पिक खेलों के लिए, श्री प्रमोद कुमार को हॉकी टीम चुनने के लिए चयन किया गया ।

थोबा सिंह, सोमशेखरन, दलीप सिंह, टी. ई. जैकब ने कोलम्बो तैराकी प्रतियोगिता में भारत की ओर से भाग लिया। रसदेव सिंह, प्रदीप कुमार, प्रेमचन्द तथा योनम को पेरिस में आयोजित विश्व क्रासकन्ट्री दौड़ के लिए चुना गया । राष्ट्रीय स्तरों पर राज्य

टीमों की ओर से खेलने के लिए, के० रि० पु० बल के कितने ही जवान चुने गए।

सुचारु प्रशिक्षण, विचारपूर्ण भर्ती तथा पुरस्कार और पदोन्नतियाँ द्वारा प्रोत्साहनों से, हमारे खिलाड़ियों का मनोबल ऊँचा रहा तथा उन्होंने उत्तम परिणाम दिखाये। इस वर्ष 125 पदोन्नतियाँ हुई। खिलाड़ियों में 12 इन्स्पेक्टर, 21 सबइन्स्पेक्टर, 91 अधीनस्थ अधिकारी और एक राजपत्रित अधिकारी बने।

ऐसी आशा की जाती कि निरन्तर शिक्षण तथा सर्वांगीण प्रशिक्षण से, के० रि० पु० बल अपनी कीर्ति बनाये रखेगा।

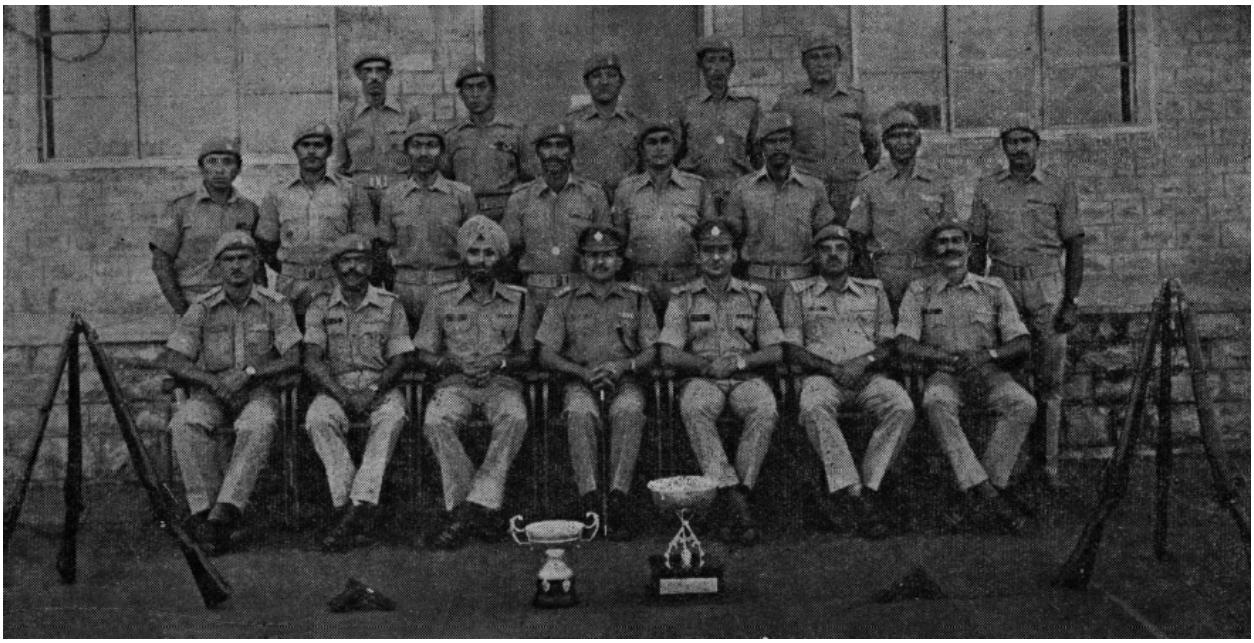
## लक्ष्य भेदन में हमारी जीत

दिनांक 12 से 19 अप्रेल 1970 तक नासिक में खेली गयी अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता में भाग लेने वाली के० रि० पु० बल की लक्ष्य भेदन टीम ने 1168 अंक पाकर सिरमौर जीता।

पिस्तौल-चालन में हमारी टीम प्रथम तथा रायफल-चालन में द्वितीय स्थान पर रही; जब कि पिछले वर्ष पिस्तौल-चालन में चौथे तथा रायफल-चालन में तीसरे स्थान पर वह रही थी। टीम के कप्तान श्री तेजिन्दर सिंह ढिल्लों, डीवाई. एस. पी. ने दो स्वर्ण पदक जीते, जब कि लां० ना० नीमा टैमंग और का० के. माधवन ने एक-एक स्वर्ण पदक पाया।

**क्रिप्टोग्रॉफी (गुप्त लेखन) प्रतियोगिता** में, के०रि०पु० बल की टीम चैम्पियन रही। श्री जगरूप सिंह ने व्यक्तिगत प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान पाया।

पिछले वर्ष की चैम्पियन, के० रि० पु० बल की बेतार टीम इस वर्ष उपविजेता रही। व्यक्तिगत प्रतियोगिता में, श्री दलबीर सिंह ने द्वितीय स्थान पाया। **प्राथमिक चिकित्सा प्रतियोगिता** में, के० रि० पु० बल की टीम तृतीय रही।



**नासिक में सिरमौर पाने वाली हमारी लक्ष्यभेदन टीम**

## अन्तर्रेंज लक्ष्यभेदन प्रतियोगिता

केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज I (नीमच) में 2 से 6 मई 1980 तक 14वीं अन्तर्रेंज लक्ष्यभेदन प्रतियोगिता आयोजित हुई। नीमच रेंज सर्वांगीण चैम्पियन रही, जबकि गौहाटी रेंज उपविजेता घोषित हुयी।

टीमों ने निम्नलिखित स्थान पाये—

**रायफल चालन**—नीमच रेंज I; । श्रीनगर रेंज II तथा दिल्ली रेंज III.

**पिस्तौल चालन**—गौहाटी रेंज I; नीमच रेंज II तथा दिल्ली रेंज III.

## क्रास कन्ट्री दौड़

दिनाक 4 से 11 मई 1980 तक 40 बटालियन (श्रीनगर) में आयोजित अन्तर्रेंज क्रास कन्ट्री (वनखन्डी) दौड़ में, श्रीनगर रेंज प्रथम रही, जबकि हैदराबाद रेंज और गौहाटी रेंज क्रमश: द्वितीय तथा तृतीय रहीं।

### अ०भा० मुरुगप्पा स्वर्णकप हॉकी प्रतियोगिता

मद्रास में 24 जून 1980 को, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (नीमच) ने सेना सेवा कोर (जालंधर) को फ़ाइनल के दूसरे चरण में 2-0 से हराकर मुरुगप्पा स्वर्ण कप प्राप्त कर लिया। इसका श्रेय कप्तान हबील कुजूर और पी० बरला को मिला। पहला गोल हबील कुजूर ने पेनल्टी स्ट्रोक को गोल में बदलकर किया; दूसरा गोल उत्तरार्द्ध के 30 वें मिनट में बरला ने किया।

**इस प्रतियोगिता में, के० रे० पु० बल ने यह दूसरी बार सिरमौर जीता।**

**कहानी**

# सब से बड़ा तीर्थ

**ले०—श्री एन. एस. गिल**

"दरवाज़ा खोलो, तार आया है।"

"खोलती हूँ"—घबराती हुयी वृद्धा माँ दरवाज़े के पास आती है; पर दरवाज़ा खोलने का उसे साहस नहीं होता; उसके मन में नाना प्रकार के तूफान उठते रहते हैं —'तार.... कैसा तार..... किसका तार?' सोचती हुई वह दरवाज़ा खोल देती है; पर सामने डाकिये को देखकर उसका रंग उड़ जाता है। डाकिये की तरफ़ वह अपने काँपते हुये हाथ बढ़ा देती है और थरथराती हुयी आवाज़ में पूछती है—'बेटा, क्या लिखा है तार में ?'

"माँ जी, यह तो अंग्रेजी में लिखा है, सो मुझे तो उसका पता नहीं—अच्छा, मैं चलता हूँ", कहता हुआ तार देकर, डाकिया चला जाता है; पर माँ का बुरा हाल होता है; उसे पसीने छूट पड़ते हैं; छूट भी क्यों न पड़े, जब ऐसे ही किसी तार ने उसकी 'जीवन नइया' मँझधार में डुबो दी थी। फिर भी, उसके नेत्र दूर तक किसी ऐसे व्यक्ति की खोज में बिछ जाते हैं, जो उस तार का सार बता सके। तभी उसे कोई छाया आती दीखती है; वह चिल्ला पड़ती है 'महेन्द्र'।

महेन्द्र भी दूर से आकर माँ से पूछता है "क्या बात है माँ ?"

माँ निरुत्तर उसके हाथ में तार थमा देती है। तार को देखते ही, वह खिल-खिला पड़ता है "माँ, भैया ने तार भेजा है। वह कश्मीर मेल से दो महीने की छुट्टी पर आ रहे हैं।"

सुनते ही, माँ का दिल बाग़-बाग़ हो जाता है। वह दौड़ कर, महेन्द्र को अंक में भरती है "शुक्र है रब का। तार का नाम सुनते ही, मेरा तो कलेजा धक् से बैठ गया था।"

थोड़ी देर बाद, पतोहू जागीर भी आती है और सो ही उसका पोता 'पप्पू' । घर का सारा वातावरण खुशी में बदला-बदला लगता है। अन्त में, वह चिर प्रतीक्षित घड़ी आ ही जाती है । महेन्द्र और पतोहू स्टेशन पर जाकर माँ के बेटे को ले आते हैं। माँ भाव विभोर हो जाती है; वह उसे छाती से चिपटा लेती है "निर्मल, तुम अब कभी मत

जाना। तुम्हारे चले जाने पर, मेरा मन घबड़ाता रहता है और तुम्हारे बारे में बुरी-बुरी बातें सोचता रहता है। आख़िर तुम्हारे बापू.....”

निर्मल ने बात काटते हुए हिम्मत बँधाई “अरे, तुम तो वीर जाया और वीर-जननी हो । तुम्हारे मुख से ये शब्द शोभा नहीं देते । बल्कि, सच पूछो तो मैं तुम्हें लेने आया हूँ।”

माँ हँसी “क्या मेरी बूढ़ी हड्डियाँ इतनी लम्बी यात्रा कर भी पायेंगी।”

“उसकी चिन्ता नहीं करो, माँ ! उस जगह एक बड़ा तीर्थ मन्दिर है, जिसका दर्शन कर, तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा।”

"ऐसा कौन सा तीर्थ है ?”

“सब से बड़ा तीर्थ। पर यह वहीं जाकर पता लगेगा” कहता हुआ निर्मल मुस्कराया।

माँ भी आश्वस्त होती हुई बोली “लेकिन जाऊँगी कुछ ही दिनों को।”

“कुछ क्या? सिर्फ़ पांच दिन के लिए।”

सब हँस पड़े।

निर्मल दो महीने की छुट्टी लेकर आया था; किन्तु इसी बीच में, उसे महेन्द्र की शादी सहसा करनी पड़ी। सब समय, उसी दौड़धूप में निकल गया। जागीर को यह शिकायत रही कि वह उससे ढंग से बात भी नहीं कर पायी।

देखते ही देखते, बिछुड़ने की घड़ी आ गयी। सभी के मन भारी हो रहे थे। जागीर की तो आँखों में आँसू छलछला पाये थे। पप्पू की उछल कूद भी गुम हो गई थी।

टैक्सी आते ही, पप्पू ने ही पहले अपनी दादी और फिर ‘डैडी’ के चरण छुये। दादी ने उसके सिर पर हाथ फेरा; निर्मल ने उसको सीने से लगाया, उसके गाल चमें और समझाया “बेटा अपनी पढ़ाई ठीक से करना। मैं जाते ही माँ के हाथ बढ़िया बढ़िया तोहफ़े तुम्हें भेजूँगा।”

जागीर की आँखों के मोती बाहर निकल आये, जिन्हें पोंछते हुए उसने पति और सास के चरण स्पर्श किये। वह टैक्सी को जाते हुए टुकुर-टुकुर देखती रही और किन्हीं स्वप्नों में वह खो गई। और भी न जाने वह कब तक खड़ी रहती, अगर पप्पू की आवाज़ उसके दिवा-स्वप्न को भंग नहीं करती।

उधर स्टेशन से कश्मीर मेल फक्-फक् चल पड़ी। कुछ देर माँ बेटे बात करने के बाद, सो गये। सुबह जब जागे, तब गाड़ी दिल्ली पहुँच चुकी थी। यहाँ गाड़ी बदलनी थी। निर्मल ने सामान उतरवा कर, आसाम मेल में रखने के लिए कुली किया। और रिज़र्वेशन चार्ट को देखा। माँ से भी प्लेटफार्म पर हाथ मुँह धोने के लिए कहा। माँ ने आज तक जालन्धर से आगे कुछ नहीं देखा था; वह दिल्ली स्टेशन की रौनक देख कर हैरान रह गयी।

अगला सफ़र बरौनी तक आराम से कट गया, क्योंकि पास में बैठा सफ़र कर रहा

एक पंजाबी दम्पति था, जिससे गपशप खूब चलती रही। परन्तु 48 घंटे बैठे-बैठे माँ काफ़ी थकान महसूस कर रही थी; जब उसे पता लगा कि फिर गाड़ी बदलनी है, तब उसके धीरज का बाँध टूट गया। "बेटा, अभी और कितनी देर गाड़ी में चलना है?"

निर्मल ने हँसकर उत्तर दिया "सिर्फ दो दिन और एक रात।"

माँ घबड़ा गयी 'बेटा, हर साल इतना लम्बा सफ़र कैसे तय करते हो?'

'पेट और परिवार सब करा लेता है।' निर्मल ने निश्वास ली।

येन केन प्रकारेण वह स्टेशन आ ही गया, जहाँ उन्हें उतरना था। सरकारी गाड़ी उन्हें लेने पहले से ही आई हुई थी, जिसमें बैठकर वे हेडक्वार्टर पहुँचे । वहाँ निर्मल के अनुरोध पर उनके ठहरने का इन्तज़ाम किया गया था। खाना खाकर, माँ ने पूछा "बेटा, हमें चले चार दिन हो गये हैं। अब हम कहाँ पर पर आ गये हैं ?"

"भारत के एक किनारे से दूसरे किनारे पर"

"हमारा देश तो मन्दिरों, गुरुद्वारों तथा तीर्थ स्थानों से भरा पड़ा है; पर सारे रास्ते तुमने तो मुझे कुछ दिखाया नहीं। अब यहाँ कौन सा मन्दिर दिखाना चाहते हो?"

"जो भारत तो क्या ? दुनिया के सब तीर्थ मन्दिरों से बड़ा है।"

"चल झूठे ! तेरी शैतानियाँ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस में भी भर्ती हो कर नहीं गईं। मैं सब समझ गई; तुझे यह दिखाना था कि पुलिस जवानों की कैसी कठोर जिन्दगी है" मुस्काते हुये माँ ने कहा।

तब तक काफ़ी रात जा चुकी थी। नींद ने दोनों को आगोश में ले लिया। आँख खुली, तब पता चला कि पोस्ट के लिये सामान लेकर एक स्पेशल सॉर्टी से हवाई जहाज़ जा रहा है। निर्मल ने उसी में स्वयं भी जाने का प्रबन्ध किया था। जहाज़ में बैठने पर माँ को काफ़ी डर महसूस हो रहा था; आखिर उसकी वह पहली यात्रा जो हुयी। जहाज़ के उड़ते ही, उसकी हैरानी का कोई ठिकाना नहीं रहा। ऊँचे-ऊँचे बर्फ से ढके पहाड़ देख कर, वह पूछने लगी "यह सफ़ेद सफ़ेद रुई के गाले सी क्या चीज़ है।" उसने बीले स्थान नहीं देखे थे। निर्मल ने उसकी जिज्ञासा शान्त की "सब बर्फ़ है, माँ"

तब तक पहाड़ों को पार करता हुआ जहाज़ एक छोटी सी जगह उतरा । जहाज़ से बाहर पाव रखते हुये, कैप्टन जसलूटिया ने बताया 'कोरकमांडर, ब्रिग्रेड कमांडर और ड्रिल कमांडर विज़िट करने आ रहे हैं।'

निर्मल माँ को वहीं छोड़ कर, कैम्पदफ्तर गया। वापिस आते ही जब वह खाना खाने बैठा, तब माँ ने फिर प्रश्न किया "अरे जो तुम मन्दिर दिखाने लाये हो, वह कहाँ है।"

"कल हमारा जनरल आ रहा है। काम ज्यादा है। उसके जाने के बाद, माँ, मैं वायदा करता हूँ—।"

"तेरे वायदे के भले ठिकाने—जा, अपना काम कर" निर्मल के गाल थपथोड़ते हुए

माँ ने प्यार से कहा। निर्मल काफ़ी रात तक काम में व्यस्त रहा। सुबह होते ही, निर्मल माँ को साथ लेकर 'एयर स्ट्रिप' जा पहुँचा; तुरन्त एक हेलीकॉप्टर उतरा, तीन कमांडर बाहर आये और तुरन्त एक चबूतरे की तरफ बड़े। एक-एक करके तीनों ने 'सैल्यूट' मारी और माल्यार्पण की। माँ ने निर्मल से हल्के से पूछा, "यह सब माज़रा क्या है ?" निर्मल ने मुख पर हाथ रख फ़िल्हाल मौन रहने को कहा। फिर वह कैप्टन जसलूटिया के साथ, उन कमांडरों से मिला। बातों ही बातों में पता चला कि कोर कमांडर के लौटने पर, एक कैरियर सीधा चंडीगढ़ जा रहा है। निर्मल ने मौके का फ़ायदा उठाते हये, उसी हेलीकॉप्टर में माँ को भेजने के लिये इजाज़त ले ली।

डान्स वगैरह के प्रोग्राम के बाद, निर्मल दौड़ा-दौड़ा आया और बोला "माँ, चार-पाँच दिन तंग होने से बचने के लिये, आपको कैरियर में मैंने लौटने का इन्तजाम कर दिया है। आप आज ही रात आठ बजे घर पहुँचे जाओगी। साथ में एक लड़का किये देता हूँ, वह आपको चण्डीगढ़ से बस में बिठा देगा।"

"अरे तेरा दिमाग़ तो नहीं चल गया है। पहले तो इतना ख़र्च कर तू यहाँ लाया और अब कह रहा है कि लौट जाओ? छिः मुझे मन्दिर दिखाना का झूठा बहाना क्यों किया ? क्या मैं बच्चा थी जो..."

निर्मल ने ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुये उसकी बात काट दी—

"दर्शन तो उस मन्दिर के तुम कर चुकीं, माँ।"

"कब, कहाँ, कैसे" माँ ने हैरानी में पूछा।"

"जब वे अफसर उतरे, तब सब से पहले उन्होंने क्या किया।"

"किया क्या खाक़ ? एक सीमेन्ट से चबूतरे के पास गये, सैल्यूट मारी और हार चढ़ाए।"

"माँ, जिसको तुम चबूतरा कह रही हो, वही तो, दिव्य मन्दिर है। यह है एक यादगार और वह भी आप के पति की सच जानिये, हमारे देश में, हिन्दू नारी का भगवान उसका पति होता है। जिस जगह के लिये आप क़रीबन सत्रह साल से तड़प रही थीं; वह जगह यही है। यहीं से आप को पांच नवम्बर 1962 को तार मिला था, जिसके कारण आज तक आपको तार के नाम से चिढ़ है। यहीं पर, आपके पति ने 20 दिन तक चीन के टिड्डी दल से घमासान लड़ाई के बाद, अपने प्राण देश पर बलिदान किये थे। ये पहाड़ और ये जंगल, आज भी उनकी बहादुरी की कहानियाँ सुना रहे हैं। जनरल क्या, दुनिया का बड़े से बड़ा आदमी भी यहाँ आकर सिर झुकाता है। श्रद्धाञ्जलि के फूल चढ़ाता है।"

"माँ के नेत्रों से श्रद्धा की गंगा-जमुना वह चली; उसने निर्मल को छाती से लगा लिया "बेटा, तूने मेरी बूढ़ी हड्डियों में दोबारा जान डाल दी। ईश्वर तेरा बड़ी उम्र करे। वाक़ई में दुनिया का वह सबसे बड़ा मंदिर है । चल, मुझे भी उसके दर्शन पास से करा ला; मेरा भी जीवन जन्म-जन्मान्तर को सफल हो जायेगा।"

निर्मल माँ की आज्ञा नहीं टाल सका। माँ ने समाधि पर जा कर बारम्बार माथा टेका

और श्रद्धा के फूल चढ़ाये। तब तक लौटने का समय हो चुका था। जनरल भी नीचे पहुँच चुके थे। निर्मल ने जब उनको सारी कहानी सुनाई, तब कोर कमांडर ने दौड़ कर माँ के चरण छुये और कहा, "माँ; तुम धन्य हो। जिस जगह की खातिर आपके पति ने अपने प्राणों की आहुति दी, आज उसी का रक्षा, तुम्हारा बेटा कर रहा है।"

माँ की छाती गर्व से फूली न समायी; उसने गद् गद् कण्ठ से कहा "बेटा, कहानी यहीं खत्म नहीं होती। आगे के लिये, इसी काम को, मैं अपने पोते पप्पू को तैयार करूंगी।"

सब ने माँ को 'धन्य धन्य' कहा। माँ का मन अब वहाँ से जाने को नहीं कर रहा था, किन्तु चार-पाँच दिन की दिक्क़त उसके सामने मुँह फाड़े खड़ी थी। वह भरे दिल, मनों के पाँवों से, घर लौटी।

माँ के इतनी जल्दी लौट आने पर, सारा परिवार इकट्ठा हो गया। सब को यह आशंका हुयी कि कहीं वह आधे रास्ते से तो नहीं भाग पायी; पर माँ के मुख पर रौनक थी; उसने ख़ुशी-ख़ुशी सब को सारी कहानी सुनाई। इतने में पप्पू ने अपने तोहफ़े माँगे। माँ ने जल्दी-जल्दी उम्दा कपड़े, मिठाइयाँ और एक खत दिया। खत को खोलते ही, पप्पू के हाथ से एक छोटा फोटो नीचे गिरा। माँ ने जैसे ही उसे उठाया, वह हैरान रह गयी। हैरानगी का कारण पूछने पर, माँ सब को वह फोटो दिखाती हुई बोली "अरे, इस तस्वीर में ही तो वह सब से बड़ा तीर्थ मन्दिर है, जिसकी मैं चर्चा कर रही थी।"

## एशियाई तैराकी प्रतियोगिता

बंगला देश में 4 से 7 जून 1980 तक आयोजित एशियाई तैराकी प्रतियोगिता में भारत की ओर से के० रि० पु० बल के स० इ० सोमशेखरन, स० इ० थोबासिंह तथा हे० का० पद्मनाभन ने भाग लिया।

## प्राथमिक चिकित्सा प्रतियोगिता

ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में 7 से 9 मई 1980 तक आयोजित अन्तर्रेंज प्राथमिक चिकित्सा प्रतियोगिता में, अजमेर रेंज चैम्पियन रही। उपविजेता दिल्ली रेंज रही तथा गौहाटी रेंज तृतीय रही।



# वाह्य चौकी पर जीवन

**लेखक—श्री एच०एस० सेठी**

तिब्बत-सीमा के निकटवर्ती क्षेत्र की प्रतिकूल प्रकृति के विषय में मैंने सुन रखा था। वहाँ का जीवन स्वयं देखने के लिए, मैंने अरुणाचल प्रदेश में स्थित के०रि०पु० बल की एक बाह्य चौको का दौरा किया।

उस बाह्य चौकी की अत्यन्त ऊँचाई के चारों ओर निर्जन वन्य प्रदेश में, या तो जंगली पशु अथवा सिपाही लोग घूमते हैं। कभी कभार, कस्तूरी मृग की खोज में कोई शौकीन शिकारी भी आ टपकता है।

इन ऊँचाइयों पर जीवित रहने के लिये हर किसी को सचमुच में कठोर बनना पड़ता है। इस विरल वातावरण में, शयनथैले में सोने की कोशिश करते समय तक साँस फूलती रहती है। 200 ग़ज़ की दूरी वाली नदी से जल पात्र लाने में तीन जन लगते हैं।

बड़े मार्ग का तो कोई नामो निशान वहाँ नहीं है। बर्फ या जंगल में और कभी-कभी उन दल-दलों में होकर पगडंडी जाती है, जो घास से ढकी होने के कारण बड़ी खतरनाक़ और धोखेबाज़ होती है। कटे पेड़, चढ़ने-उतरने की सीढ़ी का काम देते हैं। जो रज्जुमार्ग के आदिम पुल वहाँ हैं, वे प्रायः टूट गये हैं और सिपाहियों को नदियाँ खड़े खड़े पार करनी पड़ती हैं। जहाँ पुल टूटे भी नहीं हैं, वहाँ उनके तलों में

उच्छालेकायें दिखाते हुये बड़े बड़े अन्तराल होते हैं।

ये वे ही रास्ते हैं, जिन पर के०रि०पु० के जवान अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं पर पहरा लगाते हैं। एक बार चले गये, तब उन्हें पाँच-सात दिन बाहर रहना पड़ता है। अतएव, हर प्रहरी टुकड़ी को पका हुआ भोजन, एक तसला, स्टोव, हथियार तथा बिछौना ले जाना चाहिये । यद्यपि यह बड़ा बोझिल है, लेकिन ले जाना पड़ता है।

चलते समय, जाने कहाँ कहाँ से आकर जोके उनके जूतों तथा शरीर में चिपक जाती हैं। उनका पता तभी लग पाता है, जब वे खूब ख़ून चूस लेती हैं। हटा देने पर भी, घंटों ख़ून बहता रहता है। अत: उन पर नमक छिड़का जाता है या दियासलाइयों से उनकी पूँछ जलाई जाती है। तभी वे चिपचिपी चीजें देह को तुरन्त छोड़ देती हैं।

मार्ग में, कहीं सिर छिपाने को और रात बिताने को जगह नहीं है। जवान चट्टानों से निकल भागने का सहारा ढूंढ़ते हैं या रात को केले के पत्तों का शरणस्थल बनाते हैं। इस कामचलाऊ छत के पास, विषले पशुओं से बचने तथा गर्मी पाने के के लिये, वे आग जलाते हैं और हिमपात तथा बरसात में, सब उसी में इकट्ठे हो जाते हैं। उन्हें सो नहीं मिलता है, उनके शयन थैलों में, खटमल उनको परेशान करते हैं। ओषजन की कमी उन्हें बैचैन करती है और उन्हें सदैव अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के पास होने की चिन्ता खाये जाती है। वैसे कोई घटना नहीं हुई है। पहरा देते समय, वे सीमा के पार चीनियों को देखते हैं। बस यही सब कुछ है।

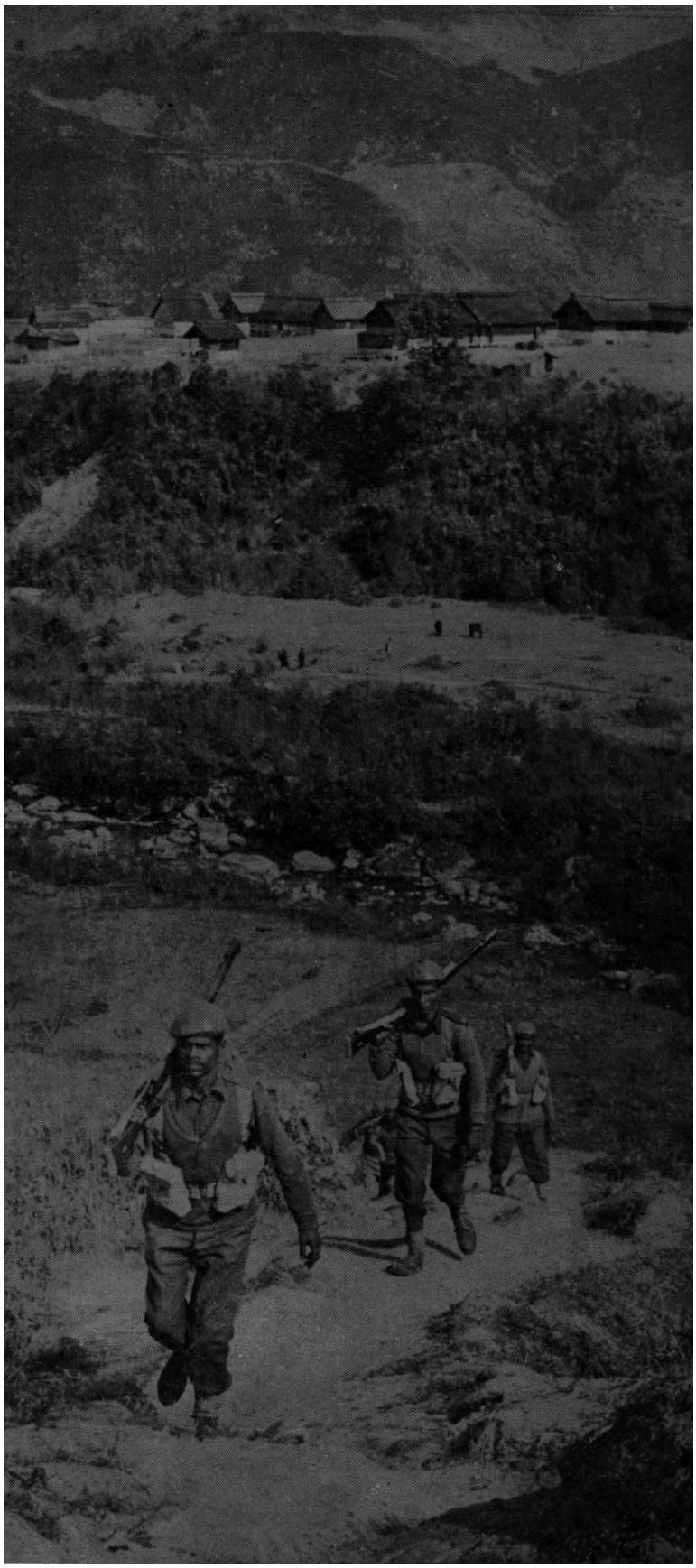
इस बाह्य चौकी पर राशन तथा अन्य चीजें उस चौकी से आती हैं, जो वायुयान द्वारा देखीभाली जाती है। चौकी से बाह्यचौकी तक चीजें या तो जवान ले जाते हैं या कुली पहुँचाते हैं। यह प्रति सप्ताह का कठिन काम है और कभी कभार जब बुरे मौसम के कारण चौकी पर ही वायुयान चीजें नहीं पहुँचा पाते हैं, तब बाह्यचौकी पर तो स्थिति, अतीव निराशाजनक हो जाती है। जीवन रखने के लिये ऐसे संकटों में फेरबदलों से काम चलाना पड़ता है। गेहूँ के अभाव में, चावल प्रयोग करते हैं तथा विलोम क्रमेण । शाक तो मिलते ही नहीं हैं, दालें कम से कम ज़रूर वहाँ होती हैं। ये सब कुछ नहीं उपलब्ध होने पर, तब वहाँ क्या गुज़रती है ? एक बार 22 दिनों तक कोई चीज़ वहां नहीं पहुँची; किन्तु पहरा नहीं रुक सका था । सीमानों पर एक टुकड़ी को पाँच दिनों के लिये पहरा देने जाना पड़ा; हरेक जवान पर केवल 16 पूरियाँ थीं। ऐसे संकटों में, बाँस की सब्जी बनाई जाती है, किन्तु वह बहुत गर्म होता है और पेचिश तथा गुर्दे के रोग पैदा करता है। जहाँ वनस्पति उगना रुक जाती है, वहाँ बाँस भी नहीं मिलते। तब वे जंगली प्याज खाते हैं।

जवान शिकार के लिये आग नहीं जलाते हैं। जिसे 'फन्दा' वे पुकारते हैं, उसे वे बनाते हैं । वे फन्दे में एक प्रकार का कीट बाँधते हैं और जब बनैले पशु उसे खाते हैं, तभी वे पकड़े जाते हैं।

धूम्रपान के उपरान्त, बीड़ी के बचे भाग वे केंकते नहीं हैं, क्योंकि जब पूर्ति नहीं आ पाती है, तब दियासलाई की डिब्बी, में संभाल कर रखे हुये इनको फिर काम में लाते हैं।

इन ऊँचाइयों पर कोई बस्ती नहीं होने के कारण, सबसे बड़ी समस्या अकेलेपन की है। पहरे के बाद, उन्हें कुछ नहीं करने को होता। सोचते-सोचते वे पागल हो जाते हैं। केरलवासी का० नटराजन का एक ऐसा ही एकाकी जवान है। उसकी सगाई हो गई है और वह अपनी मंगेतर का फोटो दिल से लगाये रखता है। वह उससे पत्रालाप करता है। वह जानता है कि मंगेतर भी लिखना चाहती है; किन्तु लिख नहीं पाती। हर समय वह उसके तया माता पिता के एवं छुट्टी के विषय में सोचता रहता है।

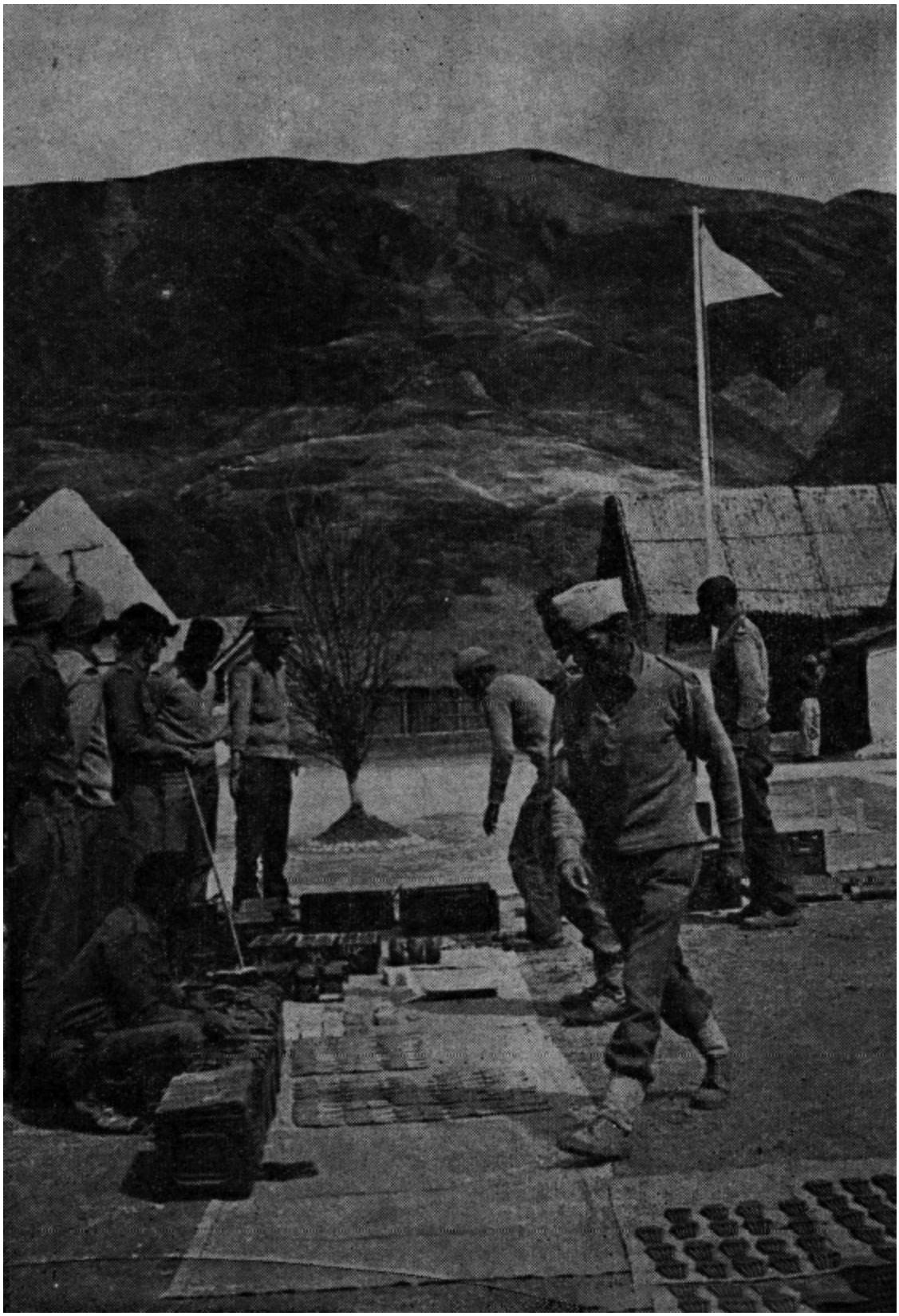
बाह्य चौकी पर कुछ पुस्तकें होती हैं; किन्तु उन्हें जवान कितनी ही बार पढ़ चुके होते हैं। ताश, शतरंज और चीनी-चक्कर जैसे अन्तरंग खेल, खेल लिये जाते हैं; किन्तु, जैसे एक जवान ने लौट कर यह पूछा "कितने समय इन से खेला जा सकता है। कैरम ?—नहीं, उन पर नहीं है। इन ऊँचाइयों पर ले जाने को, वह निषिद्ध वस्तु बड़ी भारी भी है। ट्रांजिस्टर अवश्य है, किन्तु अच्छे ही ट्रांजिस्टर भारतीय आकाशवाणी केन्द्रों को पकड़ पाते हैं। दूसरी ओर, चीनी और ढाका के रेडियो-केन्द्र साफ़ और तेज सुनाई पड़ते हैं।



बाह्य चौकी पर डाक आती है, परन्तु वहाँ पहुँचते-पहुँचते कम से कम एक मास लग जाता है। का० बाड़ोदिव को अपने बहनोई की मृत्यु की सूचना दो मास बाद मिली। अन्य भी समस्यायें थीं; तदुपरान्त वह नहीं जा सका। उसका प्रश्न था "बोलिये, कैसे मैं अपनी बहन को मुख दिखा सकता है ?" जब वेतन देने वाली टुकड़ी आती है या कोई कुली चौकी से आता है, तभी डाक मिल पाती है। जैसे ही वे उन्हें आते देखते हैं, डाक, समाचार तथा अपने सहयोगियों से मिलने वे मीलों दौड़ते हैं। डाक को तुरन्त पढ़ कर, वे सभी घनिष्ठ तथा प्यारे जनों को पत्र लिखने बैठ जाते हैं। यह सब कुछ उन्हें कुछ ही मिनटों में करना होता है और फिर कली को पत्र सौंपने होते हैं। 'मसीहा' कुली लौटने की जल्दी में है। उसकी देरी करने के लिये, जवान उसकी अनुनयविनय करते हैं तथा जितना भी बढ़िया चायपान वे उस क्षेत्र में करा सकते है, उसे कराते हैं।

जवान और उसके रिश्तेदार यह जानते हैं कि डाक में देरी लगेगी। अतः जब कोई ज़रूरी संदेश उन्हें भेजना होता है, तब रिश्तेदार कमांडैंट को लिखते हैं और वह अपनी बाह्य चौकी पर बेतार द्वारा उसे भेजता है। आप उन्हें 'बीड़ी का बंडल' या 36" की बनियान की मांग करते सुन सकते हैं। जवानों के साथ रह कर ही यह पता लगता है कि मारकोनी (बेतार के अन्वेषक) के प्रति, जवान कितने आभारी हैं ?

उन पर्वतों पर बीमार नहीं होना चाहिये; नहीं तो, क़यामत है। ऐसी बाह्य चौकियों पर हेलीकॉप्टर उतर नहीं सकते । डॉक्टर को एक सप्ताह या उससे अधिक समय वहाँ पहुँचने में लगेगा तथा स्ट्रेचर पर रोगी को ले जाना असम्भव है,क्योंकि यहाँ पर तो स्वस्थ व्यक्ति तक को चलने में बड़ी कठिनाई प्रतीत होती है।



बारूद की जाँच करते हुये हमारे जवान

जवानों के मनोविज्ञान पर जीवन की नीरसता, एकाकीपन और फलस्वरूप उकताहट बड़ा कुप्रभाव डालती है। वे जीवन का आनन्द खो बैठते हैं और हुज्ज़ती हो जाते हैं। अनुभवी अधिकारी यह जानता है कि जवान कैसे चंचल स्वभाव के होते हैं व उनसे बड़ी सावधानी से सुलझना होता है।

जवानों को ऐसा जीवन प्यारा नहीं है और होगा भी किसे ? किन्तु वे तब तक शिकवा शिकायत नहीं करते, जब तक उनके अधिकारी सर्वोत्तम व्यवहार करते हैं। जवान जानते हैं कि बाह्य चौकी पर नियुक्ति, सैनिक जीवन का एक अंग है।

### अग्निशमन

रोइंग में 24 अप्रेल 80 को लगी आग के बुझाने के उपलक्ष्य में, पुलिस महा निरीक्षक अरुणाचल प्रदेश, ने 35 बटालियन, के० रि० पु० बल के जवानों को 500 रु० नकद पुरस्कार दिया है ।

### प्रीपैक-समर्थक बन्दी

दिनांक 31 मई 1980 को, 5 बटालियन (के० रि० पु० बल) ने मन्त्री पोखारी क्षेत्र में खोजबीन करते हुये, चार सक्रिय प्रोपैक समर्थक बन्दी बनायें। उनमें छिपे विद्रोहियों को कथित उपकरण भेजने वाला लीज़ीम इबोचा भी था।

## दिल्ली की बाढ़ में हमारा योगदान

अलीपुर क्षेत्र में पल्ला बांध में जान बूझ कर तोड़ फोड़ रोकने को, के० रि० पू० बल के जवान जुलाई 80 में निरत किये गये हैं, जिससे 1978 वाली सी तोड़फोड़ द्वारा दिल्ली में फिर बाढ़ न आ सके। पल्ला ग्राम में, राहत व बचाव काम के लिये, हमारी एक प्लान तैनात है।

**सवास्थ्य सन्देश :**

# परिवार नियोजन

**ले०—सिपाही भारतसिंह, 50 बटा०**

परिवार-नियोजन इतनी घिसी-पिटी बात हो गई है कि लोगों को कहने में ज़रा भी संकोच नहीं होता है। जितनी कटुता अथवा झिझक पहले इसके नाम लेने में थी,

उतनी ही मधुरता तथा निस्संकोचता अब दीख पड़ती है। इसका मुख्य कारण अन्य बातों के अतिरिक्त, सरकारी प्रचार तथा प्रसार है। परिवार-नियोजन से तात्पर्य "एक सुनियोजित योजना से है, जिससे परिवार का बहुमुखी विकास हो सके। यह विकास तभी सम्भव है, जब कम बच्चे पैदा किये जायें।"

प्लैटो ने हज़ारों वर्ष पहले ही भविष्यवाणी की थी कि यदि नियोजन या सन्तान की अधिकता पर रोक न लगायी गयी, तो आगामी नौ वर्षों में जन संख्या अठाइस गुनी हो जायेगी। उसने यहाँ तक अपनी पुस्तक 'रिसब्लिक' में लिखा कि स्वस्थ तथा उन्नतिशील समाज के लिये प्रजनन कराना वैसा ही जरूरी है जैसा वह अच्छे घोड़े घोड़ी के लिये आवश्यक है। इसके लिए, उसने वर्ष में एक ऐसे मेले का समायोजन करने की भी सलाह दी, जिससे स्वस्थ और उन्नतिशील समाज की स्थापना हो सके। परन्तु अरस्तु इस बात का खण्डन अपनी पुस्तक 'परिवार' में करता है कि इससे तो परिवार नामक संस्था का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। हाँ, इस बात से वह भी अवश्य सहमत था कि परिवार के विकास के लिए परिवार को नियोजित करना अत्यावश्यक है।

कोई समय था, जब संयुक्त परिवार अथवा बड़े परिवार का बड़ा महत्व था। यहाँ तक कि अधिक सन्तान वालों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। सरकार उन्हें भूमि मुफ्त देती थी। "सात पूत की माँ, कमाऊ जिये, बेटा हो" बूढ़ी औरतों का आशीर्वाद था। अब समय विपरीत है। असीमित परिवार दरिद्रता का प्रतीक और हँसी का केन्द्र बन गया है। हर डेढ़ सेकेण्ड में एक बच्चे का जन्म हो रहा है, यानी 55,000 बच्चे एक दिन में या 21 लाख बच्चे प्रति वर्ष जन्म लेते हैं, जबकि 8 लाख व्यक्ति केवल प्रतिवर्ष मरते हैं। मतलब यह हुआ कि प्रति वर्ष 13 लाख की जन संख्या में वृद्धि होती है। इस सब से बचने के लिये, परिवार-नियोजन ही एक विकल्प है।

पहिले प्रकृति अपने आप अकाल या भयंकर बीमारियों जैसे प्लेग, मलेरिया हैजा आदि से जन संख्या कम कर देती थी; लेकिन जैसे-जैसे चिकित्सा-विज्ञान ने तपेदिक़ तक जैसी घातक बीमारियों पर विजय पाय ली है, मृत्यु दर घट गई है और जन-संख्या में वृद्धि नज़र आने लगी है, यद्यपि जन्म दर क़रीब-क़रीब एक ही है। इससे समाज के भयंकर संकट 'भुखमरी और बेरोज़गारी'–आसानी से समझ में आ सकते हैं।

अर्थशास्त्रियों के अनुसार, मनुष्य अर्थ के चारों ओर घूमता रहता है तभी तो मनुष्य का एक नाम 'अर्थाश्रय' है। शुक्र के अनुसार "अर्थ की उत्पत्ति अनर्थ से होती है। जब परिवार का बोझ पड़ेगा, तो अनर्थ की ओर बाध्य होना ही होगा, जिस से समाज की नींव हिल जाती है, समाज में अपराध बढ़ जाते हैं। जिस समाज में मनुष्य परिवार बना कर रहता है, अपराधों के कारण पारिवारिक जीवन नरकगामी हो जाता है। तभी तो परिवार नियोजन के लिये, बहुत से मूलमन्त्र नित्य प्रति दोहराये जाते हैं, उदाहरणार्थ' हम दो, हमारे दो; 'परिवार नियोजन की पहचान, लाल तिकोन ; 'छोटा परिवार, सुख का आधार' 'अगला बच्चा अभी नहीं, तीन के बाद कभी नहीं।"

परिवार नियोजन दो प्रकार का होता है—(I) स्थाई और (II) अस्थाई । स्थाई

नियोजन एक बार कराने के बाद, सन्तान होना बिल्कुल बन्द हो जाती है। अस्थाइ नियोजन में, केवल कुछ समय के लिए ही सन्तति-निरोध होता है । साथ ही, स्त्री और पुरुष के लिए अलग अलग बहुत तरीके हैं, जिनके बारे में; पास के 'परिवार-नियोजन केन्द्र' से मुफ्त में सलाह मिल सकती है। वैसे तो नवभारत टाइम्स के अनुसार आयुर्वेदिक संस्थाओं का कहना है कि हींग और सरसों के तेल को मिला कर स्त्रियों को खिलाते रहने से गर्भ धारण नहीं होता है या गुप्तांगों पर शहद का लेप हितकर होता है। परन्तु यह कोई पक्का इलाज नहीं है। नसबन्दी ही सब से सस्ता और सरल साधन है और पुरुषों के लिये तो केवल छोटा सा पाँच मिनट का आपरेशन है; इस में, पुरुषों को बेहोश भी नहीं किया जाता। सरकार इसके प्रोत्साहन हेतु, कुछ धन इत्यादि उपहार में भी देती है। केन्द्रीय सरकारी कर्मचारी को आपरेशन के बाद स्वस्थ होने को कुछ विशेष आकस्मिक अवकाश भी मिलता है। सबसे उत्तम बात यह है कि आवश्यकता पड़ने पर नस फिर ठीक की जा सकती है और सन्तान फिर उत्पन्न की जा सकती है।

भारत की जनता अधिकतर खेतिहर मज़दूर है। खेतों में काम करना उसे मुश्किल सा लगता है। राशनिंग प्रणाली में आज मिट्टी के तेल के लिये लाइन, कल चीनी के लिये और परसों कोयले के लिये । अतः मनुष्य काम कब कर पायेगा? तभी ग्रामीण क्षेत्रों में लोग कहते हैं—'गाँव गया हदबन्दी में, खेत गया चकबन्दी में। ख़ड़ी खड़ी तिरिया चिल्लाये, मर्द गया नसबन्दी में।'

कुछ लोगों को यह भी भय है कि जीवित बच्चे किसी बीमारी या दुर्घटना से न रहें, फिर क्या होगा ? साथ ही, कुछ लोगों को यह भ्रम या भय रहता है कि नसबन्दी से लैंगिक आनन्द में कमी हो जाती है। लेकिन ये सब तर्क निराधार हैं। जैसा ऊपर बताया जा चुका है, नसबन्दी ठीक हो सकती है; सन्तान फिर प्राप्त हो सकती है। चिकित्सकों ने बताया है कि इससे लैंगिक कमज़ोरी किसी भी प्रकार की कभी भी पैदा नहीं होती है।

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि (I) हम आसानी से यह तय कर सकते हैं कि हमें कितने बच्चे चाहिये (II) हम पत्नी का स्वास्थ्य ठीक रख सकते हैं और स्वस्थ पत्नी भी इसी प्रकार पति की ओर अधिक ध्यान दे सकती है; (III) बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा तथा भविष्य के बारे में पर्याप्त देखभाल कर सकते हैं; तथा (IV) विवाहित जीवन का निर्द्वन्द्वः आनन्द उठा सकते हैं।

यदि शिक्षा-प्रणाली द्वारा सुखी जीवन के लिए परिवार-नियोजन का मूल मंत्र पढ़ाया जाये, तब परिणाम आशाजनक निकल सकता है। सरकार ऐसे कानून बना सकती है, जिससे सन्तान-नियंत्रण हो सके। साथ में, जनता खुले हृदय से इसमें सहयोग भी दे । फिर कहना ही क्या है ?

बस दो या तीन बच्चे,
होते हैं घर में अच्छे ।

यह बात है लाख टके की,
यह बोल बड़े ही सच्चे ॥

परिवार-नियोजन के लिये महिलाओं की भी 'फैलोपियन ट्यूब' शल्य द्वारा काट दी जाती है। वैज्ञानिक दृष्टि से इस क्रिया में कोई दोष नहीं है। सुश्रुत संहिता में भी इस आपरेशन का स्पष्ट वर्णन है, जिसे अज्ञानवश वर्तमान विज्ञान की देन समझकर 'ट्यूबेक्टोमी' की संज्ञा दी गई है । आज के युग में, परिवार नियोजन परम आवश्यक है। छोटा परिवार ही सुख का आधार हो सकता है। इसी में, अपना तथा देश का कल्याण है। अतएव, सन्तति निरोध के लिए, वैज्ञानिक तरीकों को अपनाना ही, बुद्धिमत्ता है।

**—हिन्दी सम्पादक**

**<u>कविता :</u>**

## परिवार-नियोजन

**[रचयिता—का० सुशील कुमार चौहान]**

बच्चों का गुन मुख्य यह, नहीं छोड़ते संग /
छीना-झपटी हो रही, खड़े अंग से नंग //
खड़ अंग से नंग, वसन एक ही बन पाया /
किया न क्यों परिवार-नियोजन; मैं पछताया //
लीना, मीना, नित्य, लड़े राजू अरु संजय /
बर्तन भाड़े फेंक, रहे, सब हो कर निर्भय //
बन्दर-बन्दरि-सदृश, देखते दोनों हैं हम /
रूखी खायें बाल, हमें खाता राम हरदम //
वेतन कम है, खर्च अधिक है, बीबी कहती /
सारे दिन नटखटी, सभी बच्चों की सहती //
कहे 'सुशील' सन्तान बहुत, होती है गन्दी /
होता अति सौभाग्य, कराता जो नसबन्दी //
'पहला' करते न शीघ्र, 'दूसरा' अभी न करना /
करते 'निरोध' प्रयोग, 'तीसरा' कभी न करना //

## ॥ पहेलियाँ ॥

**(प्रस्तोता—दपतरी गणेश प्रसाद, उपमहानिरीक्षालय, श्रीनगर)**

चक्कर पर चक्कर खा कर के,
हुये अगन से पाक ।
बार एक ही चूम कर,
हैं देते पिया तलाक ॥ 1 ॥
मीठे फल, पेट में हड्डी,
काँटे रखते घेर ।
रामचन्द्र से सीता पूछे,
कहाँ लगाई बेर ॥ 2 ॥
पैदा होते जल को माँगू,
बिठा नगर और गाँव ।
सात समुन्दर पार कराऊँ,
बतला मेरा नाव ॥ 3 ॥

**उत्तर**—(1) कुल्हड़ (2) बेर (3) नाव

## सूक्ति सुधा

सहस्रों वर्षों तक जीवित रहने पर भी, मनुष्य विद्याओं का अन्त नहीं पा सकता।

**—काव्य मीमांसा ।**

सन्तोष से वह अनन्त सुख मिलता है, जिसके समान कोई सांसारिक सुख नहीं।

**—पातंजलि**

तराजू और दुष्ट थोड़े से ही ऊपर और थोड़े से ही नीचे आ जाते हैं।

**—पंचतन्त्र ।**

यह तो सब कल्पना की बात है कि दैव (भाग्य) कुछ करता है, वह तो कुछ होता ही नहीं हैं; वह कुछ करता ही नहीं हैं; वह तो सदा असत् है

**—योगवाशिष्ठ**

## यह भी खूब रही

झगड़ालू पत्नी के मरने पर, कवि ड्राईडेन के मित्र ने उसकी कब्र पर यह खुदवाने का सुझाव दिया 'इस कब्र के अन्दर मेरी पत्नी आराम से है और कब्र के बाहर मैं आराम में हूँ।'

कहावत 'राई से पहाड़' इन्हीं दिनों तब चरितार्थ हो गई, जब हरियाणा सरकार की

कृपा से 'राइ' गॉव एशियाइ खेलों के लिये चुने जाने पर एक ही दिन में सरकार से करोड़ों रुपयों के पाने पर सोने का पहाड़ बन बैठा।

**पुत्र**—मम्मी, मुझे पापा मत समझाना, जो तुम्हारे धमकी से डर जाते हैं।

**पत्नी**—मेरी अक्ल की दाद दो, जो तुम जैसे बुद्धू से विवाह कर बैठी।

**पति**—दाद छोड़, मैं तुम्हें खुजली भी नहीं दे सकता, क्योंकि तारीफ़ तो मेरी अक़्ल की है, जिसने तुम जैसी अक़्लमन्द को फाँस लिया।

**राम**—मित्र, इन दिनों चुनाव चिन्हों ने हमारी वह दुर्गति बनाई कि पार्टियों के डर से साइकल पर चढ़ना, और चिल-चिलाती धूप में छतरी लगाना कठिन हो गया।

**मित्र**—अमाँ, यह तो कुछ भी नहीं हम शादीशुदा से पूछो, जिन्हें अपनी 'औरत' तक साथ ले चलना चुनाव के दौरान मुश्किल हो गया।

**ज्योतिषी**—नेताजी, लाओ हाथ दिखाओ, तब भविष्य बतायें।

**नेता**—चल हट, हम लोक दल के हैं, हम तो औरत दिखा सकते हैं

**पत्नी**—हँस हँस कर कोई तुम नई बात तो नहीं बता रहे हो कि नन्हामुन्ना तुम्हारी बातों पर हँसे जा रहा है। अरे, तुम्हारी बातों पर तो सदा सारी दुनिया हँसती है।

दिल्ली की बसों में लिखी चेतावनियों के साथ बेहूदा मज़ाक़ प्रायः किया जाता है। एक बस में 'सूचित' शब्द से 'स' मिटा दिया है और चेतावनी अब इस प्रकार पढ़ी जाती है—'बस-स्टाप आने से पहले, यात्री ड्राइवर को चित करें।'

**गोपी**—भूषण, अब तो कैसा काम चल रहा है; पिछली बार तो तुम अच्छा चल रहा बताते थे।

**भूषण**—जब काम चल रहा था, तब उसे चले जाना ही था। अब वह बिल्कुल चला गया।

पिछले अप्रेल में कानपुर के बेरोज़गार-कार्यालय पर यह नोटिस चिपका मिला—487 रिक्त स्थानों की भर्ती के लिये अभ्यर्थियों की आवश्यकता है। **पद**—विधेयक; **आयु**—21 वर्ष, **शिक्षा**—अनपढ़ अंगूठा टेक तक चल सकता है; **वरीयता**—तोड़-फोड़, व दलबदल में दक्षता।



**14वीं अन्तर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता में विशिष्ट दर्शक**



**श्री श्रवण टंडन, महानिदेशक, ब्रिगेडियर अजीत सिंह, उपमहानिदेशक (संचार), तथा कर्नल एस. एस. सोढी के साथ अ० भा० पुलिस ड्यूटी मीट प्रतियोगिता की विजेता के०रि०पु० बल की सिगनल टीम ।**

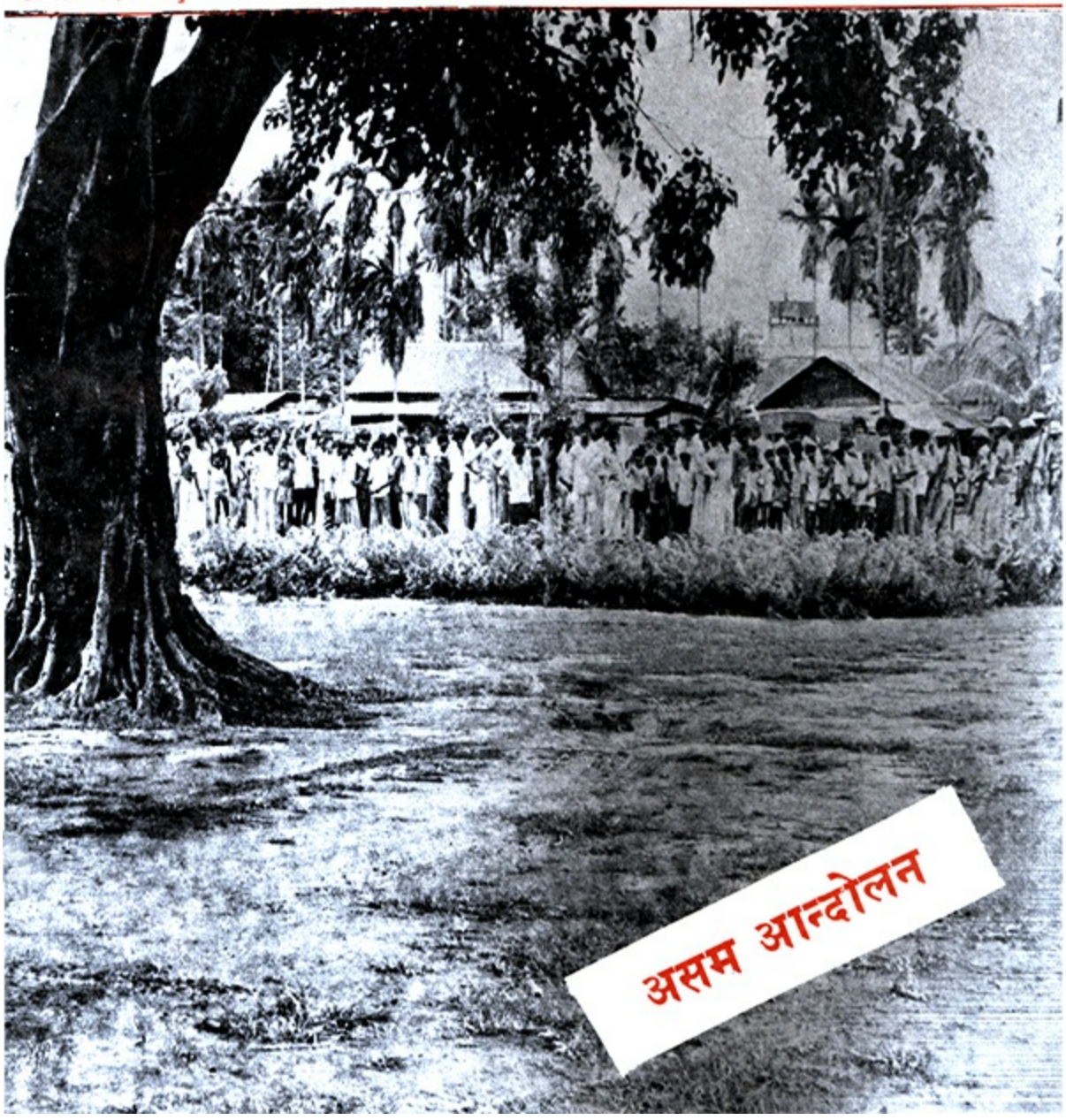
[रजिस्टर्ड नं० 25627/74]

# ★ क्रै प ल र ★

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

30 सितम्बर, 1980] खण्ड IX अंक 4 [8 आश्विन, 1902






**अल्पसंख्यक छात्रों के जुलूस को बाढ़पेटा (असम) में प्रवेश करने से रोकते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान**

## 'शान्ति सेना' के लिये के० रि० पु० बल में तीन बटालियनों का गठन

भारत सरकार ने यह निर्णय किया है कि उपद्रवों को नियंत्रित करने के लिए के० रि० पु० बल में तीन बटालियनों का तत्काल गठन किया जाये। इन बटालियनों में अल्पसंख्यकों को यथेष्ट प्रतिनिधित्व रहेगा, जिससे अनुसूचित तथा अन्य कमज़ोर वर्गों का विश्वास इनमें पैदा होगा। इन बटालियनों को

उपद्रवों के लिए कुख्यात क्षेत्रों में तैनात किया जायेगा, जिससे दंगों के समय तुरन्त इन्हें घटना स्थलों पर भेजा जा सके।

# ★ क्रैपलर ★

द्वैमासिक]

[हिन्दी संस्करण

## केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका

**खण्ड IX**

**अंक 4**

**30 सितम्बर, 1980**

**9 आश्विन, 1902**

मुख्य सम्पादक :

**एच० एस० सेठी**

हिन्दी सम्पादक :

**जे० एस० शर्मा**

**छायाचित्रांकन : एच०एस० सेठी**

---

**आवरण :**
असम में आन्दोलनकारियों के जुलूस को रोकते हुए के० रि० पु० बल के जवान।

---

**सम्पादकीय कार्यालय :**
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल,
पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-110022 ।
**प्रकाशक**- महानिदेशक, के०रि०पु० बल की ओर से एच०एस० सेठी।
**मुद्रक**- सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072 ।

**क्रम संख्या**

**विषय**

**I. नये महानिदेशकः-** के० रि० पु० बल

**II. गौरव गाथा :-** पदक, प्रशंसा तथा पुरुस्कार

**III. रिपोर्ताज :**

(क) नये पुलिस महानिरीक्षक, से० II

(ख) फ़ोटोग्राफी में हमारी प्रतिष्ठा

(ग) के०रि०पु० बल के सदस्यों के बालकों को छात्रावृत्तियाँ

**IV. लेख :**

(i) पुलिस में खराबी क्या है ? ले०-श्री पी० एस० कुमार

(ii) असम-आन्दोलन, ले०-श्री एच०एस० सेठी, . जन सम्पर्क अधिकारी

(iii) मैं 7.62 मि० मी० कारतूस हूँ, ले०-श्री वाई० जी० माथुर

**v. क्रीडा क्षेत्रे :-**

(i) प्रतियोगितायें

(ii) कुश्ती, ले०-श्री सुखवन्त सिंह

**VI. कविता :** अमर सिपाही, रचयिता-क० लिपिक हंस राज ओझा, ग्रुप केन्द्र, गौहाटी

**VII. कहानी :-** जूतों की दग़ावाज़ी, ले०- श्री जे० एस० शर्मा, हिन्दी सम्पादक

**VIII. विज्ञान के चढ़ते चरण :-**

**IX. विविध :-**

(क) यह भी खूब रही

(ख) पहेलियाँ, प्रस्तोता-दफ्तरी गणेश प्रसाद, कार्यालय उप-महानिरीक्षक, श्रीनगर

(ग) सूक्ति सुधा

**गौरव-गाथा :**

# गृहमंत्री द्वारा सराहना

गृहमंत्री ज्ञानी ज़ैलसिंह ने 4 सितम्बर 1980 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की स्टाफ कौंसिल की बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने इस बल के कार्यों की बड़ी प्रशंसा की तथा यह कहा कि सालाना अवकाश सभी को मिलना चाहिये।

उक्त बैठक में सफ़ाई कर्मचारी, रसोइया, धोबी और पानी भरने वाले को उच्च वेतन मान देने, मकान किराया देने, सब इन्स्पेक्टर को पीक टोपी और चमड़े की पेटी देने, सिगनल्स में सहायक सब इन्स्पेक्टर का पद देने और दुर्गम स्थल पर तैनात डाक्टरों को विशेष वेतन देने पर सहमति व्यक्त की गयी।

## अरुणाचल के मुख्य मंत्री की प्रशंसा

श्री गेगांग अपांग, मुख्यमन्त्री, अरुणाचल प्रदेश ने इनकियांग पर 31 बटालियन (के० रि० पु० बल) के शिविर का निरीक्षण किया। उन्होंने 'आगन्तुक पुस्तिका' में लिखा है-'सम्मान-गारद, संगीत-मनोरंजन तथा के० रि० पु० बल और छात्रों के बीच वालीबॉल के मैत्री मैच के प्रदर्शन के लिए धन्यवाद। 31 बटालियन (के० रि० पु० बल) की 'बी' कम्पनी के सर्वांगीण क्रिया-कलापों से मैं बहुत प्रभावित हुआ हैं। उनके भव्य भविष्य के लिए मेरी मंगल कामनाएँ हैं।"

## केन्द्रीय गृह सचिव द्वारा सराहना

विधान सभाओं के मतदान के समय के० रि० पु० बल के योगदान के लिए, भारत सरकार की सराहना, श्री एस. एम. एच. बर्नी, गृहसचिव ने, महानिदेशक के० रि० पु० बल को प्रेषित की है। अपने पत्र में उन्होंने लिखा है सभी राज्यों में शान्तिपूर्ण मतदान होना ही, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कर्मठता का भव्य प्रमाण है।"

## मुरादाबाद में चिकित्सा सुविधाएं

विगत 19 अगस्त को, मुरादाबाद के सर्वाधिक दंगाग्रस्त क्षेत्र- 'ईदगाहभूड़ चौराहे पर, के० रि० पु० बल ने एक चिकित्सा शिविर खोला। वहाँ हमारे दो चिकित्सक-दलों ने ईदगाह, भूड़ तथा इन्द्रा मार्केट के निकटवर्ती हजारों उपद्रव-पीड़ितों का उपचार किया।



## ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली में पेट्रोल पम्प

ग्रुप केन्द्र, झड़ोदा कलाँ में, 1 जुलाई, 1980 को एक पेट्रोल-डीज़ल पम्प लगाया गया। सबसे वरिष्ठ परिवहन हेड कान्स्टेबल धन्ना राम ने इसका उद्घाटन किया। ना० एम० सुधाकरन ने इस ग्रुप केन्द्र की बस में सर्व प्रथम डीज़ल भरा।

इस समारोह में मुख्य अतिथि श्री दादाभाई, उप महानिरीक्षक थे, जिन्होंने पम्प लगाने के लिये ग्रुप केन्द्र के अफसरों के अथक प्रयासों की प्रशंसा की

---

## विशिष्ट तथा सराहनीय सेवापदक

स्वाधीनता दिवस 1980 के अवसर, पर, भारत सरकार ने निम्नलिखित 15 अधिकारियों/कर्मचारियों को उनकी विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के उपलक्ष्य में पदक प्रदान किये :-

**1. राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पुलिस पदक** (2)

I. श्री एस. दत्ता चौधरी, पुलिस महानिरीक्षक सेक्टर IV तथा 2. श्री बी० बर्मा पुलिस महानिरीक्षक, सेक्टर III.

**II. सराहनीय सेवा पुलिस पदक (13)**

1. श्री योगेन्द्र नारायण सक्सेना, उपमहानिरीक्षक, हैदराबाद; 2. श्री योगेन्द्र प्रसाद बक्सी, सहायक निदेशक (परिचालन); 3. श्री राजेन्द्र पाल सिंह, सहायक कमांडैंट

ग्रुप केन्द्र हैदराबाद; 4. श्री नागरासिंह, पुलिस उपाधीक्षक, 54 बटा०; 5.सू० मेजर खजूरसिंह, 39 बटा०; 6. सू० मुहम्मद अज़ीज़ खां, ग्रुप केन्द्र दिल्ली 7. स० इ० जगमाल सिंह, ग्रुप केन्द्र दिल्ली; 8. स० इ० रावलसिंह 5 बटा०; 9. हे० का० गंगाराम; 21 बटा०; 10. हे० का० बाबूराम, 38 बटा०; 11. ना० कर्तारसिंह, 14 बटालियन; 12. ना० सुखपालसिंह, ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर तथा 13. का० भगवानसिंह भण्डारी, ग्रुप केन्द्र मुकामाघाट।

महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने सभी उपर्युक्त सदस्यों को अपनी हार्दिक बधाइयाँ दी हैं।

## ईश्वर सिंह डागर को पुलिस वीरता पदक

श्री ईश्वरसिंह डागर, उप-अधीक्षक 8 बटालियन के० पु० रि० बल, को साहसिक कार्य के लिये पुलिस का वीरता पदक प्रदान किया गया है। पिछले वर्ष 14 नवम्बर को, जम्म में गाँधी नगर के गोल मार्केट क्षेत्र में आग लग गई। श्री डागर ने सूझ-बूझ से, पास के सिनेमाघर तथा घनी बस्ती की ओर बढ़ने से आग को रोकने के लिये बिजली के तार काट दिये। फिर जलती छत पर कूद कर और नीचे उतर कर, वह कंधों पर एक एक करके चार व्यक्तियों को आग की लपटों से निकाल लाये। इस कार्रवाई में चोट खाने पर भी, वह सहायता कार्य करते रहे।

## मरणोपरान्त वीरता पदक

अरुणाचल प्रदेश में अनेलिह की दूरस्थ चौकी पर गोमतो मेपो नामक एक कुख्यात अपराधी को 13 अप्रैल 1979 को बन्दी बनाने के यत्न में प्राण गँवाने वाले, का० आर. एन. सिंह, 35 बटालियन. (के० रि० पु० बल) को **मरणोपरान्त पुलिस वीरता पदक प्रदान** किया गया। स्थानीय सकिल अफसर को यह सूचना मिलते ही कि वह अपराधी केन्द्रीय सम्भरण केन्द्र, (सी. पी. ओ.) पर उस दिन आयेगा, के० रि० पु० बल की एक टुकड़ी उसे पकड़ने को निरत की गई। सभी बच भागने के मार्गों पर तैनात हो कर, उस टुकड़ी ने अपराधी को आत्मसमर्पण के लिए ललकारा। अपराधी ने उत्तर में भाला घोंप कर एक जवान को मारना चाहा; परन्तु वह लक्ष्य पर नहीं बैठा। तब उसने भाला छोड़ कर, दोनों हाथों में दाओ लिए। का० आर. एन. सिंह ने कूद कर अपराधी को दबोच लिया। अपराधी ने कां० सिंह के बायें कंधे पर दाओ से गम्भीर वार किया। तभी दूसरे सिपाही तालेराम ने अपराधी की टांग पर गोली मारी; किन्तु गोली अचानक का० सिंह की टाँग में जा लगी। अपराधी स्वयं को छुड़ा कर जंगल की ओर भागने लगा। का० सिंह ने रिंगते हुए, अपराधी को पकड़ने के लिए, अपने अन्य साथियों को पुकारा। ला० ना० विजयनाथन ने अपराधी पर गोली चलाई, जो उसके कूल्हे पर लगी। वह घातक सिद्ध हुई। का० सिंह भी चोटों के कारण जीवित नहीं बच सका।

## गेहूँ की लूट बचायी

दिनांक 22 जून 1980 की रात को, कलकत्ते में स्थित भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में से आठ-दस लुटेरों ने गेहूँ लूटना चाहा। वहाँ 7 बटालियन (के० रि० पु० बल) के हे० का० दर्शन सिंह तथा का० भगतसिंह पहरा लगा रहे थे। उनके चिल्लाने पर, लुटेरे भाग निकले; पर जवानों ने उनका पीछा किया। जवानों को डराने के लिये, लुटेरे रुके; उन्हें घेरा तथा हथगोलों और पत्थरों से हमला किया।

खतरे को देखते हुये, का० भगतसिंह ने एक लुटेरे को गोली मार कर गिरा दिया। शेष सब बच भागे। घायल लुटेरा बाद में मर गया।

## अग्नि शमन

सिक्किम में जारथंग की एक फैक्ट्री में भयङ्कर आग 26 जुलाई 80 को भड़क उठी। 4 बटालियन, के० रि० पु० बल के जवान घटना-स्थल पर जा धाये तथा अग्निशमन कर 25 लाख रुपये की सम्पत्ति बचा ली।

## 8 प्रीपैक समर्थक बन्दी

मणिपुर में 20-21 जून 1980 को खंगमन नन्देबम लैकाई ग्राम में नागरिक पुलिस, मणिपुर रायफल्स और 29 बटालियन के संयुक्त अभियान ने खोजबीन की और प्रीपैक के 8 सक्रिय सदस्यों को बन्दी बनाया। सात गोलों के साथ एक चीनी पिस्तौल और 6 गोलियों से भरी एक रिवाल्वर भी बरामद की गई।

## ब्लैक आर्मी का अध्यक्ष बन्दी

दिनांक 19 अगस्त 80 को, शिलांग से लगभग 20 कि० मी० दूर बारापानी पर, तथाकथित "मेघालय ब्लैक आर्मी" (काली सेना) के अध्यक्ष सुशील, कुर्वाह उर्फ बरहाइट कुर्बाह को, स्थानीय पुलिस तथा के० रि० पु० बल के संयुक्त छापे में, बन्दी बनाया गया, जिसे 1 अगस्त 80 को मेघालय सशस्त्र पुलिस बटालियन के शस्त्रागार पर छापा मारने का मुख्य कूटकर्मी बताया गया है।

इस से पूर्व, एक संदिग्धव्यक्ति के घर से, 2 रिवाल्वर, 71 गोले तथा 10 डिटोनेटर (स्फोटनयंत्र) बरामद किये गये।

## जवानों को टेरीकॉट की वर्दी

भारत सरकार ने (अभी तक दिये जाने वाले सूती वर्दी के दो सेटों के साथ-साथ) टेरीकॉट वर्दी का एक सेट, इंस्पेक्टर के पद तक के जवानों को देना स्वीकार किया है तथा यह भी स्वीकार किया है कि इस वर्दी की सेवा योग्यता के काल के उपरान्त, यह अपने आप निष्प्रयोज्य मान ली जायगी और जवान बिना कोई मूल्य दिए इसे अपने पास रख सकेंगे।

ये आदेश रंगरूटों तथा अनुचरों (फालोअर) पर लागू नहीं होंगे।

## 8 बटालियन को विदाई

जम्मू-कश्मीर से 8 बटालियन की विदाई से पूर्व, अप्रेल 1980 में एक समारोह मनाया गया। उसमें मुख्य मंत्री शेख़ मुहम्मद अब्दुल्ला ने राज्य में साढ़े तीन वर्ष के अपने प्रवास में 8 बटालियन के शानदार काम की सराहना की। राज्य के पुलिस महानिरीक्षक पीर गुलाम हुसैन शाह ने इस बटालियन की सेवाओं के उपलक्ष्य में, रजत-स्मारक प्रदान किया। उन्होंने पुंछ आन्दोलन में, इस बटालियन के योगदान की प्रशंसा की। पिछले वर्ष गाँधी नगर में भयंकर आग के समय भी (भीषण लपटों) में कूद कर श्री आई० एस० डागर डीवाई० एस० पी० और उनके जवानों द्वारा कितनों ही के प्राण बचाने की भी चर्चा, उन्होंने की।

श्री बी० एन० प्रसाद, उपमहानिरीक्षक, के० रि० पु० बल ने भी इस बटालियन को एक स्मारक दिया।

## संसद को राजभाषा समिति द्वारा प्रशंसा

दिनांक 2 जून 1980 को श्री चिरंजी लाल शर्मा, संसद सदस्य के संयोजन में, संसदीय राजभाषा समिति के 9 संसद सदस्यों की प्रथम उपसमिति ने, महानिरीक्षक (के०रि०पु० बल) से० III के कार्यालय में हिन्दी के काम-काज का निरीक्षण किया। उसने उस कार्यालय में किये जा रहे हिन्दी प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। साथ में, यह सुझाव दिया कि हिन्दी के आगामी प्रयोग की एक छमाही योजना बनाई जानी चाहिए तथा उसमें रखे गए लक्ष्यों को प्राप्त करने का हर सम्भव प्रयत्न किया जाना चाहिए।

## मुरादाबाद से शस्त्र बरामद

दिनांक 19 अगस्त 1980 को, मुरादाबाद के एक भूतपूर्व पुलिस अधिकारी हाजी मुहम्मद यामीन के छै मंजिले घर से दो 12 बोर की बन्दूकें, एक पिस्तौल तथा 105 भरे कारतूस, स्थानीय पुलिस तथा के० रि० पु० बल की संयुक्त कार्रवाई में प्राप्त हुये। ऐसा आरोप है कि उस घर की छत से कई बार उपद्रव के समय गोलियाँ चलाई गयीं। इस सम्बन्ध में यामीन और उसका एक किरायेदार बन्दी बनाया गया।

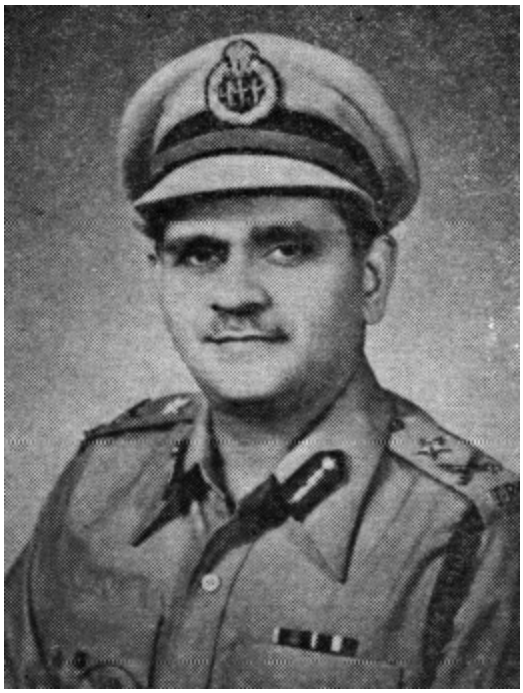
# नये पुलिस महानिरीक्षक सेक्टर-II

दिनांक 19 जून 1980 को कलकत्ते में श्री दुर्गा माधव मिश्रा, आई० पी० एस० (भारतीय पुलिस सेवा) ने पुलिस महानिरीक्षक सेक्टर II का पदभार ग्रहण किया।

आप ने 1948 में रावेनशाह कालेज, कटक से स्नातक-परीक्षा वरेण्यता के साथ उत्तीर्ण की। आप ने स्नातकोत्तर छात्रवृत्ति पाई और अर्थशास्त्र में एम० ए० की परीक्षा 1950 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की।

कटक के प्रमुख दैनिक पत्र 'समाज' के उपसम्पादक के रूप में आप ने अपना सेवा जीवन आरम्भ किया। तदुपरान्त, आप ने अर्थशास्त्र में एक वर्ष अनुसंधान किया। 1951 में, अखिल भारतीय सेवा परीक्षा में आप बैठे और 1 सितम्बर, 1952 को

भारतीय पुलिस सेवा में नियुक्त हो गये। प्रशिक्षण पाने के बाद, आपने ज़िला मुख्यालय तथा उपमण्डल मुख्यालय में सहायक पुलिस अधीक्षक के रूप में सेवा की और 1957 में, आप अधिक पुलिस अधीक्षक नियुक्त हुये। उसी वर्ष दो मास के पश्चात्, आप पुलिस अधीक्षक बनाये गये। इस पद पर, आप ने किमोनझर (आदिवासियों तथा सीमा समस्याओं से घिरा एक बड़े नाज़ुक खनिज क्षेत्र), कठक (राज्य का सबसे महत्वपूर्ण जिला) तथा गंजम में सेवा की। 1962 में, आप केन्द्रीय गुप्तचर विभाग में डेपूटेशन पर गये और पुरी में उस विभाग की उड़ीसा शाखा में 1964 तक सेवा करते रहे। आपके ही प्रयत्न से, यह शाखा उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर को स्थानान्तरित की गई। 1968 से आप खुफ़िया पुलिस के पुलिस अधीक्षक होकर, राज्य में लौट आये और पाँच वर्ष तक इस पद पर रहे। 1973 में, उपमहानिरीक्षक उत्तरी रेंज सम्बलपुर के पद पर आपकी पदोन्नति हुई तथा 1977 में, आपने उड़ीसा सैनिक पुलिस उपमहानिरीक्षक का पद ग्रहण किया। 1978 में, आप की पदोन्नति प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा विकास के अपर महानिरीक्षक के रूप में हुई। होम गार्ड तथा अग्नि संगठन के पुलिस महानिरीक्षक के रूप में अगस्त 1979 में आप को पदोन्नति मिली।



1969 में, आप ने पुलिस सराहनीय सेवा का पद अजित किया। उड़ीसा पुलिस में आपके प्रमुख योगदान हैं-भुवनेश्वर में राज्य विधि विज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना, सभी प्रमुख ज़िलों में खास टुकड़ी का गठन, राज्य अंगुलि चिह्न विभाग, राज्य हस्तलेख विभाग, राज्य फ़ोटो ब्यूरो, जिला विधि विज्ञान प्रयोगशालाओं, चलती-फिरती पुलिस प्रयोगशालाओं तथा अपराध शाखा का पुनर्गठन।

उड़ीसा से अपहृत आदिम कन्याओं के उद्धार का श्रेय आपको है। (बालासोर ज़िले में पंजीकृत) एशिया के सबसे बड़े डाकुओं के अभियोग का सीधा पर्यवेक्षण आप ने

किया है, जिसमें 150 कुख्यात अन्तराज्यीय डाकुओं को आजीवन कारावास मिला। बाल-कर्त्तव्य च्युति, भीख, अनैतिक क्रय-विक्रय, मन्दिर में चोरियाँ तथा परिवीक्षा पद्धति के विषय में आप ने विशेष अध्ययन किया तथा इन विषयों पर कई ग्रन्थ लिखे हैं।

आप उड़ीसा के एक अच्छे साहित्यकार हैं; आप ने लघु कथाओं की चार पुस्तकें तथा 2 काव्य ग्रंथ प्रणयित किये हैं। अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित होने वाली हैं। राज्य के विविध प्रमुख साहित्यिक तथा सांस्कृतिक संगठनों ने आपके साहित्यिक गुणों की सराहना की है। आप एक उत्तम वक्ता हैं तथा वार्षिक समारोहों में स्कूल और कॉलेजों के छात्र आपको सदा आमंत्रित करते हैं। उच्च स्कूल के विद्यार्थियों की पाठ्य पुस्तकों में आपके निबन्ध सम्मिलित हैं। पुलिस विभाग में तथा बाहर भी, आप बहुत लोकप्रिय हैं।

## यह भी खूब रही

**पति**- अबलापन, तेरा ही नाम स्त्री है।

**पत्नी**- (हँस कर) मूर्खता, तुझे ही मर्द कहते हैं।

एक विदेशी मित्र ने भारतीय महिलाओं के हाथ पाँव में मेंहदी की चित्रकारी देख कर पूछा 'क्या इन बेचारियों को काग़ज नसीब नहीं है, जो अपने हाथ पाँव को रंग कर अपनी कला का शौक़ पूरा करती है ?"

**प्रेयसी**- क्यों जी, तुम्हें ऐसी लड़की चाहिये, जो अच्छा खाना बनाती है घर को साफ़-सुथरा रखती हो, चौका-पोंछा लगा लेती हो और सादगी से रहती हो।

**प्रेमी (सहर्ष)**- तुम तो उड़ती चिड़िया भाँपती हो। कितनी जल्दी मेरी रुचि जान गईं।

**प्रेयसी**- तब कल मेरे घर आना; मैं अपनी नौकरानी से तुम्हें मिला दूँगी।

किराये के लिये नये मकान के बारे में ग़ालिब द्वारा पूछने पर, उनकी पत्नी बोली "सुना है उसमें तो कोई बला रहती है।"

गालिब से चुप नहीं रहा गया; वह झल्ला कर बोले "बेगम, क्या आप से बढ़ कर भी दुनिया में कोई बला है।"

**पत्नी**- ऐसे चोर नौकर को रखा ही क्यों स्वामी, जो होटल से पार किये हमारे चाँदी के चम्मच लेकर चम्मपत हो गया ?

**स्वामी**- क्या तू मुझे मूर्ख समझ रहा है, जो मन ही मन मुस्काये जा रहा है ?

**नौकर**- हुजूर,कल का आया मैं नौकर, कैसे यह राय अभी दे सकता हूँ।

# पुलिस में खराबी क्या है ?

**[ले० श्री पी० एस० कुमार]**

"पुलिस कार्य में तटस्थता अनिवार्य है । यह लगाव है, जो उसे (पुलिस कर्मी) को अवैध तथा ग़लत तरीकों को प्रयुक्त करने के लिये प्रेरित करता है; यह लगाव ही है, जो उसे सही तथा ग़लत का ज्ञान भुला देता है; यह लगाव ही है, जो साधन को छोड़कर साध्य को सर्व प्रधान उसके सम्मुख प्रस्तुत करता है । तटस्थता से हरेक वस्तु ठीक परिप्रेक्ष्य में दिखाई देगी और अपने आसपास के लोगों तथा जीवन के विषय में वह सम्यक् दृष्टिकोण अपना सकेगा और उनके साथ वह ठीक-ठीक समन्वय स्थापित कर सकेगा।"

**पुलिस के लिए दर्शन; बी० एन० मलिक**

"जैसा आप सत्य कहते हैं, आधुनिक समाज में, संगठित अत्याचार, अपराध या हिंसा के लिये, पुलिस बल ही केवल विकल्प है और सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि जनता इस को तथा सामान्य पद्धति को समझे तथा उसे यह बताना होगा कि पुलिस समाज का एक अंग है, जो केवल सरकार या अस्थाई सत्तारूढ़ दल का ही नहीं, बल्कि साधारण जनता का भी अभिकर्ता है।"

**डॉ० जुलियस एस० हक्सले**

इन्हीं वर्षों में, भारतीय पुलिस को बड़े दबाव में रहना पड़ा है। मंत्रीगण, संसद सदस्य, विधायक तथा जनता-जनार्दन, पुलिस के क्रियाकलापों की आलोचना करती रही है। वास्तव में, किन्ही क्षेत्रों में तो इतनी कटु आलोचना हुई है कि ऐसा लगता है मानों समाज का वश चले, तब वह पुलिस तंत्र के बिना रहना उत्तम समझेगा।

अधिकांशतः आलोचना में बहुत बल भी है; किन्तु अधिकारियों ने मूल रोग के निदान जानने का यत्न ही नहीं किया है। स्पष्टतः बिना यह जाने हुये कि पुलिस शासन में सचमुच में क्या गड़बड़ है, उसका कोई उपचार नहीं हो सकता।

**अनूठा अनुभव**- ट्रिब्यून में "हमारी पुलिस पर एक दृष्टि" नामक लेख में, हरिजयसिंह ने पुलिस की वर्तमान छवि को कुछ इस प्रकार दर्शाया है-"साधारण नागरिकों में, विश्वास के स्थान पर, पुलिस कर्मी डर बिठाता है। वह लाठी-चालन करता है, यद्यपि उसे यह नहीं मालूम होता कि कब और कैसे तथा किस ताक़त से उसे चलाया जाए। किन्तु अधिकारियों की भी यह इच्छा नहीं है कि विचारशील या विचार रखने की क्षमता रखने वाला पुलिस कर्मी हो। सोचना-समझना तो प्रशासनिक

तथा राजनीतिक सलाहकार लोगों का परमाधिकार माना गया है और कितने ही मामलों में, उनके ग़लत निदेशों या विचारों के कारण, पुलिस को बदनामी उठानी पड़ती है। इसे बताने में पुलिस को उसके अपराधों से मुक्त नहीं करना है, जिनकी संख्या अगणित है; किन्तु वर्तमान पद्धति की आधारभूत - त्रुटि को प्रकट करना है, जिसे अंग्रेजों ने 1861 के पुलिस अधिनियम के अन्तर्गत अपने राज्य को बचाने हेतु बनाया था। विदेशी शासकों द्वारा बनाई गई यह पद्धति, पुरानी तथा अलोकतांत्रिक थी। लोक सदन में तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने इस बात को स्वयं माना था; उसने यह भी कहा था कि यह पद्धति केवल 'संपरीक्षात्मक आधार' पर होगी। किन्तु यह संपरीक्षा कैसी रही ? आज 118 वर्ष बाद भी यह प्रचलित है। पुलिस के विश्व इतिहास में यह एक विचित्र कीर्तिमान है।"

**बिना अधिकार के जिम्मेदारी**- उपयुक्त विश्लेषण लक्ष्य को बताता है। अपने राजनीतिक तथा प्रशासनिक वरिष्ठ जनों के आदेशानुसार किये गये कामों की ज़िम्मेदारी पुलिस कर्मी को भुगतनी पड़ती है और बदनामी उठानी पड़ती है, क्योंकि यह सामान्यतः देखा गया है कि जब ज़िम्मेदारी भोगने का समय आता है, तब राजनीतिज्ञ तथा प्रशासक दोनों ही कन्नी काट जाते हैं। वास्तव में, बिना अधिकार के, ज़िम्मेदारी पुलिस कर्मी पर थोपी गई है तथा राजनीतिज्ञ और प्रशासक को बिना ज़िम्मेदारी के अधिकार प्राप्त हैं। साफ़ है, ऐसी पद्धति से किसी लोकतंत्रात्मक समाज की सच्ची आकांक्षाओं की पूर्ति की आशा नहीं की जा सकती है।

**जिला मजिस्ट्रेट के अधिकार**- 1861 के पुलिस अधिनियम के 4 अनुच्छेद में यह स्पष्ट विहित है कि जिले की पुलिस, ज़िला मजिस्ट्रेट को यन्त्र-स्वरूप दी गई है। इस सम्बन्ध ने पुलिस को निश्चय रूप से निम्न - स्तर पर रख दिया है। जब पुलिस बल, दन्डाधिकारी तंत्र का उपकरण मात्र बनाया गया है, तब उस उपकरण को न बदनाम किया जा सकता है और न ही किया जाना चाहिये। यदि कुछ ग़लती होती है, तब उपकरण के प्रयोगकर्ता को ज़िम्मेदार ठहराना चाहिये ।

अंग्रेज जानते थे कि निष्पादित तथा न्यायिक कामों का सम्मिश्रण अविवेकपूर्ण था। तब भी उन्होंने भारत में ब्रिटिश राज्य क़ायम रखने के लिए इसको चलाया। जो पद्धति औपनिवेशिक प्रशासन को सुरक्षित रखने के लिये चलाई थी, वह लोकतंत्रात्मक संगठन को उपयुक्त नहीं हो सकती।

अनिवार्य निष्कर्ष यह है कि देश का पुलिस प्रशासन, राजनीतिक तथा नागरिक प्रशासक के नियंत्रण से मुक्त होना चाहिये। जब तक उसे अपने निर्णय लेने का अधिकार नहीं होगा, कोई सुधार नहीं हो सकता। अतः 1861 के पुलिस अधिनियम. का 4 अनुच्छेद, परिनियम पुस्तक से निकाल देना चाहिये; अन्यथा जो काम उसके नियंत्रण में नहीं है, उसकी ज़िम्मेदारी पुलिस पर नहीं थोपी जानी चाहिये।

भारत में हर कोई पुलिस प्रशासन की नुक्ताचीनी करता है, और पुलिसजन की कठिनाइयों की ओर कभी नहीं ध्यान देता है। शायद किसी ने उसे मानव अभी तक माना ही नहीं है । डेकलिन के शब्दों में, 'पुलिस यह मांगने का हक़ रखती है कि जिस

मार्ग पर उसे चलना है, वह ऐसा बनना चाहिये कि जिस समाज तथा अभियुक्त, के लिए वह काम करती है दोनों के लिये न्यायिक फल मिले।" दूसरे शब्दों में, समाज को चाहिये कि उस मार्ग को बताये और पुलिस के कर्तव्यों की सही परिभाषा करे। चोरों को पकड़ने तथा बदमाशों का दमन करने-संक्षेप में, न्याय तथा व्यवस्था क़ायम रखने तथा अवांछनीय तत्वों से नागरिक को बचाये रखने के लिए समाज के इशारों पर नाचने के साथ-साथ, पिछले दिनों, पुलिस प्रशासन से परिवार-नियोजन के अभियान चलाने की भी आशा की गयी।

**क़ानून को सेवक**- अब तक सरकार और मुख्यकर राजनीतिक स्वामियों ने, जिनके हाथ में इस देश के भाग्य की बागडोर है, वर्तमान तंत्र को अपने तथा दलगत स्वार्थ को उपयुक्त माना है। यह स्मरण रखना चाहिये कि जब तक किसी सत्तारूढ़ दल के चंगुल में पुलिस रहती है, राजनीतिक विरोधियों को लज्जित तथा बंदी करने में, पुलिस को ग़लत प्रयोग में लिप्त होना ही पड़ेगा।

अब तक यह स्थिति रही है कि सत्ता रूढ़ राजनीतिक दल के हाथ में पुलिस चमचा रही है। निस्संदेह, कुछ पुलिस अफसर अपने स्वामियों के (जिनकी मुस्कान पर वे फलते-फूलते हैं ) संकेतों पर, निस्संकोच नाचने को तथा राजनीतिक विरोधियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाही करने को तैयार रहेंगे ही। अतएव आवश्यकता यह है कि किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के दल के स्थान पर, पुलिस को देश के कानून का दास होना चाहिये। संक्षेप में, पुलिस को क़ानून का सेवक होना चाहिये और जो कोई भी चाहे कितना उच्च या शक्तिशाली क्यों नहीं हो, क़ानून भंग करे, उसी प्रकार उसके साथ व्यवहार करना चाहिये, जैसा किसी अन्य नागरिक के साथ उस स्थिति में व्यवहार होता है।

पुलिस को क़ानून का दास बिना बनाये, सभी स्थितियों में न्याय तथा उचित कार्रवाही पाना सम्भव नहीं है। अतः, पुलिस तंत्र को नित्य के प्रशासन में राजनीतिक दासता से मुक्ति दिलाना अपरिहार्य है।

**कामकाज की स्थिति**- वर्तमान स्थितियों में पहरे देने वाले सिपाही से सेवा निष्ठा तथा ईमानदारी से कर्तव्यपालन की आशा करना, गगन-कुसुम तोड़ना है। यदि समाज, उसको "ब्रिटिश बॉबी (सिपाही)" के समान देखना चाहता है, तब उसके काम-काज की स्थितियों, वातावरण आदि में, आमूलचूल परिवर्तन लाना होगा। भारत के कामकाज की वर्तमान जैसी स्थितियों में, न्यायतः कोई भी पुलिस कर्मी क़ानून का संरक्षक नहीं बन सकता और समाज को वह सर्वस्व नहीं समर्पित कर सकता । एवज़ में, समाज उसको क्या देता है ? समृद्ध उत्तरीय राज्यों तक में, एक सिपाही को कुल मिला कर औसतन 350 रु० प्रतिमास मिलता है। फिर समाज उससे क्या क्या आशायें रखता है ? सुरक्षा की भावना पैदा करे, डाकुओं का पीछा करे, चोरों को पकड़े, गुँडों से बचाये, यातायात का निर्वाध प्रवाह सुनिश्चित करे, जलूसों को नियमित करे, हड़ताली छात्रों तथा श्रमिक असंतोष से निबटे, उपद्रवों में बदमाशों से लड़े-झगड़े, अग्नि काण्डों में जनधन बचाये तथा प्रशासक को अपने कर्तव्य से असम्बद्ध कामों में

सहायता दे। यह सूची किसी भी प्रकार पूर्ण नहीं है। क्या किसी अन्य आंभेकरण को इतने विविध सेवाभार उठाने पड़ते हैं और क्या किसी अन्य श्रेणी के कर्मचारी को इतना कम वेतन मिलता है या कामकाज की स्थितियाँ पुलिसजन के समान विक्षुब्ध कारी हैं ? निश्चय ही, समाज पुलिस से निष्ठापूर्वक तथा कुशलतासहित कर्तव्यपालन की अपेक्षा करता है। विश्वभर में कहीं भी क़ानून प्रवर्तक पुलिस के रखरखाव तथा योग क्षेम पर इतना कम व्यय नहीं होता, जितना भारत में।

**पुलिस की अप्रियता**- क़ानून प्रवर्तक -पुलिस पर बहुत ही कम खर्च हुआ है। देश में जो कुछ विस्तार हुआ है, वह सशस्त्र पुलिस बटालियनों पर हुआ है। उन पुलिस अफसरों की शक्ति, जिन पर क़ानून तथा व्यवस्था क़ायम रखने, अपराध की रोकथाम तथा खोजने का दायित्व है, अर्थात् पुलिस थाने तथा पर्यवेक्षण कर्मचारियों की जन शक्ति थोड़ी बहुत उतनी ही रही; तब अपराधों के छिपाने, रिपोर्ट नहीं लिखने, बर्बरता, तृतीय श्रेणी के उपायों आदि के अतिरिक्त, अन्य क्या आशा की जा सकती है? यदि पुलिस बल के कर्मकरण के सुधार के प्रति हम गम्भीर हैं, तब पुलिस थाने की जनशक्ति की तुरन्त ठोस वृद्धि करनी होगी। यदि वर्तमान स्थितियाँ ऐसी ही चलती रहीं, तथा सुधार शीघ्र नहीं लाये गये, तब जन साधारण थाने में जाने से हिचकिचाता रहेगा, क्योंकि उसे यह विश्वास ही नहीं होगा कि वहाँ उसकी सुनवाई समुचित प्रकार से तथा सहानुभूतिपूर्वक हो सकेगी। डराने-धमकाने की तथा तृतीय श्रेणी के उपाय प्रयुक्त करने की घटनायें होती रहेंगी और थानों में अपराधों को छिपाना तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला रहेगा।

श्री एन०एस० सक्सेना की इन अभ्युक्तियों में बड़ी सचाई है कि 'जनता की सबसे बड़ी शिकायत है अपराधों का पंजीकरण नहीं करना।' "पुलिस अलोकप्रियता" नामक अपने लेख में, वह लिखते हैं—'जब तक यह बुराई दूर नहीं की जाती, तब तक जनसम्पर्क स्वरूप कुछ भी पुलिस ने किया है या भविष्य में वह करे, उसका कुछ भी प्रभाव नहीं होगा।.... शिकायत लिखाने वालों को निकाल भगाने का सामान्य तरीक़ा इतना क्रूर होता है कि वे थाना जाना पसन्द ही नहीं करते।"

जब तक बुनियादी संरचनात्मक परिवर्तन पुलिसतंत्र में नहीं लाये जायेंगे, जिनसे पुलिस किसी विशेष व्यक्ति या व्यक्तियों के दल के स्थान पर क़ानून का दास बनायी जाये, तब तक ऐसी शिकायतें आती रहेंगी ही।

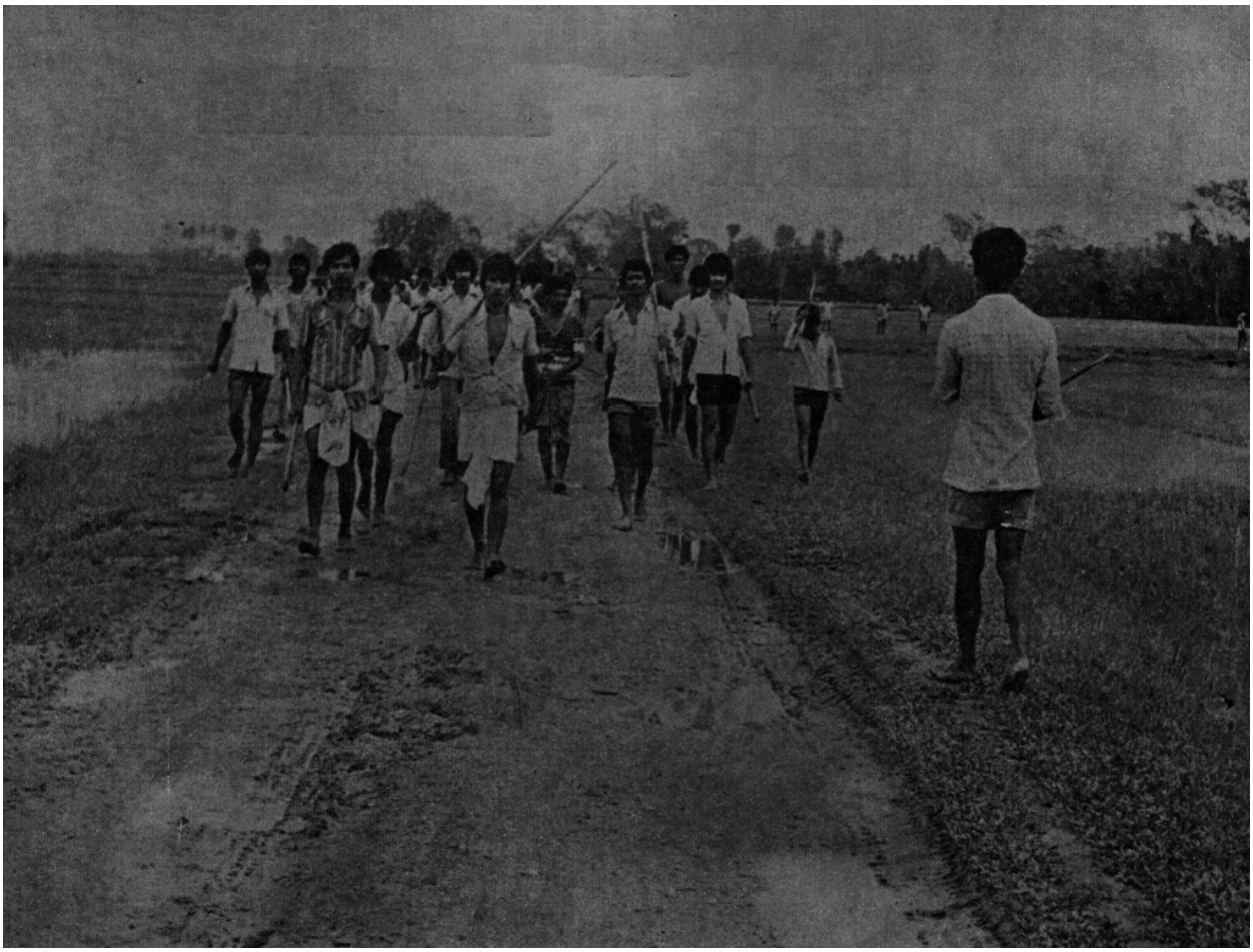
## पहेलियाँ

**[प्रस्तोता**- दफ्तरी गणेश प्रसाद, कार्यालय उपमहानिरीक्षक, श्रीनगर ]

सफेद भेड़ धरती धँसी,
हरे-भरे हैं कान ।
पके मनों मूसे मरें,
भुँजी स्वादु की खान ॥ 1 ॥

खींचत रस्सी नांदे घहरावे।
कुमद फूल ऊपर उतरावे।
धूप लगे तब जल बन जाय।
वह महंगा संसार बिकाय। 2।
सोने का घड़ा, पराग से भरा।
पश्चिम में पटका, पूरब में चटका। 3।

**उत्तर : 1. भूली 2. मक्खन 3. सूरज**



# असम - आन्दोलन

**[ ले०- श्री एच० एस० सेठी ]**

अहोम बर्मा की शान जाति के वंशज थे । वे 13वीं शताब्दि में असम में आये और पूर्वोत्तर असम पर अधिकार कर बैठे। (गोलपाड़ा तथा कछार ज़िलों के अतिरिक्त) वर्तमान असम पर उन्होने छै शताब्दियों तक राज्य किया। 1819 में, अन्तिम अहोम शासक, जोगेश्वर सिंह को बर्मावासियों ने अपदस्थ कर दिया। किन्तु, पाँच वर्ष के भीतर ही, बर्मावासियों ने याण्डबू की संधि द्वारा असम को, ब्रिटिश लोगों को हस्तांतरित कर दिया।

1971 की मतगणना के अनुसार, असम की जनसंख्या 1.46 करोड़ है। इनमें, केवल 43.5 लाख मूल निवासी हैं। (लाखों में) कुल रचना इस प्रकार है : चायबाग़ान श्रमिक 22 5; बाहर से आये मुसलमान 20; ब्रह्मपुत्रघाटी के बंगाली हिन्दू 16; आदिम जातियाँ 16; कछार के बंगाली 14; नेपाली 5; गोलपाड़ा के राजवंशी 4 तथा विविध 5 ।

असम में बंगालियों का आगमन 20वीं शताब्दि के प्रारंभ से शुरू हुआ तथा 1905 के बंगाल-विभाजन से और बढ़ा । तब से आनेवालों का ताँता सचमुच में कभी नहीं रुका है; यद्यपि कुछ समयों में, यह बहुत बढ़ गया। कभी कभार, द्वितीय विश्व युद्ध के समय, मुहम्मद सादुल्ला की अध्यक्षता वाली जैसी असम सरकारों ने सचमुच में इस आगमन को और बढ़ावा दिया।

देश की जन संख्या में 18.5% वृद्धि के विरुद्ध (1971 की मत गणना से) असम की जनसंख्या में 31.5 प्रतिशत बढ़ोत्तरी का कारण, बंगला देश तथा नैपाल से प्रवाहागमन है। 1901 से प्रवाहागमन ने असम की जनांकिकी को रहस्यमय बना दिया है। तब तक गोलपाड़ा की जनसंख्या में आर्थिक वृद्धि 1.4 से 2 प्रतिशत तक रही थी; किन्तु उसके बाद वाले दशक में 30% बढ़ोत्तरी हुई। उसके बाद के दशकों में, यह घटी और 1951 में घटकर 9.25% रह गई। पर एक बार फिर 1951-61 दशक में यह 40% पहुँच गई।

जो ब्रह्मपुत्र नदी 18वीं शताब्दि में गतिरोधक रही थी, जब असम वीर पुंगव लचित वार फूकन ने मुग़ल-आक्रमकों को इसके तट पर बारम्बार रोका था, यह अब कोई अवरोधक नहीं रही है । दो शताब्दियों के उपरान्त, अपने खुले जल मार्गों से वही ब्रह्मपुत्र बंगला देशवासियों को असम में घुसपैठ करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निबाह रही है । थल मार्गों ने, जो जल मार्ग के समान खुले हैं, प्रवाहागमन बढ़ा कर समस्या को और जटिल बना दिया है। इन्हीं दिनों, ए० एस० एस० यू० (छात्र संगठन) तथा ए०ए०जी०एस०पी० (संग्राम परिषद) ने यह आरोप लगाया है कि जल मार्ग केवल मनुष्यों को लाने में ही नहीं, बल्कि शस्त्रों के ढोने में भी प्रयुक्त होते हैं।

असमियों को त्रिपुरा के भाग्य की याद है, जिस राज्य की भी सीमायें

बंगला देश से मिलती हैं, जहाँ 1951 में त्रिपुरी लोग जनसंख्या के 70% थे, आज वहाँ त्रिपुरी और बंगलावासियों में अनुपात उल्टा हो गया है। तभी तो, असमी डर रहे हैं।

जब मैं मई के अन्तिम सप्ताह में अखिल असम छात्र संगठन के सलाहकार श्री लोलित राजखोवा से संगठन के केन्द्रीय कार्यालय में मिला था, तब उन्होंने कहा था "इस आन्दोलन को ब्रह्मपुत्र की धारा के समान कोई नहीं रोक सकता।" किन्तु तब से ब्रह्मपुत्र के नीचे विपुल जल राशि बह चुकी है तथा मुझे बहाव में परिवर्तन दीखता है। 25 मई तक स्थिति भिन्न थी। अखिल असम छात्र संगठन तथा अखिल असम गण संग्राम परिषद, लोक समर्थन की ऊँचाइयों पर थे। उनके कारण, सरकार को चिरस्मरणीय ग्लानि उठानी पड़ी अर्थात् गौहाटी वासियों की भारी ललकार के होते हुये भी कर्फ्यू लगाने के आदेश को तुरन्त ही वापस लेने की नदामत सहनी पड़ी। उनके चलाये, असहयोग आन्दोलन को बड़ी सफलता मिली। उन्होंने बैंकों के समेत सभी सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी दफ्तर लुन्ज-पुन्ज कर दिये। तेल के निर्यात पर भी धरना बहुत 'कारग़र' रहा। गौहाटी में यह खुल्लमखुल्ला कहा जा रहा था कि राज्य में तीन सरकारें चल रही हैं-1. राज्य प्रशासन 2. केन्द्र तथा 3. अखिल असम छात्र संगठन तथा उनमें कारग़र सरकार, केवल छात्र संगठन की है। बैंक, खुलने से पहले संगठन की अनुमति ले रहे थे। केन्द्रीय विद्यालय परीक्षायें लेने के लिए, केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने पहले उस संगठन से अनुमति ली और तब ज़िला मजिस्ट्रेट से आज्ञा ली बताई जाती है। और जब ज़िला मजिस्ट्रेट के पास मामला पहुँचा, तब उसने यही पूछा गया बताते हैं कि क्या अ० अ० छात्र संगठन ने अनुमति दे दी है। **'असहयोग कार्यक्रम'** के समय, राज्य सरकार के और अन्य कर्मचारी कार्यालयों से अनुपस्थित रहे। उन्होंने छात्रों के लिये, अधिकारियों की अवहेलना की। संगठन जनता को पेट्रोल तथा डीज़ल के लिये वह परमिट (आज्ञा) देता था और पेट्रोल पम्पों ने संगठन के अतिरिक्त अन्य किसी अधिकारी के आदेश पर पेट्रोल देने से मना कर दिया था, अखिल असम छात्र संगठन और अखिल असम गण संग्राम परिषद ने नौ दिन का कार्यक्रम 29 मई को समाप्त होने का यह कारण बाताया था कि कर्मचारी समय पर वेतन पा सकें।

शक्ति भ्रष्ट कर देती है और छात्र शक्ति - इस नियम की अपवाद नहीं है। अपने संयुक्त प्रकाशन "भारत को कल बचाने के लिए असम को आज बचाओ" में छात्र संगठन और गण संग्राम परिषद् ने लिखा था कि 'अपरिष्कृत तेल की रोक ही राष्ट्रीय नेताओं को सुधि में लाने का तथा अवैध विदेशियों को राष्ट्रीय महत्व देने का केवल साधन था।"

यह मानना पड़ेगा कि देश की सहानु भूति सरासर उनके तथा लक्ष्य के प्रति रही है। कुछ क्षेत्रों में तो, गाँधी जी के ढंग से आन्दोलन चलाने की सराहना भी हुई; किन्तु धीरे धीरे, वे कितने ही दलों की - हमदर्दी खो बैठे। उसके क्या कारण थे ? नेताओं ने

गांधी जी और अहिंसा की शपथ खायी; किन्तु आन्दोलन में असंतोष के बीज अंकुरित थे, क्योंकि उसका ध्येय विदेशियों को पहचानना और देश से निकालना था। बाहर से शान्तिपूर्वक दीखने वाले ढाँचे के अन्दर, माग सुलग रही थी। (भाषायी तथा धार्मिक-दोनों प्रकार के) अल्पसंख्यक, जो दीर्घकाल से निष्क्रय सुप्तप्राय हो रहे थे, अपनी आपदा को जान गये थे। 1980 के प्रारंभ में उग्र असमी या बंगाली गिरोहों ने असम के विभिन्न भागों से निकल-निकल कर परस्पर मारकाट करने लगे । आन्दोलन के बढ़ने के साथ, अल्पसंख्यकों का भय भी बढ़ा। असमी अपनी शक्ति दिखा रहे थे।

अब अल्पसंख्यकों की बारी थी। निखिल । असम संख्यक छात्र संघ के तत्त्वावधान में उनके यत्नों से बाड़ पोटा में जलूस निकाला। उस दिन 26 मई को मैं वहीं था; वह दिन असम के इतिहास में आन्दोलन के परिवर्तन बिन्दु के नाम से प्रसिद्ध रहेगा। प्रशासन के अनुसार जलूस में तीन लाख मनुष्य थे; किन्तु ये आरोप कि जलूस शान्तिपूर्वक नहीं था या मुजीव अथवा अन्य के चित्र थे, निपट निराधार हैं। इसे दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि स्थान-स्थान पर जलसियों तथा असम छात्रों के बीच उपद्रव हुये; किन्तु इनका कारण यह था कि छात्र आतंकित. थे तथा अज्ञानता में जलूस को कई स्थानों पर रोकने का यत्न किया। **के० रि० पू० के कमांडैन्ट के सामयिक प्रागमन तथा हस्ताक्षेप के कारण, बाड़पेटा पर कोई दंगा नहीं हुआ।**

बाढ़पेटा के उपरान्त, मैं शीघ्र नवगाँव के सबसे अधिक दुष्प्रभावित क्षेत्र में पहुँचा; वहाँ कितने ही स्थानों पर अग्निकाण्ड; हिंसा यथा गोलीचालन का बाजार गर्म रहा था। एक सप्ताह से भी कम समय में, 47 मनुष्य प्रारण गवाँ बैठे और 30 लापता हैं। रातदिन सड़क पर विचरण करने से, उस क्षेत्र में तनाव की दुःखद झाँकी मैंने देखी। मार्ग पर हरेक गाँव के बाहर, अनेकों लोग लाठी, कुल्हाड़ी, भाले, हँसिये, दाव इत्यादि हाथ में लिये खड़े दिखाई देते थे। जब उसी रात को नवगाँव-दीमापुर में मैं जीप में चल रहा था, जीप के प्रकाश में दमदमाते तथा बड़े दीखने वाले वे हथियार, कुटिल दीख पड़ते थे। मुझे यह बताया गया कि क्षेत्र के हर मोहल्ले या गाँव में गठित रक्षा समितियों के ये लोग सदस्य थे। इस से पूर्व, तीसरे पहर नवगाँव से डींग के उस स्थल पर मैं गया, जहाँ लचर ग्राम में 26 असमियों के घर अल्पसंख्यकों द्वारा जलाने के बाद, पुलिस ने गोली चालन किया था। मार्ग में, जो भी वस्तु हाथ लगी उसे लिये असमियों के झुण्ड के झुण्ड विविध दिशाओं से डींग की ओर बढ़ते नज़र आ रहे थे; किन्तु कर्फ्यू लगे होने के कारण वे डींग में नहीं घुस सके।

विगत वर्ष के जनन पीठ पुरस्कार विजेता तथा असम के बड़े सम्भ्रान्त व्यक्ति, डाँ० वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य से मेरी मुलाक़ात हुयी। छात्र संगठन तथा गण संग्राम परिषद् द्वारा चलाये गये आन्दोलन का उनके द्वारा समर्थन कहना, कम बताना होगा।

हिंसा से उद्भ्रान्त, डाँ० भट्टाचार्य ने एक नुक़्ते की बात यह कही-"स्वतन्त्रता आन्दोलन में हमने बलिदान किये हैं और सत्याग्रह तथा गाँधी जी के ढंगों को हमने सीखा है; दूसरी ओर, विदेशियों के पास -हिंसात्मक उपायों तथा क्रान्तिकारी आन्दलनों की पार्श्वभूमि है।" और वह अब यह अनुभव कर रहे थे कि 'के० रि० पुलिस

तथा सुरक्षा दलों को असम की सुरक्षा के लिये रक्षा-क्षेत्र बनना चाहिये।" डॉ. भट्टाचार्य ने सुरक्षा दलों द्वारा महिलाओं से छेड़खानी के आरोप लगाये; किन्तु जब मैंने के० रि० पु० के ऐसे मामलों के बारे में खास तौर पर पूछा, तब उन्होंने कोई नहीं बताया-हमने तसदीक़ कर ली है और यह पाया है कि के० रि० पु० इसमें अन्तर्ग्रस्त नहीं है।"



**डॉ. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य**

अपने आन्दोलन में हिंसा के खतरे को छात्र तुरन्त समझ गये। बाद को 29 मई से जून 5 तक "एकता सप्ताह" के मनाने की मांग, इसी सन्दर्भ में देखी जा सकती है।

अल्प संख्यकों के प्रत्यान्दोलन ने भी समस्या में नया आयाम जोड़ा है। अब संघर्ष, केन्द्र और असमी छात्रों के बीच नहीं रह गया है। छात्र संगठन तथा गण संग्राम परिषद् को अब दो ओर लड़ना पड़ता है केन्द्र से तथा अल्प संख्यकों से।

केन्द्र न तो कमज़ोर है और न ही अनिर्णीत है। यह बात छात्र भी जान चुके हैं। केन्द्र की दृढ़ नीति के संकेत ये हैं-अनुपस्थिति के समय का वेतन कर्मचारियों का नहीं देने, तेल प्रतिष्ठानों को चलाने के लिये सैनिकों को प्रशिक्षित करने तथा बिगड़ती हुयी स्थिति के अनुरूप के० रि० पुलिस तथा अन्य सुरक्षा दलों की जनशक्ति में वृद्धि करने के सरकारी निर्णय।

उदाहरणार्थ, जबकि जनवरी 1979 में के० रि० पु० बल की केवल 5 बटालियन

असम में निरत थीं, आज आन्दोलन से जूझने को असम के विभिन्न भागों में 14 बटालियन तैनात हैं। अभी असम के अल्पसंख्यक नेता प्रधान मंत्री से मिले और राज्य के पक्षपाती अफसरों को बदलने के लिये तथा 'के० रि० पु. बल और सैन्यदलों को स्वतंत्र कमान से कार्रवाई कराने' की आवश्यकता पर बल दिया।

दीर्घकाल तक चलने के कारण, आन्दोलन ने जनता को थका मारा है। छात्रों ने शिक्षा का एक वर्ष गवाँ दिया है। लम्बी छुट्टी से लोग ऊब गये हैं। कब तक माता पिता दफ्तर नहीं जायेंगे; तथा अपने पुत्र पुत्रियों को धरना देने, जलसों में नारे लगाने और धन एकत्र करने को भेजते रहेंगे? असम के विभिन्न नगरों से गुजरते हुये, नन्हें-नन्हें बच्चों को सड़क के किनारे मिठाइयाँ, सिगरेटें या रुमाल बेचते देखा जा सकता है। वे बताते हैं कि ये काम, छात्र संगठन तथा गरण संग्राम परिषद् द्वारा चलाये आन्दोलन के लिये धन एकत्र करने को करते हैं; किन्तु अन्य लोग इसे धोखा समझते हैं, क्योंकि धन तो नियमित रूप से, मकानों, दुकानों, व्यापारियों तथा चाय बाग़ानों से उगाहा जा रहा है। वह समय गया, जब लोगों ने स्वेच्छा से धन दान किया था। अब तो वे छात्रों को अपनी तरफ़ रखने के लिये ही दान देते हैं। कब तक यह काम चलता रहेगा?

आन्दोलन का उद्देश्य विदेशियों को देशनिकाला देना है; किन्तु समय बीतने पर, अब तो गैर असमियों के विरुद्ध यह हो गया है। इससे, ग़ैर असमियों की सहानुभूति यह खो चुका है। डिब्रूगढ़ में, डॉन बास्को स्कूल की दीवारें इन नारों से भरी पड़ी हैं-"ग़ैर-असमियों वापस - जाओ" तथा "असम भारत के भीतर नहीं।" कनाई कॉलेज के सामने (जहाँ अब गायें चरती हैं), रेलवे कार्यशाला की दीवारों पर और भी गन्दे नारे लिखे हैं। प्रशासन ने उन पर कोलतार पोत कर मिटा दिया है किन्तु राज्य में वर्तमान आन्दोलन के कारण, असम को ग़ैर-असमी जनता का आतंक कम नहीं हुआ है और जब तक कोई तुरन्त कार्रवाई नहीं की जायेगी, वातावरण और भी दूषित हो जायेगा।

छात्रों ने बड़ी बुद्धिमत्तापूर्वक 21 जुलाई से 15 दिन को आन्दोलन स्थगित करने का निर्णय लिया है। सरकार अपनी ओर से सदा कहती रही है कि विचारविमर्श के लिये सन्तोषजनक समाधान, को द्वार सदा खुले हैं। आइये यह आशा करें कि यह काल, असम को दोनों पक्षों के लिये सन्तोषजनक समाधान को खोजने के काम में आयेगा।

## विज्ञान के चढ़ते चरण

लंदन में, बैकटीरिया के माध्यम से ठीक वैसा ही **कृत्रिम इन्सुलिन** तैयार किया जाता है, जैसा मनुष्य के शरीर में उत्पन्न होता है। इससे मधुमेह के रोगों के साथ-साथ, अन्धता तथा अकाल मृत्यु तक को रोका जा सकता है।

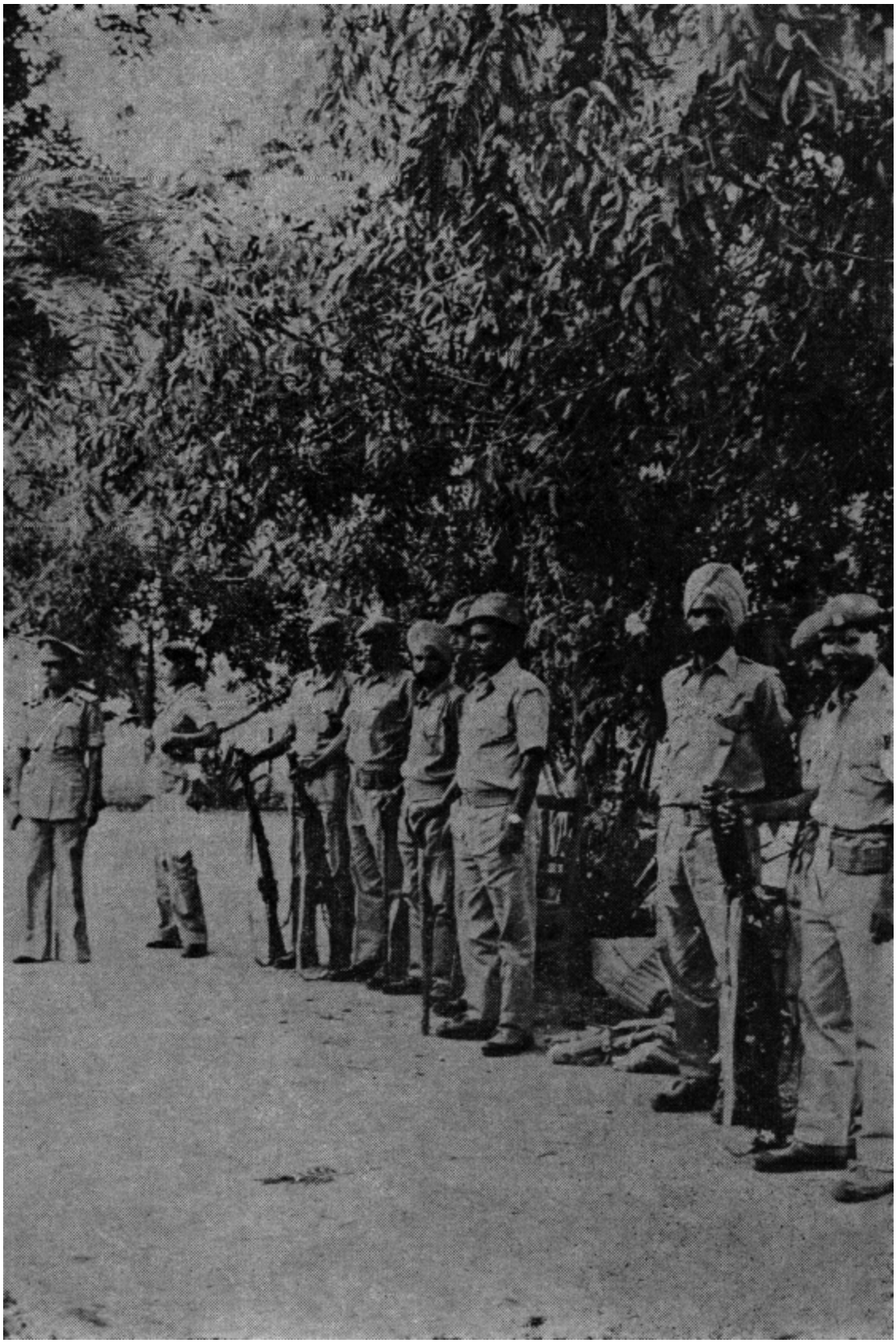
अध्ययन से पता चला है कि तीन मास की गर्भवती महिलाओं को छै से अधिक कप काफी के पीने से, गर्भपात, गर्भमृत्यु तथा मृत बच्चे जैसी दुर्घटनायें हो सकती हैं।

जोयल और गेटन नामक दो फ्रांसीसी भाइयों ने डैनों को शरीर से बांधकर 5 कि० मी० ऊँचाई पर 30 मील प्रति घंटे की गति से 200 मील लम्बी उड़ान की है। किसी

ऊँचे स्थान से नीचे की ओर हवा के विपरीत रुख उड़ाकू दौड़ता है। हवा के दबाव से उठ कर उड़ाकू तारों से पैरों को सीधा कर पट स्थिति पा ले लेता है और हवा के सहारे **बिना किसी ऊर्जा शक्ति** के तैरता हुआ कितनी ही दूर जा सकता है। इसे **हैंग ग्लाइडिंग** का नाम दिया है।

रूस में **पत्थर से पानी** निकाला गया है। इस पानी में छेददार पदार्थ था, जिसमें मौजूदा जीवाणुषों को रासायनिक क्रियाओं से विस्तृत करने पर गैस पैदा हुयी तथा गैस से धातु बहुत जल्द गल गये। यह पानी साधारण पानी से 10-20 गुना भारी है।

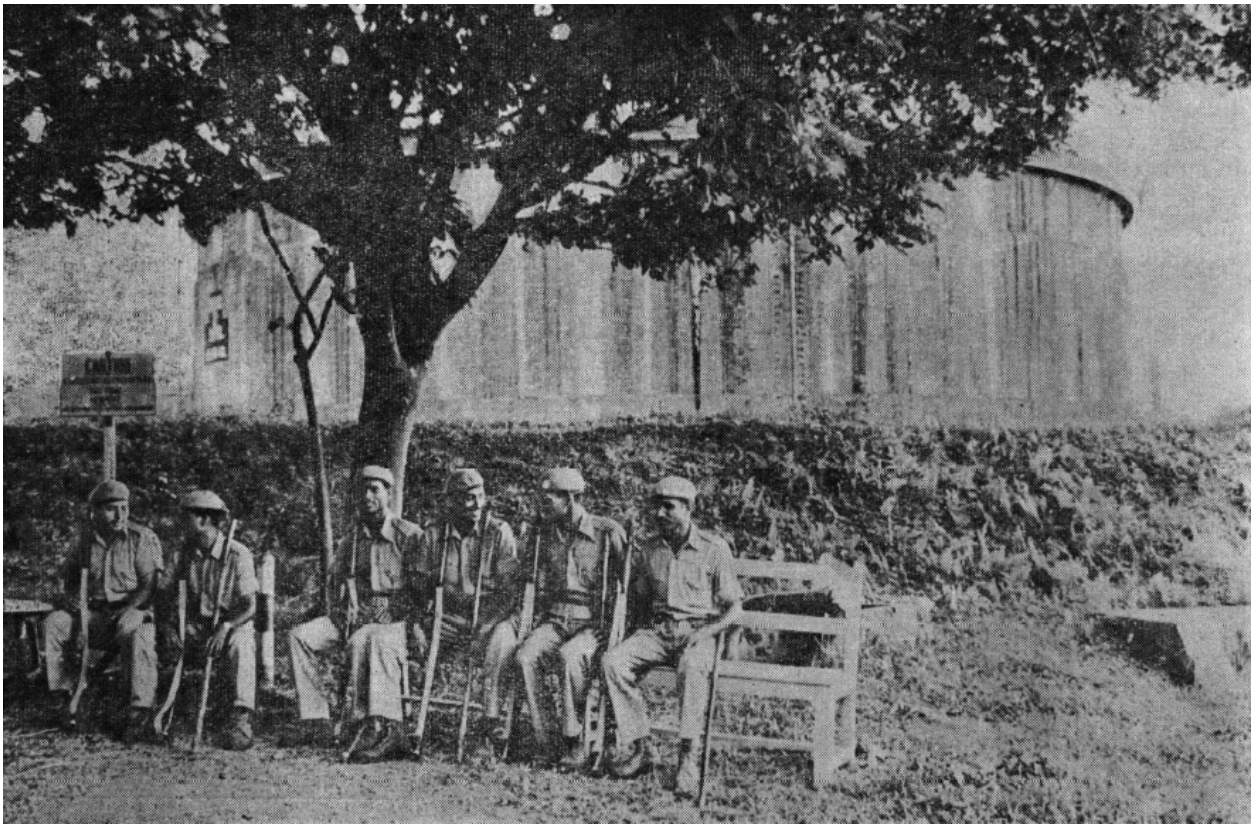
# असम आन्दोलन की कुछ झलकियाँ



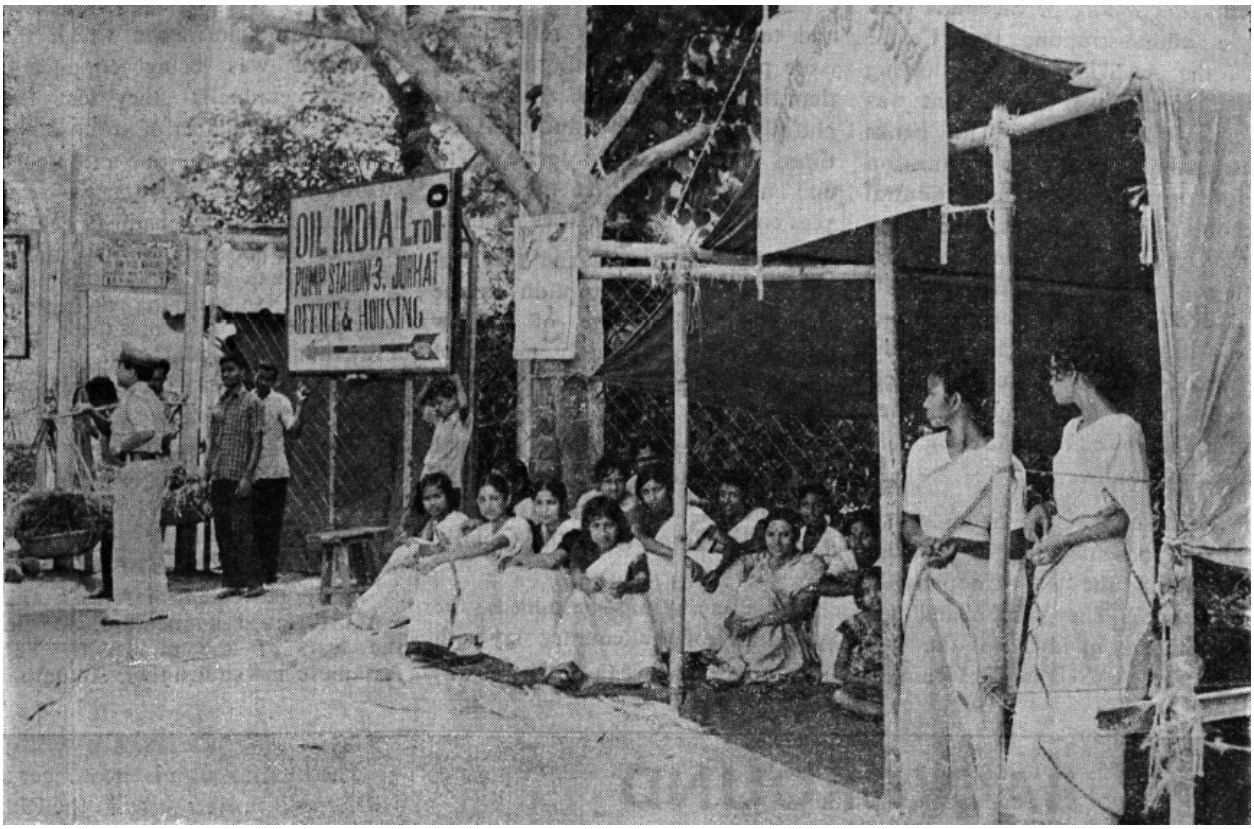
**दिसपुर (गौहाटी) में असम सरकारी सांचेवालय पर तैनात के० रि० पु० बल और असम पुलिस के जवान**

## आंदोलन-हेतु चुकाया मूल्य

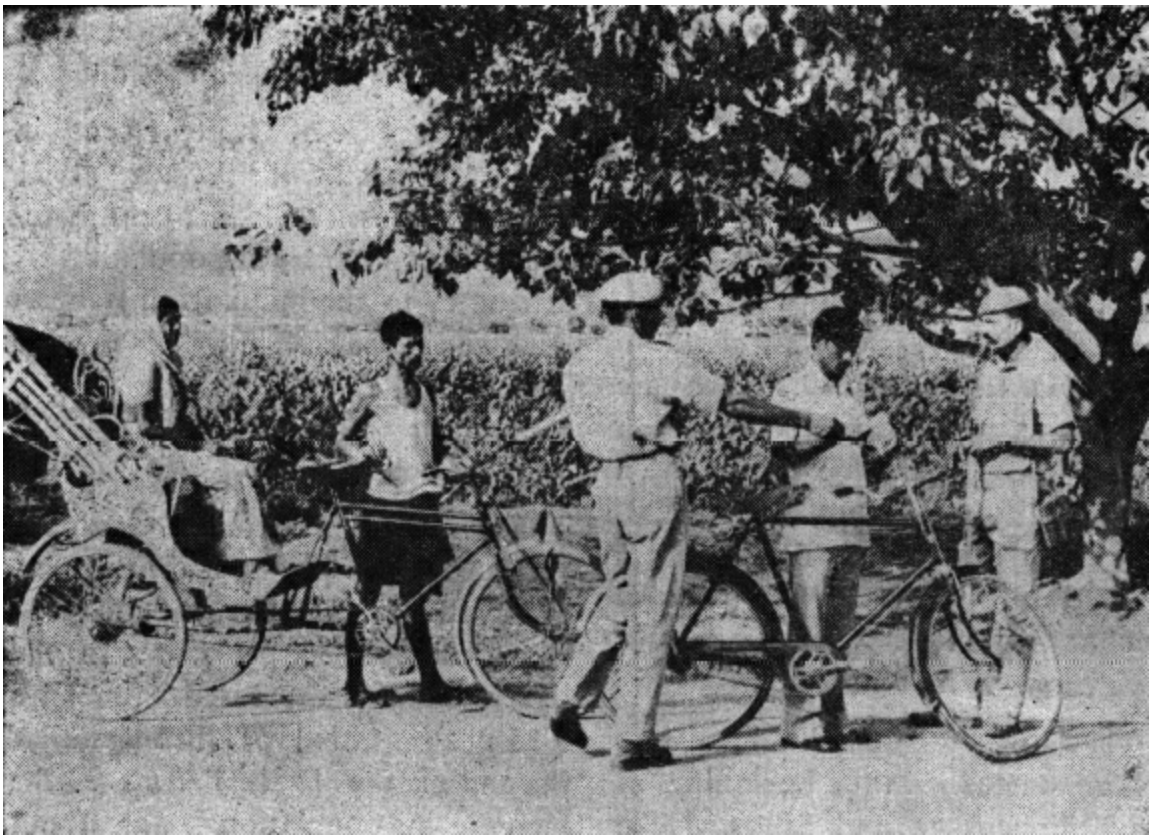
प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया के अनुसार, सितम्बर 1979 से 12 जुलाई 80 तक पुलिस की गोली से 36 मनुष्य मारे गये हैं। इनके अतिरिक्त, इसी अवधि में 153 मनुष्यों के प्राण अन्य दुर्घटना में चले गये। असम सरकार के अनुसार, 243 मनुष्य लापता हैं । यह गृह राज्य मन्त्री श्री योगेन्द्र मकवाना ने राज्य सभा में एक लिखित उत्तर में बताया है।



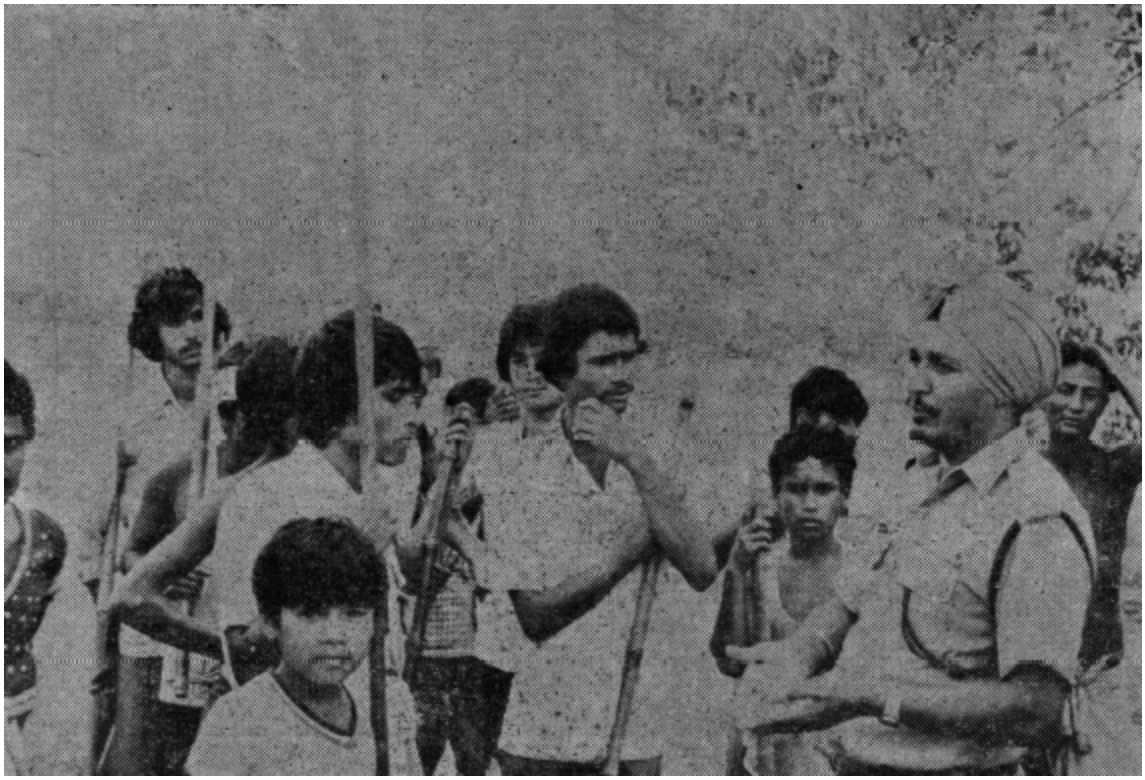
**डिगबोई के तेल संस्थान की रक्षा करते हुए के० रि० पु० बल के जवान**




**जोरहाट के पम्प-स्टेशन पर उत्तेजित क्षरण**



कर्फ्यू-पासों की जाँच करते हुए के० रि० पु० बल के जवान



डोंग में सशस्त्र भीड़ से हिंसा को मना करते हुए कमांडेंट संधू

## के० रि० पु० बल के नये महानिदेशक श्री आर० एन० शिवपुरी

दिनांक 3 सितम्बर, 1980 को श्री आर० एन० शिवपुरी, महानिदेशक, भारत-तिब्बत-सीमा पुलिस ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक का अधिक सेवाभार श्री बीरबलनाथ से संभाला, जो पंजाब पुलिस के महानिदेशक के रूप में नियुक्त हुये हैं।

**कहानी:**

# जूतों की दग़ावाज़ी

### लेखक—श्री जे० एस० शर्म्मा

'कमवक़्त ये जाड़े बनाये ही क्यों हैं परमात्मा ने' बुदबुदाते हुए पुलिया पर बैठे बूढ़े बुद्धा ने बीड़ी का कश खींचा और अन्तड़ियों को काटती हुयी ठंडी हवा से बचने के लिए उसने ऊनी कोट को दबोचकर डबल-वेस्ट का बना लिया। 'ससुरी रात भर महावट अलग थिरकती हुयी रिमझिम का मुजरा करती रही और अब यह दाँत किटकिटा देने वाली बर्फीली हवा, गरीबों की ज़िन्दगी नरक बना रही है' कहते हुए उसने एक ठंडी साँस ली। तभी 'खरड़-खरड़' की ध्वनि ने उसकी विचार-धारा भंग की । मुड़ कर देखा, तब उसका भतीजा अपनी साइकिल को घसीटता हुआ ला रहा था—"अरे शंकर, तुझे कितनी बार समझा चुका हूँ कि मुर्द में कहाँ तक जान फुँकवाता रहेगा।"

"चाचा, अभी तो टायर-ट्यूब बदलवाये हैं । सत्यानाश जाये इन फैक्ट्री वालों का। दाम तिगुने चौगने कर दिये हैं और माल निषिद्ध पकड़ा रहे हैं।"

"सुना है, पुरानी रबड़ों को गला कर टायर-ट्यूब बना रहे हैं, जो ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर एक दिन नहीं चलते।"

"तुम ऊबड़-खाबड़ सड़कों की बात करते हो चाचा, मैं तो बड़ी संभालकर पक्की सड़कों पर चलाता हूँ। जहाँ ज़रा भी कंकड़-पत्थर दिखाई दिये, तुरन्त साइकिल से उतर पड़ा। मगर अभी कमला पार्क पर साइकिल वाले को दिखाया, तब उसने कहा 'पिंचर नहीं, बर्स्ट है।"

बुद्धा के मुख से 'ओह' अनायास निकल गया 'तिस पर अमीर, साइकिल को गरीब नवाज़ बताते हैं।'

"जिन के पैर न गई विवाई, वे क्या जानें पीर पराई। दाम के दाम पूरे सूरे लगेंगे

और ऊपर से घंटे भर की देर । उधर कमवक़्त मालिक को एक-एक मिनट का हिसाब देना होता है। इसीलिए, इसे अपनी बम्बूकार्ट को यहाँ छोड़े जा रहा हूँ। शाम को आराम से संभलवा लूँगा" कहते हुए शंकर ने साइकिल उस झोंपड़ी के आगे टिका दी, जो भूपाल के निर्माण विभाग का भंडार उस समय बनी हुई थी।

"ज़रा, दरवाज़े से आगे बढ़ा कर रखो। वह कल का छोकरा ओवरसियर अपनी धौंस जमाता है। ओफ़, कैसे थे वे सुनहरे दिन, जब फिरंगी इंजीनियर तक हमारी वक़त करते थे। सुबह-शाम हमसे पूछते थे 'कहो चौकीदार, सब ठीक-ठाक है' कहता हुआ बुद्धा उठा और अपनी जेब से लाल मखमली बटुआ निकाला। उसमें से 'सुरती' निकाल कर वह हथेलियों से रगड़ने लगा और फिर उसने हथेलियों को फटकारते हुए फूँक मारी। तब तक शंकर द्वार से हटा कर झोपड़ी के आगे दीवार के सहारे साइकिल रख कर, बुद्धा के पास लौट आया था। "लोगे सुरती" कहते हुए बुद्धा ने हथेली आगे बढ़ायी।

"नेकी, और पूछ पूछ । भला आप ही तो कहते थे "जिसे माँग न आवे भीख, वह सुरती खाना सीख ।"

दोनों खिलखिला पड़े । शंकर ने सुरती की चुटकी भरी, तब उसमें सुपारी नहीं पायी—'क्यों तेजी की मार बेचारी सुपारी पर ही पड़ी' हँसते हुए शंकर ने कहा।

बुद्धा ने गलती महसूस की—"बातों में बिल्कुल भूल गया" और शीघ्र बटुये में हाथ डाला। तब सुपारी के स्थान पर भंडार की दो चाबियाँ निकल आईं । शंकर फिर मुस्काया "चाचा यह आपका दोष नहीं होकर, आपकी साठ साली का है। वही आपको सठिया रही है। अच्छा तो यह हो, आप अपना नाम बुद्धा के स्थान पर 'बूढ़ा' रख लो।"

बुद्धा कब हार मानने वाला था। उसने छाती फुलाई और कहने लगा "हम तो वह भारतवासी हैं 'जो 'साठा सो पाठा' में विश्वास करते हैं।" फिर शंकर के गाल थपथपाते हुए, बटुये से छालियाँ निकाल कर दी। शंकर को देर हो रही थी; फिर भी उसने व्यंग्य कस ही दिया "मगर अपने बालों को कहाँ ले जाओगे, चाचा; जिन्होंने सफ़ेद होकर सभी कलई खोल दी है। कवि केशव ने सच कहा है—केशव केशन असि करी, असि अरिहु न कराइ । चन्द्र बदन मृग लोचनी बाबा कह कह जाइ" कहते हुए शंकर सरपट दौड़ गया। बुद्धा हँसता हुआ पुलिया पर फिर बैठ गया "बड़ा नटखट है। इतना बड़े होने पर भी, बचकानापन नहीं गया इसका।"

तब तक, रात की सोई सड़क ज़ोर शोर से जाग पड़ी थी। सब अपने अपने काम पर जा रहे थे । 'टिक टिक' भेड़ बकरियों को हाँकता हुआ चरवाहा हरदास अपने मित्र चानन के साथ पास से निकला और बुद्धा से "चाचा, राम राम" की।

"आज क्या बात है बड़ी जल्दी में हो"

"कहाँ चाचा, सूरज बदरी में होने से समय का ठीक पता नहीं लग रहा है । वर्ना दस बज गये हैं।"

“दस, तब तो हम भी उठे ।”

“अरे, तुम्हें कौन से पहाड़ के पत्थर ढोने हैं; जंगलों में कौन भेड़ें चरानी हैं । मैं तो प्रभु से यही नित्य प्रार्थना करता हूँ कि अगले जन्म में मुझे बुद्धा चाचा की तरह चौकीदार बनाइये।”

“दूर के ढोल सुहावने होते हैं, हर्रों । हमसे पूछो, हरदम प्राण संशयों में रहते हैं । किसी से सामान गायब हो, नाम लगता है बुद्धा चौकीदार का। अब तुम्हीं देखो, कितनी चीज़ें इस गड्ढे में डाल रखी हैं; कोई भी उड़ा कर ले जा सकता है।”

“ऐसा कभी तो आज तक हुआ नहीं है”

“अरे, चोरी कोई कह कर थोड़े ही होती है ?”

तब तक हरदास की भेड़-बकरियाँ आगे निकल गयी थीं। उसने बुद्धा से यह कह कर पिंड छुड़ाया—“जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय।”

“हूँ, जाको राखे जाकी साइयाँ” झुंझलाता हुआ बुद्धा भंडार में जाने को उठा। उसी समय, कन्धे पर हल को रखे, बैलों की जोड़ी लिये शराफ़त अपने मछिहारे मित्र के साथ आता दिखाई दिया। शराफ़त ने दूर ही से “मामू सलाम !” कहा ।

“अबे, कितनी बार तुझ से मनाह किया है; परन्तु एक तू है जो मामू कहना नहीं छोड़ता” चिढ़कर बुद्धा बोला—‘बानिये की बान ना जाये, कुत्ता मूते टाँग--”

बात काटते हुए, शराफ़त बोला “आप तो बुरा मान गये। मामू कोई गाली थोड़े ही है । मद्रासी के तो ससुर ही मामा होते हैं।”

“तब तू मुझे ससुर बनाना चाहता है ?”

“ऐलो, जोरू न जाता, अल्लाह मियां से नाता । आप और हम तो एक जैसे हैं।”

“एक जैसे कहाँ शराफ़त । तू तो कह रहा था कि तेरा मालिक किसी तलाक़शुदा से निकाह की बात चला रहा था।”

“मेरे सिंगट्ठे से” अंगूठा दिखाते हुए शराफ़त ने कहा “झूठी पत्तल खाने को शराफ़त ही रह गया था।”

“ऐसा लगता है । कोई और बटेर अन्धे के हाथ—”

“अन्धा मत कहो, दो कटोरे से दीदे वाले को मामूजान । बाकी बटेर ज़रूर हाथ लगी है।”

“क्या सच्च ?”

“ख़ुदा कसम । इस वक़्त मैं जल्दी में हूँ; थोड़ी देर में आकर सब तफसील से बताऊँगा”

“महज़ बताओगे या मुँह भी मीठा कराओगे?”

“दोनों बातें” कहता हुआ शराफ़त बैलों को आगे ले गया। आगे भोपाल का तैराकी क्लब था । शायद उसी की झील में उसका मित्र मछली पकड़ने जा रहा था।

इधर बुद्धा ने खुशी प्रकट करने के लिए मिठायी मांग तो ली, किन्तु अन्दर वह जल भुन गया। उसने दीर्घश्वास ली "वाह रे प्रभु । अजब तेरी क़ुदरत अजब तेरे खेल । छछूँदर के सिर में चमेली के तेल । भला इस माघ के नंगे और वैशाख के भूखे में क्या सुर्ख़ाब के पर हैं, जो उसकी धम् धम् छदम्मा हो रही है और हम सरकारी नौकर हो कर भी घरवाली को कलपते रहें" बुदबुदाता हुआ बुद्धा बरामदे में पड़ी चारपाई पर जा बैठा।

थोड़ी देर में, उसे शराफ़त फिर आता दिखाई दिया। बुद्धा ने मन ही मन में उसे सौ गालियाँ दीं; किन्तु उसके हाथ में दोना देखकर लोभी मन ललचा गया । तुरन्त सौ-सौ प्राणों से वह मन ही मन आशीर्वाद देने लगा "जाने कितनों का विवाह गाँव में हुआ है। किन्तु किसी ने एक बताशा तक नहीं खिलाया और एक यह शराफ़त है जिससे हँसी में कहा और उसने सच कर दिखाया।"

"लो मामू जान, मुँह मीठा करो। तुम भी याद करोगे कि किसी शराफ़त से वास्ता पड़ा था ।"

"वाक़ई में, झूठ को कहा और सच कर दिखाया । तुम्हारा नाम शराफ़त क्या है, शराफ़त तुम में कूट कूट कर भरी है।"

"इस तरह शर्मिन्दा मत करो । लो खाओ कलाकन्द छक कर ।"

"पहले सारी बात तो बताओ" ।

"किस्सा मुखतसिर यह है कि अब्बा ने भोजपुर गांव में शादी पक्की कर दी है।"

"मुबारक हो तुम्हें" कहते हुए बुद्धा ने शराफ़त को बारम्बार अंक वारा।

"आप जैसे मेहरवानों की दुआ चाहिए। लो, नोश फर्माओ" कहते हुए शराफ़त ने दोना आगे बढ़ा दिया। बुद्धा ने खुशी-खुशी कलाकन्द की कतली मुख में डाली; पर उसे कुछ अजीब सा स्वाद लगा "जनम करम में तो तुम खिलाने चले, सो भी कितना बदज़ायके वाला—"

"मुझे बड़ा अफ़सोस है। मगर यह है सब उसी तोन्दूमल हलवाई की मेहरबानी; जो सड़े-गले खोये का माल बनाता है। कितनी बार 'तू तू मैं मैं' हो चकी है। उस दिन मैं उसकी चमड़ी उधेड़ देता, जो तुम बीच में नहीं आते"

"शाम को मेरे साथ चलना। फिर देखना—मैं कैसे आड़े हाथों उसे लेता हूँ"

"शाम की शाम को देखी जायेगी; अब इसे तो खाकर ख़त्म करो"

"स्वाद तो नहीं आ रहा है। किन्तु तुम्हारे इसरार को कैसे टाल सकता हूँ" वस्तुतः एहसान तो बुद्धा ने शराफ़त पर पटका; किन्तु वह था ऐसा लालची कौआ, जो रेंट पर भी चोंच मारने से नहीं छोड़ता था।

कलाकन्द खा कर, बुद्धा को कुछ खुमारी आने लगी। वह चारपाई पर लेट गया। शराफ़त ने जेब से एक सिगरेट निकाली और आगे बढ़ाते हुए कहा "लो पियो, मामूजान"

“नहीं भइया, हमें तो अपनी बीड़ी ही मुबारक” कहते हुए बुद्धा ने अपने बंडल से बीड़ी निकाल कर सुलगाई। दोनों अपनी अपनी सिगरेट-बीड़ी पीते रहे और शराफ़त के विवाह की वार्ता करते रहे—‘तुमने ठीक किया। जूठी पत्तल जूठी ही होती है चाहे कमल के पत्तों की क्यों न बनी हो”

“यही सोच कर, मैंने मालिक की बुराई को लेना पसन्द किया, अब यह लाख गरीब घर की क्यों नहीं हो, मगर है तो नई नकोरी—”.

“नई नकोरी क्या नई नवेली कहो” कहते हुए बुद्धा को वरवश जँभाई आई “आज अभी से बेवक्त नींद चली आ रही है।”

“दो पहर भी तो हो चली है । अच्छा अलविदा” कह कर शराफ़त चल दिया।

जाड़ों की रात बड़ी जल्द आती है। तभी तो कवियों ने यहाँ तक अतिशयोक्ति कर डाली है कि मिलन-हेतु चकवी चकवा नदी पार तक नहीं कर पाते हैं कि शीत काल में निशागम आ जाता है। जो ग्रीष्म में अपराह्न होता है, वह अब सन्ध्या का रूप धारण कर लेता है। कर भी क्यों न ले, चरवाहे भेड़ बकरियों के वृन्दों को लौटाने लगते हैं; ग्वाले गोधन को घर लाने लगते है। उनके खुरों से उड़ी धूलि अन्तरिक्ष में छा कर ‘गोधूलि’ बन जाती है। फिर आज तो बारम्बार बादल आकर अपनी योग माया से दिन और भी छोटा कर रहे थे। क्या उन्हें आज भी महाभारत की भाँति किसी अन्य व्यक्ति का वध कराना था? उसी समय भगवान भुवन भास्कर ने बादल दल छितरा कर अपना किरण जाल फिर सिंधुमेखला पर फैला दिया था। मानों वह कह रहे थे—‘हमें दोष क्यों देते हो ? वह वध तो कब का हो चुका है ?’ शायद, इसी कारण विहग गण अपने रुन्तन में करुण रुदन भर रहे थे।

उसी समय, शंकर काम से लौट कर अपनी साइकिल लेने झोंपड़ी पर आया—“चाचा चाचा” की आवाजें दी; परन्तु यह क्या ? उसकी आवाजें गूँज कर उसके पास लौट आईं। न तो बुद्धा उसके पास आया और न ही उसने उसका कोई उत्तर दिया । शंकर को कुछ अजीब सा लगा । वह पुकारता हुआ बरामदे तक चला गया और बाँसी के किबाड़ को हटा कर चारपाई के पास पहुँचा । उसने बुद्धा को कम्बल ओढ़े सोता हुआ पाया। तब कहीं उसके जाकर मृतप्राय हृदय में प्राणों का संचार हुआ “कमाल है, चाचा! आज ऐसा घोड़ा बेच कर सोये हैं कि हमारी आवाज़ तक से इनके कान में जूं नहीं रिंगी” कहते हुए शंकर ने कम्बल को उघाड़ा। अर-र-र-र-यह क्या? उसके मुख से भयानक चीख़ निकली, उसके नेत्र घबड़ा गये; बुद्धा शयन ही नहीं, महाशयन कर रहा था। उसके चारों ओर रक्त ही रक्त बह रहा था; उसके मफ़लर और टोपी लहू से लथपथ हो रही थी; चारपाई के नीचे रखे भूसे के थैले में भी शोणित भरा पड़ा था; वहीं बैठा कुत्ता का पिल्ला भी खून से सराबोर था। बुद्धा की बायीं भुजा, मुख के निकट मुड़ी हुयी थी; परन्तु दायीं भुजा खाट के नीचे निर्जीव लटक रही थी। उसकी टांगें गुड़ी मुड़ी झुकी पड़ी थीं और नाक सिर, भीषण आघातों के कारण पिचके से पड़े थे।

शंकर से वह विभीषक दृश्य देखा नहीं गया । उसने बुद्धा पर फिर कम्बल तुरन्त

डाल दिया और लगा थर-थर काँपने। बड़ी देर तक वह किंकर्त्तव्य विमूढ़ खड़ा रहा। फिर उसने साइकिल उठायी और दौड़ा-दौड़ा कमला पार्क पहुँचा; वहाँ साइकिल संभलवाई और पैडल मारता हुआ अपने भाई के पास पहुँचा।

"लक्ष्मण, लक्ष्मण। ग़जब हो गया। चाचा को किसी ने मार—"

"अरे बात पूरी बता।' झकझोरते हुए लक्ष्मण ने शंकर से पूछा "हमारे होते हुए चाचा पर हाथ उठाने की किस को हिम्मत हुयी। किस गुंडे ने उन्हें मारने की ज़ुर्रत की है।"

"मारा नहीं, मार डाला है भाई—"

लक्ष्मण सब सुधि बुध भूल गया "क्या कहा ?"

"सच कहा। मैं खुद देख कर वहीं से आ रहा हूँ"

"अरर, यह क्या हुआ? कैसे हुआ ? कब हुआ" कहते हुए लक्ष्मण ने सिर पीट डाला।

"सुबह तो उन्हें अच्छा खासा छोड़ गया था। मेरी साइकिल ख़राब हो गयी थी। वह उन्हीं के पास रख गया था। पर शाम को जब लौटा, तब उन्हें निर्दयतापूर्वक मरा पाया।"

थोड़ी देर तो लक्ष्मण हतबुद्धि रह गया; तब शंकर ने उसे 'पुलिस केस' बताया। दोनों सिहर उठे। पहले लोक निर्माण के अधिकारियों को उन्होंने सूचना देना उचित समझा; किन्तु उनका कुछ पता नहीं लगा। अन्त में, बेचारों को स्वयं ही 'तलैयाथाने' जाना पड़ा। उस समय, बाहर और अन्दर भयंकर तूफान उठ रहे थे। उनके अन्तसतल में प्रलयंकर झंझायें ही नहीं झकझोर रही थीं, अपितु बाह्य विश्व में भी तीक्ष्ण हिमानी प्रभंजन चल रहे थे। सड़कों की बिजली बुझ चुकी थी और अंधड़ में गैस की लालटैन काम नहीं दे रही थी। फिर भी, कर्त्तव्यनिष्ठ थानाध्यक्ष गुरु ने विलम्ब नहीं किया। उसने तुरन्त रिपोर्ट दर्ज की; जवान लिए और लिया साथ में 'बादल' नामक पुलिस कुत्ता। किन्तु जब घटना स्थल पर वह पहुँचा, तब काफी रात जा चुकी थी। इधर आकाश के बादल, पुलिस के 'बादल' से कहीं शक्तिशाली सिद्ध हो रहे थे और उसका कोई यत्न सफल नहीं होने दे रहे थे। अतः सुबह तक को कार्रवाई स्थगित करनी पड़ी।

वैसे मत्यु का विपर्य्याय जन्म है; किन्तु जन्म का सुख मनुष्य स्वयं अनुभव नहीं कर पाता। प्रत्युत्, वह तो उस समय करुण क्रंदन करता है। उसे सब से अधिक आनन्दोल्लास अपने विवाहोत्सव में ही प्राप्त होता है। कुछ ऐसा ही हर्षातिरेक शराफ़त अनुभूत कर रहा था। अन्ततः कितने पीर-फरिश्तों को पूज कर, मस्जिद-मकबरों में माथा टेक कर उसने यह शुभ घड़ी पायी थी। उसने केवल बुद्धा को ही खुशी से कलाकन्द नहीं खिलाया, अपितु अपने मित्र अनवर की दुग्ध डेयरी पर भी वह हर्षोत्फुल्ल दौड़ा-दौड़ा गया। पीछे से चुपके से जाकर, उसने अपने मित्र के नेत्र बन्द कर लिए। अनवर कुछ नहीं समझ पाया और बारम्बार दृग छोड़ने का अनुरोध

करने लगा "कौन हो दोस्त ? यह क्या मज़ाक़ है?"

'कहो यार, हार गये' शराफ़त के मुख से निकला।

"अरे तू शराफ़त !" हाथ छुड़ाते हुये अनवर ने कहा "क्या बात है जो तू आज छैला बना फिर रहा है—रात में यह रंगीन चश्मा—हाथ में ट्रांजिस्टर—"

"अरे, मैंने बताया था न शाम को। अब्बा ने निकाह तय कर दिया है।"

"मगर तेरे ससुर पर कौन सा कारूँ का ख़ज़ाना—"

"क्यों, क्या ग़रीब के दिल नहीं होता; उसके अरमान नहीं होते? ग़रीब से ग़रीब नौशा भी सवा घड़ी का सुल्तान होता है" मुस्कराते हुए शराफ़त ने आँख मारी।

"मगर जन्म न आयी बोरिया, सपने आयी खाट । सो खाट भी नहीं, ट्राँजिस्टर।" अनवर ने चुटकी ली।

"दरअसल, बात यह है मेरे दोस्त । रोज़मर्रा ये बिजली वाले इश्तिहार वाज़ी करते रहते हैं 'ट्रांजिस्टर छोटी किश्तों पर' सो मैंने आसान किश्तों पर इसे ले लिया है। आखिर, हम तवायफों के मुजरे तो इस खुशी के मौक़े पर करा नहीं सकते हैं, तब उनकी सुरीली तानें भी क्या नहीं सुन सकते ?"

'मगर इस किश्तों के चक्कर में आदमी खाक़ीन हो बैठता है।"

"क्या परवाह है" वक्ष पर पाणि धर कर शराफ़त ने कहा "आदमी है ही खाक़ का । फिर खाक़ीन होने का क्या खौफ़ । खाक़ का पुतला बना है; खाक़ में मिल जायेगा।"

"अरे, आज तो शराफ़त, तू बड़ा रंगीन दिखाई दे रहा है।

"तो मैं क्या ऐसी खुशी के वक़्त भी ग़मगीन दिखाई दूँ ।"

"पर घर फूँक, तमाशा तो देखना कहाँ की हिमाक़त है ?"

"छिः मैं तो समझता था कि तू मेरी खुशी में खुश होगा । सो तो तू उल्टा हसद करने लगा" कहता हुआ शराफ़त, अनवर के लाख रोकने पर, वहाँ नहीं रुका ।

प्रातः होते ही, प्राची दिशा में भी शोणित की धारें बह चलीं तथा थानाध्यक्ष गुरु को विगत रात की ख़ूनी घटना स्मृत कराने लगीं। अन्य विशेषज्ञों के साथ, बह पुलिस श्वान बादल को लेकर फिर घटना स्थल पर जा पहुँचा । बादल ने पास के ख़ेतों में चक्कर काट कर श्यामला पहाड़ी का मार्ग पकड़ा, फिर वह कोलतारी सड़क पर उतर कर झील के तट पर जा पहुँचा। उससे अधिक जानकारी वह नहीं दे सका।

विफल मनोरथ होने पर भी, थानाध्यक्ष गुरु हतोत्साहित नहीं हुआ। उसने बुद्धा के शव का निरीक्षण किया। उसके कोट के दो बटन खुले थे; उसका मखमली बटुमा ग़ायब था; स्टोर की चाबियाँ चम्पत थीं, तथा जिस प्लास्टिक के थैले को वह सदा अपने पास रखता था, वह भी गुम था। बरामदे में तीन चार फीट की ऊँचाई तक रक्त के छींटे थे.। चारपाई के पास, नीली चिड़िया छाप वाली सिगरेटों के तीन बुझे टुकड़े पड़े थे, बरामदे में एक ओर लकड़ी और टहनियों के किवाड़ पर एक नया फटा सुरमई चेक का टुकड़ा लटक रहा था, जो अभियुक्त के भागते समय अटक कर फट

गया था तथा दूसरी ओर रात की भीगी मुलायम मिट्टी पर जूतों के सात-आठ चिह्न बने हुए थे, जिनमें केवल दो ही से यह स्पष्ट दीख रहा था कि अभियुक्त के जूते का तला लहरदार रबड़ का था। थानाध्यक्ष ने प्लास्टर द्वारा उन दो चिह्नों के साँचे उठाये।

इतना सब कुछ करने पर भी, अभियुक्त का तनिक भी सुराग़ नहीं मिल पा रहा था। बुद्धा की हत्या की सूचना दूर-दूर तक रुई की भाँति धुन गयी थी। चरवाहे, ग्वाले, मछिहारे, किसान जिसे भी ख़बर मिलती वहाँ दौड़ा चला आता था। थानाध्यक्ष ने उन सभी लोगों से पूछताछ प्रारम्भ की, जो विगत दिन वहाँ से गुजरे थे। एक आदिवासिन ने बताया कि 'हरदास और उसका भाई जग्गा कल दोपहर को अपने गल्ले के साथ निकले थे और बुद्धा से बात भी की थी।

फिर क्या था ? सब का सन्देह उन पर हो गया । अन्ततः चम्बल की घाटी में अधिकतर चरवाहे, कंजर ही डाकू हैं। तुरन्त उन्हें बुलवाया गया। उन्होंने स्वीकार किया कि जब पिछले दिन सुबह वे भेड़ बकरियाँ चराने ले जा रहे थे, तब बुद्धा को उन्होंने पुलिया पर बैठा देखा था। वहीं उससे 'राम राम श्याम श्याम' हुयी थी; किन्तु लौटते समय, बुद्धा को हलवाये शराफ़त के साथ भण्डार की ओर जाते देखा था। इसी बात की पुष्टि पचास वर्षीय रफ़ी उल्लाह ने भी की, परन्तु जब वह चार बजे अपराह्न लौटा, तब उसने बुद्धा को वहाँ नहीं पाया।

जहाँ तक शराफ़त की बात थी, उसकी शराफ़त का गुणगान सभी कर रहे थे । कोई कहता 'यथा नाम, तथा गुणः । शराफ़त की शराफ़त में कोई शक़ नहीं; तभी दूसरा कहता—आजकल कुछ रंगीन तबियत ज़रूर नज़र आता था। मगर क़त्ल-ख़ून, इसका नाम सुनकर उसका तो दम निकल जायेगा।'

फिर भी औपचारिकता के नाते, शराफ़त की खोज प्रारम्भ हुई। परन्तु यह क्या ? उसका तो दूर-दूर तक पता नहीं था। थानाध्यक्ष का माथा ठनका। उसने उसके मित्रों से पूछताछ शुरू की। रफ़ी उल्लाह ने किसी 'मामू' का नाम लिया; किन्तु हरदास ने तुरन्त बात काट दी "मामू तो वह बुद्धा को ही कहता था ।"

"नहीं भाई जान, डेयरी वाला 'मामू'—मियाँ अनवर।" सबने हाँ में हाँ मिलाई। थानाध्यक्ष डेयरी पहुँचा । अनवर ने शराफ़त का अतापता बताने में अपनी अज्ञानता प्रकट की; परन्तु उसने इतना अवश्य बताया "कल शाम चार बजे शराफ़त बैल लिये उसके सामने लौटा था। उससे बाद, वह शहर गया था। वहाँ से, वह नया ट्रांजिस्टर खरीद कर लाया था। पूछने पर उसने कहा कि आसान किश्तों पर उसने उसे खरीदा है । इसे सुनते ही, सब के कान खड़े हो गये । 'घर में नहीं चून, बाहर टेलीफून ।'

तुरन्त पुलिस ने चारों ओर नाके बन्दी कर दी। रात के लगभग साढ़े सात बजे, कोई छाया चलती फिरती दिखाई दी। थानाध्यक्ष ने चुनौती दी; छाया एक क्षण रुकी; परन्तु दूसरे ही क्षरण, वह सिर पर पैर धर कर भागी।

"तुम चारों तरफ से घिर चुके हो । तुम्हारा भागना बेकार है। यदि जान की कुशलता चाहते हो, तो अपने को हमारे हवाले कर दो, वर्ना गोली से भून दिये जाओगे।"

थानाध्यक्ष के शब्दों में बल था। छाया ने सब तरफ संगीनें खड़ी पा कर आत्मसमर्पण के सिवा अन्य कोई चारा नहीं देखा। जब प्रकाश में देखा, तब सब दाँतों तले अंगुली दबा गये—वह छाया शराफ़त थी।

शराफ़त ने स्वयं को सर्वथा निर्दोष बताया। भागने का कारण, उसने पुलिस को डाकू होने का सन्देह बताया; किन्तु थानाध्यक्ष कब उसकी बातों में आने वाला था। उसने उसके कपड़ों से मिट्टी के तेल की झरप पाई और कहीं कहीं रक्त के धब्बे देखे, जिन्हें मिटाने की चेष्टा करी पायी गयी थी। शराफ़त का तर्क था कि वे धब्बे किसी ज़ंगली पेड़ के रस के हैं, जिसके पत्ते उसने बैलों को खिलाये थे। फिर थानाध्यक्ष ने शराफ़त की जर्सी उतरवायी। अरर, वही चेक की क़मीज, जिसका फटा टुकड़ा द्वार पर अटका पाया गया था और उसकी बाँह वहीं से फटी थी। शराफ़त का कहना था कि ग़रीब होने के नाते, उसके वस्त्र फटे ही मिलेंगे। सब से आश्चर्य की बात यह थी कि जब शराफ़त की जेबें टटोली गईं, तब उसकी जेब से नीली चिड़िया छाप सिगरेट की वैसी ही डिब्बी निकली, जिसके तीन बुझे टुकड़े घटनास्थल पर पाये गये थे। परन्तु उसके जूते सब से ज्यादा दग़ाबाज़ निकले। उन्होंने रेत पर वे ही चिह्न छोड़े, जो घटना स्थल पर पाये गये थे। फिर क्या था ? शराफ़त को तुरन्त झुनझुनियां पहना दी गयीं।

दूसरे दिन उसकी बतायी रेडियो की दुकान से पता लगा कि उसने ट्रांजिस्टर का मूल्य नक़द पूरा चुकाया था। अब वह अधिक ढोंग नहीं रच सका। उसने उगल दिया कि विवाह निश्चित होने पर, उसे धन की 'सख्त ज़रूरत' थी। इधर वह यह जानता था कि बुद्धा कितना कंजूस था और कैसे प्लास्टिक के थैले में वह धन जमा करता था। इसीलिये, उसने नींद लाने वाली गोलियाँ खरीदीं और कलाकन्द में मिलाकर, उन्हें बुद्धा को खिलाया। फलस्वरूप, बुद्धा वरवश प्रगाढ़ निद्रा में सो गया। उस समय, साथ में चुपके से लाई कुल्हाड़ी से उसने बुद्धा के मुख पर प्रहार किया और रहे सहे प्राण लाठी मार मार कर निकाल दिये। मृतक की जेब से लाल मखमली बटुआ निकाला, जिसमें 'भंडार' की दो चाबियों के साथ चालीस रुपये निकले। फिर उसने प्लास्टिक के थैले में हाथ डाला। उसमें से डेढ़ सौ रुपये मिले। इन्हीं रुपयों से, उसने ट्रांजिस्टर, धूप का रंगीन चश्मा और नये कपड़े खरीदे थे।

बाद को, अपने वकील के कहने पर वह अपने बयान से मुकर गया; किन्तु पारिस्थितिक साक्ष्य बड़े मज़बूत थे और सब से बढ़कर तो उसके जूते के चिह्न चीख़ चीख़ शराफ़त के अपराध की गवाही दे रहे थे। फलतः जो होना था, वह हुआ। शराफ़त को आजीवन कारावास का कठोर दंड मिला।

जिस समय शराफ़त न्यायालय के कठघरे से निकल रहा था, तब उसको सब से अधिक रोष उन्हीं जूतों पर था। क्रोधावेश में जूतों को टाँगों से उँचा फेंकते हुए घिनौनी हँसी से वह बुदबुदाया—**'बदजात दग़ाबाज़ जूते।'**

# फोटोग्राफ़ी में हमारी प्रतिष्ठा

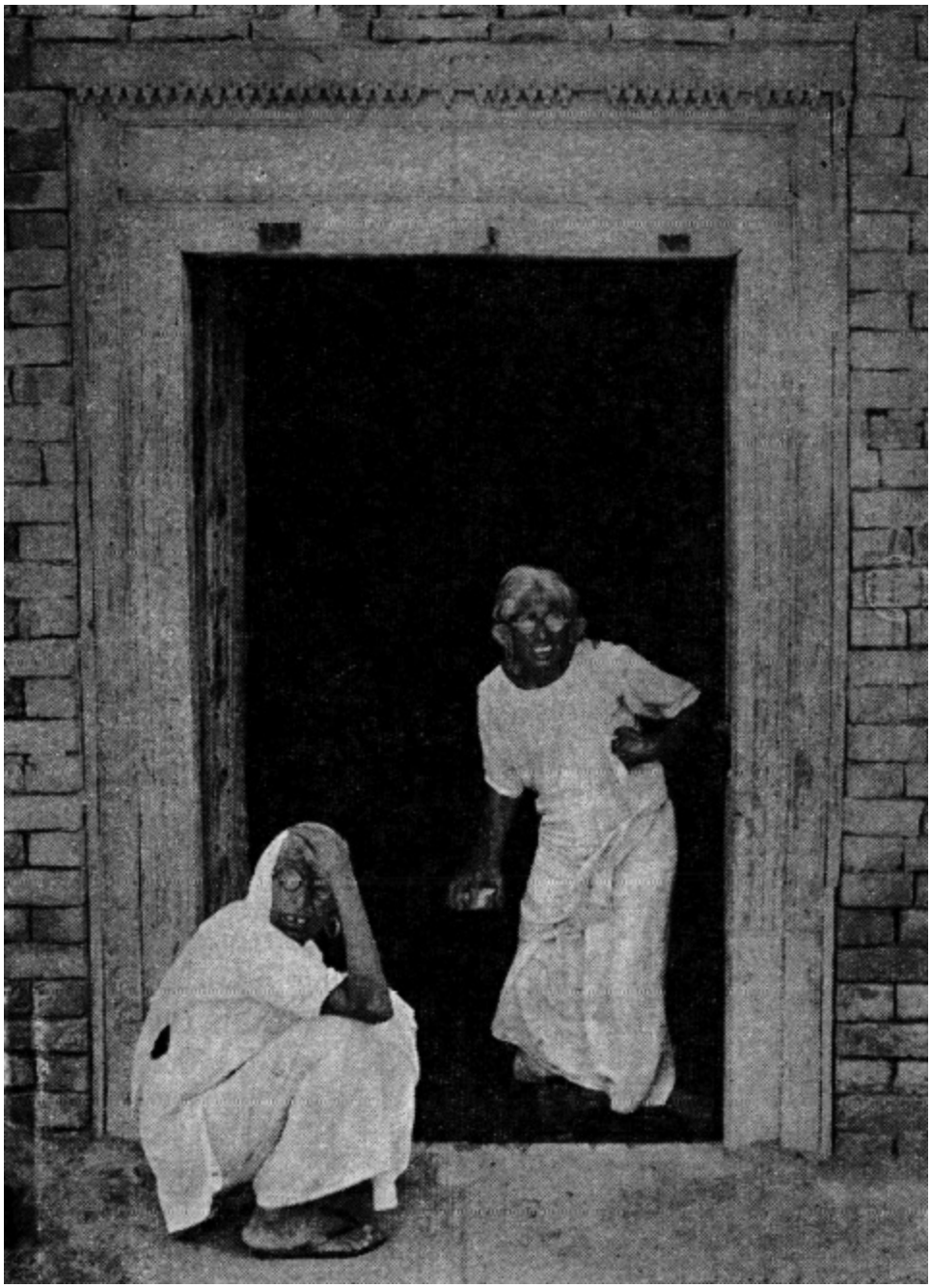
विविध फ़ोटोग्राफों में से (जिन्होंने के० रि० पु० बल को प्रतिष्ठा दिलाई है), यहाँ तीन छायाचित्र दृष्टान्त-स्वरूप दिखाये गये हैं, जिनसे फ़ोटोग्राफ़ी के क्षेत्र में इस बल के कुछ सदस्यों द्वारा प्राप्त उत्तमता का परिचय मिलता है।

इस वर्ष, 'एशियाई युवक' पर यूनेस्को द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में, श्री सतीश खन्ना के छाया चित्र **"यौवन का आनन्द"** ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया है। पिछले वर्ष, यूनेस्को द्वारा ही आयोजित प्रतियोगिता में, श्री शिव कुमार के छायाचित्र **'बहनें'** ने ए० सी० सी० यू० पारितोषिक पाया था।

भारतीय पत्रकार संस्थान द्वारा आयोजित फ़ोटो प्रतियोगिता में प्रदर्शन के लिये, इस बल के सर्वाधिक 11 छात्राचित्र चयन किये, जिनमें, तीन श्री एच० एस० सेठी के, छः श्री शिवकुमार के तथा दो श्री सतीश खन्ना के थे। श्री एच० एस० सेठी को उनके फोटो "मानव छत्रक" पर श्रेष्ठता का प्रमाणपत्र मिला।



**'यौवन का आनंद'**
(श्री सतीश खन्ना)



**'दो बहनें'**
(श्री शिव कुमार)



**'मानव छत्रक'**
(श्री एच० एस० सेठी)

## क्रीडा क्षेत्रें :

**आंखेल भारतीय पुलिस तैराकी में लगातार हमारी चौथी बार जीत**

**पुणे में 24 अगस्त 1980 को समाप्त हुयी 29वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने निरन्तर चौथी बार टीम चैम्पियनशिप जीत कर अपनी कीर्ति बनाये रखी। इस प्रतियोगिता में कुल मिला कर पाँच नये राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित हुये हैं;—(क) 100 मी० फ्री स्टाइल (ख) 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक (ग) 100 मी० बटर फ्लाई (घ) 200 मी० बटरफ्लाई (च) 4X100 मी० मेडले रिले । 100 मी० बैक स्ट्रोक की स्पर्धा में, एक राष्ट्रीय कीर्तिमान की बराबरी रही।**

**पी० पद्मनाभन में II रहा है व्यक्तिगत चैम्पियनशिप जीती। थोबा सिंह तथा के. सोमशेखरन की तैराकी भी शानदार रही।**

**[विस्तृत विवरण अगले अंक में पढ़ें]**

## अखिल भारतीय हॉकी प्रतियोगिता

कोविलपट्टी में 8 जून 1980 को खेली गयी 35वीं वार्षिक अखिल भारतीय हॉकी प्रतियोगिता के फाइनल में, के० रि० पु० बल ने सिगनल कोर, जालन्धर को एकमात्र गोल से हराकर जी. कुप्पूस्वामी नायडू स्मारक ट्रॉफी जीती। उस गोल को अतिरिक्त समय के अन्तिम क्षणों में, इक्का ने किया।

## 14वीं अन्तर्रेंज हॉकी प्रतियोगिता

अजमेर में 21 जून से 4 जुलाई 1980 तक आयोजित 14वीं अन्तर्रेंज हॉकी प्रतियोगिता में, अजमेर रेंज ने सिरमौर जीता । सभी दस रेंजों ने उसमें भाग लिया । फाइनल में, अजमेर रेंज ने गौहाटी रेंज को 2-1 से पराजित किया।

## राष्ट्रीय खुली दौड़ प्रतियोगिता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पाँच एथ्लीटों ने, जून 80 के सप्ताह में अजमेर में आयोजित 18वीं राष्ट्रीय खुली दौड़कूद प्रतियोगिता में भाग लिया। 10,000 मी० दौड़ में हरिचंद ने एक स्वर्ण पदक जीता। घन फेंक, स्टीपलचेज़ दौड़ तथा डेकॅथलॅन में आर० एस० बल, प्रदीप कुमार तथा प्रभात सिंह ने क्रमशः एक-एक रजत पदक पाया। चक्का फेंक में एस० एस० बल ने तृतीय स्थान पाया।

# हरीचन्द—ओलिम्पिक मैरथॉन धावक

दिनाङ्क 1 अगस्त 1980 को मास्को ओलिम्पिक खेलों में के० रि० पु० बल के हरीचन्द ने मराथॉन धावक के रूप में अपना अलग स्थान बनाया, जब उसने दौड़ को 2 घंटा 28 मि० 8 से में पूरा किया। दौड़ का विजेता पूर्वी जर्मनी का वाल्डेमार

क्लरापेंस्को रहा, जिसने 2 घं० 11 मि० 3 से० में दौड़ पूरी की। 73 प्रतिद्वान्द्वियों में, हरीचन्द को 31वाँ स्थान मिला।

भारतीय धुरन्धर मराथॉन धावक शिवनाथ सिंह दौड़ पूरी नहीं कर सका। एक्सप्रेस ने लिखा है—"अभागे अंक 13 वाली जर्सी पहने हरीचन्द और शिवनाथ सिंह 30 कि० मी० पार करते ही क्लान्त-श्रान्त दिखाई पड़ते थे।"

"शिवनाथ सिंह को चक्कर आने लगा, दर्द हुआ और वह दौड़ में से निकल गया। दौड़ते रहने पर, वह हरीचन्द से भी पीछे रह जाता।"

इससे पूर्व 2 जुलाई को, 10,000 मी० दौड़ में से हरीचन्द निकाल दिया गया। 13 प्रतिद्वन्द्वियों में उसका 10वाँ स्थान था जब उसने 29 मि० 45.8 से० में उस दौड़ को पूरा किया था।

---

# कुश्ती

## ले०—श्री सुखवन्त सिंह

कुश्ती से शारीरिक-सुन्दरता तथा युद्ध करने की क्षमता प्राप्त होती है। कुश्ती से दंगल में प्रतिस्पर्धा की उग्रभावना ही केवल नहीं उत्पन्न होती है; साथ ही, जीवन की विकट स्थितियों में वह साहस, मानसिक सन्तुलन तथा कार्य-कुशलता भी प्रदान करती है। यह उत्साहवर्द्धक प्रकार का खेल है और प्रतिरक्षात्मक एवं आक्रामक प्रवृत्ति के विकास को शक्ति प्रदान करती है। दंगल की जीत केवल शारीरिक मुठभेड़ों में विपुल विश्वास ही नहीं दिलाती है; साथ में, मनुष्य के दैनिक जीवन में विभिन्न समस्यायों से सुलझने के लिए भी भरोसा प्रदान करती है।

**कुश्ती का उद्भव**—शुरू से ही, मनुष्य ने अपने अन्य जनों पर शारीरिक शक्ति से अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने की चेष्टा की है। वैज्ञानिक तकनीक के साथ यह इच्छा ही, कुश्ती की आधुनिक कला की जननी है ।

पुरातनकाल से, एशियाई देशों में प्रतिस्पर्द्धा के खेल के रूप में कुश्ती लोकप्रिय रही है। चीन, जापान, ईरान और भारत में कुश्ती से बड़ा आदर मिलता है। भारतीय पौराणिक कथाओं में, इसके विषय में बड़ा वर्णन है। जाम्वन्त, हनुमन्त, भीमवन्त (?) और जरासन्ध इस कला में दक्ष माने गये हैं और हरेक ने कुश्ती के अपने नये ढंग प्रचलित किये हैं।

**कुश्ती के ढंग**—निम्न लिखित है:—

**1. जाम्वन्ती**—में **फाँस** (पकड़) के यत्न सम्मिलित हैं।

**2. हनुमन्ती**—में पेंच नामक वैज्ञानिक पद्धति सम्मिलित है, जिसमें बचने, लुढ़काने तथा सहसा और जल्द गिराने की सही पकड़ के यत्न पाते हैं।

**3. भीमवन्ती**—में 'कस-बल' सम्मिलित हैं, जिसमें शारीरिक भार तथा दैहिक

शक्ति की आवश्यकता होती है।

**4. जरासन्धी**—में 'नेस्ती' नामक सभी अधीनस्थ पकड़ सम्मिलित हैं; जोड़ों पर दबाव डालने को हस्तक-उत्तोलक ढंग अपनाये जाते हैं तथा हाथ-पाँव एवं जीवन जो ख़तरनाक़ होते हैं। वे न्याय विरुद्ध माने गये हैं। आजकल, प्रतिस्पर्द्धक खेल के रूप में, कुश्ती अतीव गम्भीर तथा वैज्ञानिक हो गई है।

सादिक़ पहलवान के समय से, पकड़ आदि के कुश्ती के नियमों में परिवर्तन आ गया है। आलिया, गुल्लन, गंगा, भुटान, करीम बक्स, कीकर सिंह, कल्लू, बड़े गामा, इमाम बक्स, गूंगा, हमीदा, गंडासिंह ने भारतीय कुश्ती में चार चाँद लगाये हैं। इन्हीं दिनों मंगल राई, केसरसिंह, पूरनसिंह गनपत, मेहरदीन, मारुतिमन, तथा भारत केसरी चंदगीराम ने खूब ख्याति पाई है।

आजकल, कुश्ती अतीव जटिल तथा वैज्ञानिक हो गयी है। आज के, उच्च कोटि के पहलवान हैं — रुस्तमे-हिन्द सत्याल, रुस्तमे-हिन्द सुखवन्त सिंह, भारत केशरी कर्त्तार सिंह, उ०प्र० केसरी दिवानसिंह तथा रुस्तमे-हिन्द ओमप्रकाश । इनमें बहुत से उच्च शिक्षा प्राप्त तथा सुप्रतिष्ठित स्तर के हैं।

**व्यंग्य--**

# मैं 7.62 मी० मी० का कारतूस हूं

**श्री वाई० जी माथुर**

महाराष्ट्र में किर्की की स्वास्थ्यप्रद जलवायु में स्थित गोला बारूद की फैक्ट्री में हम लाखों की संख्या में उत्पादित हो रहे थे। विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण हुये स्नातकों की भाँति, हम उत्पादन के अन्तिम चरणों में, बहुत उत्तेजित थे। हम में हरेक की जिह्वा पर एक ही प्रश्न था : "अन्ततः मुझे किस सेवा में भेजा जायेगा? क्या वह होगी थल सेना, नौ सेना या वायु सेना अथवा होगा कोई अर्द्ध सैनिक दल ?" कारण, ये सभी सेवायें इसी स्वभरित रायफल 7.62 का प्रयोग करती हैं। हमारी यही तीव्र इच्छा थी कि हम लक्ष्य भेदें।

जब मुझे थल सेना को भेजा गया, तब मुझे अतीव प्रसन्नता हुई। जैतूनी हरी वर्दीधारी जवान मुझे जानते हैं और मान देते हैं । किन्तु शीघ्र ही थल सेना के डिपो से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को मैं निर्गमित कर दिया गया। इसे दुर्भाग्य ही कहा जाये, क्योंकि गोला-बारूद के प्रति के०रि०पु० बल के दुर्व्यवहार के विषय में भाँति-भाँति की चिन्ताजनक बातें मैंने सुनी थीं। जब कि न्याय और व्यवस्था बनाये रखने और गोला बारूद के अनुरक्षण में, उनका अच्छा नाम है; ऐसा सुना था कि वे हम से इस

प्रकार व्यवहार करते हैं, जैसे बम्बइ की अतीव आधुनेक सुन्दरी से कोइ ग्रामीण व्यक्ति ब्याहा गया हो।

मैंने यह सोचा "कोई बात नहीं, जब तक देख रेख मेरी ठीक प्रकार से होती है और रायफल के नालमुख से गोली निकलते समय, मेरा काम ठीक रहता है, तब तक इससे मुझे क्या लेना-देना कि रायफल के पीछे खड़ा आदमी, जैतूनी, हरी या सफ़ेद या नीली अथवा ठीक सादी खाक़ी में है।"

मुझे अपनी कार्य-कुशलता के विषय में कोई सन्देह नहीं था । अपनी पक्की विशिष्टताओं के अनुसार, मेरे तत्व और आवश्यक आँकड़े रखने का सारा अभ्यास इसलिये था कि यह सुनिश्चित हो जाये कि मेरा छर्रा लक्ष्य पर सही और अचूक बैठेगा। संयोग से, मैं शक्ल में लम्बा कारतूस हूँ, किन्तु सभी उपभोक्ता मुझे गोली कह कर पुकारते हैं। शायद इसलिये, कि 'कार्टरिज़' (अंग्रेजी में) बोलने में कठिनाई होती है; सो ही हिन्दी में 'कारतूस' अथवा इस कारण से, मेरा गोल आधार है या यह नाम मेरी समस्त दैहिक रचना को ध्यान में रख कर दिया गया है।



**(1) बक्से में ढीले रखने से पिचका दबा कारतूस ।**



**(2) बक्से में ढीले रखने या जालीदार पेटी में ले जाने से कारतूस से टेड़ी गोली।**

सेवोपयोगेता के जीवन को (सेना में जिसे 'शेल्फ जीवन' कहते हैं) लम्बा बढ़ाने के लिये, मुझे क़ीमती ढंग से ढका गया। पहले क्लिप चार्जरों में मैं रखा गया। एक इस क्लिप में हम पाँच-पाँच थे, जो मेरे नाज़ुक अंग-'आघात टोपी'—की ही केवल रक्षा नहीं करती है, बल्कि रायफल की मैगज़ीन (तूणिका) में मेरे तुरन्त भरने की भी सुनिश्चितता करती है। चार्ज कपड़े के बंडल में (जिसे 'बण्डोलियर' कहते हैं) रखे जाते हैं; एक बण्डल में 50 गोले रखे जाते हैं। बण्डल वातरोधक स्टील के डिब्बों में नियंत्रित खुश्क़ जलवायुक स्थितियों में हम बन्द किये गये थे। इसने मेरे संघातक शत्रु-'सीलन' से मुझको बचा दिया था। वातावरण की नमी से सब प्रकार के दूषण उत्पन्न होते हैं—अम्ल, क्षार तथा अन्य रसायन जो मेरे सुन्दर पीतल पिण्ड को मलिन तथा मोर्चे से क्षीण कर देते हैं। इस प्रकार नियंत्रित स्थितियों में, मुहरबन्द डिब्बे में भली भाँति लिपटा हुआ, मैं वातावरण की नमी तथा अन्य क्षतियों से ठीक-ठीक परिरुद्ध किया गया था। ठीक तरह से फेरबदल के लिये, हर बण्डल तथा हर डिब्बे में मेरे उत्पादन की तिथि अंकित थी। "जो पहले बना, वह पहले फायर किया जाये" के इस सिद्धान्त से देश के लिये संघर्ष में नये खून मिलने की सुनिश्चितता हो जाती है।

जब तक मैं के०रि०पु० बल के केन्द्रीय शस्त्र भण्डार में रहा, मैं संभला रहा और मेरी अच्छी देख भाल हुयी; किन्तु जिस क्षण से मैं बटालियन को भेजा गया, मेरे दुःख दर्द शुरू हो गये। अनेकों धक्के, खाते झटके, स्थानान्तरण, नौकान्तरण, संभालते-बिगड़ते, हम बटालियन के कोत में पहुँचे।

कोत में निम्नलिखित बातचीत शुरू हुयी—

**कोत कमांडर**—"क्या तुमने बक्से की संख्या की जाँच कर ली ?"

**अनुरक्षक दल कमांडर**—"नहीं तो। केन्द्रीय शस्त्र भण्डार पर यह कहा गया कि ये बण्डल फैक्ट्री में मुहर बन्द किये गये हैं। बक्सों पर जो संख्या लिखी है, उसे सच मानना चाहिये।'

**कोत कमांडर**—"बकवास। यह धान्य थोड़े ही है; बारूद है। हरेक गोली को गिने बिना, यह कैसे कहा जा सकता है कि संख्या सही है।

"इस पर मामला क्वार्टर मास्टर पर जा पहुँचा जो एक अनुभवी उप-पुलिस अधीक्षक था, जो कोत कमांडर का काम उस समय कर चुका था, जब वह नायक था। उसने आज्ञा दी—'सभी बक्से खोल डालो। सौ-सौ की संख्या में गोले रख दो। मैं स्वयं गोले गिनूँगा। तभी इन सब को अपनी देख रेख में लिया जाएगा।" फिर क्या था ? सभी सुचारु रूप से मुहर किये बक्से खोले गये, बण्डोलियर (बंडल) निकाले गये और साफ़ पंक्तियों में रख कर हमें गिना गया। उस समय वर्षा होने के कारण, हम में कुछ भीग गये। सब बक्से और पेटियाँ एक तरफ इकट्ठी कर दी गयीं। जब तक क़्वार्टर मास्टर संख्या को गिन कर सन्तुष्ट हुआ, तब तक लंच (दोपहर के भोजन) का समय हो गया था। एक दिन का बहुत काम करने के बाद, वह तो चला गया, किन्तु हमें एक कर्मकारी दल से फिर पैक करने को छोड़ गया। उस दल ने हमारी उत्पादन-तिथियों को देखे बिना, फिर से पैक कर दिया। मेरी उत्पादन-तिथि 19.2.77 थी; पर जिस

बक्से पर 2.8.76 लिखे थे; उसमें मैं पहुँच गया। जब भी कभी कोई नया कोत कमांडर आया, हमें फिर पक्तियों, में रखकर गिनने का अभ्यास कई बार हुआ; यहीं अन्त नहीं था। माल की यह जाँच पड़ताल, तिमाह में एक बार और कभी-कभी तो एक मास में एक बार तक हुई। यह कर्मकाण्ड बड़ी निष्ठापूर्वक होता है। सारा गोला बारूद— मॉर्टर बम, हथ गोले, पाइरोटेकनीक (आतिशबाज़ी) तथा नन्हें शस्त्र गोले बारूद— अवात मुहरबन्द बण्डलों से निकाले जाते हैं और बारम्बार गिनने के लिये, स्पष्ट पंक्तियों में रखे जाते हैं। इस यूनिट में आने के पहले ही दिन से, मुझे मिज़ोरम के नम वातावरण में खुला रखा गया; जिसके कारण, मेरी संरचना पर बुरा प्रभाव पड़ा।

और एक दिन एक कम्पनी की गारद-सेवा करने वाले संतरी को मुझे जारी कर दिया गया। यह संतरी तोंद वाला मोटाताजा मनुष्य था, जिसने अपनी झिल्ली पेटी की तह में हर ओर एक चार्जर (कारतूस) रख लिया। मैं भी उन्हीं में था। हे भगवान! कैसे कष्ट प्रद स्थान में मैं फँसा ! इस सन्तरी को पसीना बहत आता था और उसके पसीने से उसकी पेटी ही नहीं, वरन उसकी पेटी में बँधे हम सब भी सरावोर हो जाते थे । जब कभी वह मोटे राम झुकते थे, उनका दबाव मेरे ऊपर पड़ता था, जिससे मेरी गोली अपने पीतल के कारतूस में ढीली पड़ गयी। एक दिन तो वह इतने झूके कि मेरी गोली कारतूसी खोल की पंक्ति से हट गयी। मैं दिनभर चीख़-पुकार करता रहा, क्योंकि मैं जानता था कि इस अजीबो ग़रीब सूरत में, रायफल के खाने में मैं नहीं घुस सकूँगा ।

दैव गति से, उस दिन वर्षा होती रही और उस वीर सिपाही के साथ-साथ, मैं भी पूर्णरूपेण भीग गया। तब कुछ पानी मेरे दागने वाले यंत्र में घुस गया और मैं सर्वांगीण रुग्ण कारतूस हो गया। मेरा भीतरी भाग, अन्तड़ियों में, मोर्चा लग रहा था और रायफल से चल कर लक्ष्यभेदन की (जो प्रत्येक स्वाभिमानी कारतूस की अन्तिम गरिमा होती है) मेरी आशाओं पर पानी फिर गया। एक बार तो उस सिपाही की पेटी तक से मैं गिर गया, जब वह अपनी रायफल की गलपट्टी कसने को झुका ।

तब एक दिन तकनीकी दल आया। वह हर यूनिट में निरीक्षण को एक बार प्रति वर्ष आता है । वास्तव में, यही आगन्तुक हमें भली भाँति समझ सकता है और हमारी योग क्षेम को आकुल रहता है। मुझे और मेरे साथियों को संकट में देख कर उस तकनीकी दल ने बहुत बुरा भला कहा और कई बार "नितान्त असावधानी" शब्दों को उच्चारा। इसने हमें "बेकार" की श्रेणी में डाला और किसी निकटतम गोला-बारूद डिपो में हमें वापस करने का हुक्म दे गया।

बारम्बार खुले पड़े रहने से, निरन्तर गिनने से, और बक्सों में मुक्त मछलियों की तरह भरने से, हम में से कितने ही मलिन, पिचके, जंग खाये तथा नष्ट प्राय हो गये। मछलियों से भिन्न, हम धातु के बने हैं, जो दबाव से पिचके तथा खराब हो जाते हैं। 'नाकारा' नाम पाकर, हमें थल सेना के डिपो में भेजा गया, जहाँ एक भट्टी में हमारा दाह-संस्कार होने वाला है, जो "बेकार" गोलियों का अन्तिम अशोभनीय निपटान है।

इस अपकीर्ति के गर्त्त में पड़े हुये, मुझे उन देदीप्यमान दिनों की याद आ रही है, जब मैं जीवन से ओतप्रोत था और यही तीव्र इच्छा मुझे प्रदीप्त कर रही थी कि कब

रायफल से निकल कर सर-सर करता वायुमण्डल में से एक उड़ान भरूँ और ठीक लक्ष्य को भेद डालूँ। किन्तु यह मेरे भाग्य में कहाँ लिखा था ?

मैं यही सोच सोच कर ताज्जुब करता हूं। "आखिर मुझे उत्पादित ही क्यों किया गया?"

## रेलों में जवानों की सीटें

हावड़ा-नया बंगगाइगाँव तथा हावड़ा-मद्रास चलने वाली जनता-एक्सप्रेस गाड़ियों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों के लिये पन्द्रह-सीटें आरक्षित की गयी हैं। इसके अतिरिक्त, हावड़ा-दिल्ली वाली जनता एक्सप्रेस में दस सीटें और जम्मू-मद्रास वाली जनता एक्सप्रेस में पाँच सीटें हमारे लिये सुरक्षित की गई हैं। इस विषय में रेलवे बोर्ड ने सभी रेल प्राधिकारियों को आदेश भेज दिये हैं।

## सूक्ति सुधा

तृष्णा से बढ़ कर दूसरी व्याधि नहीं है और न दया से बढ़ कर धर्म है।

**—चाणक्य**

स्त्रियाँ घर की लक्ष्मी कही गई हैं; वे अत्यन्त सौभाग्यशालिनी, पूजा के योग्य तथा घर की शोभा हैं। इसलिये, इनकी विशेष रूप से रक्षा करनी चाहिये ।

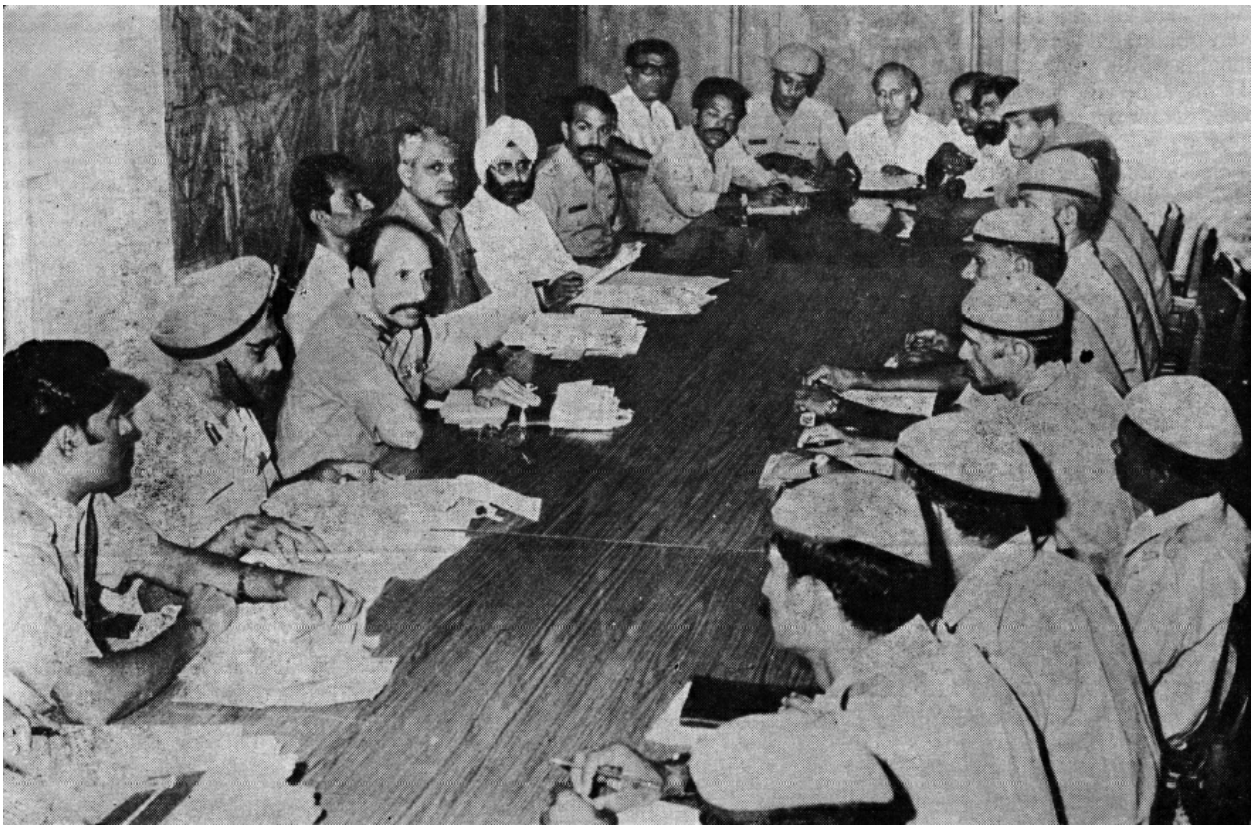
**—विदुर**

विद्वान पुरुषार्थ को बड़ा मानते हैं; जब कि असमर्थ, अकर्मण्य तथा किम् पुरुष भाग्य देव की उपासना करते हैं।

**—ऋग्वेद**

दरिद्र कौन है ? जिसे बहुत तृष्णा है । सम्पन्न कौन है ? जिसे पूर्ण सन्तोष है ।

**—शांचार्यकर**



# के०रि०पु० बल के सदस्यों के बालकों को छात्रवृत्तियां

दिनांक 4 जुलाई 1980 को महानिदेशालय, के० रि० पु० बल, नई दिल्ली में शिक्षा कोष की केन्द्रीय समिति की वार्षिक बैठक श्री बीरबल नाथ, महानिदेशक की अध्यक्षता में हुई। प्रथमबार, सभी चारों सेक्टरों तथा आन्तरिक सुरक्षा अकादमी के 38 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सहायक निदेशक (परिचालन) की अध्यक्षता में गठित एक उपसमिति ने वित्तीय लाभों के लिये प्रार्थनापत्रों पर विचार किया। 1979-80 वर्ष के लिये, 66,000 रु० के अनुदान वाले 299 प्रकरणों को स्वीकार किया गया। जो कर्मचारी सेवा या कार्रवाई करते मर गये हैं या असमर्थ हो गये हैं,उन में से प्रत्येक की एक सन्तान को इस कोष का लाभ मिलेगा। ऐसी सन्तान को कक्षा I से IV तक 50 रु० और कक्षा 1 से VIII तक 75 रु० का वार्षिक अनुदान दिया जायेगा। आठवीं कक्षा के बाद, उस पर सामान्य नियम लागू होंगे।

सर्वसम्मति से, 20 योग्यता—छात्र वृत्तियाँ निम्नलिखित स्थितियों में से हरेक को देना स्वीकृत किया गया :—

1) कक्षा IX से XI या दस+दो - पद्धिति में XII कक्षा में पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र को, 600 रु० प्रति वर्ष ।
2) कला तथा वाणिज्य में स्नातक स्नाकोत्तर अथवा तकनीकी डिप्लोमा के छात्र

को, 800 रु०. प्रांते वर्ष।

3) विज्ञान में स्नातक या स्नातकोत्तर छात्र को, 1,000 रु० प्रति वर्ष ।

4) तकनीकी स्नाकोत्तर (एम० बी० बी० एस०; एम०डी० एम०एस०, इन्जीनियर, कृषि आदि) के छात्र को, 1,200 रु० प्रति वर्ष ।

पिछले वर्ष की अन्तिम परीक्षा में प्राप्त अंकों के प्रतिशत के आधार पर योग्यता निर्धारित होगी। अभिभावक के पद-स्थान से इन छात्रवृत्तियों का कोई संबंध नहीं होगा। तृतीय श्रेणी पाने वाले छात्र इन छात्रवृत्तियों के पाने योग्य नहीं होंगे। ये छात्रवृत्तियाँ पाने वाले छात्र, सामान्य कोटि में उपलब्ध सुविधायें नहीं पा सकेंगे। पदों के अनुसार इन छात्रवृत्तियों का वितरण इस प्रकार होगा—(क) अधः अधिकारी (यू०ओ०) तथा अन्य जवानों के बच्चों को 14; (ख) अधीनस्थ अधिकारी के बच्चों को 4; तथा (ग) राजपत्रित अधिकारी के बच्चों को 2 । इसमें कार्यालय . तथा अस्पताल के कर्मचारियों के समान पद भी सम्मिलित हैं।

## ★ विद्युयन्मारण से रक्षा ★

दिनांक 2 अगस्त 1980 को, लाम्फेलपेट (इम्फाल) में श्री एस० एन० शर्मा, सहायक कमांडैण्ट, 29 बटालियन ने एक महिला तथा उसके पुत्र को विद्युयन्मारण से बचा लिया। जब श्री शर्मा, बटालियन के मुख्यालय से टुकड़ियों का निरीक्षण करने जा रहे थे, तभी उन्हें एक निकटवर्ती क्वार्टर से कुछ चीखें सुनाई दीं। अपने जवानों के साथ, वह भागे-भागे वहाँ पहुँचे और एक महिला और एक बालक को विद्युयन्मय तार से चिपका पाया। का० काम्बले ने तुरन्त एक बाँस से तार को अलग कर दिया। श्री शर्मा, बटालियन के चिकित्सा-निरीक्षण-कक्ष में उन आहतों को ले गये, जहाँ उनकी चिकित्सा की गई। तनिक देर होने से, दो मत्युयें हो सकती थीं।

**कविता :**

## अमर सिपाही

**[रचयिता—क० लिपिक हंस राज ओझा, ग्रुप केन्द्र गौहाटी]**

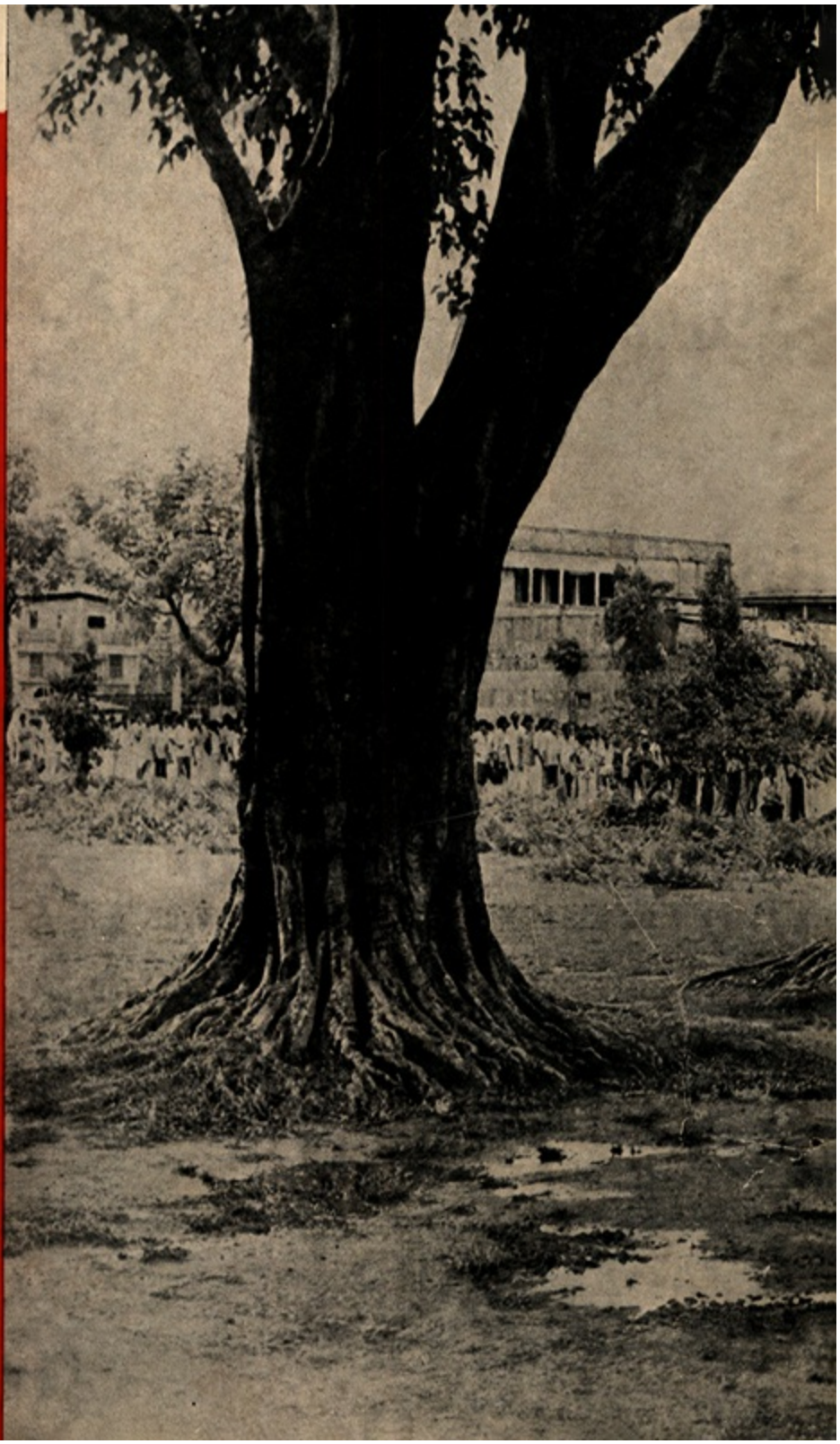
देश हमारा भारत है यह, हम इसके हैं लाल ।
मातृभूमि की सेवारक्षा;—सब का एक सवाल ॥
दुश्मन यदि है शीश उठाता, उसे कुचल हम देते ।
निज जननी की लज्जा-हित हम, शूली भी चढ़ लेते ।
शत्रु-समर में आता उसको, हम यमलोक दिलाते,

हम भारत के 'अमर सिपाही', ध्वज झुकने नहीं देते।
जब हम हैं, रिपू चढ़ सकता कब, इस भारत के भाल।
देश हमारा भारत है यह, हम इसके हैं लाल॥
दिल में दृढ़ भ्रातृत्व-भावना, की सुरसरि है बहती।
पर हर हत्यारे के बध को, तनी रायफल रहती।
रहते उनसे सदा सजग जो, ग़द्दारी दिखलाते,
रिपु की यक गोली उत्तर में. सौ गोली है सहती।
क्षीर-नीर-निर्णय से प्रस्तुत, करते एक मिशाल।
देश हमारा भारत है यह, हम इसके हैं लाल।
मातृभूमि-हित लड़ते नित हम, हँस-हँस प्राण गँवाते।
रुकते हैं पग नहीं हमारे, जो आगे बढ़ जाते॥
रूखा-सूखा खा, खुश हैं हम, पर परतन्त्र नहीं हैं,
हम स्वतन्त्रता की वेदी पर, निज सर्वस्व चढ़ाते।
आँख दिखाने वाले की हम, आँखें लेय निकाल।
देश हमारा भारत है यह, हम इसके हैं लाल॥
देश यही है जहाँ राम ने, आ अवतार लिया था।
राम-राज्य-हित दुराचारियों, का संहार किया था।
गांधी जी ने पराधीनता, की बेड़ी कटवायी,
सत्य-अहिंसा का सब जग को, जीवन-मंत्र दिया था।
यही नीति सच्ची बापू की, बनी गले जयमाल।
देश हमारा भारत है यह, हम इसके हैं लाल॥
केन्द्र-पुलिस बल के आरक्षी, परम्परा जानो सब।
सेवा-भक्ति-धर्म पर चल कर, अमर कमाओ यशअब।
स्वर्णिम-कार्यकलाप तुम्हारा, जग में होता जग मग,
शान्ति-व्यवस्था जब लाते तुम, अटल कीर्ति पाते तब॥
'अमर सिपाही' कालजयी तुम, सज्जन के प्रतिपाल।
भारत देश हमारा है यह, हम इसके हैं लाल।



दिल्ली में अलीपुर क्षेत्र के पल्ला बाँध पर पहरा देते हुए के० रि० पु० बल के जवान

रजिस्टड नं० 25627/74]



# ★ क्रै प ल र ★

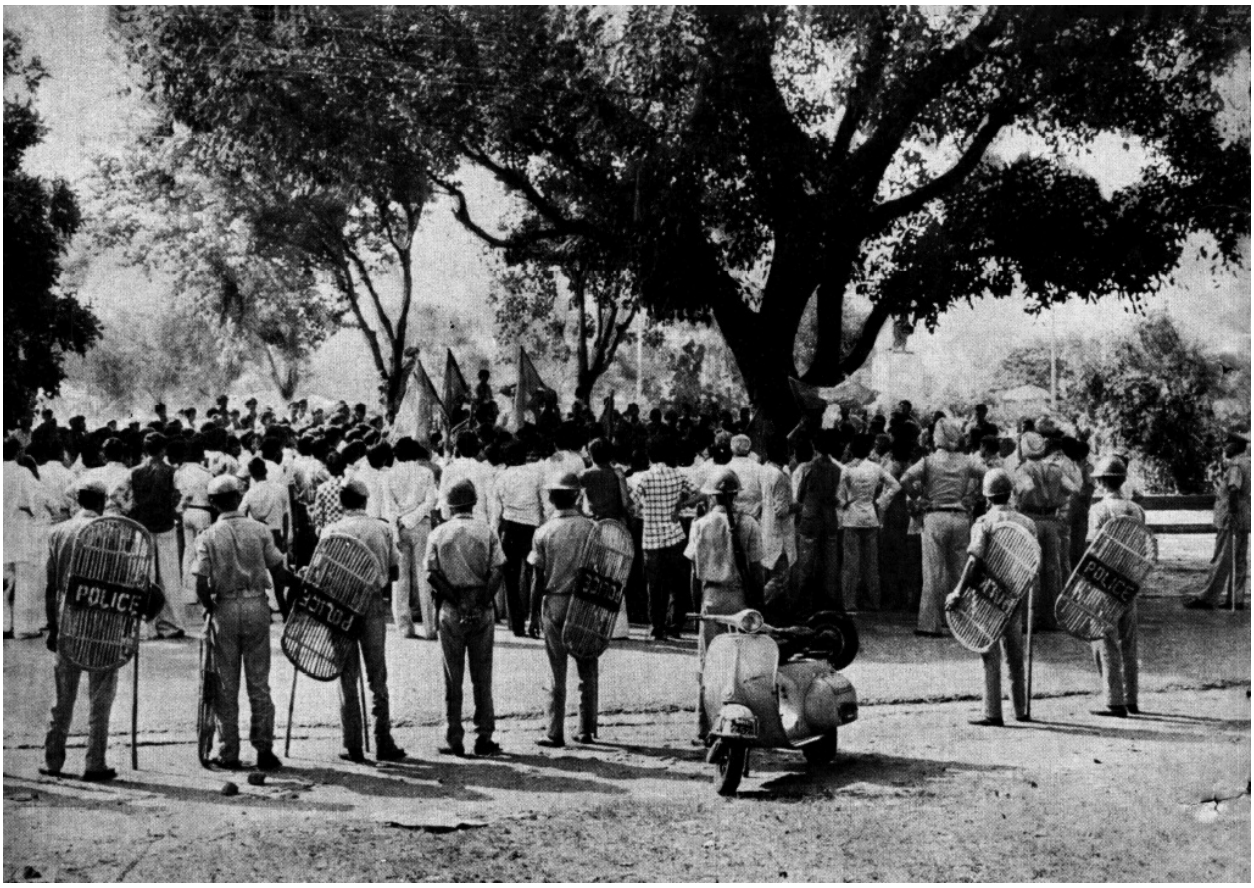
● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

30 नवम्बर, 1980] खण्ड IX अंक 5 [ 9 अग्रहायण, 1902



तैराकी में भारत की नई आशा—के० रि० पु० बल का थौबा सिंह




**22 अगस्त '80 को हुये दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र यूनियन के चुनाव में शान्ति-व्यवस्था के लिये निरत 11 बटालियन के जवान**

## के० रि० पु० बल में 8 और बटालियनों की वद्धि

भारत सरकार ने साम्प्रदायिक तनावों में कानून तथा शान्ति-व्यवस्था बनाये रखने के लिये, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में 8 और बटालियने बढ़ाने का निर्णय किया है। उनमें वे तीन बटालियने भी सम्मिलित हैं, जिन्हें इन्हीं दिनों 'शान्ति सेना' के रूप में गठित किया है। इन तीन बटालियनों को ऐसे क्षेत्रों में निरत किया जायेगा, जहाँ आये दिन साम्प्रदायिक उपद्रवों की आशंका बनी रहती है, जिससे इन्हें तुरन्त उपद्रव-स्थलों पर भेजा जा सके। इनमें अनुसूचित तथा अन्य कमजोर वर्गों का प्रतिनिधित्व बहुत बढ़ा दिया है। इनके सदस्यों को सामान्य पुलिस प्रशिक्षण के साथ-साथ, अग्निशमन आदि जैसी शिक्षा भी दी जा रही है। इस अभिवृद्धि से जवानों पर सेवा का भार ही कम नहीं होगा, साथ में, प्रशिक्षण में भी अच्छा सुधार होगा।

# ★ कै प ल र ★

**द्वैमासिक]**

**[हिन्दी संस्करण**

**केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र**

तथा

**सचित्र पत्रिका**

**खण्ड IX**

**अंक 5**

**30 नवम्बर, 1980**

**9 अग्रहायण, 1902**

मुख्य सम्पादक :

**एच० एस० सेठी**

हिन्दी सम्पादक :

**जे. एस. शर्मा**

**छायाचित्रांकन : एस० के० खन्ना**

---

**पृष्ठ 23 :** पुणे में आयोजित पुलिस खेलों में महानिरीक्षक श्री बी० वर्मा के साथ के० रि०पु० बल की विजयोत्फुल्ल तैराकी टुकड़ी।

---

**सम्पादकीय कार्यालय :**
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल,
पूर्वी खण्ड 10, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-110022
**प्रकाशक**—महानिदेशक, के०रि०पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी
**मुद्रक**—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072

**क्रम संख्या**

**विषय**

**I.** 41वें वार्षिकोत्सव पर अति विशिष्ट अधिकारियों के बधाई-सन्देश

**II. गौरव गाथा :** ग्रुप केन्द्र झड़ौदाकलां में राष्ट्रपति का शुभागमन तथा अभिनन्दन

**III. रिपोर्ताज :**

(i) स्टाफ कौंसिल सम्मेलन में गृहमंत्री द्वारा के० रि० पु० बल की प्रशंसा

(ii) उपद्रव ग्रस्त क्षेत्रों में पुनः शान्ति स्थापना में हमारा योगदान

(iii) बाढ़ पीड़ितों को जवानों द्वारा भोजनदान

**IV. लेख:**

(क) केरल की दन्त कथायें, ले०—ब्रिगेडियर के. एम. पण्डालेय

(ख) क़ानून व व्यवस्था तथा के० रि० पु० बल, ले०—स० इ० रमाशंकर पांडेय, 40 बंटा०

**V. कहानी:**—परिवर्तन, ले०—कनिष्ट लिपिक सुन्दर लाल, I सिगनल बटालियन, नई दिल्ली

**VI. कविता :** केन्द्र पुलिस का अपना झण्डा रचयिता—का० राम सिंहासन पांडेय, 53 बटा०

**VII. क्रीडा क्षेत्रे :**

(क) थौबा सिंह, तैराकी में नई आशा, ले०—श्री एच० एस० सेठी, जन सम्पर्क अधिकारी

(ख) अ० भा० पुलिस तैराकी में के० रि० पु० बल चौथी बारं चैम्पियन

(ग) अन्य खेल प्रतियोगिताये

**VIII. स्वास्थ्य सन्देश :** संचरण चिकित्सा, ले०—श्री जे० एस० शर्मा, हिन्दी सम्पादक

**IX. विज्ञान के चढ़ते चरण :**

**X. विविध**

(क) पहेलियाँ, प्रस्तोता—का० महन्तराय, 29 बटा०

(ख) सूक्तिसुधा

(ग) यह भी खूब रही

# केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 41वें वार्षिकोत्सव पर बधाई-संदेश

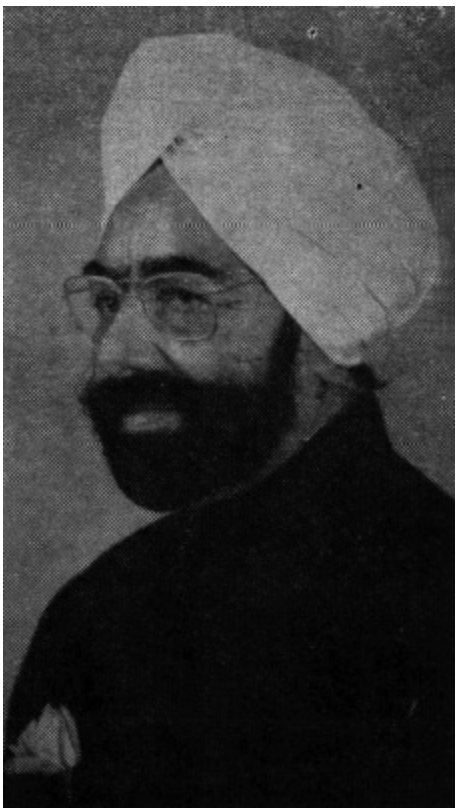


आधुनिक जीवन के दबावों से सामाजिक तथा व्यक्तिगत समस्याओं की जटिलतानों के बढ़ने के साथा-साथ, सभी देशों में कानून और व्यवस्था की चुनौतियाँ उत्तरोत्तर बढ़ रही हैं। आर्थिक प्रतियोगिता के क्लेशों से, हमारे देश में, चिरकालीन जातीय तथा साम्प्रदायिक तनावों ने उग्ररूप धारण किया है । इसी कारण, पुलिस के विभिन्न बलों को बड़ी मेहनत और मुस्तौदी से समय का सामना करना पड़ रहा है ।

अराजक स्थिति को तत्परता तथा कुशलता से सुलझने के लिए, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अपनी ख्याति प्राप्त की है। कठोर क्षेत्रों में, भारी जोखिमों से जूझते हुये, इस बल के सदस्य प्रसन्नतापूर्वक अपना कर्त्तव्य निभाते रहे हैं। अपनी सेवा के 42वें वर्ष में प्रवेश के समय, इस बल के सभी जवानों और अधिकारियों के प्रति मेरी शुभकामनायें।

**इन्दिरा गाँधी**

(प्रधान मंत्री)



मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपना 41वां वार्षिकोत्सव दिल्ली में मना रहा है।

संघ के सशस्त्र बल के रूप में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने शान्तिकाल में समस्त देश के अन्दर क़ानून तथा व्यवस्था बनाये रखने में तथा संग्रामों में राष्ट्रीय सीमाओं को सुरक्षित रखने में, अपनी भूमिका खूब निबाही है। जो कोई भी कार्यभार सौंपा गया है। के०रि०पु० बल ने उसे अनुद्विग्न दक्षता से पूरा किया है।

मुझे विश्वास है कि यह बल भविष्य में अपनी कीर्ति-कौमुदी उत्तरोतर विकसित करता रहेगा।

इस सुअवसर पर, इस बल के सेवी वर्ग को मेरी बधाइयाँ प्रेषित हैं।

**—जैल सिंह**
**(गृह मन्त्री)**

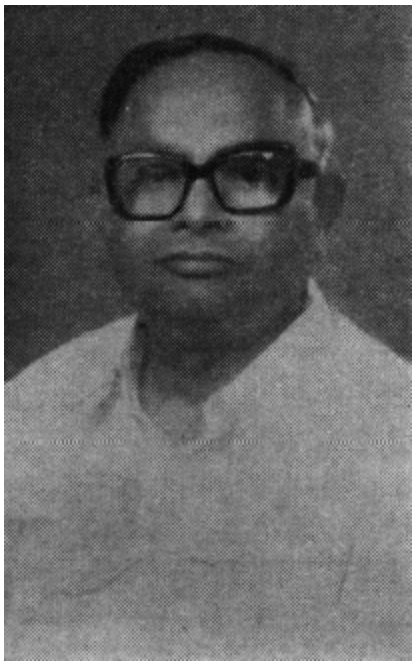


मुझे यह जानकर हर्ष है कि के०रि०पु० बल की 41वीं जयन्ती दिल्ली में मनायी जा रही है।

हमारे देश के सभी भागों में, के०रि०पू० बल क़ानून तथा व्यवस्था बनाये रखने में बड़ा सुन्दर कार्य कर रहा है। दिल्ली तथा अन्य स्थानों पर इन्हीं दिनों हुए साम्प्रदायिक दंगों में, इसने उल्लेखनीय सेवा की है। देश के पूर्वांचल में, इसकी सेवा विशेष स्मरणीय है। मुझे आशा है कि के०रि०पु० बल, कार्य कुशलता का अपना स्तर भविष्य में भी उच्च बनाये रखेगा।

शुभ कामनाओं के सहित,

**—योगेन्द्र मकवाना**
**(गृह राज्यमन्त्री)**



संघ सरकार के एक सशस्त्र बल के रूप में, राष्ट्र की संरक्षा तथा सुरक्षा के प्रति धमकियों से सफलतापूर्वक निपटने में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल एक महत्व पूर्ण भूमिका निबाह रहा है। अपने चिरकालीन अस्तित्व में, इस पुलिस बल ने अपनी सराहनीय सेवा के लिए, जनता से कृतज्ञता प्राप्त की है। जब कभी भी क़ानून तथा व्यवस्था बनाये रखने के लिए, कोई राज्य केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की सहायता मांगता है, तब स्थिति से सुलझने के लिए के०रि०पु० बल की बटालियनें सदैव उपलब्ध रहती हैं।

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई है कि सामारोहिक परेड में हमारे राष्ट्रपति सलामी लेंगे तथा के०रि०पु० बल के 41वें वार्षिकोत्सव पर आपके दर्शन, अवसर की शोभा को और भी बढ़ायेंगे। इस वर्ष के नियत समारोह की सकल सफलता के लिए अपनी मंगल कामनायें प्रेषित करने में, मुझे अपार हर्ष हो रहा है ।

**—पी. बैंकट सुब्बइया**
(गृह राज्य मंत्री)



केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल के 41वें वार्षिकोत्सव पर, मैं इस बल के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाइयाँ प्रेषित करना चाहूँगा। व्यवस्था बनाये रखने, सीमा पार से चुनौतियों से जूझने तथा मानवीय सेवाभारों को उठाने के क्षेत्रों में, जो ख्यातियाँ इसने अर्जित की हैं, उन पर इसको गर्व करना उचित ही है। अत्यधिक कठोर परिस्थितियों तक में अपनी उत्तम कार्रवाइयाँ करने में, प्रशिक्षण के इसके उच्च स्तर ने तथा इसकी भव्य परम्पराओं ने, इसकी बड़ी सहायती की है।

इस सुअवसर पर, मैं सकल दल को अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

**एस०एम०एच० बर्नी**
(गृह सचिव)



इस बल के 41वें वार्षिकोत्सव पर, इसके बीच में स्वयं को फिर पाकर, मैं इसे विशेष भगवत् कृपा समझ रहा हूँ। यह अत्यन्त ही उत्साहवर्धक है कि इस बल ने प्रसन्नता-पूर्वक इन सभी दशाब्दियों में चुनौतियों से स्वस्थ तथा दृढ़ रूप से निपटा है और अब भी निपट रहा है। देश के सभी भागों में, जनता-जनार्दन ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दक्षता

और निष्पक्षता में दृढ़ विश्वास के साथ, इसकी उपस्थिति का सदा स्वागत किया है। प्रभु, सभी परिस्थितियों में हमको ऐसी ही आस्था सभी से दिलाता रहे !

मेरी शुभकामनायें,

**आर०एन० शिवपुरी**
(महानिदेशक, के०रि०पु० बल)

**गौरव गाथा**

# ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां में राष्ट्रपति श्री नीलम रेड्डी का शुभागमन तथा अभिनन्दन

राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी ने 15 नवम्बर 1980 को ग्रुप केन्द्र, झड़ौदा कलां में सामारोहिक परेड को सम्बोधित करते हुये के० रि० पु० बल की शानदार भूमिका की सराहना की तथा नौ वीरता और पांच विशिष्ट सेवा पदक प्रदान किये। उन्होंने कहा कि देश में कानून तथा व्यवस्था बनाये रखने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यह बल 40 वर्षों से अधिक अस्तित्व में है और क्या अपने नियत क्षेत्र में तथा क्या राज्य पुलिस बलों के सहयोग में, क़ानून तथा व्यवस्था बनाये रखने वाले प्रमुख साधन के रूप में, यह बल विकसित हुआ है। अनुशासन का उच्चस्तर, व्यावसायिक दक्षता तथा समाज सेवा की परम्परा, इस बल के प्रमाण चिह्न हैं। बाहरी शत्रु के विरुद्ध सीमा सुरक्षाओं से लेकर प्राकृतिक संकटों में दुःखात साधारण जन की सहायता प्रदान करने तक, विविध कर्त्तव्यों के पालन में, आज के० रि० पु० बल ने एक सर्वव्यापक दल की ख्याति पाई है। संघभावना तो इस बल के अधिकारियों और जवानों में कूट-कूट कर भरी है और उसी भावना ने, विभिन्न सेवाभारों को निष्ठा तथा कुशलता के साथ उठाने में, इस संगठन की बड़ी सहायता की।

इससे पूर्व 14 नवम्बर, 80 को जीवन-रक्षा और सराहनीय सेवा पदक श्री जेल सिंह, गृह मंत्री ने प्रदान किये। गृह राज्य मंत्री श्री योगेन्द्र मकवाना तथा श्री पी. वेकट सुब्बैया ने 13 नवम्बर को इस बल के महानिरीक्षकों और उपमहानिरीक्षकों के सम्मेलन में इस बल की भूमिका के महत्व को समझाया। श्री मकवाना ने बताया कि सरकार द्वारा देश के किसी भाग में निरत इस बल के सभी अराजपत्रित सदस्यों को परिवारिक आवास मुफ्त प्रदान किया जायेगा तथा राजपत्रित अधिकारियों को भी यह सुविधा देने का प्रश्न विचाराधीन है। राशन भत्ते की वर्त्तमान तीन माप श्रेणियों के स्थान पर, सरकार ने कठोर और अकठोर क्षेत्रों के लिये दो माप श्रेणियों ही की अब व्यवस्था की है।

श्री सुब्बैया ने दंगाग्रस्त क्षेत्रों में फिर से शान्ति स्थापित करने में, के०रि०पु० बल के योगदान की प्रंशसा की। उन्होंने पुलिस के व्यवहार सुधारने के प्रशिक्षण को परिष्कृत करने पर बल दिया; जिससे, सचमुच में, कमज़ोर वर्गों का हित हो सके तथा सामाजिक न्याय स्थापित हो सके।

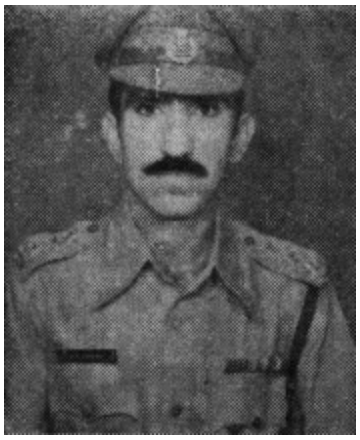
10 नवम्बर 80 को, महानिदेशक श्री आर. एन. शिवपुरी ने वरिष्ठ अधिकारियों और कमांडेन्टों के सम्मेलन की अध्यक्षता की। इस सम्मेलन में, पदोन्नति के ढंग, कर्मचारियों के कल्याण के अनुसार प्रशिक्षण में सुधार आदि के बारे में विचार-विमर्श हुआ।

## सम्मान पदक सूची

पिछले वार्षिकोत्सव 1980 से, के० रि० पु० बल के सदस्यों को निम्न लिखित 82 विविध पदक प्रदान किये गये हैं :—**I. राष्ट्रपति पुलिस वीरता पदक—2 II. पुलिस वीरता पदक—7; III. राष्ट्र पति पुलिस विशिष्ट पदक—3; IV. पुलिस सराहनीय**

**सेवा पदक-60 ; V. प्रधानमंत्री पुलिस वीरता पदक—5;** तथा

**VI. जीवन-रक्षक पदक—5;** [1. का० अत्तर सिंह 1 बटा० को दिल्ली में 1977 की बाढ़ में एक कन्या को बचाते हुए प्राण बलिदान हेतु, 2. कां० लिल्लूराम, 33 बटा० को (अरुणाचल में जुलाई 80 को अपने सहयोगी को तेज नदी से बचाते हुए प्राण दान हेतु); 3. इ० आर० के० यादव, 1 सिग० बटा० को (अरुणाचल में सियांग नदी से एक व्यक्ति को बचाने हेतु) 4. श्री एम० सी० जोजेफ, सहायक कमांडैंट तथा 5. स० इ० पी. राजशेखरन, 56 बटा० को (त्रिवेन्द्रम में नवम्बर 78 को 6 बच्चों, 5 महिलाओं तथा 3 पुरुषों को डूबने से बचाने हेतु ।]



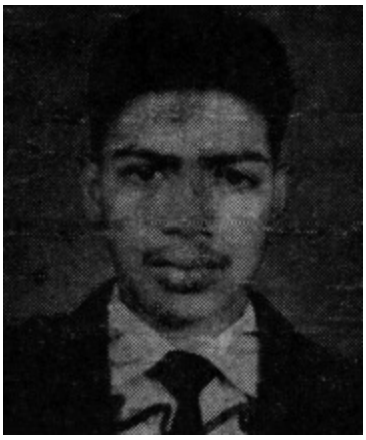
**श्री आई. एस. डागर**



**कां. आर. एन. सिंह**



**स. इ. राजशेखरन**



**कां. लिल्लू राम**



**श्री एम. सी. ज़ोज़ेफ**

# केरल की दंत कथायें

## (ले० ब्रिगेडियर के० एम० पंडालेय)

दंतकथायें बूढ़े जवान सभी पर एकसा अपना जादू चलाती हैं। वे सभी देशों तथा ऋतुओं में चालू हैं; इतिहास के तानेबाने में वे बुनी जाती हैं। इनमें बड़ी बुद्धिमत्ता होती है तथा अगली पीढ़ियों को सीखने के लिए इनमें बहुत कुछ होता है। प्रकटरूप से समझ के बाहर के कितने ही प्रचलित रीति-रिवाजों, परम्पराओं तथा प्रतिबन्धकों के "क्यों" और "कैसे" (व्याख्या) का इनसे पता चलता है। उनको सही-सही समझने के लिए, पाठक को पृष्ठभूमि से तादात्म्य स्थापित करना होता है तथा कथाओं के समय एवं स्थान में अपने मन को बिठाना पड़ता है और उस समय के मनुष्यों की दृष्टि से उनको देखना होता है।

**श्री चक्रम**—मार्त्तण्ड वर्मा ने कितने ही निकटवर्ती राज्यों को मिला कर आधुनिक त्रावणकोर की स्थापना की। कयमकुलम को मिलाने से पूर्व, उसे अनेक बार यत्न करने पड़े। महाराजा गुप्तवेष में कयमकुलम गया और उसे यह पता चला कि कयम कुलम का राजा एक श्रीचक्रम की पूजा करता है और जब तक उस पर वह श्रीचक्रम है, उसे कोई नहीं जीत सकता। महाराज के सेनापति तथा दीवान रामा अय्यन ने कयमकुलम से स्वयं श्रीचक्रम को उड़ा लेने का निश्चय किया। पागल के रूप में, वह कयमकुलम गया; नित्य स्नान के बाद, राजा के पूजापात्र धोने, नये फूल लाने तथा सामान्यतः सहायता देकर वह पुजारियों की मदद करने लगा। पागल होने पर भी, वे लोग उसकी पुण्याई पर रीझ गये। हर सुबह, रामा अय्यन पिछली साँझ के प्रयुक्त फूलों और मालाओं को एक टोकरी में इकत्रित करता था तथा मन्दिर के प्रवेश-द्वार पर सशस्त्र द्वारपालों से वह कहता था कि जिस श्रीचक्रम की रक्षा वे कर रहे हैं, उसे वह लिये जा रहा है और उसे वे पकड़ सकते हैं। जब वह आगे महलद्वार पर पहुँचता था, तब भी वह वहाँ के प्रहरपालों से कहता था कि वह श्रीचक्रम लिये जा रहा है और यह बात बतलाने पर भी, मन्दिर के द्वारपालों ने उसे नहीं पकड़ा है। शुरू-शुरू में कुछ दिनों तो, पहरेदारों ने टोकरी की जाँच पड़ताल की; किन्तु उसमें फूलों के अतिरिक्त, कुछ नहीं पाया । अतः मन्दिर के द्वारपाल तथा महल के प्रहरपाल, सतर्कता में ढीले पड़ गये और वे यह समझने लगे कि पागल ब्राह्मण की वह एक सनक है; जो उनकी बुद्धि के बाहर है।

छै सात मास के बाद, जब रामा अय्यन को यह विश्वास हो गया कि पहरेदार उसके प्रति पूरे उदासीन हो गये हैं, तब टोकरी में श्रीचक्रम को छिपा कर वह नौ दो ग्यारह हो गया। घंटों बाद, उस चोरी का पता चला; तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मार्तण्ड ने तब आगामी आक्रमण में कयमकुलम को अपने राज्य में मिलालिया।

**पवित्र शब्द**—मन्नादी कबू में काली मन्दिर, पुराने तथा पावन मन्दिरों में से एक होने के नाते प्रसिद्ध है। मन्दिर का वह पुजारी, जिस पर प्रेतात्मा आती है और जो

अचेतनावस्था में भविष्यवाणी करता है, साधारणतया "वेलीचप्पड" या 'कुमारन' कहलाता है। मान्नदो कबू, में इसे 'कम्पीतन' कहते हैं। कम्पीतनों में बड़ी चामात्कारिक शक्ति होती है।

बहुत समय पहले, एक नम्बूद्री को बिरले धार्मिक ग्रंथ "भद्रोलपति" की एक प्रति मिल गयी। वह छपी नहीं थी; तथा हस्तलिखित प्रतियाँ बहुत ही कम थीं। नम्बूद्री की प्रति में, एक जटिल स्थल पर तीन शब्द लुप्त थे। विभिन्न विद्वानों से पूछताछ करने पर भाँति-भाँति के असंतोष जनक उत्तर उसे मिले। उन शब्दों के नहीं होने के कारण, प्रातः कालीन पाठ पूर्ण नहीं हो पाता था। नम्बद्री कितने ही काली मन्दिरों में गया; किन्तु वह अपने आने का कारण किसी वेलीचप्पड को नहीं बताता था; क्योंकि उसका विश्वास था कि यदि किसी बेलीचप्पड पर सिद्धि होगी, तब वह उसके आगमन का उद्देश्य स्वयं समझ लेगा। जो भी वेलीचप्पड उससे उसकी यात्रा का लक्ष्य पूछते थे, उन्हें वह कुछ टाल मटोल उत्तर देकर, एक प्रकार से धिक्कारता था। अन्त में, वह मन्नादी कबू आया। कम्पीतन तब तन्मयता में बोल रहा था; उसने नम्बूद्री को पास बुलाया और कहा कि वह उसे निराश नहीं करेगा। तलवार की नोक से, अपने तीन शब्द लिखे । नम्बूद्री ने झुक कर उन्हें पढ़ा और कम्पीतन के चरणों पर गिर गया।

**दीवान को झाड़**—स्वाति तिरुनल, मलयालम, संस्कृत, तमिल, तेलगू और हिन्दी में एक प्रकांड पंडित तथा कर्नाटक के शास्त्रीय संगीत के महान प्रणेता माने जाते हैं । कुशल शासन के लिए वह सुप्रसिद्ध हैं।

एक दिन महाराजा के दीवान ने एक मास की छुट्टी मांगी। वह तुरन्त स्वीकृत कर ली गयी। जाते समय उसने उसकी अनुपस्थिति में किसी वृद्ध तथा अनुभवी मनुष्य को दीवान नियुक्त करने की मंत्रणा दी। उसके चले जाने के बाद, महाराजा ने एक नौकर से दीवान के आसन पर सचिवालय को बुहारने वाली एक झाड़ को रखने की आज्ञा दी। लौटने पर, दीवान उस झाड़ को रखा देख कर, बड़ा विक्षुब्ध तथा क्रुद्ध हुआ। उसे सूचित किया गया कि वह झाड़ू महाराजा की विशेष प्राज्ञा पर वहाँ रखी गयी है। दीवान को यह समझने में देर नहीं लगी कि यह सब कुछ उसकी अहमन्यता को भंग करने के लिये किया गया है, जिससे वह अपनी सही स्थिति जान सके। मामला फिर रफ़ादफ़ा हो गया।

**स्वप्न की सच्चाई**—पिलामन्तल में मुओं का परिवार कितनी ही पीढ़ियों से केरल के आयुर्वेदिक चिकित्सकों के लिये प्रसिद्ध था। कई सौ वर्ष पूर्ष, त्रावणकोर के एक महाराजा को तीव्र उदररोग हुआ, जिसको दरवार के तथा आसपास के वैद्य ठीक नहीं कर सके । अतः महाराजा ने पिलामन्तल के मुओं को बुलाया। उस समय, उस परिवार में सबसे बड़ा पुरुष एक चौदह वर्षीय लड़का था, जो संस्कृत और वेद की शिक्षा लेता था। उसे औषधि का कछ भी ज्ञान नहीं था। उसे बड़ा दुःख था कि इस अज्ञानता के कारण, महाराजा के दूतों को निराशित लौटना पड़ेगा। तभी उसकी माता ने सहायता की। दूतों द्वारा यह कहला दिया गया कि वैद्य बारह दिन तक

अपने पारिवारिक देवता का पूजन कर रहा है और उसके समापन पर ही, वह

त्रिवेन्द्रम जा सकेगा।

अपने पारिवारिक देवता से वर तथा निदेशन लेने के लिये, लड़के ने अतीव धर्म निष्ठा से पूजन प्रारंभ कर दिया। ग्यारह की रात को उसे एक स्वप्न दीखा । एक वृद्ध ब्राह्मण उसके सामने आया; उसने आश्वस्त कर उसे तीन गोलियाँ यह बताकर दों कि एक-एक गोली महाराजा एक औंस गुनगुने पानी में मिलाकर पियें, उससे महाराजा बिल्कुल ठीक हो जायेगा। उस ब्राह्मण ने उस लड़के से इसके उपलक्ष्य में कोई भेंट-पुरस्कार लेने से मना कर दिया; पर महाराजा से धन्वन्तरि की प्रतिमा को ताम्रपर्णी नदी से निकलवाकर, पिलामन्तल में पारिवारिक देवता, महादेव के निकट प्रतिस्थापित करने की प्रार्थना करने को कहा। ब्राह्मण ने यह भी उसे समझा दिया कि यदि महाराजा जानना चाहें कि उसे उस प्रतिमा का पता कैसे लगा, तब वह इतना कह दे कि ऐसा उसने सुन रखा है।

जब नम्बूद्री जगा, तब उसके कमरे में कोई भी नहीं, था किन्तु; उसकी हथेली में तीन गोलियाँ रखी थीं। लड़का समझ गया कि महादेव ने वृद्ध ब्राह्मण के वेष में आकर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली है। तेरहवें दिन, अपनी माता का आशीर्वाद लेकर, वह लड़का राजदूतों के साथ चल पड़ा। उन तीन गोलियों से महाराजा भला चंगा हो गया। महाराजा इतना प्रसन्न हुआ कि वह उस युवा तथा सिद्ध वैद्य पर स्वर्ण तथा बहुमूल्यरत्नों की वर्षा करना चाहता था; किन्तु विप्रमंत्रणा के अनुसार, उसने उन सब को अस्वीकार कर अपनी याचना बताई । जब महाराजा के नौकर ताम्रपर्णी नदी के किनारे पहुंचे, तब उनकी बुद्धि में यह नहीं आ रहा था कि कहाँ से खोज प्रारंभ की जाये। उसी समय एक भिखारी आ वहाँ उपस्थित हुआ और यह परामर्श देने लगा कि नदी में जिस स्थान पर एक लाल गिद्ध चक्कर धीरे-धीरे काटता दिखाई दे रहा है, वहीं गोता लगाया जाये। प्रतिमा वहीं मिली तथा धार्मिक समारोह के सहित, उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की गई। आज तक भी वह प्रख्यात परिवार, महादेव और धन्वन्तरि की नित्य ध्यानोपासना करता है।

**दयालु हाथी :** अपनी बुद्धिमत्ता तथा स्मरण शक्ति के लिये हाथी बड़े प्रसिद्ध हैं। प्रशिक्षित होने पर, उनका प्रयोग, सामारोहिक तथा अन्य कामों में किया जाता है। आजकल के रोल्स रायस या मर्सीडिज़ बेन्ज़ मोटर कारों के समान, केरल में उस समय हाथी प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था। अबरमनक्कल (केरल) के धनी नम्बूद्री परिवार में गोपालन नामक एक हाथी था। यह केवल अतीव कुशाग्र बुद्धि ही नहीं था; साथ में, इतना सीधा था कि बच्चे भी उसके साथ खेलते थे। मन्दिर के उत्सवों में अपने भारी तथा भव्य शरीर के कारण, उसको मूर्द्धन्य स्थान मिलता था।

एक महावृक्ष काटने पर एक अप्रयुक्त कुयें में गिर गया; उसको हटाने के सभी यत्न विफल रहे । उस वृक्ष का व्यास साठ फुट का था। महावतों ने गोपालन से भी चेष्टा कराई; किन्तु वह भी अकारथ रही।

नित्य की भाँति, एक शाम को परिवार के प्रधान के पास वह लाया गया। बरामदे में, तीस चालीस किलो भात, पके केले के पाँच-छै गुच्छे, लगभग तीस नारियल और

दस किलो गुड़ रखा था। गोपालन ऐसा बन गया मानों उसने उस बाढ़ेया भोजन को देखा ही नहीं है । वृद्ध नम्बूद्री ने गोपालन से बड़े प्रेम से कहा कि उसके होते हुये, इतना उत्तम तथा मूल्यवान लट्ठा खोना बड़े दुःख का विषय होगा। हाथी सुनते ही, कुयें पर गया, उसने अगले पैरों से कुयें की दीवार को दबा कर यह सुनिश्चित किया कि लट्ठो? को निकालने के लिये बल लगाने पर वह धँसेगी तो नहीं; तब अपने अगले पैर झुका कर, उसने लट्ठ को बिल्कुल सीधा खड़ा कर लिया। फिर सावधानी से वह नीचे उतरा, लट्ठ को सूंड़ से कस कर पकड़ते हुये एक झटके में कुयें से बाहर निकाल लाया । वृद्ध नम्बूद्री ने गोपालन को बड़ी शाबाशी तथा उत्तम भोजन दिये और उसे अपने कुटम्ब का एक सदस्य माना।

एक शाम को, अपने दाँतों और सूंड़ के बीच में नारियल के पत्ते लिये, गोपालन आराम करने जा रहा था। नारियल के पत्ते चार-पाँच फुट सिर के दोनों ओर फैले होने के कारण, वह अपने आगे देख नहीं पाता था। एक संकीर्ण मार्ग में मुड़ते समय, सामने से एक अन्धा चला आ रहा था। गोपालन का महावत ऊँघ रहा था। हाथी के पास पहुँचने पर उसकी ज़ज़ीरों की खनखनाहट ने अंधे को सचेत किया; घबड़ाकर वह चीख पड़ा। गोपालन तुरन्त रुका; कुछ पग पीछे रखे; अपना भार नीचे गिराया; अन्धे को अपनी सूँड से उठाया और दूसरे मैदान में उसे पहुँचा दिया। फिर अपना चारा लेकर वह चल दिया।

ऐसी ही स्थिति में, एक बार, एक गर्भवती को एक तंग गली में उस हाथी के पास से निकलना कठिन हो रहा था। जब वह बेचारी भय के मारे स्तब्ध हो रही थी, उस दयालु हाथी ने एक ओर झाड़ी फलाँगी और महिला को जाने दिया।

गोपालन की बुद्धिमत्ता, सूझबूझ और दयालुता के कितने ही दृष्टान्त हैं, जिसका मुकाबला मनुष्य भी नहीं कर सकते । वास्तव में, गोपालन की स्वामी भक्ति, सेवा-निष्ठा तथा परिवार के प्रति सदभावना, अनेक मनुष्यों से कहीं अधिक थी।

## जवानों ने चोरी का समान पकड़ा

एक ठेकेदार का ट्रक, 16 अगस्त 1980 को टेलीफोन तथा कम्यूनिकेशन स्टोर्स, कलकत्ता से सही गेट पास से बाहर जा रहा था। 7 बटालियन के सन्तरी राजेश्वर सिंह को कुछ शक़ हुआ; उसने गाड़ी रोकी। ला० ना० शिवपूजन और का० भगत सिंह द्वारा जाँच की गई तथा ट्रक में नियत मात्रा से अधिक सामान पाया गया। सामान, ठेकेदार, ड्राईवर और क्लीनर, स्थानीय पुलिस को सौंप दिये गये।

## जवानों ने गेहूँ को चोरी पकड़ी

कलकत्ते में, भारतीय खाद्य निगम, जिंजीरा पूल डिपो पर 21 अगस्त 1980 को नायक चिन्तस्वामी के कमान में 7 बटालियन के कुछ जवान पहरा दे रहे थे। गोदाम I के बरामदे में पड़े गेहूँ को चुराते हुए, चोरों के एक गिरोह को उन्होंने देखा। जब चोर गेहूँ के बोरे ले जा रहे थे, तब जवानों ने उन्हें घेरने का यत्न किया; परन्तु वे सिर पर पैर

धर कर भागे। तो भी, गेहूँ के एक बोरे के साथ, एक चोर युवती पकड़ ली गई। उसे तथा गेहूँ को स्थानीय पुलिस के हवाले कर दिया।

**क्रीडा़ क्षेत्र:**

# थोबासिंह-तैराकी में नई आशा

**[ले० श्री एच० एस० सेठी]**

चार वर्ष पूर्व, थोबासिंह केवल एक 'नगा', मणिपुर का एक 'तड़ाग-मच्छी' था। आज वह एक प्रसिद्ध तैराक (मैतियों के शब्दों में 'अफाबे ईरोयवा') है तथा 1982 के एशियायी तैराकी में भारत को कीर्ति दिलाने वाली आशाओं में से एक है।

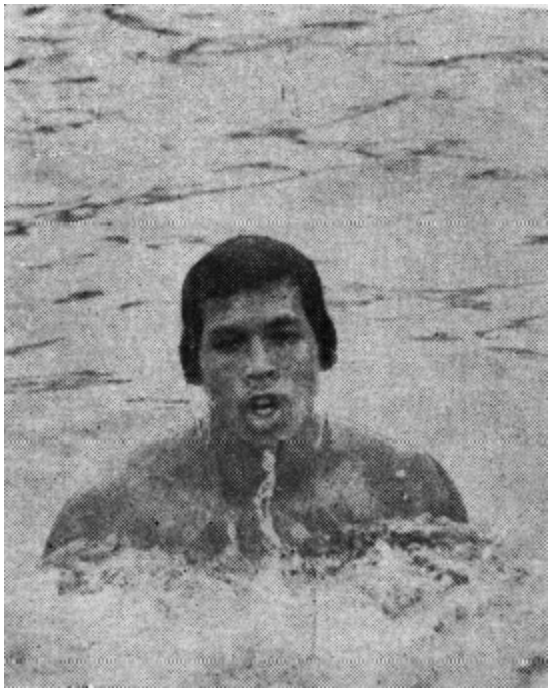
इसी बीस वर्षीय तैराक ने (जिसने 1976 तक किसी तैराकी-प्रतियोगिता में कभी भाग नहीं लिया था) इम्फाल में अपने घर के निकटवर्ती ताल में तब से तैरना प्रारंभ कर दिया था, जब वह दस वर्ष का ही था। उसके एक पड़ोसी, बाबू खान ने (जिसने उसे तैरना सिखाया था) उसमें (वक्ष प्रहार) ब्रेस्ट-स्ट्रोक करने में एक विलक्षण प्रतिभा तथा शैली पायी थी। दूर दृष्टाओं ने उस बुद्धि-विभव को पहचान लिया और 1976 में पटियाला के ग्रामीण प्रशिक्षण शिविर में वह भेजा गया। वहाँ पहली ही प्रतियोगिता में उसने चार स्वर्ण पदक प्राप्त कर अपनी धाक जमाली; तब से उसने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। अगले वर्ष 1977 में, उसने 'कनिष्ठ नागरिक' (जूनियर नेशनल्स) (राष्ट्रीय आयुवर्ग प्रतियोगिता) में भाग लिया और 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक और 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक स्पर्धाओं में नये कीर्तिमान स्थापित कर, उसने सनसनी पैदा कर दी। 1978 में जूनियर नेशनल्स में 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक तथा 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक स्पर्धामों में वरिष्ठ किशोरों के लिये नये कीर्तिमान मद्रास में स्थापित कर उसने पुन: मचा खलबली दी। इन्हीं स्पर्धाओं में ही, उसी वर्ष उसने आयोजित भारत-श्रीलंका बंगलादेश प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाये ।

इसी समय, के० रि० पु० बल तैराकी टीम के प्रबन्धक डीवाई० एस० पी० श्री आर० एन० यादव ने उसे 1979 में हेड कान्स्टेबल के रूप में इस बल में भर्ती कर लिया । यादव जी का कहना है "थोबा की तैराकी आरंभ से ही सुन्दर थी और उसका स्ट्रोक सही बैठता था'। ब्रेस्ट स्ट्रोक उसका इतना स्वाभाविक था कि थोड़े ही समय में, वह भारत में, ब्रेस्ट स्ट्रोक का सम्राट समझा जाने लगा।

के० रि० पु० बल में, सोमशेखरन, जैकब, पद्मनाभन तथा दलीपसिंह जैसे धुरन्धर तैराकों से, थौबा को प्रतिद्वन्द्विता करनी पड़ी और ब्रेस्ट स्ट्रोक तैराकी में वह प्रबल शक्ति बन गया।

1979 में उसने धूम धमाके के साथ बम्बई में जूनियर नेशनल्स तथा ओपेन

नेशनल्स तैराकी में भाग लिया तथा अपनी उन्हीं 100 मी० तथा 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक स्पर्धाओं में, नये रिकार्ड स्थापित किये। ओपेन नेशनल्स में, ए० एस० बरार (दिल्ली) और रामदेवसिंह (सेना) को पीछे धकेल कर, उसने उन्हीं स्पर्धाओं में 1:15.4 तथा 2:44.1 के नये कीर्तिमान स्थापित किये। उसकी स्मति में, सब से गर्वीला क्षण तब था, जब उसने 200 मी० ब्रेस्ट स्टोक में रामदेव सिंह द्वारा स्थापित 16 वर्ष वाला कीर्तिमान भंग किया था। इस कारण, के० रि० पु० बल में सब इन्स्पेक्टर के रूप में उसे पदोन्नति मिली।



इस वर्ष, थोबा ने अपनी कीर्ति के नये चाँद लगाये हैं। पुणे में हुयी अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में, उसने 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में (अपना ही राष्ट्रीय रिकार्ड सुधार कर) 1:13.0 के तथा 200 मी० बेस्ट में 2:45.6 के नये स्मारक बनाये। उसने ढाका में हुई प्रथम एशियाई तैराकी प्रतियोगिता में भाग लिया तथा 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक और 4X100 मी० मेडले में रजत पदकों को और 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में कांस्य पदक को अर्जित किया।

अभी तो, युवक थौबा ने प्रतियोगितात्मक तैराकी के जगत में केवल प्रवेश ही किया है। ऐसी आशा है कि यह उदीयमान तैराक यथा समय एक धुरन्धर तैराक बनेगा।

## प्रीपैक उग्रवादियों से 5 रायफलें तथा गोलाबारूद बरामद

के० रि० पु० बल की 29 बटालियन के जवानों ने उन भागते हुये प्रीपैक उग्रवादियों से पाँच रायफलें तथा गोलाबारूद बरामद किये, जिन्होंने इम्फाल के आर० एम० ई० अस्पताल पर 9 जुलाई 1980 को आक्रमण किया था। जब ये मणिपुर रायफल्स के

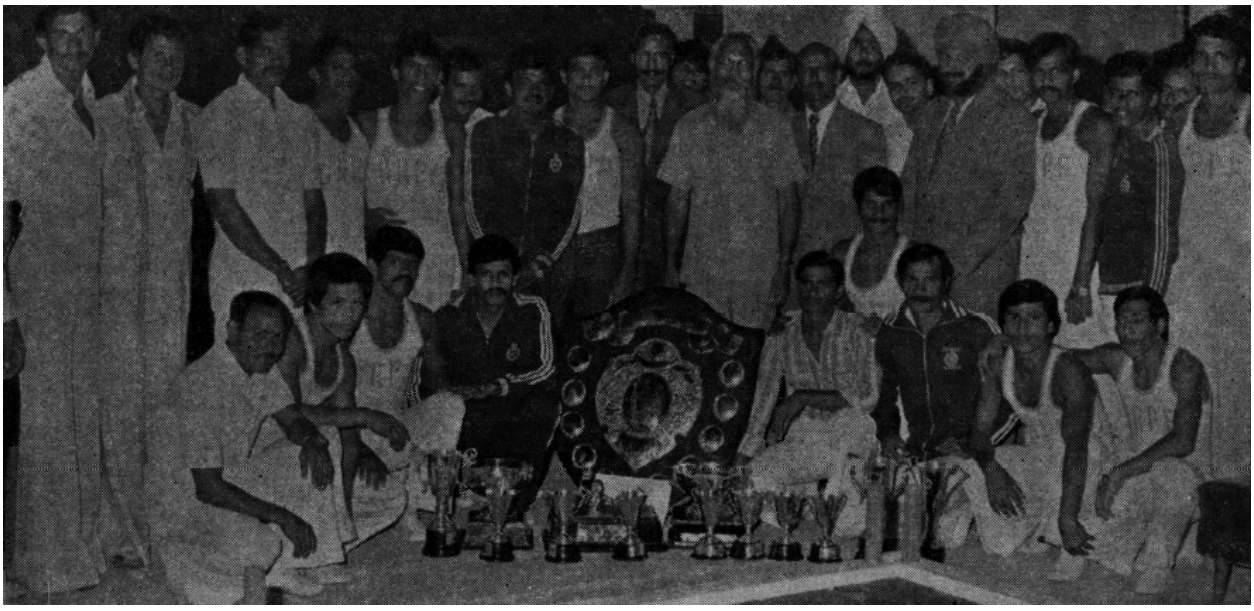
एक सन्तरी को मारकर सात रायफलें लेकर भागे थे, तब के० रि० पु० बल के जवानों ने इनका पीछा किया था। मुठभेड़ में, एक उग्रवादी मारा गया और शेष बच भागे थे।

## बस दुर्घटना में के० रि० पु० बल की सहायता

कुखीडोलन के पुल से लगभग 1 कि० मी० दूरी पर, 10 अगस्त 1980 को एक असैनिक बस हेनिंगकुँगला से दीमापुर को जाती हुयी उलट गयी। 23 बटालियन के जवान कुखीडोलन चौकी और झूलते पुल से दौड़े-दौड़े आये और यात्रियों को निकाला। घायलों को दीमापुर अस्पताल में भेजा गया ।

## रामपुर तथा नागपुर में केन्द्रीय स्कूल

विगत अगस्त में, के० रि० पु० बल के रामपुर और नागपुर के ग्रुप केन्द्रों में केन्द्रीय स्कूल खोले गये। 1 अगस्त 80 को खोले गये रामपुर के स्कूल में कक्षा I से VIII तक कक्षायें होंगी, नागपुर में प्राथमिक स्कूल को उद्घाटन श्री टी० जी० एल० आयर पुलिस महानिरीक्षक सेI ने 4 अगस्त 80 को किया ।



**अखिल भारतीय पुलिस तैराकी'80**

# के० रि० पु० बल को पुन चैम्पियनशिप ट्राफी

दिनांक 22 से 24 अगस्त तक पुणे में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में निरन्तर चौथे वर्ष के० रि० पु० बल ने सिरमौर जीता। उसे 240 अंक मिले, जब कि उसके निकटतम प्रतिद्वन्द्वी—भारत तिब्बत सीमा पुलिस 152, अंक पर

बहुत पीछे रहीं तथा 79 अंक पाकर, उत्तर प्रदेश तृतीय स्थान पर रहा।

18 प्रतिस्पर्धाओं में, के० रि० पु० बल को 12 स्वर्ण, १ रजत और 4 कांस्य पदक मिले।

पी० पद्मनाभन, जो भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के राम रतन (47 अंक) से व्यक्तिगत चैम्पियनशिप में केवल 3 अंकों से पीछे रह गया, के० रि० पु० बल में सर्वाधिक पदक-विजेता रहा। उसने तीन स्वर्ण पदक (100 तथा 200 मी० बैक स्ट्रोक तथा 200 मी० फ्री स्टाइल में) तथा एक रजत पदक (100 फ्री स्टाइल में) जीते। 100 मी बैक स्ट्रोक में, 1979 से चले आरहे रेलवे के आशिशदास वाले 1 मि० 08.3 से० के राष्ट्रीय रिकार्ड की उसने बराबरी की।

टी० थोबासिंह ने 100 मी० तथा 200 मी ब्रेस्ट स्ट्रोक में दो स्वर्ण पदक पाये। 100 मी० में, उसने अपने ही पिछले राष्ट्रीय रिकार्ड (1:5.0) को •02 से० से सुधारा। 200 मी० में 1978 से चले आरहे दलीपसिंह के 2:46.9 के रिकार्ड को उसने 2:45 से भंग किया।

सेमशेखरन, महाबीरसिंह, शेखावत और कपूरसिंह ने क्रमशः 100 मी फ्रीस्टाइल में स्प्रिंग बोर्ड तथा हाई बोर्ड गोतेखोरी में एक-एक स्वर्ण पदक जीते। गोतेखोरी में, इस प्रतियोगिता के नये कीर्तिमान स्थापित हुये। महाबीर सिंह ने हरदयालसिंह के पुराने रिकार्ड (445.30 अंक) को 479.70 अंक पाकर सुधारा तथा कपूरसिंह ने अपने ही पुराने कीर्तिमान (395.80 अंक) को 399.55 अंक से सुधारा।

टीम स्पर्धा में, के० रि० पु० बल ने 4X100 मी० फ्री स्टाइल रिले तथा 4X100 मी० मेडलेरिले तथा जल पोलो में स्वर्ण पदक पाये । अन्तिम परिणाम इस प्रकार हैं :—

**100 मी० फ्रीस्टाइल—सोमशेखरन ( के० रि० पु० बल) I; पद्मनाभन के० रि० पु० बल) II** तथा रामप्रीत यादव (उ० प्र०) III.

**100 मी० बैकस्ट्रोक—पी० पद्मना भन (के० रि० पु० बल) I;** विनोद महाजन (म० प्र०) II तथा पी० वी० पिल्लै (के० रि० पु० बल) III.

**100 मी० बटर फ्लाई**—ए० चक्रवर्ती (भा० ति० सी० पुलिस) I; टी० जे० जैकव (के० रि पु० बल) II तथा आर एस० नायर (के० रि० पु० बल) III

**100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक—टी० थोबासिंह (के० रि० पु० बल) I; दलीपसिंह (के० रि० पु० बल) II** तथा सत्यानारायण यादप (उ० प्र०) III.

**200 फ्री स्टाइल—पी० पद्मनाभन (के० रि० पु० बल) I; सोमखेखरन (के० रि० पु० बल) II** तथा लालजी त्रिपाठी (उ० प्र०) III.

**200 मी० बैक स्ट्रोक—पी० पद्मनाभन (के० रि० पु० बल)** विनोद महाजन (म० प्र०) II तथा सपनदास (भा० ति० सी० पु०) III

**200 मी० वटरफ्लाई**—ए० चक्रवर्ती (भा० ति० सी० पु०) I; टी० जे० ज़ैकब (के० रि० पु० बल) II तथा के० बी० साहा (भा० सी० पु०) III.

**200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक : टी० थोबासिंह (के० रि० पु० बल) I; अब्दनी हाकेम (के० रि०पु० बल) II** तथा तहसीलदारसिंह (उ० प्र०) III.

**400 मी० फ्री स्टाइल**— रामरतनसिंह (भा० ति० सी० पु०) **I; कुर्जन (के० रि० पु० बल)** II तथा विनोद महाजन (म० प्र०) III.

**200 मी० व्यक्ति मेडले**—विनोद महाजन (म० प्र०) I, रामरतनसिंह (भा० सी० ति० पू०) II तथा टी० जैकब (के०रि० पु० बल) III.

**400 मी० व्यक्तिगत मेडले—रामरतन सिंह (भा० ति० सी० पु०) I; टी ज़ैकब (के० रि० पु०) II** तथा गुलाबसिंह (उ०प्र) III.



**'शाबाशी' देते हुए महानिरीक्षक श्री बी० वर्मा**

**1500 मी० फ्रीस्टाइल**—रामरतनसिंह (भा० ति० सी० पु०) I; पी० एम० नाथ (भा० ति० सी० पु०) II तथा **बिलास चन्दर (के० रि० पु० बल) III.**

**4x100 मी० फ्रीस्टाइल रिले—के० रि० पु० बल I;** भा० ति० सी० पु० II तथा म० प्र० III.

**2X200 मी० फ्री स्टाइल रिले—के० रि० पु० बल I;** भा० ति० सी० पु० II तथा प० बं० III.

**4X100 मेडले रिले—के० रि० पु० बल I;** भा० ति० सी० पु. II तथा उ० प्र० III.

**स्प्रिंग बोर्ड गोतेखोरी—महाबीरसिंह शेखावत (के० रि० पु० बल) (I; ढाकासिंह (के० रि० पु० बल) II** तथा के० डी० पांडे उ० प्र० III.

**हाईबोर्ड गोतेखोरी—कपूरसिंह (के० रि० पु० बल) I;** देओ नारायण राई (उ०प्र०) II तथा प्रह्लादसिंह (उ० प्र०) III.

**जलपोलो—के० रि० पु० बल I;** प० बं० II तथा दिल्ली III.

## मोहन सिंह वॉलीबॉल

सितम्बर 80 के प्रथम सप्ताह में खेले गये मोहन सिंह वॉलीबॉल टूर्नामेंट में के०रि०पु० बल उपविजेता रहा । यद्यपि क्वार्टर फाइनल लीग के सीधे मैच में के० रि०पु० बल ने सीमा सुरक्षा दल को हराया था, किन्तु फाइनल में वह सी०सु० दल से ही हार गया।

## 37वीं अखिल भारतीय राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता

लखनऊ में 12 अक्टूबर 80 को सम्पन्न हुयी 37वीं अखिल भारतीय राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में के०रि०पु० बल की अच्छी धाक रही। हमारे तैराक के० सोमशेखरन, टी० थौबा सिंह, दलीप सिंह और टी० जैकब ने तैराकी में नये कीर्तिमान स्थापित किये। टी० जैकब ने तीन और के० सोमशेखरन ने दो स्वर्णपदक जीते। इन्हीं तैराकों के कारण, पुलिस ने प्रथम बार ही प्रवेश कर पुरुषों में (146 अंक पाकर) टीम चैम्पियनशिप जीती।

## चेम्सफोर्ड क्लब आमंत्रण तैराकी प्रतियोगिता

दिनांक 3 अगस्त 1980 को आयोजित 5वीं चेम्सफ़ोर्ड क्लब आमंत्रण तैराकी प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल की तैराकी टीम ने भाग लिया और 3 स्वर्ण तथा 6 रजत पदक पाये।

## पटना रेंज की अन्तर्बटालियन वालीबॉल

पटना के राजेन्द्रनगर स्टेडियम में 2 से 6 जुलाई 80 तक खेली गयी अन्तर्बटालियन प्रतियोगिता में 4 बटालियन I तथा 62 बटालियन II रही। बिहार के मुख्य मंत्री डॉ० जगन्नाथ मिश्रा ने भाग लेने वालों को पुरस्कार प्रदान किये। इस समारोह में, के० रि० पु० बल के भूतपूर्व महानिदेशक श्री एस० एम० घोष भी पधारे थे।

## अ०भा० खुली तैराकी प्रतियोगिता

दिनांक 12 से 14 सितम्बर' 80 तक कांटीनेंटल स्पोर्ट्स क्लब दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय खुली तैराकी प्रतियोगिता में, के०रि०पु० बल ने पुरुषों की चैम्पियनशिप जीती।

100 मी. फ्रीस्टाइल तैराकी में, 1975 से चले आ रहे सेना के जी० एस० नायर द्वारा

स्थापित—57.7 से० वाले कीर्तिमान को के० सोमशेखरन ने 57.1 से० से सुधारा।

100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक तैराकी में, टी० थोबा सिंह ने अपने ही राष्ट्रीय रिकार्ड (1:15 से०) को क़ायम रखा। उसने 200 मी० बटरफ्लाई में दूसरा स्वर्णपदक जीता तथा 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में तीसरा स्वर्णपदक प्राप्त किया ।

200 मी० बटरफ्लाई में टी० जैकब ने पाशिष चक्रवर्ती के राष्ट्रीय कीर्तिमान (2.26 से०) की बराबरी की। उसने 200 मी० बटरफ्लाई तथा 200 मी० मेडले रिले में स्वर्णपदक जीते। वही इसी प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित हुआ।

## संजय गांधी हॉकी

सितम्बर 80 के प्रथम पक्ष में खेले गये संजय गांधी स्मारक हॉकी टूर्नामेंट में, के०रि०पु० बल की 'बी' टीम ने भाग लिया। वह क्वार्टर फाइनल में इन्डियन एयरलाइन्स से 2-1 से हार गयी।

## दिल्ली सीनियर हॉकी

अक्टूबर' 80 के प्रथम सप्ताह में शिवाजी स्टेडियम दिल्ली में आयोजित दिल्ली सीनियर (वरिष्ठ) हॉकी टूर्नामेंट में के०रि०पु० बल ने भाग लिया और वह उपविजेता रहा। वह उत्तरी रेलवे से केवल एक गोल से परास्त हुआ।

### ध्यानचन्द स्मारक हॉकी टूर्नामेंट

ध्यानचन्द स्मारक हॉकी टूर्मामेंट में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने फाइनल को एक गोल से जीतकर सिरमौर पाया। इस एक मात्र गोल का श्रेय हविल कजूर को है ।

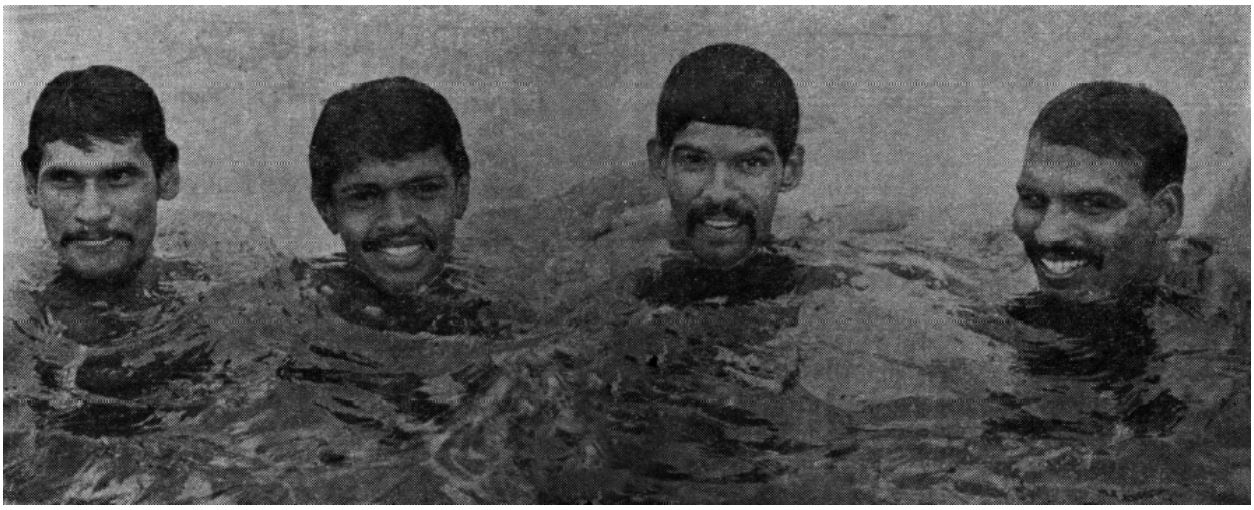
# अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता 1980 की कुछ झलकियां



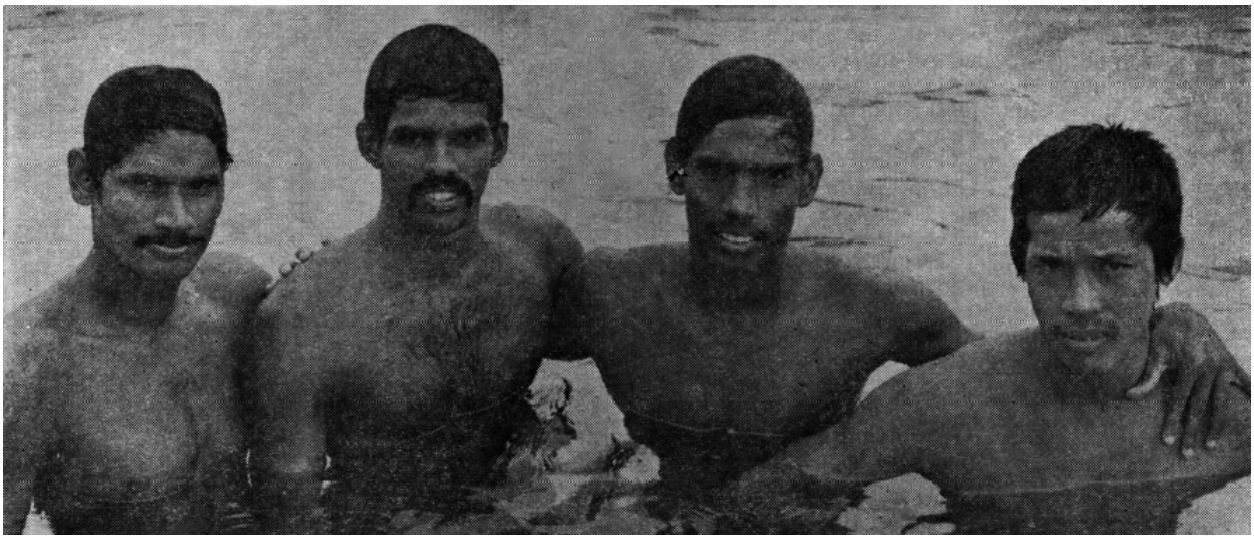

**महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री अन्तुले के कर-कमलों से चैम्पियन ट्राफ़ी पाते हुए डी० वाई० एस० पी० यादव**



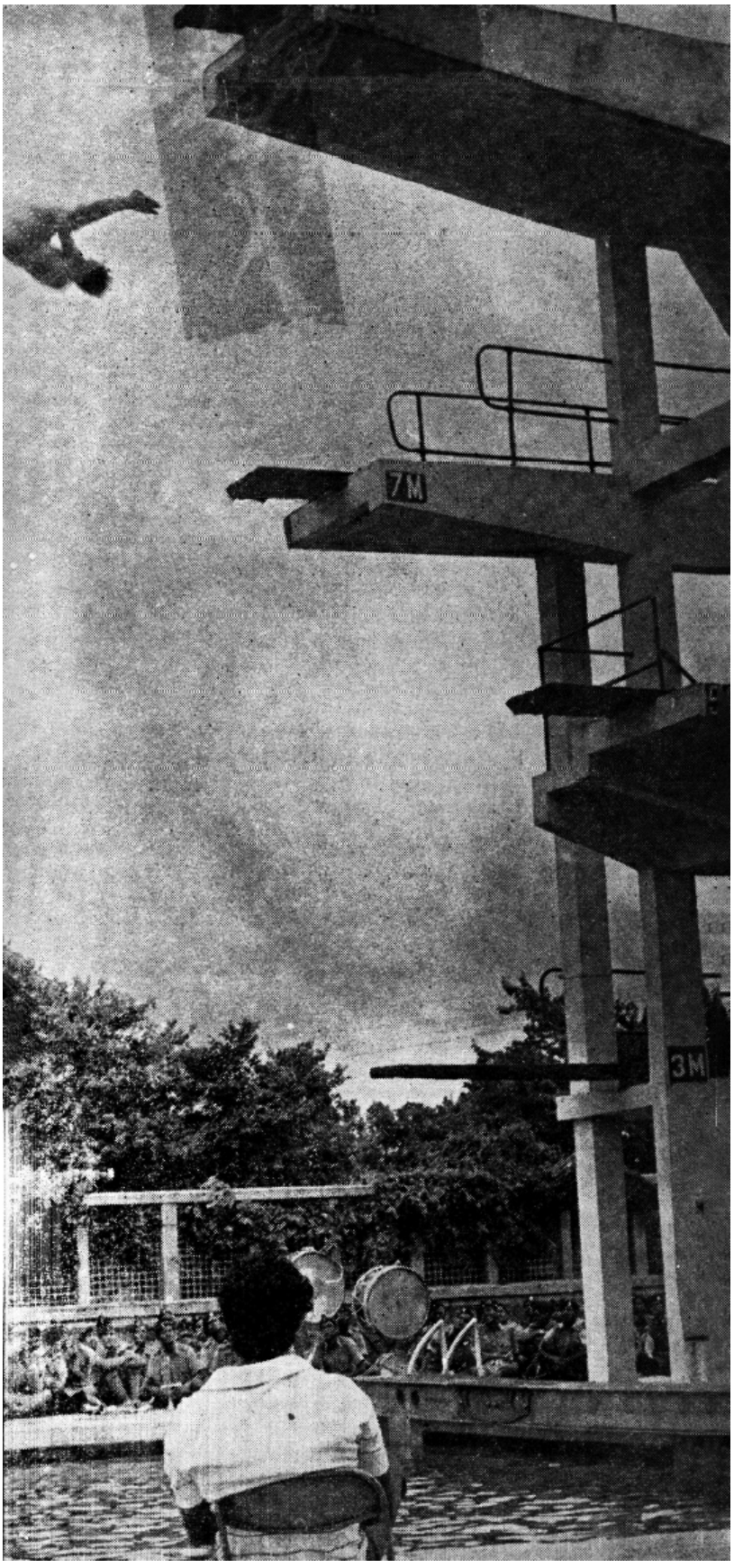
पच्छिमी बंगाल से जल पोलो खेलता हुआ विजयी के० रि० पु० बल



**4X100 मी० फ्रीस्टाइल रिले में हमारा विजयी चौगड्डा (बायें से दायें) सोमशेखरन, नायर, पद्मनाभन औन क्लीमेंट**



**4X100 मी० मेडले रिले में हमारी विजेता चौकड़ी (बायें से दायें) सोमशेखरन, पद्मनाभन, जैकब तथा थोबासिंह**


7M
3M

हाई बोर्ड गोता लगाता हुआ कपूरसिंह

**क्रीड़ा क्षेत्रे :**

# अन्तर्रेंज प्रतियोगितायें

**नीमच में 27 से 31 अक्टूबर 80 तक खेली गई 14वीं अन्तर्रेंज दौड़कद (एथ्लेटिक्स) प्रतियोगिता में अजमेर रेंज काँटे के संघर्ष में विजयी रही। श्रीनगर । रेंज II तथा हैदराबाद रेंज III रही। प्रभात सिंह ने व्यक्तिगत चैम्पियनशिप जीती।**

**इस प्रतियोगिता में कई नये रिकार्ड स्थापित हुये : आर. एस. बल ने घन तथा चक्का फेंकों में दो नये कीर्तिमान स्थापित किये । एम. टी. कुंजूमन ने 800 मी० दौड़ में; सतवीर ने ऊंची कूद में; प्रभात सिंह ने ने दस खेल (डिक्थ्लॅन) में; ए. पी. मान ने शाटपुट (गोलाफेंक) में; रसदेव सिंह ने मेराथॅन में;. प्रेमचन्द्रन ने पोलवाल्ट में; सुशीलन ने भाला फेंक में तथा 4x400 रिले में श्रीनगर रेंज ने नये रिकार्ड बनाये। हरीचन्द 5,000 और 10,000 मी० दौड़ में प्रभात सिंह चौड़ी कूद में गुरुमुख सिंह 1,500 मी० दौड़ में; दया सिंह 400 मी० दौड़ में आर. बोरह त्रिकूद में; गुरदयाल सिंह 110 मी० बाधा तथा 400 मी० बाधा दौड़ों में; नईमुद्दीन 200 मी० दौड़ में; जोजेफ 100 मी० दौड़ में तथा प्रदीप कुमार 3000 मी० स्टीपल चीज़ में प्रथम रहे। 4x100 मी० रिले में अजमेर रेंज प्रथम रही।**

**[विस्तृत वर्णन अगले अंक में पढ़िये ]**

## 13वां अन्तर्रेंज दंगल

ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में 18 से 24 अगस्त' 80 तक 13वाँ अन्तर्रेंज दंगल हुआ। दिल्ली रेंज ], पटना रेंज II तथा नीमच रेंज III रही।

## अन्तर्रेंज फुटबाल प्रतियोगिता

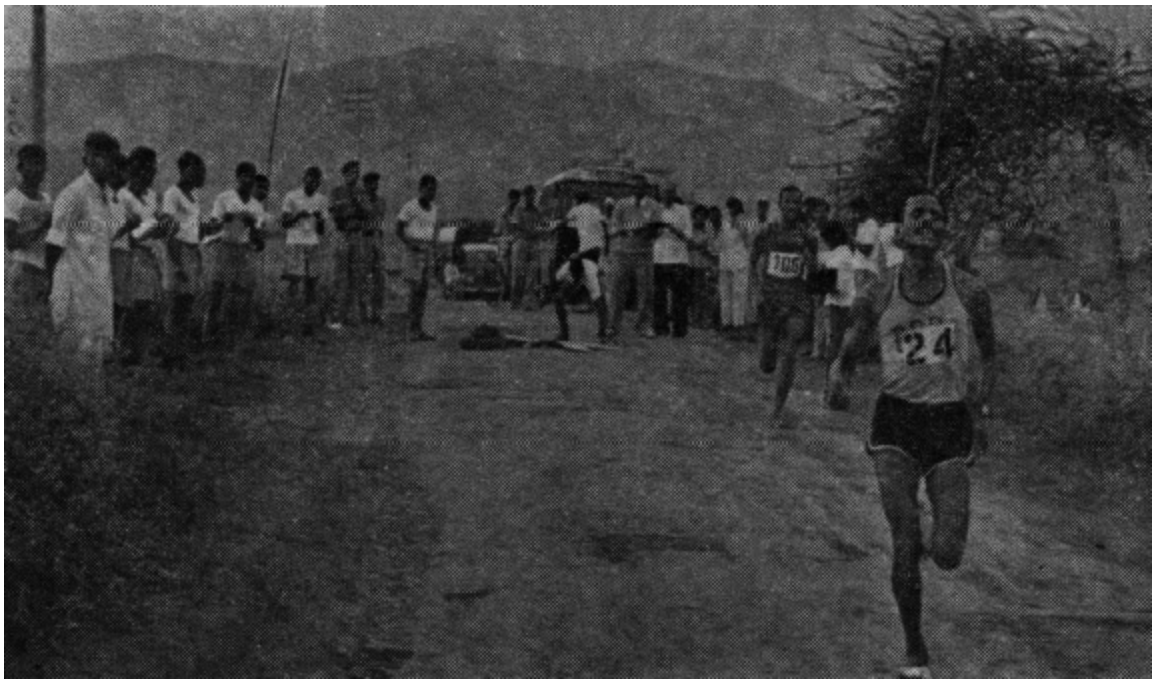
श्रीनगर में 24 से 29 जुलाई 1980 तक खेली गयी अन्तर्रेंज फुटबॉल प्रतियोगिता में, दिल्ली रेंज I; पटना रेंज II तथा नीमच रेंज III रही।

## दो सौ नागरिकों को प्राणदान

दिनांक 4 अक्टूबर 1980 को इम्फाल मार्ग पर चूड़ाचन्दपुर के निकट भीषण बाढ़ से पुल बहजाने पर 45 बटालियन के जवानों की 200 संकटग्रस्त मनुष्यों के प्राण बचाये।

## अग्निशमन

श्रीनगर के पुराने सचिवालय भवन में 9 अक्टूबर 80 को भयंकर अग्नि लगने पर के० रि० पु० बल के जवानों में वहाँ पहुँच तुरन्त उसे बुझाया और लाखों की सम्पत्ति बचा ली। उनके इस उत्तम कार्य की क्या जनता और क्या स्थानीय प्रशासन सभी ने बड़ी सराहना की।




**अखिल भारतीय पुलिस कासकंट्री (वनखण्डी) प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल ने भाग लिया और सिरमौर जीता**

## 1982 वाले एशियाई खेलों में के०रि०पु० बल

हरीचन्द को 1982 वाले एशियायी खेलों में 5,000 मी० और 10,000 मी० दौड़ों के लिए प्रथम प्रशिक्षण शिविर के हेतु चयन किया गया है। प्रदीप कुमार, प्रभात सिंह, व आर० एस० बल को भी 3000 मी० स्टीपल चेंज, डिकथलॅन तथा घन फेंक के लिए क्रमशः चुना गया है ।

## 50 बटालियन पुरस्कृत

मोकोकचंग नागालैंड के डिप्टी कमिश्नर श्री ए० एम० गोखले ने 50 बटालियन (के० रि० पु० बल) के जवानों को 800 रु० का नक़द पुरस्कार दिया। मोकोकचंग पर निरत

23 जुलाइ 80 को इन जवानों ने आनेयांत्रेत भीड़ को अत्यन्त संयम तथा अनुशासन से तितर-बितर किया था।

## भूल सुधार

क्रैपलर खण्ड IX अंक 3 (जुलाई 1980) में, 'सब से बड़ा तीर्थ' नामक कहानी के लेख श्री एन० एस० गिल के स्थान पर श्री एन० एस० ढिल्लों है।

# संचरण चिकित्सा

## (मीलों दूर ग्रस्त रोगी का अपने बाल के द्वारा उपचार)

### लेखक—श्री जे० एस० शर्म्मा

अब रोगी को डाक्टर के पास इलाज के लिये ले जाने की, आपको ज़रूरत नहीं रहेगी। वह कहीं भी हो, केवल उसके बाल की चिकित्सा करने पर, वह भला चंगा हो सकता है। आप चौकिये नहीं, यह कोई दंत कथा नहीं हैं, बल्कि ठोस हक़ीक़त है। एक डॉक्टर ऐसा करने में सफल होने का दावा करता है।

हमने बचपन में अपने एक रिश्तेदार को सर्पविष झाड़ते देखा था। उनसे जो कोई भी व्यक्ति सर्प काटे की सूचना देता था, वह उसे ही अपने पास बिठा कर कांस्य की थाली उसकी पीठ पर रखकर मंत्र फूँकना शुरू कर देते थे और साँप से काटा व्यक्ति कितनी भी दूर क्यों नहीं हो, उनका दावा था कि उनके उस प्रकार मंत्र फूकने से रोगी स्वस्थ हो जायेगा।

इसी प्रकार, रिंगने वाले दर्द के रोगी को एक अन्य आदमी के साथ खड़ा करके हरी बांस की दो टहनियाँ उन दोनों की कमर में दोनों ओर लगा कर वह रिश्तेदार वनैले चूहों के बिलों की मिट्टी से मंत्र फूँक-फूँक कर बीच में जोड़ देते थे और फिर अलग कर देते थे। ऐसे तीन बार करने पर, उनके दावे के अनुसार, रोगी का दर्द कम हो जाता था और लगातार झड़वाने से रोगी पूर्ण स्वस्थ हो सकता था।

ये तो रही मन्त्र-तन्त्र की कहानियाँ किन्तु अब तो दरभंगा के होमियोपैथिक डाक्टर ए० बी० साहनी ने अपनी पुस्तक "ट्रांसमिशन, ऑफ होमियो ड्रग इनर्जी फ्राम ए डिस्टैंस" (होमियोपैथी औषध का दूर से सचरण) में यह दावा किया है कि उन्होंने कितने ही मीलों दूर पड़े रोगियों को उनके बाल पर औषध का प्रयोग करके उन्हें स्वास्थ्य-लाभ कराया है। शुरू-शुरू में, उन्होंने 61 मीटर दूरी से चिकित्सा की और

अब तो वह 1,000 मी० की दूरी से भी इलाज करते हैं।

बारह वर्ष पूर्व, इस चिकित्सा पद्धति का सहसा सूत्रपात हुआ, जब डा० साहनी अपने शब्दों में, "5 जनवरी 1967 की रात को, अचानक मेरे मन में यह विचार आया कि रोगी के शरीर का कोई अंग 'संचरण' के रहस्य की गुत्थी सुलझा सकता है। दूसरे दिन, सबेरे ही मैंने अल्सर के एक रोगी श्री कुमार से आग्रह किया कि वह अपने सिर का बाल मुझे दें। मैंने वह बाल एक काग़ज़ पर रख कर उसकी जड़ से औषध को छुआ। जो हुआ, उसे जादू ही कहा जा सकता है। श्री कुमार को लगा मानों उसके पेट में चक्की चल रही है। मैंने बाल अलग कर लिया। इस प्रक्रिया में रोगी का 75% दर्द खत्म हो चुका था।"

बस फिर क्या था? इस चमत्कारिक प्रयोग ने उनकी चिकित्सा पद्धति में एक नया आयाम खोल दिया। उन्होंने असंख्य रोगियों से इसी पद्धति से स्वास्थ्य लाभ कराया है। निमोनिया, मीज़ल्स, विषम ज्वर, यहाँ तक कि एक ऐसे उदर शूल के रोगी को ठीक किया है, जिसको डाक्टरों ने आपरेशन की सलाह दी थी।

**चिकित्सा रहस्य :** आखिर, यह सब कुछ होता कैसे है ? आज कल घर-घर रेडियो सेट हैं और टेलीविज़न भी साधारण बात होती जा रही है । उन्हें तनिक 'स्विच आन' करते ही ध्वनि तथा चित्र देख लेते हैं और अब तनिक भी चकित नहीं होते। पूछने पर सभी यही कहेंगे कि इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? एरियल दूर से आयी तरंगें पकड़ कर ध्वनि तथा चित्र में परिवर्तित कर देता है। ठीक वैसे ही, होमियोपैथी दवा की अंतर्निहित शक्ति भी स्थांतरित होती है। वस्तुतः होमियोपैथी में तो अवधारणा ही यह है कि संसार के हर पदार्थ में, यहाँ तक कि पत्थर में भी प्राण होते हैं। तब होमियोपैथी की गोलियों, चीनी, अल्कोहल भी गतिशील है और अपने प्रभाव को स्थान्तरित कर सकती है।

जीवित मनुष्य खुद एक पूर्ण अंगभूत इकाई है; उसका कोई अंग भी दूसरे को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता। इस शताब्दि के आरंभ में ही, डॉ० अल्बर्ट अब्रॉम्स ने मनुष्य के शरीर से निकलने वाली विद्युयत चुम्बकीय तरंगों का अध्ययन किया। इन तरंगों का बड़ा हाथ तो इस औषध संचरण प्रणाली में है। ग्लासगो के एक डाक्टर बॉयड ने **एमेनोमीटर** एक यंत्र तैयार किया था, जिससे औषध और रोग-निस्स रण के सम्बन्ध की जानकारी मिली थी। इसी आधार पर, रोगी के पास पौधे ले जाकर चिकित्सायें की गयी थीं। अब यह सोचा गया कि क्यों नहीं रोगी के किसी प्राकृतिक अंग की सहायता से, होमियोपैथी की सक्रिय औषधियों की सूक्ष्म ऊर्जा को स्थान्तरित किया जाए। बाल का प्रयोग तो केवल सुगमता के लिये किया जाता है; अन्यथा रोगी के किसी भी प्राकृतिक अंग की सहायता से यह उपचार हो सकता है।

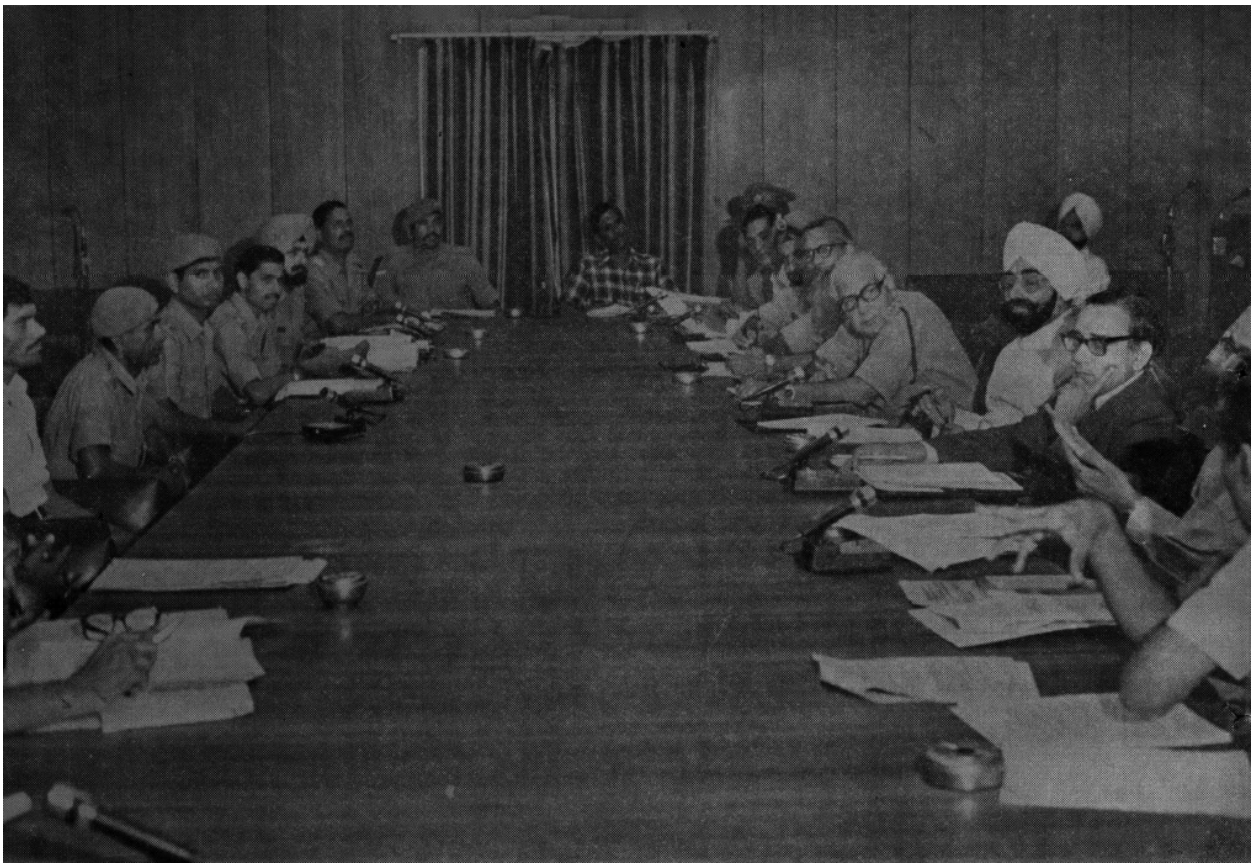
कुछ लोग, इसे मनोवैज्ञानिक प्रभाव का फल बताते हैं; परन्तु इस पद्धति से पशु और नवजात शिशु भी स्वस्थ हुये हैं, जिन्हें मनोविज्ञान के नाम तक का पता नहीं है; और ना ही यह कोई दैवी चिकित्सा है। यह तो सीधा-साधा विज्ञान है-मनुष्य की देह विकरण करती है और विकरण की गति आठ करोड़ साइकिल प्रति सेकंड है,

जबाके प्रकाश देने वाली विद्यत ऊजा की विकरण दर तो केवल 60 साइकेल प्रति सेकंड की अत्यन्त नगण्य है। तभी तो, हम अपनी देह के विकरण को नहीं देख पाते हैं।

सभी तरंगों, कोषाणुओं और विकरण के प्रभावों के **विद्यतीय सन्तुलन** का नाम ही स्वास्थ्य है, तनिक भी गड़बड़ी पड़ने से सन्तुलन में खराबी आती है और उस खराबी को रोग का नाम दिया जाता है। औषध में भी विद्युयत होती है और मुख में डालते ही, सम्पर्क से सक्रिय हो जाती है। यह प्रक्रिया सम्पर्क के स्थान पर विकरण द्वारा भी की जा सकती है; संचरण द्वारा भी सफलीभूत हो सकती है।

बाल हमारे पूरे शरीर की संरचना का ही सूक्ष्म प्रतिरूप है। पूरे शरीर के समान उसमें सम्वेदनशीलता, विकरणक्षमता होती है। शरीर से अलग होने पर भी, बाल में ये गुण विद्यमान रहते हैं। औषध का विद्युयतीय प्रभाव बाल के सम्पर्क में आकर, विकरण द्वारा रोगी पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है, जो औषध को जीभ पर रखने से होता है। जिस भाँति, रेडियो या टेलीविज़न में भौतिक सम्पर्क की ज़रूरत नहीं होती, ठीक उसी भाँति, इस संचरण प्रक्रिया में भी रोगी और औषध के भौतिक सम्पर्क की ज़रूरत नहीं है।

ऐसी स्थिति में, चिकित्सा बड़ी सरल और सस्ती हो सकती है। आप घर बैठे अपने रोग का उपचार देश-विदेश के बड़े-बड़े डॉक्टरों की सलाह मात्र से कर सकते हैं। ना तो इसमें जटिल शल्य यंत्रों की आवश्यकता होती है और ना ही बहुमूल्य उपकरणों की । यदि डॉक्टर साहनी का दावा सही है, तब आकाश से छूती महंगाई में, यह पद्धति **युग की वरदान** सिद्ध हो सकती है।



**स्टाफ कौंसिल सम्मेलन**

# श्री ज़ैलसिंह गृहमंत्री द्वारा के० रि० पु० बल की प्रशंसा

दिनांक 4 सितम्बर 1980 को गृह मंत्रालय में हुई के०रि०पु० बल की स्टाफ कौंसिल की बैठक में ज्ञानी ज़ैलसिंह, गृहमंत्री द्वारा दिये गये भाषण के कुछ अंश निम्न लिखित हैं: -

देश के सभी भागों में कठिन परिस्थितियों के अन्दर शान्ति तथा व्यवस्था बनाये रखने के लिये अर्जित कीर्ति के उपलक्ष्य में, मैं के०रि०पु० बल के सदस्यों को बधाई देता हूँ। जहाँ कहीं भी गड़बड़ हुई है, वहीं आपके बल ने स्थिति भली भाँति संभाली है और अपनी कीर्ति में चार चाँद लगाये हैं। सीमाओं की सुरक्षा, पूर्वोत्तर अंचल में शान्ति-व्यवस्था तथा प्रकोपों में नागरिकों की सहायता सहित, आपने विविध प्रकार के सेवाभार उठाये हैं।

मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि गृह मंत्रालय में अदने आदमी से लेकर प्रधान मंत्री तक भारत की सरकार, आपके योगक्षेम में गहरी रुचि रखती है। दूरदराज़ के क्षेत्रों में निरत के०रि०पु० बल के जवान तथा अन्य पुलिस कर्मियों को यह बताना होगा कि जिनके हाथ में आजकल शासन की बागडोर है, आपके कल्याण की समस्या उनके ध्यान में सर्वोपरि है।

सफ़ाई कर्मचारी, नाई, धोबी, रसोइये तथा पानी वाले जैसे अनुचरों (फालोअर) के भविष्य के लिये विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। हमें यह देखना होगा कि अपने सेवाकाल में, वे भी उन्नति करें। जिन लोगों का काम कोई अन्य नहीं कर सकता है, उनके प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। ऐसा कहते हुए, मेरा ध्यान जमादारों की ओर जाता है। क्या सफ़ाई करने के उनके काम को कोई अन्य व्यक्ति करना पसन्द करेगा? फिर क्यों नहीं हमें कुछ करना चाहिये ?

कोई पुलिस कर्मी जिस अवकाश का हक़दार है, उस अवकाश को भोगने का उसे अधिकार है। जो अवकाश वह नहीं भोग सकता है, शायद हम उसे कुछ वित्तीय मुआवज़ा दे सकते हैं, किन्तु यह हम करना नहीं चाहते हैं। छुट्टी ले परिवार में पहुँच कर, अपनी सम्पत्ति तथा कुटुम्ब की समस्यायें सुलझाना एक वह अधिकार है, जिसे हर पुलिस कर्मी को मिलना चाहिये। छुट्टी स्वास्थ्य के लिये भी उत्तम है, उसे मना नहीं करना चाहिये, क्योंकि छुट्टी से जीवन की गुणवत्ता सुधरती है। धन बचाने के स्थान पर, सैनिक सहित हरेक के जीवन की उत्तमता को संभालने में हमारी रुचि है।

आपकी सभी शिकायतों पर ध्यान देने में, गृह मंत्रालय को प्रसन्नता होगी। अपनी शिकायतों को विधिवत् भेजने के लिए, मैं आपसे आग्रह करूँगा। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि हर मामले में न्याय पर आधारित निर्णय लिया जाये।

राजनीतिज्ञों में कमियाँ हो सकती हैं। इसी भाँति, अन्य व्यक्तियों में भी कमियाँ हो सकती हैं, किन्तु मुझे ऐसा विश्वास है कि जवान में कोई कमियाँ नहीं हैं। वह आदेश का पालन करता है, देश से प्रेम करता है और देश के लिए, वह प्राण तक बलिदान कर सकता है। आपसे मेरा एक यही अनुरोध है कि यही भावना आप बनाये रखें।

पुलिस बलों के विरुद्ध आलोचना के पीछे इतिहास छिपा है। अपने दिनों में, मुझे भी पुलिस कर्मियों के प्रति घृणा थी क्योंकि वे हमें मारते-पीटते थे। फलस्वरूप, स्वतन्त्रता के पहले से ही, वर्दी एक घृणा की वस्तु बन गई थी। अब इसके लिए, हमें कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

मैं यह समझता हूँ कि उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्रों में शान्ति पुनः स्थापित करते समय या अनेकों कठिन परिस्थितियों में, पुलिस कर्मियों द्वारा दी गई गलतियों के दृष्टान्त मिल सकते हैं। ऐसी निष्ठापूर्वक ग़लतियों को हमें क्षमा करना चाहिये तथा निष्ठा से सेवाभार उठाने वाले सभी व्यक्तियों को आवश्यक संरक्षा मिलनी चाहिये। अत: पुलिस का मनोबल गिराने के लिए, लोग सब कुछ करते रहे हैं और करते रहेंगे। फिर भी, पुलिस को अपनी सेवा करनी होती है और वह कभी कभार अत्यन्त खतर नाक़ होती है।

मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहूँगा कि ऐसी मेरी अपनी धारणा है कि एक साधारण पुलिस कर्मी का, आप सब का जीवन, मेरे जीवन से कभी भी कम मूल्यवान नहीं है और यह अवधारणा सारी सरकार की है। इसलिए, जब आप में से किसी की क्षति या मृत्यु होती है, तब हमें बहुत दुःख होता है और उसके लिए, हम यथाशक्ति सब कुछ करने को तैयार हैं।

साथ ही, देश-सेवा के लिए, पुलिस कर्मी को वह अवसर मिलता है, जो कोई अन्य

नहीं पाता है। अतएव, काम आपको एक अवसर है और इसी भावना से आपको अपना काम करना चाहिये। अपने काम से प्यार कीजिये।

बलों में अनुशासन के महत्त्व को नहीं भूलना चाहिए। अनुशासन के कारण ही, आज संसार में जीवन फलफूल रहा है। तनिक सोचिए, नदियों के, महासागरों के, सूर्य तथा नक्षत्रों के अनुशासन हीन होने पर क्या क़यामत वर्षा हो जायेगी?

अनुशासनहीन मनुष्य एक पशु के समान है, जो केवल खाने के लिए ही सेवा करता है; किन्तु जब हम देश की सेवा करते हैं, तब केवल वेतन अर्जित करना ही हमारा एक मात्र ध्येय नहीं होता। हम सब को यथाशक्ति देश की सेवा करनी चाहिए।

प्रत्येक शहरी छापे मार को यह ध्यान में रखना सदा आवश्यक है कि यदि पुलिस तथा दमन के प्रति समर्पित व्यक्तियों को मार डालने में वह रुचि रखता है और यदि बड़े-बड़े पूंजीपतियों, धन्नासेठों और साम्राज्यवादियों की सम्पत्तिहरण को वह कृत-संकल्प है, तब वह केवल अस्तित्व ही रख सकता है। -**कार्लस मैरीघेला** (शहरी छापामारी की लघु नियमावली)

**<u>कविता :</u>**

# केन्द्र पुलिस का अपना झंडा

### रचयिता : कां० रामसिंहासन पाण्डेय, 53 बटालियन

केन्द्र-पुलिस का अपना झरडा, लहर-लहर लहराता जाये/
सेवा-निष्ठा का प्रतीक यह, सदा फहर-लहराता आये//
इसके नीचे निर्भय हो हम, आगे अविरल बढ़ते जायें!
सत्य-अहिंसा-व्रत धारित कर, कर्मपरायणता, अपनायें/
यह खाक़ी वर्दी जनता में, भय नहीं-अब विश्वास दिलाये/
केन्द्र पुलिस का अपना झंडा, लहर-लहर लहराता जाये/
कार्य शुरु 'वन्दन' गायन से, 'जनगणमन' से पूरा करते/
भाँति-भाँति के खग पक तरु पर, अनुशासित कल्लोलें भरते//
शाँति-व्यवस्था जग में, इसका; यश-वैभव निशिदिन फैलाये/
केन्द्र-पुलिस का अपना झंडा, लहर-लहर लहराता जाये/

सैन्य-पुलिस का प्रबल प्रशिक्षण, हमें सदा करना है पड़ता।
करते सदा दमन हम रिपु का, आँख दिखा, आगे जो बढ़ता॥
जहाँ मिले आदेश, वहीं यह, बल अपना गौरव दिखलाये।
केन्द्र पुलिस का अपना झणडा, लहर-लहर लहराता जाये।
सेवा-भक्ति हमारे बल की, जन-जन से आदर दिलवाती।
इसकी कीर्ति-कौमुदी जग में, हल्कलियें प्रतिपल विकसाती॥
दिन दूनी और रात चौगुनी, प्रभु इसका यश नित्य बढ़ाये।
केन्द्र पुलिस का अपना झणडा, लहर-लहर लहराता जाये॥

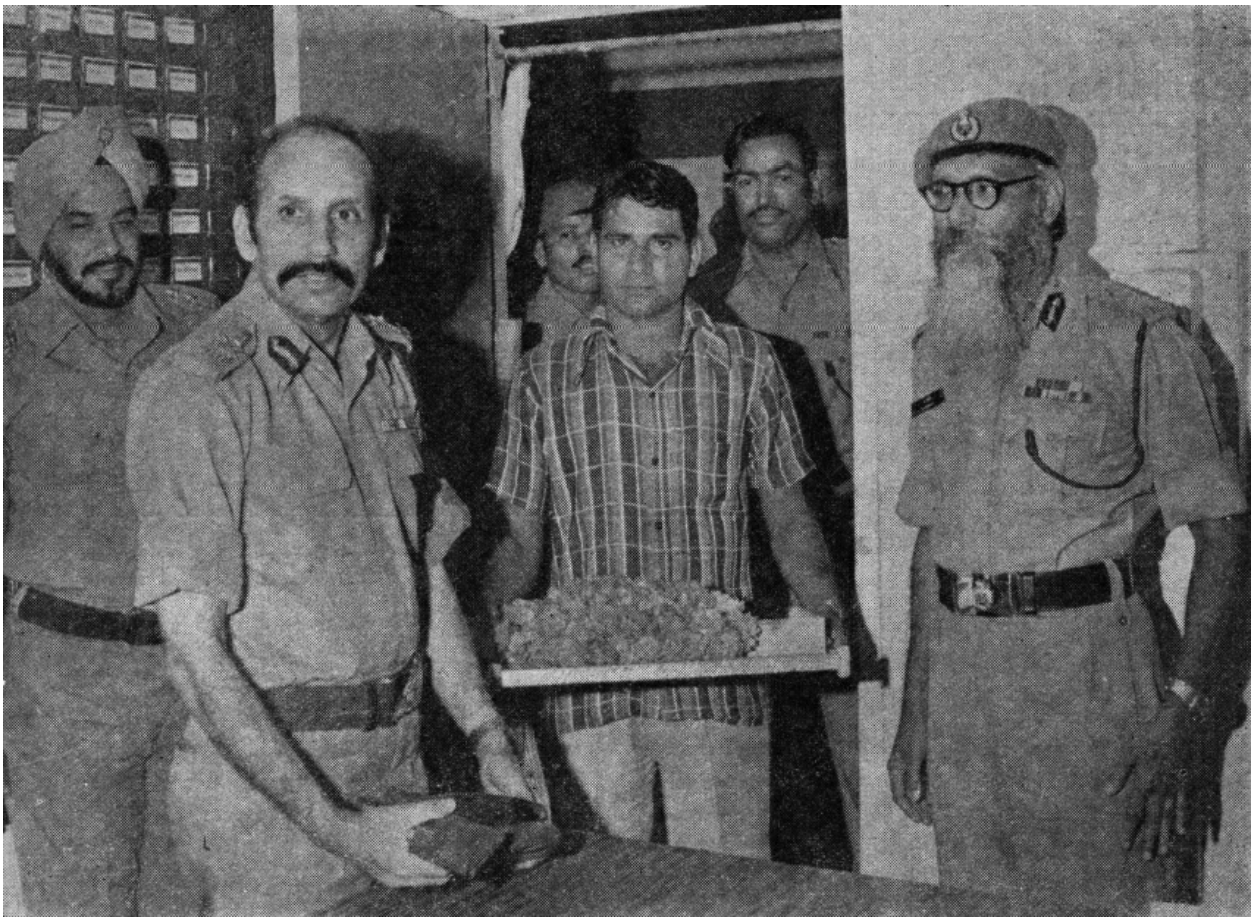
---

## पहेलियाँ

[प्रस्तोता- **का० महन्त राय, 29 बटा०**]

तीन अक्षर का मेरा नाम।
सभी के आता हूँ मैं काम।
प्रथम कटे तो दल बन जाऊँ।
मध्य कटे तो शीश सजाऊँ।
अन्त कटे तो बाद में आऊँ।
सराबोर जग को कर जाऊँ ॥1॥
मिट्टी से पैदा हुआ,
साफ़ करे मशीन।
लाये पिया बज़ार से।
जग उजियाला कीना ॥2॥
चल-चल का गाड़ी थकी,
थक गयीं सभी सवारी।
तिल भर भी ना हिल सकी,
पड़ी रही बेचारी ॥3॥

**उत्तर**- (1)बादल (2)मिट्टी का तेल (3)सड़क।



## सितम्बर में निवर्तमान महानिदेशक श्री बीरबलनाथ को भावभीनी बिदाई

**विदाई के समय, श्री नाथ ने के० रि० पु० बल की भूरिभूरि सराहना की और कहा कि यद्यपि वह कठिनता से चार मास ही इस बल में रहे हैं; किन्तु इसकी कार्यकुशलता और बहुमुखी प्रतिभा की प्रशंसा किये बिना वह नहीं रह सकते।**

## के० रि० पु० बल में 3 अवैतनिक उपमहानिरीक्षक

भारत सरकार ने के० रि० पु० बल के इन 3 कमान्डेन्टों को पुलिस उपमहानिरीक्षक के अवैतनिक पद प्रदान किये हैं-

(I) ग्रुप केन्द्र गौहाटी के कमांडर श्री एम०पी० सिंह, उपमहानिरीक्षक गौहाटी रेंज; (2) 9 बटालियन के कमांडैंट श्री इन्द्रसिंह, उपमहानिरीक्षक ऐज़ल रेंज तथा (3) श्री के० आर० के० प्रसाद, सहायक निदेशक (प्रशासन) उपमहानिरीक्षक कोहिमा, रेंज

नियुक्त हुये हैं। जबाकि ये अधिकारी कमांडेंट वाले ही बेतन तथा भत्ते पायेंगे, ये पुलिस उपमहानिरीक्षक का बैज (बिल्ला) धारण करेंगे और उनके सभी क़ानूनी और वित्तीय अधिकारों का प्रयोग करेंगे।

## संकटों में सहायता

दैवी संकटों तथा अन्य अप्रत्याशित विपत्तियों में ग्रस्त के० रि० पु० बल के सदस्यों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की एक योजना को चलाने का निर्णय महानिदेशालय ने लिया है। यह योजना 'संकटशमन' कहलायेगी और केन्द्रीय कल्याण कोष से इसका व्यय चलेगा तथा सेक्टर पुलिस महानिरीक्षक इसकी व्यवस्था करेंगे। सेक्टर I तथा II को दस-दस सहस्र रुपये, सेक्टर III को पन्द्रह सहस्र रुपये तथा सेक्टर IV को पाँच सहस्र रुपये, इस हेतु दिये गये हैं।

इस योजना का उद्देश्य ऐसे लोगों को राहत देना है, जो संकटों के कारण कष्ट भोगते हैं तथा केन्द्रीय या राज्यों की सरकारों से कोई आर्थिक सहायता नहीं पाते हैं। यदि किसी सदस्य या उसके अश्रित को ऐसी चिकित्सा व्यवस्था करनी पड़ती है, जो उसकी आय से बढ़ कर है और जिसकी प्रतिपूर्ति नहीं हो सकती, तब उसे भी आर्थिक सहायता दी जायेगी।

## 1443 पदोन्नतियां

1980 के जूलाई मास में, के० रि० पु० दल के 1443 सदस्यों की पदोन्नतियाँ की गई। कान्स्टेबलों को सर्वाधिक लाभ हुआ, जब 784 कान्स्टेबल लान्सनायक बना दिये गये। 192 लांसनायक, नायक के पद पर चढ़ा दिये गये; 358 नायक को हेडकान्स्टेबल तथा 42 हेडकान्स्टेबलों को सब इन्स्पेक्टर बना दिया गया। अधीनस्थ अधिकारियों में 32 सब इन्स्पेक्टरों को इन्स्पेक्टर और 35 इन्स्पेक्टरों को पुलिस उपाधीक्षक के राजपत्रित पद पर उन्नति दी गई।

इससे के० रि० पु० बल के सेवीवर्ग में प्रसन्नता की लहर छा गई।

**<u>कहानीः</u>**

# परिवर्तन

### ले० कनिष्ठ लिपिक सुन्दरलाल, 1 सिग. बटा.

प्रवीन बहुत दुःखी था। रह रह कर, उसे अपनी मम्मी पर गुस्सा आ रहा था। "आखिर-माँ बाप अपने आप को समझते क्या हैं ?" वह मन ही मन में बुदबुदाया 'आज ही दोस्तों के साथ पिक्चर जाने की सोंची, तो मम्मी फतवा दे रही हैं "आज तू

घर ही रह। मेरी तबियत खराब है और और तेरा छुट्टी का दिन है।"

इतना सुनते ही, प्रवीन ने मम्मी को बताया कि आज तो उसने दोस्तों के साथ, पिक्चर जाने का प्रोग्राम बनाया है। मम्मी की खाँसी रोके नहीं रुक रही थी; वह वैसे ही बहुत परेशान थी। इधर उसने प्रवीन को बड़े चाव से सदा पाला था; आखिर, वह उसका बड़ा पुत्र जो हुआ। उससे उसने कितनी आशायें बना रखी थीं। इस उत्तर की उसे स्वप्न में भी उम्मीद नहीं थीं। वह तुनक उठी और लगी बड़बड़ाने "मैं चाहे मर जाऊँ, पर तुझे पिक्चर ज़रूर जाना है। आखिर, मैं लगती तेरी कौन हूँ? जा तू अभी चला जा—"

प्रवीन ने कितने मन से दोस्तों के साथ पिक्चर देखने का प्रोग्राम बनाया था। वह उसे रद्द करना नहीं चाहता था "कब कब तो सब दोस्त इकट्ठे हो कर जायेंगे; कैसा मज़ा आये—" अपने मन का विचार वह पूरा भी नहीं कर पाया था कि मम्मी की व्यंग्य भरी आवाज़ फिर सुनाई पड़ी "अरे, एक कप चाय बना कर भी मुझे पिलाने का तेरे पास वक्त नहीं है। ओफ़, सर दर्द से फटा जा रहा है।"

"मम्मी, मेरे पीछे ही क्यों पड़ी हो? आखिर, नवीन भी तो पड़ा-पड़ा चारपाई तोड़ रहा है। वह क्यों नहीं बना देता" कहता हुआ प्रवीन तीर सा घर से निकल गया। उसे तीन बजे सुरेश के घर पहुँचना था। ढाई बज चुके थे, और आध घण्टे के लगभग का रास्ता भी था। उसने ज़ल्दी-ज़ल्दी साइकिल के पैडल पर पैर मारे और बीस-पच्चीस मिनट में ही सुरेश के घर जा लगा।

फिर भी, वहाँ उसके अतिरिक्त सभी दोस्त पहुँच चुके थे। उसके पहुँचते ही, सब खड़े हो गये और पिक्चर जाने की तैयारी करने लगे। पर सुरेश अभी अन्दर से आने का नाम ही नहीं ले रहा था। प्रवीन को उसे ड्राइंग रूम में बुलाने का एक उपाय सूझा। उसने बाहर जाकर काल-बेल बजायी। तभी सुरेश ने आकर प्रवीन का हाथ पकड़ लिया "शस्, माता जी की तबियत ठीक नहीं है। उन्हें शोर क़तई पसन्द नहीं। मैंने उनको चाय बना कर दी है; तब कहीं कुछ आराम मिला। अफ़सोस है, मैं आप लोगों के साथ नहीं जा सकूँगा; अभी मुझे उन्हें दवा देनी है। डाक्टर ने तीन बजे टेम्प्रेचर लेने को कहा है। छोटा भाई नाकारा है—।

"यार, तुम भी खूब हो। मेरी मम्मी की भी तबियत ठीक नहीं है, फिर मैं तो चला आया है। आज तो बड़े मज़े आयेंगे, जब हम सब मिल कर पिक्चर देखेंगे।"

"नहीं दोस्त, मैं माफ़ी चाहूँगा।" सुरेश ने अतीव विनम्र शब्दों में कहा "पिक्चर तो आती ही रहती है। यह जायेगी, तब थोड़े दिनों बाद फिर आ जायेगी। लेकिन माता जी एक बार चली गईं—" कहते हुये सुरेश का कण्ठ अवरुद्ध हो गया। उसके अश्रु छल छला आये।

सभी दोस्तों पर इसका गम्भीर प्रभाव पड़ा और प्रवीन के तो नेत्रों से गंगा-जमुना बह चली। उसे याद आ रहा था वह दिन जब उसकी मम्मी को एक बड़ी पार्टी में जाना था; लेकिन प्रवीन की दाँत में दर्द था। वह प्रवीन के दाँत में कभी लौंग का तेल, तो कभी गमपेन्ट लगा रही थीं। साथ में, डॉक्टर का बताया हुआ कैप्सूल भी दिया था। सब

से बढ़ कर बात यह है कि उन्होंने पार्टी में जाते जाते साड़ी उतार कर रख दी थी। प्रवीन की पीड़ा के कारण, पापा को ही अकेले पार्टी में जाना पड़ा था।

अब उसे अपनी मम्मी का बीमार चेहरा नज़र आया और उनके ये शब्द उसके कर्ण कुहरों में गूँजने लगे "आखिर मैं लगती तेरी कौन हूँ ?"

प्रवीन दोनों कानों पर हाथ रख कर चीख पड़ा "माँऽऽ"। सब दोस्तों ने उसे संभाला। तब उसने बताया कि उसकी मम्मी भी बीमार हैं। कहते हुये उसने तुरन्त साइकल सरपट दौड़ाई। रास्ते भर उसके नेत्रों में आँसू थे। लेकिन वे आँसू खुशी के थे कि अन्ततः वह कर्त्तव्य-पथ पर आ गया था। अब वह अपनी अच्छी मम्मी की सेवा करने जा रहा था।

## सूक्ति सुधा

जिसके साथी हैं, वही बली है।

**—शतपथ ब्राह्मण**

क्षमा से ही सम्पूर्ण जगत क़ायम है।

**—वेद व्यास**

उत्तम पुरुष केवल आत्मसम्मान चाहते हैं, क्योंकि मान ही महापुरुषों का धन है।

**—चाणक्य**

एक दूसरे की रक्षा तथा सहायता करना मनुष्यों का परम धर्म है।

**—ऋग्वेद**

## ॥ विज्ञान के चढ़ते चरण ॥

अमेरिका में विकसित यंत्र से बिना सर्जरी के थके हृदय की धड़कन सामान्य की जा सकती है। हृदय का दौरा पड़ने पर यह यन्त्र बहुत उपयोगी होगा। जबकि वर्तमान यन्त्र को आपरेशन कर 30 मिनट में लगाया जाता है, यह नया यन्त्र केवल पाँच मिनट में लगाया जा सकेगा।

चण्डीगढ़ के केन्द्रीय वैज्ञानिक यन्त्र संगठन ने एक छोटा सा कॉर्डियोस्कोप निर्मित किया है, जो हृदय की धड़कने गिन सकता है। अब ई० सी० जी० की भारी मशीन ले जाने की जरूरत नहीं रहेगी।

ब्रिटेन के अनुसन्धानों से पता लगा है कि बन्द डिब्बों में खाद्यपदार्थ, अर्क़, रंगे पदार्थ खाने से, कैंसर तक हो सकता है।

चण्डीगढ़ के स्वास्थ्य संस्थान ने नसबन्दी के लिए बैटरी से चालित ऐसा संयंत्र बनाया है जिसे गाँव-गाँव ले जाकर **सस्ता परिवार नियोजन** सरलतापूर्वक किया जा सकता हैं।

भारतीय तकनीकी संस्थान ने वायो गैस से चलने वाला एक जेनरेटर बनाया है। उस से मकानों में प्रकाश देने के अतिरिक्त, सिंचाई के पम्प, और कृषियंत्रों को चलाया जा सकेगा। क्योंकि पशुओं के गोबरों, बेकार पड़े रसायनों और नष्ट फसलों से बायो गैस पैदा होगी, यह जेनरेटर बहुत सस्ता पड़ेगा, जो डीज़ल इंजन में सुधार कर वायो गैस से चलेगा।

यदि एक ही भार पीठ पर और हाथ में लटका कर ले जाया जाये, तो पीठ पर ले जाने में कम आक्सीजन व्यय होता है और पीठ का दर्द भी नहीं होता है।

## यह भी खूब रही

**श्याम**—राम, सुना है रंगीन दूरदर्शन होने वाला है।

**राम**—चलो, अन्यथा नीरस कार्यक्रमों में कुछ तो रंगीनियत आयेगी।

**कृष्ण**—गोपाल, तुम्हारे नीचे कितने आदमी काम करते हैं ?

**गोपाल**—कोई दस पन्द्रह होंगे; बाकी नीचे दूसरे की फैक्ट्री है।

**सीता**—यह कैसे हो सकता है कि रेलगाड़ी तेरे ऊपर निकल जाये और फिर भी तू ज़िन्दा रहे।

**गीता**—मैं पुल के नीचे जो थी।

**बिल्ला**–कहो मित्र, हाल तुम्हारा कैसा है।

**मित्र**—बड़ा खस्ता है; रात की वर्षा में सारे हाल की छत लगातार चूती रही।

**स्वामी**—दुखीजा तो कोई जाति नहीं होती, जो तुम अपनी बता रहे हो।

**नौकर**—जब हुज़ूर सुखीजा हुए, तब खादिम को दुखीजा होना ही हुआ। आखिर स्वामी का उल्टा जो हुआ नौकर।

**पुत्र**—अब्बा, आप तो कहते थे कि गुनाह, गुनाह है। वह कभी सही नहीं हो सकता; लेकिन फिल्म वालों का इश्तिहार तो पढ़िये—ये लिखते हैं 'एक गुनाह और सही।"

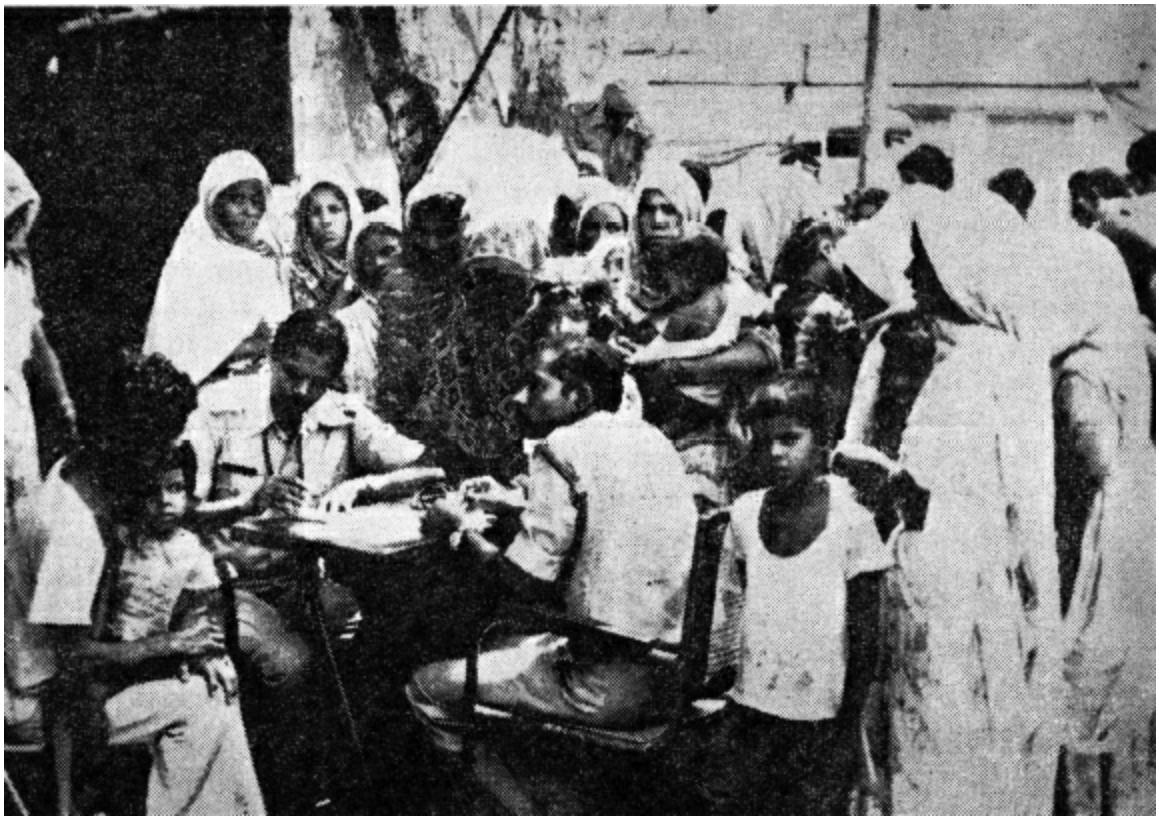
कई बार पत्नी द्वारा चाय लेने का अनुरोध करने पर भी, लिखने में लीन कवि टालस्टाय ने ध्यान नहीं दिया, तब पत्नी ने खीझ कर चाय का प्याला कवि के सिर पर उडेल दिया। टालस्टाय सिर्फ मुस्कारायें और बोले—'मैं जानता था। बदली गरज रही है, तब बरसेगी भी ज़रूर।'

**माँ**—वह तुम्हारा चटर-चटर करने वाला मित्र चटर आया था, जिसके साथ तुम 'जी' और जोड़ देते हो। परन्तु मुझ बुड्ढी को वह जोड़ना तो ठीक नहीं।

**पुत्र**—अच्छा, तुम्हारा मतलब चटर्जी से है।

**पिता**—बेटी 'कहा सुनी' के मायने नहीं जानती। दिनरात तो तुम्हारा माँ कहती रहती है और हम सुनते रहते हैं। बस यह 'कहा सुनी' कहलाती है।

दिल्ली में विजय पनीर वालों ने स्थान स्थान पर विज्ञापन लगा रखे हैं ! 'क्या चीज़ है, विजय चीज़?"



**उपद्रवग्रस्त मुरादाबाद में उपचार करते हुये के० रि० पु० बल के डॉक्टर**

# उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में शान्ति स्थापना में हमारा योगदान

## I. मुरादाबाद

दिनांक 13 अगस्त को, जब मुरादाबाद में ईद की नमाज पढ़ी जा रही थी, तब ईदगाह के अन्दर और बाहर गम्भीर हिंसा भड़क उठी।

क़ानून तथा व्यवस्था की स्थिति से सुलझने के लिए, मुरादाबाद को तुरन्त अलीगढ़ से के० रि० पु० बल की 55 बटालियन की पाँच कम्पनियाँ भेजी गई। उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्र में, के० रि० पु० बल ने चिकित्सा-शिविर लगाया, जहाँ 20 से 29 अगस्त 1980 तक 2,800 से अधिक रोगियों का उपचार हुआ तथा 494 मनुष्यों को हैजे के टीके लगाये गये।

बाद में, स्थानीय प्रशासन के सहयोग के लिए, विगत अगस्त के अन्त में दिल्ली में निरत छै कम्पनियाँ भी, मुरादाबाद को भेजी गई। अलीगढ़ और मुरादाबाद में नियुक्त के० रि० पु० बल के जवानों ने गोलाबारूद की भारी मात्रा बरामद करने में स्थानीय पुलिस की मदद की; इस मात्रा में छोटी तोपें तक थीं।

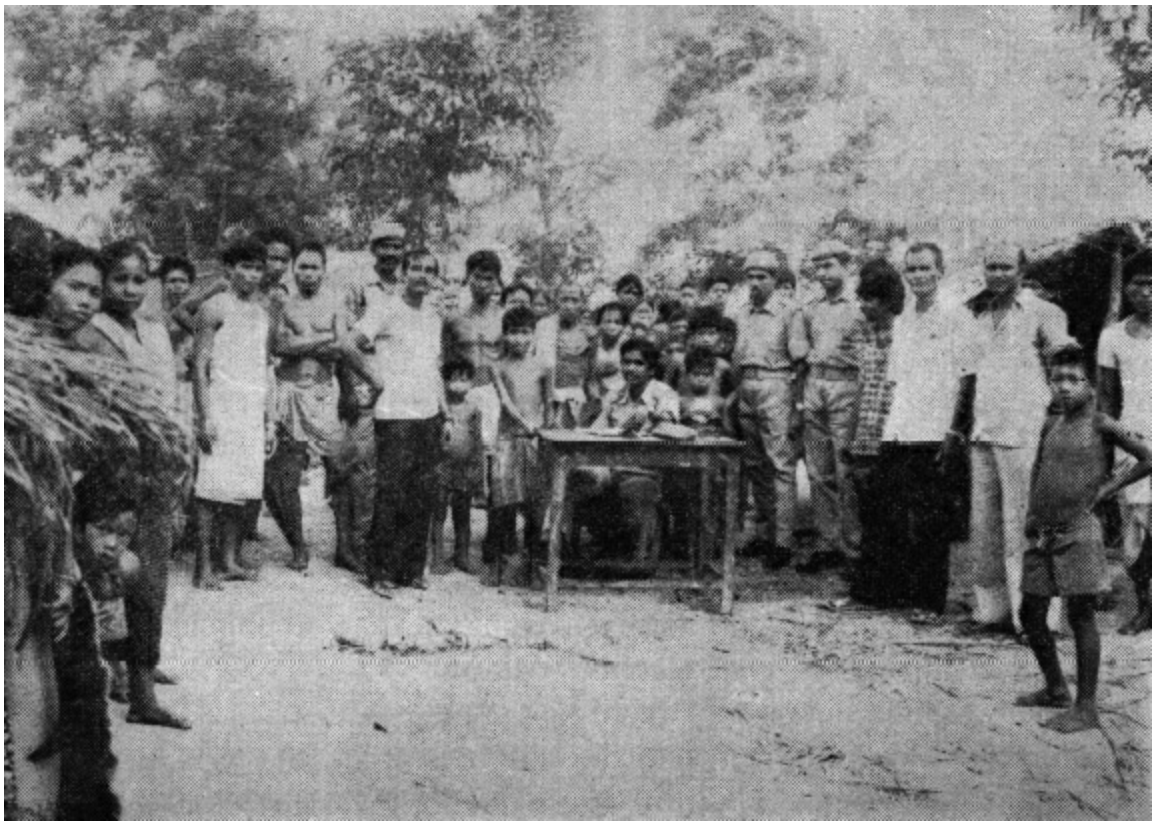
## II. दिल्ली

दिल्ली में 15 अगस्त 1980 को तब उपद्रव हुआ, जब कुछ उपद्रवी मुरादाबाद की घटनाओं के विरोध में जामा मस्जिद क्षेत्र में दंगा मचाने लगे और दुकाने लूटने लगे। स्थिति पर काबू पाने के लिए, 11, 33 और 48 बटालियनों (के० रि० पु० बल) के जवानों को दंगाग्रस्त क्षेत्रों में तुरन्त दौड़ाया गया। जब दिल्ली पुलिस के अश्रु गैस के गोले कारगर नहीं सिद्ध हुए, तब 11 बटालियन के एक सेक्शन ने छै गोलियाँ दागीं। स्थानीय पुलिस तथा के० रि० पु० बल की दृढ तथा सामयिक कार्रवाई के कारण स्थिति सुधर गई।

## III. त्रिपुरा उपजाति संगठन का सेनाध्यक्ष बन्दी

जून 1980 के प्रथम सप्ताह में, 10 बटालियन (के०रि०पु० बल) को मद्रास से वायुयान द्वारा गौहाटी भेजा गया और त्रिपुरा राज्य में बड़े पैमाने पर हुए दंगों के पश्चात् ही, वहाँ उसे निरत किया गया। चार कम्पनियाँ त्रिपुरा के उत्तरी जिले में (जो दंगा ग्रस्त क्षेत्र नहीं था) नियुक्त की गयीं तथा शेष दो अगरतला तथा हिंसास्थल पर तैनात की गयीं।

13 जून को, अम्बासा क्षेत्र में निरत 'डी' कम्पनी की एक टुकड़ी ने, त्रिपुरा उपजाति समिति के स्वघोषित 'सेनाध्यक्ष' विजय रंग खोले को बन्दी बनाने में नागरिक पुलिस की सहायता की। 10 बटालियन ने ही त्रिपुरा उपजातिसमिति के एक चोटी के नेता करण सिंह जम्तिया और उसके नायब दुर्माकाली को बन्दी बनाया। उसी कम्पनी की दूसरी टुकड़ी ने पच्छिमी ज़िले में मोरचारा गाँव की झोपड़ियों को जलाने से कुछ उपद्रवियों को रोका। ये उपद्रवी कोई 50 थे और घातक शस्त्र तथा "मशालें" लिये हुए थे।



**त्रिपुरा निवासियों का उपचार करते हुये के०रि०पु० बल के डॉक्टर**

10 जुलाई को, 53 बटालियन तथा 10 बटालियन के जवानों ने एक संयुक्त छापे में, 126 संदिग्ध अराजक तत्वों को बन्दी बनाया तथा 1 देशीय गन, 1 किलो सीसा तथा दो पाइपगनों के लिए दो नालियाँ बरामद की। जुलाई के मास में, हमारी बटालियनों ने कितने ही छापों में 253 संदिग्ध असामाजिक तत्वों को पकड़ा तथा दो मज़िल गनें, एक सिंगल-बैरल गन और धनुषवाणों की भारी संख्या प्राप्त की।

इस समय 10 बटालियन, 13 चौकियों पर निरत है। एक कम्पनी नियन्त्रण कक्ष (अगरतला) पर तथा दूसरी बसों की यातायात की रक्षा के लिए तैनात है। इसी बटालियन की कम्पनियाँ धर्मनगर से अगरतला को खाद्यान्नों के कॉनवायों की रक्षा पर भी निरत हैं। इसी बटालियन ने तेलियामुरा (पश्चिम ज़िला) में एक सहायता शिविर को 500 रु० के मूल्य की औषधे भी दी हैं।

त्रिपुरा राज्य में इस समय के०रि०पु० बल की 4 बटालियनें तैनात हैं।

## नायक रेडियो आपरेटर को विशेष भत्ता

भारत सरकार ने नायक रेडियो आपरेटर (के० रि० पु० बल) के विशेष भत्ते को 30 रु० से बढ़ा कर 40 रु० प्रति मास कर दिया है।

सिगनल रेंज में, 130 नायक, आपरेटरों के पदों को बढ़ाकर हेड कान्स्टेबल के पद कर दिये हैं। 1 सिगनल बटालियन और 3 सिगनल बटालियन को तैंतालीस-तैंतालीस

तथा 2 सिगनल बटालियन को चौवालीस प्रदान कर, इन पदों को आवंटित कर दिया है।

## और अधिक राशन धन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कर्मचारियों का राशनधन (क्वालीफाइंग) अर्हकारी क्षेत्रों में 103 रु० से बढ़ाकर रु० 106 तथा (नानक्वालीफाईंग) गैर-अर्हकारी क्षेत्रों में 80 रु० से बढ़ा कर 84 रु० प्रतिमास कर दिया गया है। स्थिर संस्थानों में 50 रु० प्रति मास राशन भत्ते में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

## रंगरूटों को राशन भत्ता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के रंगरूट अब, किसी भी प्रशिक्षण संस्थान में मौलिक प्रशिक्षण लेते समम, 50 रु० प्रति मास राशनभत्ता पाया करेंगे।

## बाढ़ ग्रस्तों को भोजन दान

देश के विभिन्न भागों में इन्हीं दिनों आई बाढ़ों में, सामान्य जीवन अस्तव्यस्त हो गया, और सहस्रों व्यक्ति बेघर हो गये।

13 अगस्त 1980 को, गंगा नदी से फरक्का बाँध की बायीं ओर 200 फ़ीट चौड़ी दरार पड़ गई। फलस्वरूप, कलियाचाक नानीचाक और इंगलिश बाज़ार के क्षेत्रों के सभी गाँवों में बाढ़ आ गई। ग्रामीणों ने सुरक्षित स्थानों पर पहुँचने का भरसक प्रयत्न किया। 44 बटालियन (के०रि०पु० बल) के जवान, जो वहाँ तैनात किये गये, सप्ताह में एक बार, उपवास रख कर अपने भोजन से बाढ़ पीड़ितों की उदरपूर्त्ति करते रहे तथा 26 अगस्त 1980 को अपने आवासों पर लगभग 1,200 मनुष्यों को मध्याह्न भोज कराया एवं 6 और 11 सितम्बर 80 को लगभग सोलह-सोलह सौ व्यक्तियों को भोजन जिमाया। भारतीय रेड क्रास सोसाइटी द्वारा गठित सामुदायिक रसोई घरों में भी, इन्होंने मदद की।

अरुणाचल प्रदेश में पासीघाट पर 9 अगस्त 1980 को भारी वर्षा के कारण सियांग नदी चढ़ी। 31 बटालियन के शिविर और उसके निकटवर्ती क्षेत्र बाढ़ ग्रस्त हो गये। अपने शिविर के बुरी भाँति क्षतिग्रस्त होने पर भी, के० रि० पु० बल के जवानों ने स्थानीय लोगों को यथाशक्ति सहायता की। उन्होंने बाढ़ पीड़ितों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया।

उनकी निःस्वार्थ सेवा की, क्या स्थानीय प्रशासन तथा क्या निवासियों, सभी ने भूरि-भूरि सराहना की।

## जवानों को चिकित्सा सुविधायें

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार, दुलियाजन तथा दुर्गापुर में निरत के० रि० पु० के जवान क्रमशः दुलियाजन के आयल इंडिया अस्पताल और दुर्गापुर के स्टील प्लान्ट

अस्पताल में चिकित्सा सुविधायें पा सकते हैं। जवानों तथा उनके परिवारों पर उपचार हेतु जो व्यय होगा, उसकी प्रतिपूर्ति उन्हें मिलेगी।

# क़ानून व व्यवस्था तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

**ले०—स० इ० रमाशंकर पाण्डेय**

क़ानून व व्यवस्था (ला एंड ऑर्डर) ऐसे शब्द हैं, जो कहने, सुनने व देखने में बहुत ही छोटे व मामूली नज़र आते हैं, लेकिन इनके अर्थ बहुत ही व्यापक हैं और इनको क़ायम रखना बहुत ही जटिल है। देश के गणमान्य नेता, वरिष्ठ अधिकारी तथा जनता यदि स्वयं को पुलिस की जगह रख कर देखे, तब क़ानून व व्यवस्था की व्यापकता और जटिलता से, भलीभाँति परिचित हो सकती है। साथ ही, क़ानून व व्यवस्था बनाये रख कर ही, कोई भी सरकार प्रभावी ढंग से अपना कार्यक्रम लागू कर सकती है और देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर सकती है।

इसके बावजूद, पुलिस, विभाग तथा जनता का घृणापात्र बनी हुयी हैं। गणमान्य व्यक्तियों की सब उसे सुननी पड़ती है तथा सरकार के ही अन्य विभागों से उपेक्षित हैं। यह सच है कि भारतीय पुलिस की ट्रेनिंग व क्रियाकलाप ब्रिटिश साम्राज्य की पुलिस जैसे हैं। अतः उसको बदल कर प्रजातांत्रिक देश के अनुरूप ढालने की सख्त आवश्यकता है।

एक प्रजातंत्र देश में क़ानून व व्यवस्था की समस्या कोई विशेष नहीं होनी चाहिये; परन्तु यह तभी सम्भव है जब वहाँ की जनता अपने कर्त्तव्य की तरफ़ से आँखे नहीं बन्द कर केवल अपने अधिकारों की ही मांग नहीं करती रहे। अन्यथा, देश के सामने क़ानून व व्यवस्था की सस्मया खड़ी हो जाती जाती है और उसे दूर करने के लिये बहुत बड़े पुलिस संगठन की ज़रूरत होती है; जबकि भारत में जन-संख्या के हिसाब से, पुलिस की नफ़री बहुत कम है।

देश को सुचारु रूप से चलाने तथा उठाने के लिये, इस प्रजातंत्र देश की जनता को या तो एक मात्र अधिकार मांगने की अपनी प्रवृत्ति बदलनी होगी या पुलिस की नफ़री बढ़ानी होगी। उसे वे सारी सुविधाये देनी होंगी, जो दूसरे विभाग के कर्मचारियों को दी जाती हैं।

आजकल देश में कहीं न कहीं कोई धरना, हड़ताल, घेराव, जलूस आदि चला ही करता है। परिणामस्वरूप, वहाँ क़ानून व व्यवस्था बिगड़ जाती है, जिससे सुखशान्ति भंग होने के अलावा, उत्पादन पर काफ़ी बुरा प्रभाव पड़ता है और देश की आर्थिक व्यवस्था चरमरा जाती है।

के०रि०पु० बल के सामने, क़ानून व व्यवस्था की विकट समस्या उस समय पैदा

होती है; जब काफ़ी तनाव बढ़ने के बाद, स्थिति राज्य पुलिस के नियंत्रण से बाहर हो जाती है। के०रि०पु० बल के पदाधिकारी जब तक नज़दीक से स्थिति समझे और उससे निपटने के लिये स्वयं को तैयार करे, इससे पहले ही उसके जवानों पर पत्थरों की बौछार शुरू हो जाती है। फलस्वरूप, किसी का सिर फूटता है तब किसी का दाँत टूटता है; बल्कि कभी कभार तो प्राण गँवाने की नौबत आ जाती है।

घटना स्थल पर उपस्थित तमाम विशिष्ट अधिकारी उस अनियंत्रित भीड़ पर लाठी चार्ज करने का आदेश तक प्रायः नहीं देते हैं। उनका तर्क यह होता है कि अनियंत्रित भीड़ का काम ही है पत्थरों आदि का बरसाना; और हमें उनकी चोटों से धीरज नहीं खोना चाहिये और न ही भीड़ पर विशेष बल का प्रयोग करना चाहिये; क्योंकि उपद्रवी देश नागरिक हैं। परन्तु देश की जनता यह भूल कर भी नहीं सोचती कि उनके पत्थरों से जिनके सिर फूट रहे हैं, और दाँत टूट रहे हैं, वे भी तो इसी देश के नागरिक हैं। फ़र्क केवल इतना है कि वे वर्दी पहने हैं और क़ानून-व्यवस्था क़ायम रखना, उनकी ज़िम्मेदारी है।

दुर्भाग्यवश, शान्ति क़ायम करने में कभी लाठी चार्ज़ या फ़ायर पुलिस को करना पड़ जाता है; तब दूसरे दिन ही, अखबारों के पहले पृष्ठ पर ही मोटे-मोटे अक्षरों में पुलिस ज़्यादतियों की खबरे बढ़ा चढ़ा कर छापी जाती हैं। अतएव, पुलिस वर्ग के सामने सब से विकट समस्या यह है कि वह अनियंत्रित भीड़ के पत्थरो व सोडा बोतलों से अपने आप को कैसे बचाये और बिगड़ती हुयी स्थिति को कैसे रोके; मुख्यकर जब विशिष्ट अधिकारी कोई सख्त आदेश देने से हिचकिचाते हैं।

आज पुलिस को ऐसे साजो सामान की जरूरत है, जो उग्र भीड़ के पत्थरों व सोडा बोतलों से अपने आप को बचा सके तथा लाठी व रायफल के बजाय टीयर (अश्रु) गैस गनों का प्रयोग करे, जिस से अनियंत्रित भीड़ को कम से कम नुक़सान पहुँचा कर तितर-बितर किया जा सके तथा क़ानून-व्यवस्था कायम की जा सके।

## नये भवन-निर्माण-कार्य

निम्नलिखित निर्माण-कार्यों की स्वीकृति दी गई हैं :—

1. झड़ोदाकलां के स्टेडियम का 3.99 लाख रुपयों की कीमत पर पुनरुद्धार। इसमें पक्की गैलरी (दीर्घा), पंड़ियाँ, पत्थर बिछाना, पाइप रेलिंग (जंगला), दीवार का प्राकार आदि सम्मिलित हैं।

2, झड़ोदा कलां ग्रुप केन्द्र में सिगनल बटालियन वाली तीन मंजिली बारिकों को 7,000 रु० के मूल्य का लौह तार मसहरियों के लिये दिया जायेगा।

3. मुकामेघाट ग्रुप केन्द्र के पुराने 100 क्वार्टर टाइप II और 36 क्वार्टर टाईप I में 4.40 लाख रुपयों की लागत पर जल तथा स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान की जायेंगी।

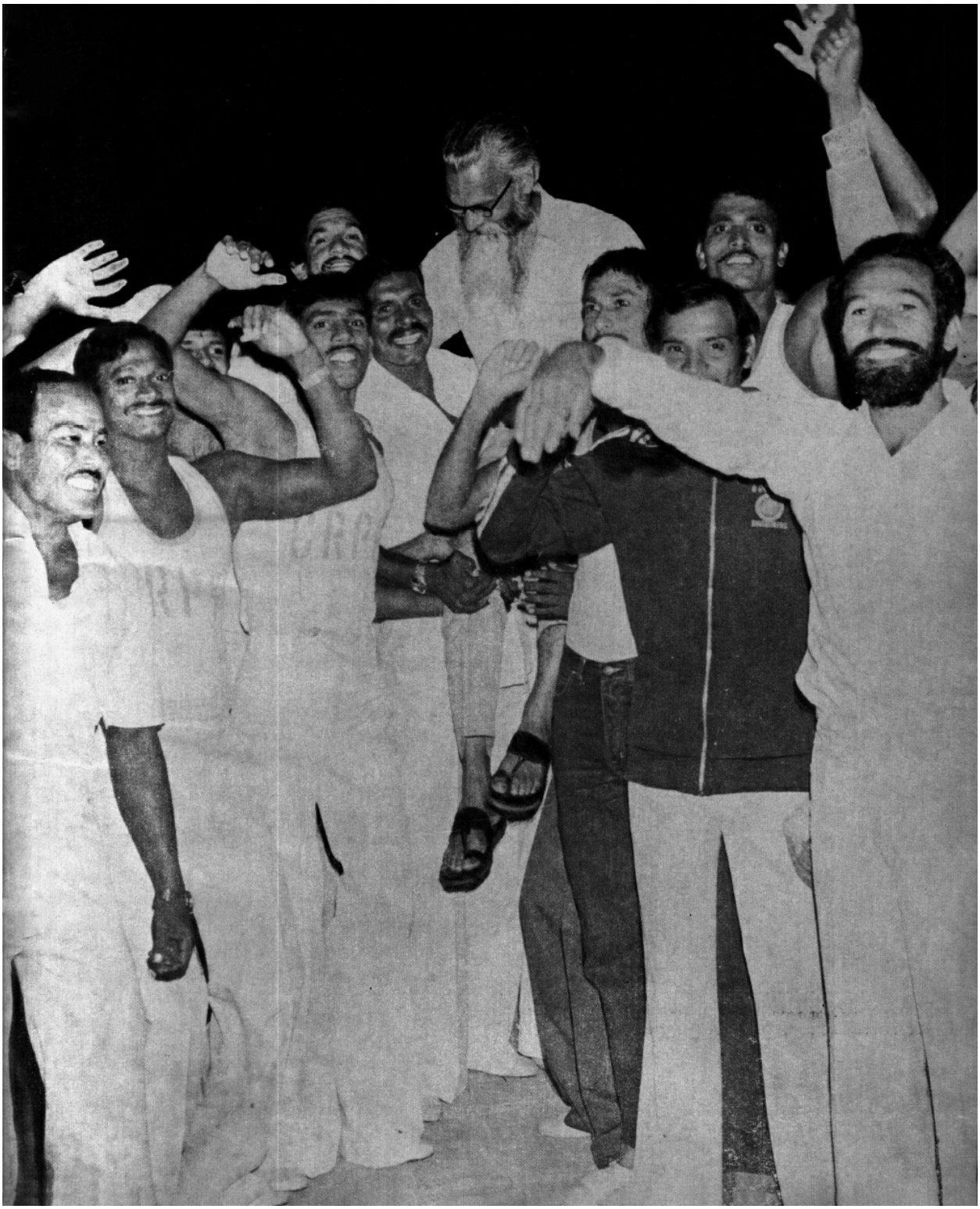
4. अजमेर के गोल्फ कोर्स क्षेत्र में क्वार्टर गारद की इमारत 3 लाख रुपये के मूल्य पर निर्माण होगी।

5. श्रीनगर में रामबाग परिसर में 74 सहस्र रुपये की लागत पर एक पम्पसेट लगेगा।

निम्नलिखित निर्माण कार्यों के लिये, प्रशासकीय अनुमोदन प्रदान किये गये—

1. ग्रुप केन्द्र, झड़ोदा कलां में, 64,550 रु० के कुल मूल्य का 'अखाड़ा' बनाया जायेगा।

2. सिलचर में, चलते-फिरते मोटर परिवहन कर्मशाला (वर्कशाप) के लिये 10,152 रु० की लागत की नयी बासायें निर्मित होंगी।



रजिस्टर्ड नं० 25627/79



अपने परिवार से बहुत दूर अरुणाचल के शैलकानन में अपने देशवासियों की सुख शान्ति के लिए निरत वर्षा में भीगते हुए स्यात् गृहचिन्ता में लीन के० रि० पु० बल के दो जवान।